अंतर्निहित

[व्रजेश दवे]

अंतर्निहित

[हिन्दी उपन्यास]

- व्रजेश दवे

प्राक कथन

मनुष्य का जीवन रहस्यों से भरा है। किन्तु उससे भी अधिक रहस्य हमारी मृत्यु के साथ जुड़ा होता है। मनुष्य सदैव इन रहस्यों को पाना चाहता है किन्तु उन रहस्यों तक पहुँच नहीं पाता।

हम इन रहस्यों को खोजने के लिए संसार में सर्वत्र घूमते रहते हैं, या कहो कि भटकते रहते हैं। हम वनों में जाते हैं, नदी के भीतर जाते हैं, गुहाओं में बैठ जाते हैं, पर्वतों के एकांत में स्वयं को विलीन कर देते हैं। किन्तु वह सब व्यर्थ हो जाता है और हम भी वही रहस्यमय मृत्यु की शरण में चले जाते हैं, बिना किसी रहस्य को पाए।

क्या उन रहस्यों पर मानव का कोई अधिकार नहीं? क्यों नहीं जान पाते हैं हम उन रहस्यों को? जीवन और मृत्यु के रहस्य कहाँ छिपे होते हैं? हम उसे कैसे खोज सकते हैं? खोज भी सकते हैं या नहीं?

ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर इस उपन्यास में निहित है। क्यों कि इस उपन्यास का नाम ही है, 'अंतर्निहित'। अंतर्निहित का अर्थ ही है - भीतर छिपा हुआ। उस अंतर्निहित को ही तत्ववेता 'तत्वमसि' कहते हैं।

नमो नारायणाय ।

व्रजेश दवे

कर्णावती नगरी

गुजरात, भारत।

9426041107

dave.vrajesh@gmail.com

30-06-2025

[1]

आठ वर्ष पूर्व :-

दूसरे दिन प्रात: ब्राहम मुहूर्त से ही सेलेना की योग साधना प्रारंभ होनेवाली थी। सेलेना को रात्री भर निद्रा नहीं आई। कारण यह नहीं था कि पहाड़ पर सभी सुख सुविधा का अभाव था जिसकी वह अभ्यस्त थी किन्तु उस स्थान की अनुभूति ही कुछ विशेष थी और नए अध्याय की उत्तेजना भी।
रात्री भर पहाड़ पर से व्योम को निहारती रही। चंद्र की गति, कुछ छूट पूट छोटे छोटे बादलों की क्रीडा, पहाड़ पर बिछी हुई श्वेत चंद्रिका, कभी भी न अनुभव की गई गहन शांति, शीतल मधुर वायु का मंद मंद स्पर्श, दूर दूर तक एकांत, पहाड़ों के पीछे व्याप्त अंधकार से देखती हुई क्षितिज, चंद्रमा के साथ साथ यात्रा पर निकले तारे।

*****

वर्तमान समय :-
“जब कोई सर्जक किसी रचना का सर्जन करता है तो केवल दो ही संभावनाएं होती हैं। हैं न श्रीमान सर्जक?” शैल ने कहा।
“हो सकती है।” ऊसने कहा।
“वह तो मेरा कहना है। आप अपना भी तो कुछ कहोगे?”
“मैं आपके मत से सहमत हूँ। मुझे बस यही कहना है।”
“बिना जाने इन दो संभावनाओ के विषय में, आप सीधे ही सहमत हो गए?”

उसने कोई प्रतिभाव नहीं दिया।
“बड़ी शीघ्रता है आपको मेरी बातों से सहमत होने की। प्रत्येक बात पर ऐसे ही शीघ्रता से सहमत हो जाते हो?”
उसने पुन: कोई प्रतिभाव नहीं दिया। किसी प्रतिमा की भांति निश्चल खड़ा रहा।
“श्रीमान सर्जक, आप न ही कोई उत्तर दे रहे हो न ही कोई प्रतिभाव। अपने रचे हुए शिल्प की भांति स्थिर क्यों खड़े हो? इतना तो ज्ञात ही होगा कि आप शिल्पकार हो, शिल्प नहीं।”
वह मौन ही रहा।

“मैं आपसे कुछ कह रहा हूँ। आपसे बात कर रहा हूँ। कुछ पुछ रहा हूँ। और आप कुछ नहीं बोल रहे हो। आपका यह मौन आपके विरुद्ध जा सकता है, श्रीमान सर्जक।” शैल क्षणभर रुका। उसके मुख पर किसी भाव को खोजने का शैल ने यत्न किया किन्तु उसे वह आनन भाव विहीन प्रतीत हुआ।
‘कितना शून्य है यह मुख! क्या सर्जक इतने भाव शून्य होते हैं?’ शैल ने मन में विचार किया।
“श्रीमान सर्जक। नहीं नहीं। श्रीमान शिल्पकार। यही उचित होगा। आप शिल्प ही रचते हो ना?”
“श्रीमान इंस्पेक्टर। आपको जो कहना है वह कहिए। उस पर मेरे अनुमोदन की प्रतीक्षा ना करें। आप किसी दो संभावनाओं की बात कर रहे थे।”
“शैल नाम है मेरा। शैल स्वामी। इस समय मैं केवल शैल बनकर आप से बात करना चाहता हूँ। आशा है आप पूर्ण सहयोग करेंगे। शैल स्वामी से मुझे इंस्पेक्टर शैल बनने के लिए विवश नहीं करोगे। यदि मेरे भीतर का इंस्पेक्टर आपसे बात करने लगेगा तो उसका मूल्य ....।”
शैल ने शब्दों को अपूर्ण ही छोड़ दिया। शब्दों की अपूर्णता का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पडा। शिल्पकार का धैर्य शैल को विचलित कर रहा था किन्तु वह अविचल था।
“शिल्प रचते रचते, शिल्पों के साथ रहते रहते तुम भी शिल्प की भांति प्रस्तुत हो रहे हो। शिल्पकार महाशय।“
“आप बार बार मुझे शिल्पकार या श्रीमान सर्जक क्यों संबोधित कर रहे हो?”
“क्या यह दोनों नाम असत्य है? अनुचित है?”

“कोई भी सर्जक हो, शिल्पकार हो उसका एक नाम होता है। क्या इस सत्य को आप नहीं जानते इंस्पेक्टर?”
“शैल नाम है मेरा, शैल स्वामी।”
“और मेरा वत्सर है।”
“ओह। स्मरण कराने के लिए धन्यवाद। किन्तु यदि मैं तुम्हें शिल्पकार या सर्जक कहूँ तो उसमें आपत्ति क्या है? क्या तुम शिल्पकार नहीं हो? सर्जक नहीं हो? श्रीमान वत्सर।”
“है, भरपूर आपत्ति है। श्रीमान शैल।”
“क्या है? क्यों है?”
“समय आने पर बता दूंगा। आप भी तो इंस्पेक्टर हो। आपको इंस्पेक्टर कहता हूँ तो आपको क्यों आपत्ति हो रही है?”
“यदि मैं इंस्पेक्टर बन गया तो तुम्हारे लिए आपत्ति ही आपत्ति हो जाएगी।”
“और यदि मैं सर्जक या शिल्पकार बन गया तो आपको अधिक आपत्ति होगी इस बात का स्मरण रखना।”
“तुम मुझे भय दिखा रहे हो?”
“भयाक्रांत करने का प्रारंभ मैंने तो नहीं किया था।”
“तुम कहना क्या चाहते हो? बात को उलझा क्यों रहे हो?”
“स्पष्ट सुन लो, स्पष्ट समज भी लो। यदि आप मुझे कुछ कहना चाहते हो तो मुझे मेरे नाम से ही संबोधित करोगे। यदि प्रमाद में या किसी दोष से या किसी अन्य उद्देश्य से सर्जक या शिल्पकार के रूप में संबोधित किया तो मैं कोई उत्तर नहीं दूंगा। न ही कोई प्रतिभाव या प्रतिक्रिया दूंगा।”
“ऐसा क्यों?”
“क्यों कि जब जब मैं शिल्पकार होता हूँ तब तब मैं मौन होता हूँ। तब पत्थर बोलते हैं। पत्थर के भीतर छिपी प्रतिमा मुझसे बात करती है। मैं उसे सुनता हूँ। मेरा पूरा ध्यान उसकी बातों पर होता है। वह जैसे जैसे कहती है मैं वैसे वैसे करता जाता हूँ। बिना कुछ कहे, बिना कुछ पूछे । उस समय मैं किसी भी बात को नहीं सुनता। न ही किसी वस्तु को देखता हूँ। इस प्रकार प्रतिमा स्वयं अपना अनावरण करवाती है। यह बात केवल मेरे लिए ही नहीं, किसी भी सर्जक के लिए

सत्य होती है। उस समय सभी सर्जक की यही अवस्था होती है। किसी भी सर्जक से बात करने का यह विवेक जितनी शीघ्रता से सिख लोगे उतना ही लाभ होगा, श्रीमान शैल जी।"
"चलो यह बात मैंने गांठ बांध ली। इसका कभी विस्मरण नहीं होगा।"
"इतनी सी बात स्वीकार करने के लिए धन्यवाद, शैल जी।"
"मैं मेरी बात रखूं उससे पूर्व दो बातें विशेष रूप से करनी है।"
"कहो।"
"एक, तुम मुझे शैल नाम से ही संबोधित करोगे। यह आग्रह है मेरा, वत्सर से।"
"स्वीकार है।"
"दूसरी बात। क्या मैं अपने प्रयासों से वत्सर नाम के अंतर्गत निहित किसी प्रतिमा का अनावरण कर सकूँगा?"
"यह तो आपके शिल्प कौशल्य पर निर्भर है जिससे इस समय तक तो मैं अनभिज्ञ ही हूँ।"
"मेरे कौशल्य की चिंता से तुम मुक्त हो।"
"जैसी आपकी मनसा।"
"मैं कह रहा था कि जब कोई सर्जक किसी रचना का सर्जन करता है तो केवल दो ही संभावनाएं हो सकती हैं, श्रीमान सर्जक।"
वत्सर ने शैल की आँखों में तीव्रता से देखा। शैल उस दृष्टि के भावों को समज गया।
"क्षमा; क्षमा करना। सर्जक नहीं। वत्सर।"
वत्सर की दृष्टि कोमल हो गई।
"यदि आप उस के विषय में बताना चाहते हो तो बता सकते हो। अन्यथा मैं पूछूँगा नहीं।"
"तथापि सुननी तो पड़ेगी ही।"
वत्सर निर्लेप रहा।
"एक, कोई भी सर्जन उसके सर्जक की कल्पना हो सकती है।" शैल कुछ घड़ी रुका। वत्सर के मुख पर कोई भाव को, किसी मुद्रा को खोजता रहा।
विफल।
वत्सर की सभी मुद्राएं स्थिर थी, भाव शून्य थी।

“दूसरी संभावना होती है कि सर्जक ने स्वयं कुछ ऐसा देखा हो, सुना हो या अनुभव किया हो।”
शैल ने पुन: वत्सर के भावों को परखा। पुन: विफल।
“तो वत्सर, यह बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था उस समय कि तुमने उस शिल्प की रचना कर डाली? कहाँ है वह शिल्प?”

[2]

आठ दिवस पूर्व, पाकिस्तान में।

पाकिस्तान पुलिस का एक छोटा सा दल पाकिस्तान के सीमावर्ती जिला कसूर के मार्ग पर मंद गति से भारतीय सीमा की तरफ गति कर रहा था। दल में केवल तीन सदस्य थे जिसमें से एक गाड़ी चला रहा था।
“जनाब, हम इतने धीरे धीरे क्यों जा रहे हैं? हमें वहाँ जल्दी पहुंचना चाहिए। मामला गंभीर .. ।”
जूनियर रफिक ने अपने सीनियर सुल्तान से पूछने का साहस किया। सुल्तान के मुख के भाव कडे हो गए।
“आगे होटल पर चाय नाश्ता करने के लिए गाड़ी रोक देना।” सुल्तान ने आदेश दिया। रफिक ने आश्चर्य से सुल्तान की तरफ देखा। सुल्तान ने उस दृष्टि की अवगणना की। चालक ने होटल पर गाड़ी रोक दी।
****

उसी दिन, उसी समय। भारत में।

भारत के सीमावर्ती जिले फिरोजपुर पुलिस का पाँच सदस्यों का एक दल तीव्र गति से पाकिस्तान की सीमा की तरफ बढ़ रहा था। उसका नेतृत्व अपराध शोधक शाखा के इंस्पेक्टर शैल कर रहा था। उसके मन में अनेक प्रश्न थे। अनेक संभावनाएं थी। अनेक योजनाएं भी थी। वह शिघ्रातिशीघ्र पाकिस्तान सीमा पर, घटना स्थल पर पहुंचना चाहता था।

एक फोन कॉल आया था जिससे सूचना मिली थी -

‘पाकिस्तान के कसूर जिले से लगी सीमा पर एक मृतदेह मिला है। पाकिस्तान पुलिस को भी सूचित कर दिया गया है।’

शैल ने जब आगे पूछना चाहा, विस्तार से जानना चाहा तब तक सूचना देने वाले ने फोन काट दिया था।

शैल के लिए यही बात चिंता की थी, विस्मय की थी, रहस्य की थी।

‘सूचना देनेवाले ने अन्य मूलभूत सूचना क्यों नहीं दी? नहीं दी? अथवा किसी योजना पूर्वक उसे गुप्त ही रखा? वह फोन काटने की इतनी शीघ्रता में क्यों था?’

शैल कुछ निश्चय नहीं कर सका किन्तु इतना समज चुका था कि कुछ तो रहस्य अवश्य है।

एक घंटे से अधिक समय की यात्रा सम्पन्न कर शैल का दल घटना स्थल पर आ पहुंचा।

किसी ग्रामजन ने बताया,

“भारत पाकिस्तान की सीमा पर जहां सतलुज नदी सीमा को पार करती है वहाँ नदी के भीतर मृतदेह स्थिर पड़ा है। देह का एक भाग भारत की सीमा में है तो दुसरा पाकिस्तान की सीमा में।”

“किसका देह है?”

“देह उल्टा पड़ा है, पानी के बीचों बीच। इसलिए पता नहीं चल रहा है।”

“आप लोगों ने उसे किनारे पर लाने का प्रयास क्यों नहीं किया?”

“सा’ब, पानी का तेज बहाव है। वहाँ जाना हमारे लिए संभव नहीं है। दूसरा जैसे हमने बताया कि देह का एक भाग हमारी सीमा में है, दूसरा उनकी सीमा में। देह को किनारे लाने के प्रयास में यदि सीमा का उल्लंघन हो गया तो?”

शैल ने स्थिति का प्राथमिक अनुमान लगा लिया।

“ठीक किया आप लोगों ने। हमें वहाँ तक ले चलो।”
कुछ स्थानीय लोग शैल के दल को वहाँ तक ले गए। देह को देखते ही शैल तथा उसका दल विस्मय से भर गया। स्थिति पूर्णत: वैसी ही थी जैसी ग्रामजनों ने बताई थी।
शैल ने स्वयं से बात की
‘मृतदेह भारत पाकिस्तान सीमा पर आधा आधा पड़ा है। सतलुज नदी का प्रवाह अत्यंत तीव्र है। किन्तु नदी के इतने तीव्र प्रवाह में भी देह पानी के भीतर स्थिर पड़ा है। देह उलटा पड़ा है। मुख दिख नहीं रहा है। ऐसे में कुछ भी समज नहीं आ रहा है।’
शैल कुछ समय तक विचार करता रहा। दल के सदस्य शैल की सूचना की प्रतीक्षा कर रहे थे। गहन विचार के पश्चात उसने साथियों से पूछा, “किसका मृतदेह हो सकता है?”
“किनारे से इस प्रश्न का निश्चित उत्तर नहीं मिल सकता, शैल जी। वहाँ तक जाना पड़ेगा। किन्तु आश्चर्य की बात है कि नदी के प्रचंड प्रवाह में भी वह वहाँ अटक कैसे गया? इतने प्रवाह में तो उसे बह जाना चाहिए था।” एक साथी ने कहा।
“बह जाता तो अच्छा होता।” दूसरे साथी ने कहा।
“क्यों? ऐसा क्यों मान रहे हो श्रीमान?”
“बह जाता तो सीमा पार कर उनके देश में चला जाता और हमें इस घटना से जुड़ना नहीं पड़ता। इस झंझट से बच जो जाते।”
“नहीं मित्र। ऐसा विचार कभी नहीं करना। ऐसे झंझट के लिए ही तो हम बने हैं।”
“यह घटना, यह विषय अब दो देशों की मंजूषा बन गई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बन जाएगा यह।”
“तो क्या हुआ?”
“शत्रु देश के दल के साथ कार्य करना पड़ेगा।”
“तो?”
“मुझे उसका मुख देखना भी पसंद नहीं है। और अब साथ में कार्य करना?”
“शत्रु को जीतना हो तो शत्रु के साथ भी रहना आवश्यक होता है। तभी तो शत्रु की गतिविधियों का संज्ञान मिलता रहेगा। खेर, वैसे भी यह देह भारत की सीमा से बहता हुआ आया है तो इस मंजूषा से हमारा जुड़ना निश्चित ही था।”
“इस स्थिति में बात अधिक जटिल हो जाएगी।”

“तभी तो रोचक बनेगी। तभी तो आनंद आएगा।” शैल के मुख पर एक आभा आ बसी जो उसके मुख को कांतिवान बना गई।
“कैसा आनंद?”
“मेरे साथ जुड़े रहो और देखते रहो।”
“क्या तात्पर्य है?”
“उनकी बजाने का एक भी अवसर खोना नहीं है। विश्व समुदाय के समक्ष उसे परास्त करने का इससे अधिक उचित एवं उत्तम समय क्या हो सकता है?”
“किन्तु अभी तक उसकी तरफ से कोई दिख नहीं रहा।” उसने सीमा पार दृष्टि करते हुए कहा। पाकिस्तानी पुलिस के होने का कोई संकेत नहीं था वहाँ।
“उसे आना ही पड़ेगा। कोई विकल्प नहीं है उसके पास।”
“इतना विलंब क्यों हो रहा है?”
“यही उनका चरित्र है। ऐसे अनेक चरित्रों का दर्शन करने के लिए सज्ज हो जाना। इस खेल में बड़ा प्रमोद आने वाला है।” शैल घड़ी भर रुका।
“सुनो, यह अंतरराष्ट्रीय घटना है। भारतीय सेना को सूचित किया या नहीं?” शैल ने ग्रामजनों से पूछा। ग्रामजनों के मुख अवाक से हो गए। शैल उस भावों को समज गया। उसने पुलिस मुख्यालय को संदेश दिया,
“भारतीय सेना को इस घटना की सूचना दी जाए।”
संदेश प्राप्त होते ही भारतीय सेना ने पाक्सितानी सेना को सूचित कर दिया।
शैल तथा उसका दल अपने कार्य में लग गया।
“इस स्थल के तथा देह के अधिक से अधिक चित्र ले लो। सभी कोने से लेना, एक भी कोण छूटना नहीं चाहिए। एक विस्तृत चलचित्र भी बनाओ। छोटी से छोटी बात, छोटी से छोटी चीज भी नहीं छुटनी चाहिए।” शैल के आदेश पर दल काम पर लग गया।

[3]

शैल उस स्थल का, उस क्षेत्र का अपने दृष्टिकोण से निरीक्षण करने लगा। उसने जो भी देखा, जो भी अनुभव किया उसे उसने अपने मन में रख लिया।

कुछ ही क्षण में दोनों देशों की सेना की टुकड़ी घटना स्थल पर आ गई। पाकिस्तानी पुलिस का कोई समाचार नहीं था।

दोनों सेनाओं ने कुछ विचार विमर्श किया, चर्चा की और निर्णय लिया गया कि भारतीय वायुसेना के हेलिकॉप्टर की सहायता से मृतदेह को नदी से बाहर निकाला जाए तथा उसे भारतीय सीमा में, भारत के संरक्षण में ही रखा जाए।

हेलिकॉप्टर आ गया। जवानों ने जैसे ही देह को बाहर निकालने के लिए सज्जता कर ली तभी पाकिस्तानी पुलिस दल आ पहुँचा। और विरोध करते हुए बोला, “अभी इसे निकाला न जाए। हमारे दल को इसकी तथा आसपास की फोटोग्राफी तथा विडीयोग्राफी करनी है।”

"श्रीमान। इसके लिए आपने अत्यंत विलंब कर दिया है। आशा करता हूँ कि आप समयोचित सहयोग करेंगे।" शैल ने त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए स्पष्ट संकेत दे दिया कि कार्य समय पर ही होगा। वह किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करेगा।
"मैं सीनियर इन्स्पेक्टर सुल्तान।" सुल्तान ने हस्त धूनन हेतु शैल की तरफ हाथ बढ़ाया, "और आप?"
"मैं इन्स्पेक्टर शैल। क्राइम ब्रांच, भारत सरकार।" शैल ने सुल्तान के बढ़े हुए हाथ की तरफ देखे बिना ही सुल्तान की आँखों में आँखें डालते हुए अपना परिचय दिया।
शैल की तीक्ष्ण दृष्टि से आहत सुल्तान क्षण भर विचलित हो गया। स्वयं को संभालते हुए उसने शब्दों का खेल खेलते हुए कहा, "जांच के लिए हमें भी तो कुछ एविडेन्सिस चाहिए न? बस हम कुछ ही लम्हों में हमारा काम कर लेंगे। जब इतना इंतजार किया है तो थोड़ा और सही।"
"अन्वेषण हेतु जितने प्रमाण आवश्यक हैं वह सब हमारे पास हैं। आपको भी उपलब्ध करा दिए जाएंगे। अब हमारा तथा हमारे देश की वायुसेना का एक भी क्षण व्यर्थ नष्ट नहीं होने देंगे। हमें समय का मूल्य है, हम समय का सम्मान करते हैं।"
"तो क्या हम पाकिस्तानी समय का सम्मान नहीं करते?"
"वह आपकी समस्या है। आप लोग अपनी सभी समस्याओं का समाधान भारत से ही क्यों मांगते हो?"
शैल के शब्दों ने सुल्तान को अपमानित कर दिया। क्रोध में उसने अपनी रिवॉल्वर पर हाथ डाल दिया। स्थिति की गंभीरता को पाकिस्तानी सेना ने समज लिया। सुल्तान को नियंत्रण में ले लिया।
"भारतीय वायुसेना से हम विनती करते हैं कि हो सके तो कुछ समय के लिए रुक जाएँ। पाकिस्तानी पुलिस की तरफ से पाकिस्तानी सैन्य क्षमा माँगता है।"
"शैल, हमें उनके अनुनय का सम्मान करना चाहिए। कुछ समय प्रतीक्षा करने में हमें कोई आपत्ति नहीं है।" भारतीय वायु सेना दल के प्रमुख ने कहा। शैल ने मौन सम्मति दी।
"हम आपको पंद्रह मिनिट का समय देते हैं। आप अपना कार्य इसी समय सीमा में सम्पन्न कर लो। इससे अधिक हम प्रतीक्षा नहीं करेंगे।" सुल्तान को स्पष्ट संदेश मिल गया।

सुल्तान तथा रफीक चित्र और चलचित्र के रूप में साक्ष्य का सर्जन करने लगे। पंद्रह के स्थान पर बीस मिनिट का समय व्यतीत हो गया किन्तु काम पूर्ण होने का कोई संकेत सुल्तान की तरफ से नहीं मिला।
भारतीय वायुसेना ने चार जवानों को लेकर अपना हेलिकॉप्टर उड़ाया। दो जवान हेलिकॉप्टर से लटकते हुए मृतदेह तक पहुँच गए। पानी के तीव्र प्रवाह में उतरे, स्वयं को स्थिर किया। मृतदेह को निकालने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु प्रवाह की तीव्र गति के कारण कठिनाई होने लगी। कुछ समय के संघर्ष के पश्चात मृतदेह को पकड़कर खींचने में सफल हुए। उन्होंने देह को उठाया, रस्सी से बांधा। हेलिकॉप्टर देह को और जवानों को लेकर भारतीय सीमा में आ गया। जैसे ही हेलिकॉप्टर धरती पर उतरा, न जाने कहाँ से पत्रकारों की टोली वहाँ आ गई। वायुसेना दल के प्रमुख ने शैल की तरफ देखा। दोनों में संकेतों में कुछ बात हुई।
शैल पत्रकारों के समीप गया।
“आप सभी इस तरफ आ जाइए। वायुसेना को अपना कार्य करने दीजिए। आप जो भी बात करना चाहें, मुझसे कीजिए। मैं आपके सभी प्रश्नों के उत्तर दूंगा।”
अनिर्णायक स्थिति में पत्रकार कुछ समय तक खड़े रहे। पश्चात एक पत्रकार बोला, “हम मृतदेह के चित्र लेना चाहते हैं। प्रथम वह ले लें, पश्चात आपसे भी प्रश्न करेंगे।”
“अभी कुछ ही समय में वायुसेना की रुग्ण वाहिनी आएगी। तब मृतदेह को बाहर निकाला जाएगा। उस समय आपको पूरा अवसर दिया जाएगा। तब तक आप उस स्थान को खाली कर दें।” शैल ने आदेश दिया। सभी वहाँ से अप्रसन्न मन से हट गए। शैल से प्रश्न करने लगे।
“यह मृतदेह यहाँ कैसे आया?”
“यह किसका है?”
“पानी के प्रवाह में बहकर पाकिस्तान की सीमा में जाने के स्थान पर दोनों देशों की सीमाओं के मध्य में कैसे अटक गया?”
“यह स्त्री है या पुरुष?”
“मृत्यु का कारण क्या हो सकता है?”
“क्या यह आत्महत्या है?”
“क्या यह हत्या है?”

"किसने इसे मारा होगा?"
"अभी मैंने मृतदेह को देखा ही नहीं है। तो इस विषय में अभी कुछ भी कहना अनुचित होगा।" शैल ने कहा।
"किन्तु कुछ तो अनुमान?"
"कोई भी घटना अनुमान का विषय नहीं होता है। आप सभी जानते हैं कि किसी भी निष्कर्ष पर आने से पूर्व देह का देह परीक्षण, पोस्ट मॉर्टम, होता है। आवश्यक हुआ तो फोरेंसिक जांच होती है। तभी जाकर इस दिशा में कुछ कहने की स्थिति बनती है। तो प्रथम यह सब हो जाने दो। पश्चात जो भी निष्कर्ष निकलेगा, आपको सूचित किया जाएगा।"
"आपको किसी पर संशय है?"
"प्रतीक्षा करो। समय पर सब विदित हो जाएगा।"
"इस देह को यहाँ कोई डाल गया होगा या स्वयं ही यहाँ तक आ गया होगा?"
"हम सभी विकल्प पर अन्वेषण करेंगे। देखते हैं क्या..।"
"देह का अर्ध भाग पाकिस्तान सीमा में था तो क्या आगे के अन्वेषण में पाकिस्तान जुड़ेगा?"
"क्या आप उसे इस हेतु अनुमति देंगें?"
"इससे दोनों देशों के संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?" पुन: नए प्रश्न होने लगे।
"इस विषय पर हमने अभी उनसे कोई बातचीत नहीं की है। न ही कोई प्रस्ताव किसी भी ओर से गया है।"
"यह प्रस्ताव कब तक प्रस्तुत होगा?"
"यह विषय विदेश नीति का है। उसे हमें दोनों सरकारों पर छोड़ देना चाहिए।"
"किन्तु हम ...?" कोई प्रश्न पूछना चाहता था तभी किसी ने सूचना दी कि रुग्ण वाहिनी आ चुकी है। यह सुनते ही सभी पत्रकार उस दिशा में दौड़ गए।
"आप लोग जीतने चित्र और चलचित्र लेना चाहें ले लीजिए। किन्तु कुछ अंतर बनाकर रखीये। इस वृत्त के भीतर आपको प्रवेश नहीं करना है।" वायुसेना के जवानों ने रुग्णावहिनी को घेर लिया और एक वृत्त बना दिया। मृतदेह को हेलिकॉप्टर से बाहर निकाला गया।
पत्रकारों ने मृतदेह को देखते ही विरोध किया।
"यह तो पूरा ढंका हुआ है। हम इसके चित्र कैसे ले सकते हैं?"

“यह देह पूरा क्षत विक्षत हो चुका है। अत: इसे बांधकर ही रखना पड़ेगा। इसे शव परीक्षण के समय ही रुग्णालय में खोला जाएगा। आप इसी अवस्था में जो ले सको, ले लो।”
“इंस्पेक्टर शैल, यह तो ठीक नहीं है। हम इस बंद शव के चित्रों का क्या करें? हमें तो ....?”
“शांत हो जाइए। शव की जो स्थिति है उसमें उसे खोलना संभव नहीं है। मैं आपकी बात को भी समज रहा हूँ। आप निश्चिंत रहिए। हमारे दल ने जो भी चित्र और चलचित्र लिए हैं वह सभी आपको उपलब्ध किए जाएंगे। वे सब आपके काम के हैं इतना मैं आपको आश्वासन दिलाता हूँ।”
पत्रकारों ने शैल की बात मान ली। देह को रुग्ण वाहिनी में रखा गया। पत्रकारों ने पूरी सज्जता और अनुशासन से उसे जाने दिया। रुग्ण वाहिनी देह को लेकर चली गई। वायुसेना का दल विदा हो गया। पत्रकार भी चले गए। शैल अपने दल के साथ वहीं रुका रहा।
सुल्तान और उसका साथी शैल की तरफ बढ़े।
“जब कोई निष्कर्ष निकल आए तो हमें सूचित कर देना।” सुल्तान के मुख पर व्यंग की रेखाएं थी।
“आपको बड़ी रुचि है इस घटना में?”
“हमें कोई रुचि नहीं है। यह तो शव आधा हमरी सीमा में था..।”
“तो क्या आधी अधूरी बातें करके चले जाओगे?”
“हमें इससे कोई लेना देना नहीं है। इसे आपके गले में डालकर हम तो चले।”
“समय आने पर विदित हो जाएगा कि किसके गले में क्या पड़ा है।” शैल ने उत्तर दिया। सुल्तान लौट गया। दोनों देश की सीमाएं पुन: बंद हो गई।

[4]

सिक्किम के किसी अज्ञात पर्वत पर स्थित शिल्प शाला-

“येला, तुमने आज के समाचार देखे?”

“इतना समय ये पत्थर कहाँ देते हैं मुझे कि मैं समाचार देख सकूँ?” येला ने पत्थर को किसी अज्ञात शिल्प का रूप देते हुए उत्तर दिया।

“किन्तु जब पत्थर ही समाचार बन जाए तो?”

“क्या? उर्मिला, क्या कह रही हो तुम?”

“मैं सत्य कह रही हूँ।”
“तो कहो। क्या समाचार है इन पत्थरों के?”
“इन पत्थरों के नहीं, उस पत्थर का समाचार है।” उर्मिला ने शिल्प शाला के प्रवेश द्वार पर स्थित एक विशिष्ट शिल्प की तरफ संकेत करते हुए कहा।
“वह शिल्प? उसके विषय में कोई समाचार है क्या?”
“नहीं येला। समाचार तो भिन्न ही है किन्तु उसका सीधा संबंध उस शिल्प से ही है।” उर्मिला के अधरों पर व्यंग युक्त स्मित आ गया।
“सीधे सीधे कहो कि क्या समाचार है?”
“तुम स्वयं आ कर देख लो।” उर्मिला चली गई। येला ने शिल्प में परिवर्तित हो रहे पत्थर को वहीं छोड़ दिया। अतिथि कक्ष में जा पहुंची।
येला के सभी छात्र, सभी कर्मचारी आदि से अतिथि कक्ष भरा हुआ था। सभी का ध्यान प्रसारित हो रहे समाचार पर केंद्रित था। समाचार चल रहा था कि -
“भारत पाकिस्तान की सीमा पर एक अज्ञात मृतदेह मिला है जिसका धड़ पकिस्तान की सीमा में था तथा बाकी शरीर भारतीय सीमा में था। सतलज नदी के सशक्त प्रवाह में भी मृतदेह बिना बहे सीमा रेखा पर ही स्थिर हो गया था। मृतदेह किसका है? मृत्यु कैसे हुई? यहाँ यह कैसे आ गया? आदि विषय से भी अधिक महत्वपूर्ण कौतुक यह है कि मृतदेह पानी में उसी बिन्दु पर आकर कैसे रुक गया जिस बिन्दु पर दोनों देश विभाजित हो जाते हैं। उस बिन्दु को देखने तथा अपने कुतूहल का शमन करने के लिए मनुष्यों का सागर वहाँ उमड़ने लगा है। प्रशासन ने मनुष्यों के प्रवाह को नियंत्रित करने का विफल प्रयास करने के पश्चात उस स्थान को घेर लिया है। सेना का उस पर नियंत्रण हो गया है। अब वहाँ कोई भी नहीं जा सकता।”
समाचार के साथ साथ अनेक चित्र और चलचित्र प्रसारित हो रहे थे। अनेकों दृश्यों को दिखाया जा रहा था। कक्ष में उपस्थित सभी मनुष्य उन्हें देखकर विस्मय से एक दूसरे की तरफ देख रहे थे। एक दूसरे को प्रश्न कर रहे थे। येला को कक्ष में प्रविष्ट करते देख सभी शांत हो गए।
येला भी सबके साथ समाचार देखने लगी। उसने भी उन चित्रों और चलचित्रों को देखा। वह भी विस्मय से बोल पड़ी, “यह कैसे हो सकता है? यह असंभव है।”

“यही प्रश्न हमें भी हो रहा है। येला, अब तुम ही कहो कि यह क्या है?” सभी ने एक साथ पूछा।
“इस समय तो मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है। किन्तु यह बात मुझे भी विचलित कर रही है।” येला ने उत्तर दिया और वहाँ से जाने लगी।
“येला, चलो एक बार जाकर उस शिल्प को देखते हैं।” किसी ने कहा।
येला रुकी, मुड़ी और बोली, “इस समय मुझ में इतना साहस नहीं कि मैं उस शिल्प को देख सकूँ। मैं कुछ समय एकांत चाहती हूँ।” येला अपने कक्ष में चली गई।
येला ने कक्ष को भीतर से बंद कर लिया। वातायन के समीप जाकर खड़ी हो गई। गवाक्ष से दृष्टिमान हो रही उत्तुंग पहाड़ियों को देखा। कुछ क्षण देखते देखते अनायास ही वह उपत्यकाओं को देखने लगी। नीचे, अधिक नीचे देखने लगी। अंतत: उसकी दृष्टि तरहटी पर रुक गई। वहाँ एक झरना बह रहा था। वह उसे देखने लगी। उस झरने में उसे पानी के साथ साथ बहता हुआ एक मृतदेह दिखाई दिया। पानी के तीव्र प्रवाह से बहते हुए सहसा देह एक बिन्दु पर रुक गया। प्रवाह अभी भी तीव्र था किन्तु वह उस मृतदेह को बहा नहीं पा रहा था। वह एक ही स्थान पर स्थिर था।
“नहीं, नहीं।” वह बोल पड़ी। उसके शब्द वातायन से होते हुए कक्ष से बाहर चले गए। पहाड़ की कन्दराओं में प्रतिघोष बनकर व्याप्त हो गए। अपने ही शब्दों का प्रतिघोष येला सुन नहीं सकी। उसने पर्वत से अपना ध्यान हटा दिया। वातायन बंद कर दिया।
कक्ष में वह अकेली रहना चाहती थी किन्तु उसके मन में चल रहे प्रश्न उसका साथ छोड़ना नहीं चाहते थे। इन्हीं विचारों में ही वह निद्राधिन हो गई।
जब किसी ने उसके कक्ष के द्वार को खटखटाया तभी येला जागी। वह उठी। द्वार खोल दिया।
“येला, भोजन का समय हो गया है। चलो।” आगंतुक ने कहा।
“ओह, मुझे समय का ध्यान ही नहीं रहा। तुम चलो। मैं अभी आती हूँ।”
“भोजन कक्ष में हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे। शीघ्र आ जाना।” आगंतुक चला गया।
येला ने स्वयं को स्वस्थ किया, कुछ विचार करती हुई भोजन कक्ष में चली गई।

सभी ने आज मौन ही भोजन किया। कोई कुछ नहीं बोल रहा था। कोई किसी से आँखें नहीं मिला रहा था। वास्तव में आँखें चुरा रहा था। सब के मन पर भारत पाकिस्तान सीमा पर मिले मृतदेह का भार था।

येला ने यह सब कुछ देखा, अनुभव किया। उसने भी मौन ही भोजन किया। भोजन के साथ वह अपने विचारों को भी पचाने का प्रयास कर रही थी। उसने एक निश्चय कर लिया।

“भोजन के पश्चात आज प्रार्थना होगी?” किसी ने येला से पूछा।

“क्यों?”

“आज सभी के मन कुछ ....।”

येला उसके मन की बात समज गई। उसने घोषणा करते हुए कहा, “प्रार्थना के समय से दस मिनट पूर्व ही सब प्रार्थना कक्ष में आ जाएं।” येला चली गई। सब के मुख पर जागे कुतूहल के साथ एक प्रश्न को भी छोड़ती गई।

‘दस निमिष पूर्व? अवश्य ही कोई बात होगी जो येला कहना चाहती है। क्या होगी वह बात?’ इसी प्रश्न को लेकर सभी बिखर गए। अपने अपने कक्ष में चले गए। नियत समय की प्रतीक्षा करने लगे।

[5]

येला ने दस निमिष कहा था किन्तु उससे भी पाँच निमिष पूर्व प्रार्थना कक्ष भर गया। सभी के मन में एक समान आशंका थी यह सब को विदित था किन्तु कोई अपने मुख से उसे प्रकट नहीं करना चाहता था।

“क्या यह शिल्प शाला अब बंद हो जाएगी?’ इसी प्रश्न का उत्तर जानने के लिए प्रत्येक व्यक्ति उत्सुक था, चिंतित था।

येला ने एक दृष्टि प्रार्थना खंड में उपस्थित सभी व्यक्तियों पर डाली। वह संतुष हो गई कि कोई भी अनुपस्थित नहीं था। येला ने अपना स्थान ग्रहण किया, आँखें बंद कर प्रार्थना आरंभ की।

“शांताकारम भुजग शयनम पद्मनाभम सुरेशम ।
विषवाधारम गगन सदृशम मेघवर्णम शुभंगम ।।
लक्ष्मीकांतम कमलनयनम योगीभिध्यार न गम्यम ।
वंदे विष्णुम भव भय हरम सर्व लोकैक नाथम ।।”

नित्य रात्री प्रार्थना सम्पन्न हुई। येला के उपरान्त किसी का भी चित्त प्रार्थना में नहीं था। येला ने आँखें खोली। देखा तो सभी की आँखें खुली ही थी।

“क्या आप लोगों ने आज प्रार्थना के समय आँखें बंद कर ईश्वर का चिंतन नहीं किया?”

येला के इस प्रश्न का उत्तर सभी के मौन ने दे दिया।

“आप सभी के मुख भाव कह रहे हैं कि आप सभी अत्यंत चिंतित हो। चिंता होना सहज है। किन्तु कभी कभी कुछ चिंताएं व्यर्थ ही होती हैं। मैं मेरी बात रखूं उससे पूर्व आप सब को आश्वस्त करना चाहूँगी कि यह शिल्प शाला जिस प्रकार अभी तक चल रही है उसी प्रकार से ही चलती रहेगी। तत्काल इसे कोई समस्या नहीं है।”

येला के इन शब्दों से सभागार प्रसन्न हो गया। येला ने सभी को निश्चिंतता से भरी उस क्षण में रहने दिया। मौन होकर सभी के आनन के भावों को देखती रही। धीरे धीरे सभा शांत होने लगी। शांत होते ही सभी का ध्यान पुन: येला पर केंद्रित होने लगा।

जब सभी का ध्यान एक ही बिन्दु पर स्थिर हो गया तो येला बोली, “मैंने निश्चय किया है कि मैं उस शिल्प के साथ सम्बद्ध सभी प्रमाण के साथ उस स्थान पर जाऊँगी जहां पर उस घटना

की जांच चल रही है। मैं संबंधित अधिकारियों से मिलूँगी तथा उस शिल्प के विषय में जो कुछ भी आवश्यक होगी वह सभी जानकारी उसे उपलब्ध कराऊँगी।
संभव है इस कार्य में कई दिन लग जाए। मैं इसके लिए सज्ज हूँ। मेरी अनुपस्थिति में उर्मिला यहाँ का पुरा व्यवहार पूर्ववत चलाएगी। आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। मैं लौटकर अवश्य आऊँगी।"
"क्या ऐसा करना आवश्यक है?"
"ऐसा करने पर येला, तुम स्वयं समस्या को आमंत्रित कर रही हो।"
"तुम्हें वहाँ नहीं जाना चाहिए।"
सभा में से ऐसे ऐसे प्रतिभाव आने लगे। येला ने सभी को बोलने दिया। शांत चित्त से सभी के मत को सुना।
सभी ने ध्वनि मत से अपने इस निर्णय को निरस्त करने का येला को आग्रह किया।
"आपकी भावना का मैं सम्मान करती हूँ। किन्तु मेरी बात ध्यान से सुनो। जो शिल्प हमारी शिल्प शाला में पिछले आठ वर्षों से स्थित है उसे असंख्य व्यक्तियों ने देखा है। इस पर्वत पर आनेवाले प्रत्येक प्रवासी ने उसे देखा है। इन प्रवासियों में भांति भांति के लोग होंगे। कई पुलिसकर्मी भी होंगे। और आज जो समाचार संचार माध्यमों में प्रसारित हुए हैं, उसमें जो चित्र और चलचित्र दिखाए गए हैं उनसे इस शिल्प को कोई भी जोड़ सकता है। पुलिस को सूचित कर सकता है। तब पुलिस को यहाँ आने में विलंब नहीं होगा। पुलिस यहाँ आए उससे तो उचित यही होगा कि मैं पुलिस के पास जाकर सब बात बता दूँ। अत: इस घटना में मेरा पुलिस से मिलना अनिवार्य है, उचित ही है। तो अब विलंब क्यों करें? जितना शीघ्र हो उतना शीघ्र हम सभी को इस चिंता से मुक्त होना है। यही उचित रहेगा न?" येला ने सभा पर प्रश्न छोड़ दिया।
सभा कुछ समय तक परस्पर चर्चा करने में व्यस्त हो गई। पश्चात सभी ने एकमत से येला को जाने की स्वीकृति दे दी। सभा सम्पन्न हो गई।

@#

“शैल, पाकिस्तान सरकार की ओर से प्रस्ताव आया था कि उसका एक दल भी इस घटना के अन्वेषण में जुड़ना चाहता है।” विजेंदर ने सूचित किया।
“हमारी सरकार ने उस प्रस्ताव पर क्या उत्तर दिया?”
“प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी।”
“इतनी त्वरित स्वीकृति दे भी दी?”
“हाँ। केवल एक व्यक्ति के लिए ही अनुमति दी है।”
“तब तो सुल्तान आ रहा होगा। आने दो उसे।”
“नहीं सुल्तान नहीं आ रहा।”
“तो कौन आ रहा है?
“आ रहा नहीं, आ रही है। कल प्रात: वह तुम्हारे साथ होगी।”
“अर्थात? कोई महिला आ रही है? कौन है वह?”
“वरिष्ठ इंस्पेक्टर सारा उलफ़त नाम है उसका।”
“सारा? सारा का अर्थ तो परी होता है ना?”
“और उलफ़त का अर्थ प्रेम होता है शैल जी। एक परी प्रेम लेकर आ रही है। सावधान रहिएगा, श्रीमान।”
“और वह भी शत्रु देश से? उलफ़त कहीं उलझन न बन जाए।” शैल हंस पड़ा। विजेंदर भी।

!@!@

“दो स्त्रीयां आपसे मिलने की प्रतीक्षा मैं हैं, श्रीमन शैल।”
“दो? बात तो एक की थी। क्या पाकिस्तान ने दो को भेज दिया है? विजेंदर, एक के साथ एक नि:शुल्क?”
“एक तो सारा प्रतीत होती है, दूसरी पाकिस्तान से नहीं आई है। उसके विषय में कुछ ज्ञात नहीं है।”
“तो जानो कि कौन है वह।”
“मैंने पूरा प्रयास किया किन्तु वह केवल तुमसे ही मिलना चाहती है।”

“क्या नाम है उसका?”

“वह अपना नाम भी नहीं बता रही है।”

“ओह। उसे यहाँ तक आने की अनुमति कैसे मिल गई?”

“उसके पास अनुमति पत्र है। उसने उचित पहचान पत्र अधिकारियों को दिखाए होंगे।”

शैल ने कोई उत्तर नहीं दिया।

“तो प्रथम किस को भेजूँ?” विजेंदर ने व्यंग में पूछा।

“यह समय व्यंग का नहीं है विजेंदर।”

“तो बिना व्यंग के कहो किसको भेजूँ?”

“अभी रुको। मुझे सोचने दो।”

“मैं बाहर प्रतीक्षा करता हूँ।” वह चला गया।

शैल दुविधा में पड गया।

“कौन हो सकती है? अपना नाम भी नहीं बता रही। केवल मुझसे ही मिलना चाहती है। कुछ तो रहस्य है उस स्त्री में। यदि सारा से प्रथम मिल लिया तो वह स्त्री जो कहेगी उसे मुझे सारा को भी बताना पड़ेगा। इस स्थिति में प्रथम उस अज्ञात स्त्री को ही मिलना चाहिए।”

“विजेंदर।”

“जी, कहिए। क्या निर्णय हुआ?”

“प्रथम उस अज्ञात स्त्री को भेज दो। तब तक तुम सारा का आतिथ्य सत्कार करो।”

[6]

मृतदेह मिलने की घटना को तीन दिन हो गए। शैल ने अपने अन्वेषण के सभी पक्षों से प्रयास किया किन्तु अभी तक उसे इस अन्वेषण में सहायक हो सके ऐसे किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सका। वह उस बात से चिंतित था और ऊपर से दो नई बातें उसके समक्ष प्रस्तुत हो गई थी।

एक, कोई अज्ञात स्त्री उससे मिलना चाहती है, इस घटना के विषय में।

दूसरा, पाकिस्तान इस अन्वेषण में जुड़ना चाहता है और उसने किसी सारा उलफ़त को प्रस्तुत कर दिया है।

‘यह सारा कहाँ से आ गई? पाकिस्तान का इस विषय से जुड़ना तो निश्चित तथा किन्तु सारा? यदि सुल्तान आता तो बात रोचक होती। अब यह सारा से..।’ शैल विचार कर ही रहा था कि तभी उसके कक्ष में अज्ञात स्त्री ने प्रवेश किया। वह येला थी।

येला को, एक विदेशी स्त्री को देखकर शैल क्षणभर अचंभित रह गया।

‘यह कौन हो सकती है? इसका इस घटना से क्या संबंध हो सकता है?’ ऐसे अनेक विचार शैल के मन में जागे किन्तु बिना उत्तर के शांत हो गए।

शैल को मौन देखते ही येला ने कहा, “नमस्ते शैल जी। मैं येला। येला स्टॉकर। आपसे कुछ बात करना चाहती हूँ।”

विदेशी येला ने बात का प्रारंभ हिन्दी में किया। वह सुनकर शैल को एक और आश्चर्य हुआ।

“क्या आप मेरी बात सुनने को तत्पर हो? सज्ज हो?”

येला के शब्दों ने शैल को सावध कर दिया।

“जी। आप यहाँ बैठ सकती हैं।” शैल ने एक कुर्सी की तरफ संकेत करते हुए कहा। येला बैठ गई।

“येला, प्रथम आप अपना पूरा परिचय दें तो कैसा रहेगा?”
“मेरी बात में वह स्वयं प्रकट हो जाएगा। मेरे विषय में आपके सभी प्रश्नों के उत्तर मेरी बातों से मिल जाएंगे। किन्तु कोई विघ्न आए उससे पूर्व मुझे मेरी बात कह देनी चाहिए।”
शैल येला के सम्मुख बैठ गया। “कहो, जो भी कहना चाहती हो।”
“समाचार माध्यमों में प्रस्तुत सभी चित्रों को मैंने देखा। सतलज नदी के प्रवाह में उलटे पड़े देह को भी देखा। यह भी देखा कि देह का अर्ध भाग भारत की सीमा में तथा दूसरा अर्ध भाग पाकिस्तान की सीमा में था। यह सभी बातें आपके लिए आश्चर्य हो सकती हैं। किन्तु ....।” येला क्षण भर रुकी। शैल ने उसे रुकने दिया। येला ने गहन सांस ली।
“किन्तु से आगे आप कुछ कहना चाहती हैं? केवल इतनी बात बताने के लिए तो आप मुझसे मिलने नहीं आई होंगी। मैं ठीक कह रहा हूँ न, मिस येला?”
“किन्तु से आगे की बात ही महत्वपूर्ण है। मैं दुविधा में हूँ कि वह बात आपसी करूं या ना करूं? करूं तो कैसे करूँ?”
“मुझसे बात करना आवश्यक है तभी तो आप यहाँ तक आ पहुंची हो। हाँ, उस बात को कहने में थोड़ा समय ले सकती हो। यदि कोई समस्या हो तो मैं किसी महिला पुलिस को साथ रखने से आपत्ति नहीं रखता। क्या किसी को बुला लूँ?”
“नहीं, शैल जी। मेरी बात किसी और को नहीं कहनी है। केवल आपको ही यह बात बतानी है।”
“तो कहिए। मैं सज्ज हूँ, सुनने के लिए।”
“आज से लगभग आठ वर्ष पूर्व की बात है। गंगटोक में विश्व के बड़े बड़े शिल्पकार का मिलन हुआ था। वहाँ अनेक शिल्पकारों ने अपनी अपनी श्रेष्ठ रचनाओं को प्रदर्शित किया था। मैं भी उसमें उपस्थित थी। प्रदर्शनी में उत्तम से उत्तम शिल्प प्रस्तुत हुए थे। प्रत्येक शिल्प अपने में अनूठा था। किन्तु एक शिल्प ने सभी को आकर्षित किया था, अचंभित किया था। प्रत्येक शिल्पकार उस शिल्प को देखकर स्वयं के शिल्प को कनिष्ठ मानने लगा था। प्रदर्शनी के तीसरे दिन जब सर्वश्रेष्ठ रचना का चयन करना था तब सभी शिल्पकारों ने एक मत से उस शिल्प को ही चुना।”
“ठीक है। कोई विशेष बात रही होगी उस शिल्प में। किन्तु मेरी रुचि कभी शिल्प में नहीं रही।”

“यदि आप उस शिल्प को देखते तो पुलिस अधिकारी होने के कारण आपकी रुचि सभी शिल्पकारों से भी अधिक होती। और यदि आप उसे आज देखोगे तो निश्चय ही आप शिल्प में भी, शिल्पकार में भी रुचि रखने लगोगे।”
“विस्तार से कहो, स्पष्ट कहो।”
“प्रथम किसके विषय में कहूँ? शिल्प या शिल्पकार?”
“शिल्प के विषय में ही कहो। आवश्यक हुआ तो शिल्पकार का स्मरण कर लेंगे।”
“वह शिल्प आज से आठ वर्ष पूर्व बनाया गया था। वह शिल्प में एक नदी, जिसका नाम सतलज है, थी। नदी भारत की सीमा से पाकिस्तान की सीमा में प्रवेश करती थी। उस नदी पर एक उल्टा शव बनाया गया था। वह शव भी आधा भारत की सीमा में था, आधा पाकिस्तान की सीमा में।”
“क्या? यह तो .. ?”
“यही सत्य है। जो दृश्य आपने संचार माध्यमों में प्रसारित किए थे वह दृश्य एक शिल्पकार ने आज से आठ वर्ष पूर्व अपने शिल्प से रच डाला है।”
शैल कुछ क्षण रुका, विचार करने लगा। एक गहन सांस लेकर वह बोला, “आप किस आधार पर कह सकते हो कि शिल्प की वह नदी सतलज ही थी? अन्य नदी भी हो सकती है न? और वह भारत से पाकिस्तान की सीमा में प्रवेश कर रही थी?”
“यह मैं नहीं कह रही हूँ। वह तो स्वयं शिल्पकार ने अपने शिल्प में स्पष्ट रूप से दर्शाया है। नदी का नाम, देश के नाम लिखे हैं। स्पष्ट रूप से दोनों देशों की सीमा रेखा भी दिखाई है।”
“तो उस उलटे पड़े शव का भी नाम लिखा ही होगा। क्या नाम लिखा था?”
“बस यही उसने नहीं दर्शाया।”
“तुम सत्य कह रही हो? क्या ऐसा ही हुआ था?”
“शत प्रतिशत सत्य।”
“इसका अर्थ है कि उस शिल्पकार ने आज से आठ वर्ष पूर्व ऐसी घटना को मूर्त रूप दे दिया था जो तब घटी ही नहीं थी। अर्थात वह शिल्पकार .... !” शैल रुक गया। विचार में व्यस्त हो गया। उसने एक तीव्र दृष्टि येला की आँखों में डाली। येला उससे विचलित नहीं हुई।

‘इसका अर्थ है कि येला सत्य कह रही है। यदि यह सत्य है तो इस मंजूषा में यह प्रथम महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह सूचना इस मंजूषा को उपयुक्त दिशा दे सकती है। उस शिल्पकार से मिलना पड़ेगा। शीघ्र ही मिलना चाहिए।’

“येला, तुम उस शिल्पकार को जानती हो? क्या नाम है उसका? कहाँ रहता है वह? किस देश से आया था? मुझे उस शिल्पकार के विषय में सबकुछ बताओ।”

“उसका नाम वत्सर है। वह भारतीय है। मैं उसे जानती हूँ। मेरे पास उसके घर का पता है।”

“भारतीय है? यह तो उत्तम बात है। क्या तुम मुझे उस शिल्पकार तक पहुँचा सकती हो? क्या नाम बताया?”

“वत्सर। मैं आपको अवश्य ले जाऊँगी। बोलो कब चलना है?”

“आज ही। अभी चलें?”

“चलो।”

“किन्तु जाना कहाँ है?”

“हमें केरल जाना होगा। वह केरल के किसी छोटे से ग्राम में रहता है जो तिरुवनंतपुरम से पचीस किलो मीटर के अंतर पर स्थित है।”

“केरल में?”

“हाँ। कोई समस्या है क्या?”

[7]

शैल ने कुछ समय विचार किया। मन में योजना बनाई पश्चात उसने फोन लगाया।
“महाशय, मुझे किसी पारिवारिक कार्य से सात दिनों के लिए अवकाश चाहिए।”
“शैल, यह समय अवकाश देना संभव नहीं है। तुम जानते हो वह सीमा वाली घटना में अभी तक कुछ भी प्रगति नहीं हुई है। उपर से पाकिस्तानी इन्स्पेक्टर सारा उलफ़त भी यहाँ आ गई है। यदि तुम अवकाश पर चले जाओगे तो सारा के हाथ में सब कुछ चला जाएगा। मैं नहीं चाहता कि इस मंजूषा में कोई विदेशी नेतृत्व करे, विशेष रूप से कोई पाकिस्तानी। तुम सारा से मिले? कैसी है वह?”
“नहीं, अभी तक तो नहीं मिला। उसे बाहर बिठाया है। मुझसे मिलने वह अधीर है। किन्तु मैंने उसे अभी कोई महत्व नहीं दिया है।”
“एक काम करो, उसे अभी इस जांच से जोड़ना नहीं। तुम अवकाश पर से लौट आओ तब उसे तुम्हारे दल में जोड़ लेना। तब तक उसे भी अवकाश पर भेज दो अथवा कहीं अन्यत्र व्यस्त रखो। स्मरण रहे, तुम्हारी अनुपस्थिति में वह इस मंजूषा के एक भी पक्ष से परिचित नया हो।”
“वैसा ही होगा। अवकाश स्वीकृत करने के लिए धन्यवाद।”
“ठीक है। किन्तु सचेत रहना।”

“जी।” शैल ने फोन सम्पन्न किया।

येला कि तरफ मुड़ा, “चलो। हमें अभी ही निकलना होगा। क्या तुम सज्ज हो?”

“जी। किन्तु कैसे जाएंगे केरल तक? यहाँ से लंबे अंतर पर है वह।”

“हवाई यात्रा से। आज रात्री को अथवा कल प्रभात में जो भी हवाई जहाज उपलब्ध होगा हमें चलना होगा। ठीक है?”

“कब तक लौटेंगे?”

“मैं नहीं जानता।”

“किन्तु ..?”

“यदि तुम नहीं आना चाहती हो तो कोई बात नहीं। मैं अकेला .. ।”

“नहीं, नहीं। ऐसी बात नहीं है।”

“यदि अधिक समय लगे तो तुम लौट जाना।”

“ठीक ह”

“अब मैं जो कहूँ उसे ध्यान से सुनना। यह हमारे दोनों के अतिरिक्त किसी को पता न चले कि हम केरल जा रहे हैं, क्यों जा रहे हैं। मैंने सात दिनों का अवकाश लिया है और कहा है कि पारिवारिक कार्य है। दूसरा, बाहर एक स्त्री तुम्हारे समीप बैठी थी उससे जानती हो?”

“नहीं।”

“वह पाकिस्तान की इन्स्पेक्टर सारा उकफ़त है। इस मंजूषा की जांच में वह भी अब हमारे साथ जुड़ेगी। किन्तु अभी उसे इससे दूर रखना है। जब मैं केरल से लौट आऊँगा तब उसे जांच में जोड़ूँगा। अभी वह मुझसे मिलना चाहती है। मैं उसे औपचारिक रूप से मिलूँगा। मिलना तो पड़ेगा ही। किन्तु तुम्हें मेरे साथ एक नाटक में सहयोग करना पड़ेगा।”

“यदि नाटक का उदेश्य सकारात्मक होगा तो मैं अवश्य ही सहयोग दूँगी।”

“ऐसा ही होगा।”

“कहो, क्या करना होगा मुझे?”

“मैं तुम्हें सारा के समक्ष मेरी ‘स्त्री मित्र’ के रूप में प्रस्तुत करूंगा। और कहूँगा कि तुम्हारे साथ मुझे कहीं जाना होगा इसलिए सात दिन तक मैं अवकाश पर रहूँगा। लौटने के पश्चात जांच पुन: प्रारंभ होगी। क्या तुम इतना सहयोग डोंगी?”

"यदि कुछ समय तक ऐसा नाटक करना हो तो मुझे तुम्हारी स्त्री मित्र बनना स्वीकार्य है।"
"धन्यवाद। किन्तु मैंने तुम्हारे विषय में तो कुछ पूछा ही नहीं। अपना परिचय भी नहीं दिया तुमने?"
"तुम्हारी स्त्री मित्र हूँ और परिचय क्या चाहिए? बाकी सब केरल की यात्रा में परिचय कर लेना।" येला हंस पड़ी। शैल भी।
"आओ मेरे साथ।" शैल खड़ा हुआ। येला भी। दोनों द्वार खोलकर बाहर आए। सारा और विजेंदर उन दोनों को देखकर खड़े हो गए। दोनों की आँखों में कुछ प्रश्न थे जिनके उत्तर देना शैल को आवश्यक नहीं लगा।
"विजेंदर, मैं और येला दोनों कहीं जा रहे हैं। सात दिन के अवकाश पर।" विजेंदर के मुख पर अनेक नए प्रश्न आ गए। शैल ने उसे वहीं छोड़ दिए। सारा की तरफ मुडा, "सारा जी नमस्ते। आपका भारत में स्वागत है। हम साथ मिलकर उस रहस्य से जवनिका हटा देंगे।"
"जवनिका? क्या होता है यह?"
"पर्दा। जवनिका का अर्थ है पर्दा। हम उस रहस्य से पर्दा हटाकर ही रहेंगे। क्या आपका सहयोग मिलेगा?"
"इसी कारण तो मैं यहाँ आई हूँ। किन्तु आप तो अवकाश पर जा रहे हो?"
"हाँ। जाना पड रहा है। इनसे मिलिये।" शैल येला की तरफ मुड़ा, "आप हैं येला स्टॉकर। मेरी स्त्री मित्र। येला, यह है सारा उलफ़त। सीनियर इन्स्पेक्टर, पाकिस्तान।"
येला और सारा ने परस्पर अभिवादन किया।
"तो चलें, येला?" शैल ने कहा और येला चलने लगी।
"शैल जी, सात दिनों तक मैं क्या करूं? मंजूषा से संबंधित जो भी प्रमाण है उसे देख लूँ?"
"सारा जी, यह सब तो राज के काम हैं। चलते रहेंगे। आप भारत में प्रथम बार आई हो ऐसा हमें सूचित किया गया है। तो भारत के आतिथ्य का अनुभव करें। मुझे विश्वास है कि आप निराश नहीं होंगी। सात दिनों की तो बात है। पश्चात हम पुन: काम पर लग जाएंगे। विजेंदर, सारा जी का ध्यान रखना। उसे किसी बात का कष्ट न हो।" शैल ने विजेंदर की तरफ देखा। विजेंदर ने संकेतों में उत्तर दिया। शैल और येला वहाँ से चल दिए।

~$~$
सारा दोनों को जाते हुए कुछ क्षण तक देखती रही। उसके मन में अनेक विचार आए और प्रवाहित होते हुए चले गए। उसे जब कुछ भी न सुझा तो उसने विजेंदर को देखा। वह अपने स्थान पर नहीं था। पूरे कक्ष में सारा अकेली थी। उसने कक्ष का निरीक्षण तो पहले ही कर लिया था अत: कक्ष में देखने के लिए कुछ शेष नहीं था। उसने विचार किया, 'मैं भाग जाती हूँ यहाँ से।' वह उठी और जाने लगी तब उसे ध्यान आया, 'मैं एक पुलिस अधिकारी हूँ। पुलिस कभी भागती नहीं है।' वह द्वार पर ही अटक गई।
तभी कहीं से विजेंदर प्रकट हो गए, "भाग जाने का विचार है क्या?"
"भागे मेरे दुश्मन।" कहते हुए सारा ने एक मोहक स्मित विजेंदर को दिया।
"आपके लिए इसी भवन में एक कक्ष की व्यवस्था कर दी गई है। आप जब तक हमारे अतिथि हैं, आप वहीं निवास करोगी। कक्ष में वह सब सुविधा उपलब्ध है जो सामान्य रूप से मनुष्य को आवश्यक होती है। यह है इस कक्ष की चाभी।" विजेंदर ने चाभी सारा के सामने धर दी।
"लगता है यह चाभी स्वयं ही मुझे उस कक्ष तक ले जाएगी।"
"आप व्यंग अच्छा कर लेती हैं।" विजेंदर ने सारा के मुख को देखा, "मैं आपको वहाँ तक ले जाता हूँ। चलिए मेरे साथ।"
दोनों कक्ष तक आ गए। मार्ग में विजेंदर ने भवन से परिचय करवा दिया। सारा का सामान विजेंदर ने उठा लिया, सारा के हाथों में केवल कक्ष की चाभी ही रही।
सारा ने कक्ष का द्वार खोला, दोनों भीतर प्रवेश कर गए।
"मैं अब चलता हूँ। कुछ चाहिए तो मुझे मेरे इस नंबर पर कॉल कर देना।" विजेंदर ने अपना नंबर दिया।
"ठीक है। और आप मेरा नंबर भी ले लीजिए। यह है मेरा नंबर।" विजेंदर ने उसे ले लिया।
वह चलने लगा तो सारा ने कहा, "विजेंदर जी, आप के सर शैल जी का नंबर मिल सकता है? कुछ काम पड जाए तो ..?"
"वैसे तो सर का नंबर किसी को नहीं दिया जाता किन्तु आप तो.., ठीक है। आप को दिया जा सकता है।" नंबर देकर विजेंदर वहाँ से चला गया।

[8]

सारा ने द्वार बंद कर दिया, गवाक्ष को खोल दिया। एक मंद समीर ने भीतर प्रवेश कर लिया और सारा को स्पर्श करता हुआ कक्ष में ही विलीन हो गया। हवाका स्पर्श सारा को अच्छा लगा। गवाक्ष से बाहर के दृश्यों को देखने लगी। दूर एक छोटी पहाड़ी थी। वहाँ कहीं कहीं से झरने की भांति पानी नीचे की तरफ बह रहा था। उससे एक ध्वनि उत्पन्न हो रहा था। सारा उसे ध्यान से सुनने लगी। उसे वह परिचित लगा।

'मेरे देश के झरनें भी यही ध्वनि सुनाते हैं। इसी प्रकार पहाड़ी से नीचे बहते हैं। ऐसा ही मनोहर दृश्य रचते हैं। यही सुगंध, यही समीर, यही सूरज। सब कुछ तो समान है। मेरे देश में तथा इनके देश में कौन सा अंतर है जो हम एक दूसरे के शत्रु बन बैठे हैं?'

'है, अंतर है।'

'कैसा अंतर?'

'मनुष्यों का अंतर, व्यवहार का अंतर।'

'वह कैसे?'

'जीतने सम्मान से विजेंदर ने मेरे साथ व्यवहार किया है ऐसा पाकिस्तान में किसी भारतीय महिला पुलिस से होता क्या? भारतीय छोड़ो, अपने पाकिस्तानी महिला पुलिस अधीकारी के रूप में मेरे साथ भी नहीं हो रहा है।'
अपने ही शब्दों ने सारा को चौंका दिया। उसे वह सब स्मरण होने लगा कि पाकिस्तान में उसके साथ कैसा व्यवहार हो रहा है। सीनियर भी, जूनियर भी बात बात पर अपमान कर देते हैं।'
'क्यों?'
'क्यों कि तुम एक स्त्री हो। तुम्हारे देश में स्त्री का मूल्य कुछ भी नहीं है। पद कितना भी ऊंचा हो, कोई महत्व नहीं रखता। यदि तुम स्त्री हो तो तुम किसी सम्मान की अपेक्षा नहीं कर सकते।'
'किसी अन्य के स्थान पर तुम्हें यहाँ भेजने में भी तुम्हारा अपमान ही हुआ है, सारा।'
'हाँ। जानती हूँ। कैसी कैसी दलीलें दी गई थी -
सारा अपने काम में सक्षम नहीं है।
सारा हमेशा कानून की बात करती है।
सारा ईमानदार है। ईमानदार पुलिस का पाकिस्तान में क्या काम?
सारा अपने मन की ही करती है। सिनीयर्स की नहीं सुनती है।
सारा में एक बात तो है, वह अभी भी जवान है। खूबसूरत भी है। उसे भारत भेज देते हैं। वह हमारे लिए काम करेगी। वहाँ के पुलिस तथा सेना के अधिकारियों को अपने मोह पाश में फँसाकर गुप्त सूचनाएं हमें देती रहेगी।'
'बस, यही एकमात्र मेरी औकात मानी गई और मुझे इसी योजना पर काम करने के लिए भारत भेज दिया।'
'खूबसूरत तो तुम हो ही, सारा।'
'खूबसूरत?' सारा ने स्वयं को दर्पण में देखा। ऊपर से नीचे तक देखा। प्रत्येक कोने से देखा।
'खूबसूरत तो हूँ। इसमें को संदेह नहीं है।'
'और जवानी?'
'अभी तक तो है। कब तक रहेगी, क्या पता?'
'तो फंसा दो शैल को।'

‘उसकी तो पहले से ही एक स्त्री मित्र है। वह भी विदेशी। जवान भी। मुझसे भी सुंदर। उसे फंसाना ..।”
‘विजेंदर भी तो है। हो सकता है उसकी कोई स्त्री मित्र ही ना हो।’
‘हो सकता है उसकी पत्नी हो।’
‘अपने स्वार्थ के लिए किसी के जीवन को अस्तव्यस्त करना ठीक नहीं है, सारा।’
‘किन्तु मेरा देश यही चाहता है।‘
‘यह देश भी तेरा ही है। तेरे दादा इसी देश में रहते थे। तेरे पिता का जन्म भी यहीं हुआ था।’
‘किन्तु अब यह देश मेरा नहीं है।’
‘अभी भी है, यदि तुम मानो तो।’
‘तो मैं क्या करूँ?’
‘जो तुम्हारी आत्मा तुम्हें कहे वह करो।’
‘पाकिस्तान में रहते हुए तो हमने हमारी आत्मा को ही मार डाला है।’
‘और भारत की हवा का स्पर्श होते ही वही आत्मा जाग गई है। क्या कहती है यह आत्मा?’
‘मैं कोई निर्णय नहीं कर सकती। मैं उसे समय पर छोड़ देती हूँ। समय ही मुझे मार्ग दिखाएगा।’
सारा विचार करते करते सो गई।

@#!   !@#
“येला। कहो, कैसे चलेंगें वत्सर के घर तक?”
“अर्थात?”
“बस, ट्रेन, हवाई जहाज अथवा टेकसी से?”
“मैं नहीं चल रही। तुम्हें अकेले ही जाना होगा। तुम्हारी इच्छा, तुम जैसे जाना चाहो जा सकते हो।”
“क्या? तुमने ही कहा था कि तुम मुझे वत्सर तक ले जाओगी?”
“मैंने जो कहा था उसका अर्थ होता है तुम्हें वत्सर का पता बताना, उसके शिल्प के विषय में बताना जो इस मंजूषा से जुड़ा हो ऐसा प्रतीत हो रहा है। मैंने कहीं नहीं कहा कि मैं तुम्हारे साथ चल रही हूँ।”

“येला। तुमने अभी तो मेरी स्त्री मित्र होना स्वीकारा था। और अब, अब क्या हुआ?”
“वह आपने मुझे कहा था कि एक नाटक में साथ देना, तो मैंने वही किया। आगे कुछ नहीं।”
“तो क्या तुम मेरी स्त्री मित्र नहीं हो?”
“नहीं। कभी नहीं।”
“आपके विश्वास पर तो मैं निकाल पड़ा हूँ अवकाश लेकर। और अब आप ही ..।”
“मैं पुलिस नहीं हूँ और ना ही ऐसे किसी कार्य में मेरी रुचि है। इससे अधिक मैं कोई सहयोग नहीं करनेवाली हूँ। कोई अपेक्षा भी नहीं रखना। मुझे चलना होगा। चलती हूँ। आपकी सफलता की कामना करती हूँ।”
“ओह। मैं भी आप पर विश्वास कर बैठ। बुद्धू हूँ मैं। अंतिम बार पूछता हूँ कि तुम मेरे साथ चलोगी?”
“और मैं अंतिम बार कह रही हूँ कि नहीं चलूँगी। राम, राम।”
येला चलने लगी। शैल उसे जाते देखते रहा। कुछ क्षण कुछ भी विचार किए बिना वह वहीं खड़ा रहा। येला के जाने के कुछ समय पश्चात वह जागृत हुआ। उसने घर कि तरफ पग उठाए। घर जाते ही उसने सभी वातायन खोल दिए। दूर गगन में देखता रहा, विचार करता रहा।
‘मैं भी मूर्ख हूँ। बिना कुछ विचार किए एक अज्ञात स्त्री की बात मानकर सात दिवस का अवकाश लेकर निकल पड़ा। मुझे ऐसी शीघ्रता नहीं करनी चाहिए थी।’
‘बड़े अधीर एवं उत्सुक थे येला के साथ जाने के लिए! तुमने तो उसे स्त्री मित्र भी बना लिया था।’
‘हाँ। वह मेरी भूल थी। किन्तु अब क्या? अब क्या करूँ? वत्सर को मिलूँ? वहाँ तक जाऊँ?’
‘नहीं जाओगे तो सात दिवस तक क्या करोगे?’
‘सारा के साथ मिलकर अन्वेषण आगे बढ़ाऊँगा।’
‘सारा के साथ? उससे तो भागकर, बचकर निकल लिए हो।’
‘तो? तुमने मुझे दुविधा में डाल दिया। अब यह सात दिन मैं क्या कर सकता हूँ? काम पर नहीं जा सकता। येला साथ नहीं चल रही।’
‘यदि यही सूचना किसी अन्य ने दी होती तब भी तुम यही आग्रह रखते कि वह व्यक्ति तुम्हारे साथ चलेगी तो ही तुम वत्सर के पास जाते?’

‘नहीं। मैं तब स्वयं ही चल जाता। विजेंदर को साथ लेता।’

‘तो ले लो विजेंदर को साथ।’

‘नहीं, अभी मैं ऐसा नहीं कर सकता।’

‘क्यों?’

‘क्यों कि मैं सब को कह चुका हूँ कि मैं येला, मेरी स्त्री मित्र येला, के साथ कहीं जा रहा हूँ।’

‘तो क्या हुआ? कह देना येला ने विश्वासघात किया।’

‘तब तो जग हँसाई होगी।’

‘वो तो होनी ही है।’

‘तो उससे बचने का उपाय क्या है?’

‘एक ही उपाय है, वत्सर के पास जाना।’

‘किन्तु ..?’

‘किन्तु के लिए कोई अवकाश नहीं है यहाँ, श्रीमान शैल।’

‘अर्थात मुझे जाना ही पड़ेगा? वह भी अकेले?’

‘और कोई विकल्प नहीं है।’

‘ठीक है।’

शैल ने निर्णय कर लिया। उसने यात्रा की टिकट करा ली। जाने की तैयारी करने में व्यस्त हो गया।

[9]

येला गंगटोक लौटने की तैयारी कर रही थी तब उसने समाचार में देखा कि किसी एक नगर में पुलिसवालों ने किसी निर्दोष को प्रताड़ित किया और उसका पूरा परिवार पुलिस की यातना से त्रस्त होकर नगर छोड़कर चला गया।

‘क्या पुलिस ऐसा भी कर सकती है?’

‘जो देखा वह सत्य देखा है।’

‘तो क्या शैल भी वत्सर को तथा उसके परिवार को इसी प्रकार से प्रताड़ित करेगा?’

‘पुलिसवाला है। कुछ भी कर सकता है।’

‘तो क्या मैंने वत्सर के विषय में तथा उसके शिल्प के विषय में शैल को बताकर भूल कर दी?’

‘वह तो समय आने पर ज्ञात होगा।’
‘मेरे कारण वत्सर को यातनाएं मिलेंगी यह तो मैंने कभी सोचा ही नहीं था।’
‘अब तो सोच लिया न?’
‘तो अब क्या कर सकती हूँ?’
‘किसी भी प्रकार से वत्सर को सूचित कर दो। उसे वहाँ से कहीं अज्ञात स्थल पर चले जाने को कह दो।’
‘यह ठीक रहेगा। मैं उसे सूचित कर देती हूँ।’
‘यह पुलिस का विषय हो गया है। अब सूचित करने पर भी वत्सर कुछ दिनों तक बच सकता है किन्तु पुलिस सदैव उसके पीछे पड़ी रहेगी। कब तक वह छुपकर रहेगा?’
‘तो क्या करूँ? उसे इतना तो सूचित कर सकती हूँ की वह सावध रहे और पुलिस से बातें करते समय किसी वकील को साथ रखे।’
‘यह अवश्य कर सकती हो।’
येला ने वत्सर को कॉल लगाया। संपर्क नहीं हो सका। उसने पुन: प्रयास किया। विफल। वह बार बार प्रयास करती रही, विफल होती रही।
‘कल पुन: प्रयास करूंगी।’ मन को आश्वासन देती हुई वह सो गई।
प्रात: होते ही वह अपनी गंगटोक यात्रा की सज्जता में व्यस्त हो गई। संध्या हो गई। यात्रा प्रारंभ करने का समय हो गया किन्तु वत्सर से संपर्क नहीं हो सका। वह बस स्थानक पहुंची। बस की प्रतीक्षा करने लगी। बस का समय हो गया किन्तु बस नहीं आई। उसने अधीर होकर पूछा तभी स्थानक वाले ने बताया कि वह बस आज की यात्रा के लिए निरस्त कर दी गई है। अब वह कल चलेगी। किसी ने ऐसा होने का कारण नहीं बताया। येला निराश हो गई।
उसने वत्सर से संपर्क करने का नूतन प्रयास किया। वह इस बार भी विफल रही। वह अधिक निराश हो गई, दुखी हो गई।
‘ना बस मिल रही है, ना ही वत्सर से संपर्क हो रहा है? नियति, तुम मुझे कौन सा संकेत दे रही हो?’ येला ने मन ही मन ईश्वर से प्रश्न किया। ईश्वर ने उसे उत्तर भी दिया। एक बस आई जो दिल्ली जा रही थी। येला ने उसे देखा, क्षणभर विचार किया और चड़ गई उस बस में।

'दिल्ली से मैं वत्सर के पास चली जाऊँगी। मेरा वहाँ जाना अति आवश्यक है। मुझे उसे शैल जैसे पुलिस से बचाना होगा। इस समय नियति कह रही है कि वत्सर के पास मेरा होना नितांत आवश्यक है।'
उसने वत्सर के पास जाने का निर्णय भी कर लिया, सज्जता भी कर ली।

@^& (*)
दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी [जे एन यु] के प्रोफेसर निहारिका के घर शिल्पकार सपन और निहारिका के मध्य गुप्त मिलन हो रहा था।
"वह सतलुज मृतदेह वाले केस में पाकिस्तान से इन्स्पेक्टर सारा भारत आ चुकी है। हमें उसे मिलणा होगा। उसे सारी बात बतानी होगी। और हो सके तो उसे गंगटोक लेकर चलेंगे।" सपन को निहारिका ने कहा।
"निहारिका, क्या योजना है? विस्तार से कहो।"
"तुम्हें गंगटोक वाली वह शिल्प प्रदर्शनी तो याद है न? जहां तुम भी थे मेरे साथ।"
"हाँ, मैं उसे कैसे भूल सकता हूँ? तुम्हारे साथ बिताई हुई वह प्रथम रंगीन रात्रियों को मैं कभी नहीं भूल सकता, निहारिका।"
"वह बात अब बहुत पुरानी हो चुकी है। उसके पश्चात तुम और मैं घाट घाट के पानी पी चुके हैं।"
"फिर भी वह रातें? ओ निहारिका। क्या आज वही बात होने जा रही है?" सपन निहारिका के समीप गया। निहारिका ने उसे वहीं रुकने का संकेत करते हुए कहा, "नहीं। आज नहीं। फिर कभी देखेंगे। अभी उसे भूल कर मेरी बात पर ध्यान दो।"
सपन रुक गया, "कहो, क्या है?"
"उस प्रदर्शनी में जो शिल्प को प्रथम इनाम मिला था वह शिल्प याद है?"
"हाँ, क्यों नहीं?"
"कहो, क्या था वह शिल्प?"

“सतलुज नदी के मध्य, भारत पाकिस्तान सीमा में एक मृतदेह, आधा भारत में, आधा पाकिस्तान में। ओह, अरे यह तो वही शिल्प है जो घटना आज कल टीवी पर दिखाई जा रही है।”
“वह शिल्प के विषय में सारा को बताना होगा। सारा, वही पाकिस्तान से आई इन्स्पेक्टर। जो इस केस में भारत की पुलिस के साथ काम करने आई है।”
“इससे क्या होगा?”
“सारा उस शिल्प के आधार पर उस केस को सॉल्व कर देगी जब कि भारत की पुलिस नहीं कर पाएगी। सोचो अगर ऐसा हुआ तो भारत की पुलिस की कैसी बदनामी होगी? पाकिस्तान की जयजयकार होगी।”
“फिर?”
“फिर हमारा टूलकित काम करने लगेगा। टीवी पर हमारे लोग भारत सरकार पर लांछन लगाते जाएंगे। भारत सरकार के प्रवक्ता उसका जवाब देते देते थक जाएंगे।”
“वह वह। यह तो बड़ा मजा देनेवाली बात है। कहो कैसे इसपर कार्य करना है?”
निहारिका ने सपन को सारी योजना बताई। अनेक लोगों का फोन पर संपर्क किया गया। सभी को अपनी अपनी भूमिका बता दी गई। सभी को अपना अपना दायित्व सौंप दिया गया।
“अब सब कुछ निश्चित हो गया। बस अब देखते जाओ।”
निहारिका ने घड़ी देखि। रात्री के दो बज रहे थे।
“सब योजना तैयार हो गई। अब मैं चलता हूँ।”
“कहाँ चले?”
“घर।“
“क्यों? घर कौन प्रतीक्षा कर रहा है?” निहारिका ने व्यंग स्मित के साथ पूछा।
“कोई नहीं।” वही स्मित के साथ सपन ने उत्तर दिया।
“तो चलो, इस योजना बनाने का उत्सव मानते हैं।”
दोनों एक दुसरे के समीप गए, एक दूसरे को समर्पित हो गए। दिल्ली का गगन काले बदल की छाया से ढँक गया।

[10]

प्रात: होते ही सारा खुली हवा में कुछ समय तक घूमने चली गई। प्रभात की वेला में उसे भारत की हवा में अधिक प्रसन्नता का अनुभव होने लगा।

‘कितनी शांति है यहाँ? कितना सुकून है यहाँ! यहाँ की सवार में कुछ तो है। जो मेरे देश की हवा से भिन्न है। क्या है?’
‘सूरज अभी अभी निकला है। किन्तु सूरज निकलने से आज मुझे चिंता क्यों नहीं हो रही? क्यों मन इतना शांत है?
यदि इस समय पाकिस्तान में होती तो?’
‘तो मन में आशंका रहती कि आज फिर कौन सी नई बात पर मुझे मेरे वरीशठों द्वारा प्रताड़ित किया जाएगा। मैं उससे कैसे लड़ूँगी? फिर से मैं रो पड़ूँगी। फिर से मुझे ताने सुनने पड़ेंगे। फिर से मेरा मजाक बनाया जाएगा। फिर से मुझे जलील किया जाएगा।’
‘और? और वह सब मेरी इस दशा पर मजे लेंगे, हँसेंगे। अट्टहास करेंगे। और मैं नि:सहाय सब कुछ सहती रहूँगी। रोती रहूँगी।’
‘आज तो ऐसा नहीं होनेवाला है तो क्यों तुम ऐसी बातों से मन को दु:खी कर रही हो? उसे छोड़ कर आज क्या करना है वह सोच, सारा।’
सारा का मन उत्साह से, चेतन से भर गया। उसने प्रभात के प्रत्येक क्षण का आनंद लिया और कक्ष में लौट गई। सज्ज होकर कार्यालय आ गई। वहाँ विजेंदर था। उसने सारा का स्मित से स्वागत किया। सारा को अच्छा लगा। आज प्रथम वार किसी ने स्वागत किया है, किसी ने स्मित के साथ स्वागत किया है। उसने भी विजेंदर को प्रतिस्मित देकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की।
“विजेंदर जी, एक बात की आपसे अनुमति चाहिए।”
“कहिए। संभव होगा तो अवश्य मिलेगी।”
“मैं चाहती हूँ कि इस मंजूषा से जुड़े तथ्यों का मैं अभ्यास कर लूँ। जब तक शैल सर आएंगे, मैं भी पूरी घटना से परिचित हो जाऊँगी। तो क्या मैं वह सब देख सकती हूँ?”
“मेरी अनुमति से काम होनेवाला नहीं है।”
“तो? ऐसा क्यों?”
“वह कक्ष क्रमांक सत्रह देख रही हो?” विजेंदर ने उस कक्ष की तरफ संकेत किया। सारा ने उसे देखा।
“हाँ।”

“सारे तथ्य, सारी फ़ाइलें, सारे प्रमाण जो कुछ भी है वह सब उस कक्ष में बंद हैं।”
“तो मैं उस कक्ष में जाकर सब देख लेती हूँ।”
“ऐसा नहीं हो सकता। क्यों कि वह कक्ष को ताला लगा है और उसकी चाभी केवल शैल सर के पास है।”
“और शैल तो सात दिनों के लिए अवकाश पर है।”
“जी, बिल्कुल सत्य कहा आपने।”
“तो इतने दिनों तक मैं क्या करूँ? कुछ किए बिना तो मैं पागल हो जाऊँगी।”
“जो लोग पागल होते हैं वही पुलिस में नौकरी करते हैं।”
“तो क्या आप भी?”
“कोई संदेह?” इस बात पर दोनों हंस पड़े।
“इतने दिनों तक मैं क्या कर सकती हूँ, विजेंदर जी?”
“विश्राम कीजिए, अपने कक्ष में। यहाँ की हवा का, यहाँ की पहाड़ियों का, यहाँ के भोजन का और हमारे भारत के आतिथ्य का आनंद उठाइए।”
“और क्या क्या है मेरे आनंद के लिए?”
“भारतीय संगीत, भारतीय फिल्में भी हैं।”
“अर्थात सब कुछ है किन्तु जिस काम के लिए मैं यहाँ आई हूँ वह ही नहीं ही।” सारा ने एक दीर्घ श्वास छोड़ते हुए कहा।
“मैं काम के प्रति आप की निष्ठा का सम्मान करता हूँ। आप पाकिस्तान के अन्य पुलिस अधिलरियों से भिन्न हैं।”
“आपका संकेत कहीं सुल्तान की तरफ तो नहीं?” विजेंदर ने स्मित से उत्तर दिया। सारा ने उस उत्तर का अर्थ निकाल लिया।
“ठीक है। यदि मेरे पास कोई काम नहीं है तो क्या मैं भारत में कहीं घूमना चाहती हूँ तो घूम सकती हूँ?”
“इस नगर से बाहर जाने के लिए आपको अनुमति लेनी होगी।”
“वह कैसे मिलेगी?”

“वह आप मुझ पर छोड़ दीजिए।” विजेंदर ने दो पन्नों का एक फॉर्म निकाला और सारा के सामने धर दिया,
“इसे भरकर मुझे दे दीजिए। मैं आगे की कार्यवाही कर दूंगा।”
सारा ने फॉर्म को देखा। सोचा, ‘मैं कहाँ जाना चाहती हूँ? क्यों? कुछ भी तो नहीं जानती और विजेंदर ने तो मेरे सामने फॉर्म ही रख दिया। अब मैं क्या करूँ?’
‘सारा जी। इसे ले लीजिए। भरकर दे दीजिए।”
सारा की विचार तंद्रा भंग हुई।
“जी। धन्यवाद आपका, विजेंदर भाईजान।”
“भाई। केवल भाई। जान नहीं।”
“पर हम तो भाईजान ही कहते हैं।”
“आपके देश में भाई तथा जान में कोई अंतर नहीं होता। भाई को आप कब जान बना देती हो कोई नहीं जानता। हमारे यहाँ भाई भाई ही रहता है, कभी जान नहीं बनता। और मैं भाई बनकर ही रहना चाहता हूँ।”
“अरे, आप तो नाराज हो गए। मेरा कहने का अर्थ ..।”
“जो भी हो, मेरे कहने का अर्थ मैंने स्पष्ट कर दिया है। कोई संशय है इस विषय में?”
“नहीं।” सारा ने कहा और फॉर्म लेकर चली गई।

+_+_+_+_

सारा कक्ष में लौट गई।
‘विजेंदर ने जो बातें कही वह दोनों बातों से मेरा मन उद्विग्न हो गया है।
एक, शैल के आने तक उस कक्ष में वह प्रवेश ही नहीं कर सकती। कोई काम भी नहीं कर सकती।
दूसरी, भाई और भाईजान का अंतर उसने स्पष्ट कर दिया है। अत: अब मैं विजेंदर को भी हनी ट्रैप में फंसा नहीं सकती।’
‘तो क्या तुमने अपनि योजना पर काम करने का निश्चय कर ही लिया है?’

‘अभी मैं कोई निर्णय नहीं कर रही हूँ।’

‘तो यह क्या था?’

‘मैं तो केवल संभावनाओं को देख रही थी।’

‘वह तो समाप्त हो गई।’

‘कैसे?’

‘प्रथम शैल और अब विजेंदर। दोनों हाथ आने वाले नहीं लगते हैं।’

‘कोई और संभावना देखूँगी।’

‘अर्थात तुम वह काम तो करोगी ही?’

‘मैं नहीं जानती। मैंने उसे समय पर छोड़ दिया है।’

‘जो भी करो, सोच समझ कर करना। यह भारत है, पाकिस्तान नहीं।’

‘जी।’

[11]

रात्री के भोजन के उपरांत सारा सोने के लिए सज्ज हो रही थी तभी उसके द्वार को किसी ने खटखटाया। सारा चौंक गई, सावध हो गई।

‘इस समय? मेरे पास कौन आ सकता है? मैं तो किसी को जानती नहीं हूँ। विजेंदर तो ऐसे आ नहीं सकता। तो कौन होगा?’

आगंतुक ने पुन: द्वार खटखटाया। सारा ने अपनी रिवॉल्वर संभाली।

“कौन है?”

कोई उत्तर नहीं आया।

“किसका काम है?”

“हमें सारा उलफ़त से मिलना है।” किसी स्त्री का स्वर सारा ने सुना।

“क्यों? इस समय?”

“आप चिंता न करें। हम आपके दोस्त हैं, दुश्मन नहीं। आपको हमसे कोई भय नहीं है।”

“आप हैं कौन?”

“सब कुछ बता दूँगी। आप पहले दरवाजा तो खोलिए। मैं आपको कोई हानी नहीं पहुंचाऊँगी। मेरा विश्वास कर सकती हो, सारा।”

उस स्वर ने सारा को विश्वास करने के लिए मना लिया। उसने द्वार खोल दिया।

द्वार पर एक स्त्री तथा एक पुरुष थे।

“आपने नहीं बताया कि आपके साथ कोई पुरुष भी है।”

सारा के इस प्रश्न का उत्तर दिए बिना ही दोनों ने सारा के कक्ष में प्रवेश कर लिया। सारा असहाय सी उसे देखती रही और वह दोनों ने कुर्सियों पर आसन ग्रहण कर लिए।

“सारा, बैठो ना।” सारा बैठ गई।

सारा ने प्रथम उस स्त्री को देखा। वह एक ही रंग, काले रंग, की साड़ी में थी। साड़ी सुंदर तरीके से पहनी हुई थी। बाल खुले थे। आँखों में गाढ़ा काजल लगाया हुआ था। ललाट पर गोल बड़ी बिंदी काले रंग की लगाई हुई थी। होंठों पर हल्की सी लिपस्टिक थी।
पुरुष ने कुर्ता तथा जींस पहना हुआ था। बाल लंबे थे। आँखों में कुछ नशा सा था। किसी कलाकार जैसा लग रहा था।
“सारा जी। भारत में आपका स्वागत है।” पुरुष ने कहा।
“किन्तु आप लोग हैं कौन?”
“हम आपके हितेच्छु हैं।”
“अपना अपना परिचय दें।”
“आप हैं प्रोफेसर निहारिका।”
“और आप हैं शिल्पकार सपन।”
“आप दोनों मुझसे क्या चाहत रखते हो?”
“हमने कहा ना कि हम आपके हितैषी हैं।”
“वह कैसे?”
“हम आपको एक ऐसी बात बताने आए हैं जिसे जानकार आप जिस घटना का अन्वेषण करने के लिए पाकिस्तान से यहाँ आई हो उस घटना पर से रहस्य हट जाएगा और आप उस रहस्य को शीघ्र ही पा लोगे।”
“उससे क्या होगा?”
“जो काम भारत के पुरुष अधिकारी नहीं कर पाएंगे वह काम आप एक दो दिन में कर लोगी तो सोचो कि कितना बड़ा ;आभ होगा आपको?”
“और उससे आपको क्या लाभ?”
“भारत की पुलिस की विफलता और पाकिस्तानी स्त्री की सफलता का हम पूरा लाभ उठायेंगे। भारत को विश्व स्तर पर बदनाम करने का हमें अवसर मिल जाएगा। इस प्रकार हम सरकार को घेरेंगे। जनता के बीच उसके विरुद्धध प्रचार करेंगे। सोचो ऐसे में सरकार कितनी शर्मनाक स्थिति में आ जाएगी!”
“किन्तु यह सरकार तो आम जनता की लोकप्रिय सरकार है।”

“यही तो। हम उसकी लोकप्रियता को घटाने का प्रयास कर रहे हैं।”
“क्यों?”
“यदि ऐसा करते रहेंगे तो आनेवाले चुनाव में हम उसे हरा सकते हैं।”
“सारा, इसमें तुम्हारा भी लाभ है। तुम जब अपने देश जाओगी तब तुम्हारे साथी, जो तुमसे अनुचित व्यवहार कर रहे हैं, भी तुम्हारी सफलता पर तुम्हें प्रताड़ित नहीं करेंगे, उल्टा तुम्हारी प्रशंसा करेंगे।”
“क्या तुम ऐसा नहीं चाहती कि तुम्हारा सम्मान हो? साथी पुलिस अधिकारी तुम्हें सम्मान दे?”
“हाँ। मैं ऐसा अवश्य चाहती हूँ। किन्तु यह कहो कि मैं आप दोनों पर भरोसा क्यों करूँ?”
“क्यों नहीं कर सकती?”
“मैं किसी अज्ञात व्यक्तियों पर भरोसा नहीं कर सकती, विशेष रूप से जब वह दुश्मन देश भारत से हो।”
“हम आपको विश्वास दिलाते हैं। आप हमारा विश्वास कर सकती हो।”
“वह कैसे?”
“हम भारत के वामपंथी हैं।”
“हम सेकुलर हैं।”
“हम नास्तिक हैं।”
“हम बुद्धिजीवी हैं।”
“हम कलाकार हैं।”
“हम अवॉर्ड वापसी गैंग के सदस्य हैं।”
“और सबसे महत्वपूर्ण बात, हम jnu, जे एन यू से हैं।”
“क्या अब भी आप हमारा विश्वास नहीं कर सकती?”
“अब जब आपमें इतने सारे गुण हैं तो मुझे आप पर कोई संदेह करने का कारण नहीं है।”
“आपका धन्यवाद। सारा जी।”
“कहिए, क्या योजना है?”

[12]

“देश की सीमा पर यह जो घटना घटी है वह वास्तव में तो आज कल नहीं घटी है।”
“क्या मतलब है आपका? आज नहीं घटी है तो कब घटी है?”
“आज से आठ वर्ष पूर्व ही यह घट चुकी है।”
“ओह। ऐसा है क्या?”
“बिल्कुल ऐसा ही है।”
“कब? कहाँ? कैसे? इस घटना के विषय में आप जो भी जानते हैं मुझे कहिए।”
“सब बताते हैं। इसीलिए तो हम आपके पास आए हैं।”
“आज से आठ वर्ष से थोड़ा अधिक समय हुआ होगा। तब यह घटना गंगटोक में घट चुकी है।”
“क्या बात करते हो? ऐसा कैसे हो सकता है?”
“सपन। तुम विस्तार से बताओ न सारा जी को। तुम उस समय वहीं तो थे।” निहारिका ने कहा।
“ठीक है। सुनो सारा जी। ध्यान से सुनना।” सपन कुछ क्षण रुका। सारा के मुख के भावों को देखा। उसे विश्वास हो गया कि सारा उसकी बातों में रुचि ले रही है। उसने कहा, “वह मार्च का महिना था। गंगटोक में विश्व के बड़े बड़े शिल्पकारों के शिल्प की प्रदर्शनी थी। मेरा शिल्प भी वहाँ प्रस्तुत था। एक से बढ़कर एक शिल्प वहाँ थे।”
सपन ने तथा निहारिका ने देखा कि सारा पर उनकी बातों का प्रभाव पड रहा है। उनकी योजना के अनुसार हो रहा है।
“किन्तु एक शिल्प सबसे अनूठा था, विचित्र भी था।”
“कौन स शिल्प था?”

“उस शिल्प में शिल्पकार ने एक नदी बनाई थी। नदी के ऊपर एक उल्टा मृतदेह बनाया था। मृतदेह के मध्य में नदी पर एक रेखा खींची थी। रेखा के एक तरफ जहां उस देह का नीचे का हिस्सा था वहाँ भारत लिखा था। जहां धड़ का भाग था वहाँ पाकिस्तान लिखा था।” सपन क्षण भर रुका। सारा को देखा। निहारिका को देखा। निहारिका ने संकेत किया कि तीर निशाने पर लग चुका है।
“क्या बात करते हो? ऐसा शिल्प बन सकता है?”
“मैं सत्य कह रहा हूँ। विश्व के सभी शिल्पकार भी मानते थे कि ऐसा शिल्प बनाना असंभव है। किन्तु ऐसा शिल्प वास्तव में बना था। सबके सम्मुख था। सब की आँखें उसे देख रही थी, मेरी भी। अत: विश्वास ना करने का प्रश्न ही नहीं है।”
“क्या उस नदी को उस शिल्पकार ने सतलुज नाम दिया था?”
“आप उचित दिशा में सोच रही हो। आपने उचित ही प्रश्न किया।”
“तो कहो क्या नाम रखा था उसने नदी का?”
“सतलुज। हाँ, यही नाम रखा था।”
“आप लोग कहीं मेरा मजाक तो नहीं कर रहे हो?”
“नहीं, कभी नहीं। हमने जो कुछ भी कहा सम्पूर्ण सत्य ही कहा है।”
“मुझे उस शिल्प को देखना है।”
“अवश्य देख सकती हैं आप। इसी लिए तो हम आयें हैं।”
“यह तो आठ वर्ष पहले का शिल्प है। अब वह कहाँ होगा?”
“इस शिल्प को मैं दो दिन पहले ही देखकर आया हूँ। और सीधा आपके पास आया हूँ।”
“तो मुझे ले चलो वहाँ।”
“सिक्किम की पहाड़ियों में एक शिल्प शाला है, उसे येला स्टॉकर नाम की एक प्रसिद्ध शिल्पकार चलाती है।
“क्यानाम बताया?”
“येला स्टॉकर।”
‘यह तो वही लड़की है जो शैल की स्त्री मित्र है। उसके साथ ही वह सात दिनों तक अवकाश पर गया है।’

“कहाँ खो गईं, सारा जी?”
“नहीं, नहीं। आप कहिए।”
“उस येला की शिल्प शाला में वह शिल्प आज भी सुरक्षित है। हम आपको वहाँ ले चलते हैं। आप सज्ज हो जाओ। कल प्रात: होते ही हम आपको ले चलेंगे।”
“कल? कल तो मैं नहीं आ सकती।”
“जब तक शैल अवकाश पर से लौटता नहीं तब तक आप के पास कोई काम ही नहीं है। और वह सात दिन के लिए अवकाश पर है। तो आप चल सकती हैं।”
“आपको कैसे पता चला यह सब?”
“आप उसमें ना पड़ें। बस यह जान लो कि प्रत्येक कार्यालय में कोई न कोई हमारे जैसा वामपंथी, सेक्युलर, नास्तिक, बुद्धिजीवी काम कर रहा है।”
“ठीक है। किन्तु आपको यह पता नहीं है कि मैं यहाँ विशेष वीजा पर आई हूँ। मुझे इस क्षेत्र को छोड़कर कहीं जाना हो तो अनुमति लेनी पड़ती है। मुझे वह सारी प्रक्रिया करनी पड़ेगी।”
“तो कर लो। समस्या क्या है। हम एक दो दिन के बाद जाएंगे।”
“किन्तु वहाँ जाने के लिए मुझे कोई ठोस कारण बताना पड़ेगा।”
“ओह। तब क्या करेंगें हम, निहारिका जी?”
निहारिका विचारने लगी। ‘कोई ठोस कारण ढूँढना पड़ेगा। हमने इस बात को कैसे भुला दिया? अब कोई कारण नहीं मिलेगा तो सारी योजना विफल हो जाएगी। क्या करें?’
सपन भी वही विचार करता रहा।
“आप लोग कारण ढूंढ लो। तब तक मैं आपके लिए कुछ खाने के लिए लाती हूँ।” सारा रसोईघर में चली गई।
सपन और निहारिका एकदूसरे को प्रश्न दृष्टि से देखने लगे। दोनों ने एकदूसरे को विफलता के संकेत दिए।
जब सारा खान-पान लेकर आई तब भी उनके पास कोई ठोस कारण नहीं था।
“आप दोनों कुछ खा पी लो। हो सकता है पेट में कुछ जाने के बाद कोई कारण सूझने लगे।”
दोनों खाने पीने लगे। जब वह हो गया तो निहारिका ने उपाय बताया।

“सिक्किम का एक लड़का है वकार नाम का। वह मेरा विद्यार्थी रह चुका है। वकार आपका कोई दुरका रिश्तेदार है। आप उसे मिलने जा रही हो”
“किन्तु मैं किसी वकार को नहीं जानती। न ही ऐसा मेरा कोई रिश्तेदार है।”
“हमें पता है। तुम्हें नए रिश्तेदार बनाने होंगें। तभी तो ..।”
“ठीक है मैं समझ गई। आज ही मुझे विजेंदर ने अनुमति फॉर्म दिया था। मैं कल ही अनुमति मांग लूँगी। जब मिल जाएगी तो हम चलेंगे।”
“आप वह हमें दे दें। बाकी हम सब कर देंगे। कल शाम तक आपको अनुमति मिल जाएगी।”
“कल ही? वह कैसे?”
“हमने कहा न कि भारत के प्रत्येक कार्यालय में हमारे जैसे कर्मचारी हैं।”
“ठीक है।” सारा ने वह फॉर्म निहारिका को दे दिया। अन्य आवश्यक दस्तावेज भी दिए। उसे लेकर दोनों विदा हो गए।
दूसरे दिन संध्या के समय सारा को सिक्किम जाने की अनुमति मिल गई। रात्री आठ बजे निहारिका सारा को लेने आ गई। वहाँ से दिल्ली होते हुए दूसरे दिन रात्री तक सपन, निहारिका एवं सारा सिक्किम में वकार के घर पहुँच गए।

[13]

त्रिवेंद्रम रेलवे स्टेशन पहुंचकर शैल ने वत्सर के गाँव तक की यात्रा टेक्सी से पूरी की। गाँव में उसने वत्सर का पता पूछा। एक बालक उसे समुद्र किनारे स्थित एक मंदिर के बाहर छोड़कर चल गया।

शैल मंदिर को देखने लगा।

‘इतने से छोटे गाँव में है किन्तु यह मंदिर कितना सुंदर है। मंदिर मुझे आकर्षित कर रहा है। इस मंदिर में कुछ खास बात है। मुझे..।’ शैल की विचार यात्रा को शंख की ध्वनि ने भंग किया।

‘यह ध्वनि तो मंदिर के भीतर से आ रही है। क्या यह समय आरती का है?’ दूर समुद्र में सूर्य अपनी आज की यात्रा सम्पन्न कर विलीन होने को उत्सुक हो रहा था। शैल ने घड़ी देखि। संध्या आरती का समय था वह।

‘मैं भीतर चलकर आरती के दर्शन करता हूँ।’

शैल भीतर गया। वह कृष्ण का मंदिर था। कृष्ण की मूर्ति को देखते ही शैल स्थिर हो गया। कृष्ण की एक अद्भुत मूर्ति थी उसके सम्मुख।

‘मैंने अनेक मंदिरों में अनेक भव्य मूर्ति के दर्शन किए हैं किन्तु यह मूर्ति कुछ विशेष है। लगभग सात फुट ऊंची, श्याम वर्ण कृष्ण, उसके हाथ में रही बाँसुरी, माथे पर मयूर पंख, पीला

पीताम्बर, शंख भी है और चक्र भी है। कृष्ण, तेरे इस रूप को मेरा वंदन।' शैल ने हाथ जोड़े, शीश झुकाया।
जब शैल ने शीश उठाकर कृष्ण को देखा तो अचंभित रह गया। कृष्ण के मुख पर एक दिव्य स्मित था।
'यह स्मित पहले देखा तब तो नहीं था। अब कहाँ से आ गया? क्या उसने मेरे लिए ही स्मित किया है?'
'यदि ऐसा है तो शैल तुम बड़े भाग्यशाली हो। कृष्ण का इस भुवन मोहिनी स्मित तो माता यशोदा जैसे किसी बड़भागी के भाग्य में ही होता है। यह मेरा सौभाग्य है। कृष्ण। तेरे इस अनुग्रह का मैं ऋणी हूँ।' शैल ने पुन: शीश झुकाया। आँखें बंद कर कृष्ण के उस मनोहर रूप को मन ही मन देखता रहा।
शैल ने जब आँखें खोली और कृष्ण को देखा तो उसके अधरों पर वह स्मित नहीं था।
'हे कृष्ण। यह तेरी कैसी माया है? मेरी समज से परे है। मैं तेरी शरण में हूँ।'
एक ब्राह्मण युवक ने आरती करना प्रारंभ किया। दो चार युवा ढोल, नगाड़ा, घंट आदि बजाने लगे। ब्राह्मण आरती करने लगा। शैल उस दिव्य क्षणों में खो गया।
आरती सम्पन्न हुई। उस ब्राह्मण ने कुछ मंत्रों का पठन किया। कृष्ण को वंदन किया और कृष्ण के हाथ में रही बाँसुरी को अपने हाथों में लेकर कृष्ण के सामने खडा होकर, आँखें बाद कर उसे बजाने लगा। बाँसुरी के उस सुर के उपरांत वहाँ कोई ध्वनि नहीं था, कोई स्वर नहीं था। सब कुछ शांत था। स्थिर था।
शैल भी शांत होकर उस धुन को सुनने लगा।
जब सूर्य की अंतिम किरण कृष्ण की मूर्ति पर पड़ी तब ब्राह्मण ने बाँसुरी को विराम दिया। तब शैल की समाधि भी सम्पन्न हुई। उसने आँखें खोली और धैर्य से उस ब्राह्मण युवक की क्रियाओं को देखने लगा। कुछ समय उपरांत वह अपने नित्य कर्म से निकृत्त हुआ तो शैल उसके पास गया।
"जय श्री कृष्ण।"
युवक ने उत्तर दिया, "श्री कृष्ण सबका कल्याण करे।"
"क्या आपका नाम वत्सर है?"

“जी। मैं ही वत्सर हूँ।”
“आपसे कुछ बातें करने को मन कर रहा है। क्या आप मुझे अपना समय देंगे?”
“अवश्य। आओ मेरे साथ।” वत्सर मंदिर से बाहर निकला। जहां से समुद्र दिखे ऐसी एक शीला पर बैठ गया।
“आइए। बैठिए।” वत्सर के संकेत पर दूसरी शीला पर शैल बैठ गया।
“मैं पंजाब पुलिस इन्स्पेक्टर शैल हूँ। कन्याकुमारी जा रहा था तभी किसी ने मुझे इस मंदिर के विषय में, आपके विषय में बताया तो यहाँ आने को मन उत्सुक हो गया। यहाँ चला आया।”
वत्सर ने स्मित दिया।
“मेरे मन में कुछ प्रश्न जागे हैं। आप कहो तो मैं पूछ लूँ?”
वत्सर ने मौन सम्मति दी।
“यह मंदिर अद्‌भुत है। मंदिर की ऐसी विशिष्ट रचना मैंने कभी नहीं देखि। इस मंदिर को किसने बनाया? कब बनाया?”
“और कोई प्रश्न?”
“कृष्ण की मूर्ति तो सबसे भिन्न है। कभी मैंने सात फुट की मूर्ति नहीं देखि।”
“और?”
“क्या सूर्य की अंतिम किरण सभी ऋतु में इसी प्रकार मंदिर के भीतर प्रवेश करती है?”
“और?”
“एक अंतिम प्रश्न। आप इस मंदिर के पुजारी हैं, ब्राह्मण हैं। तो इस छोटे से गाँव में मंदिर की पूजा से परिवार का पेट भर जाता है?”
“अपेक्षा है, सभी प्रश्न पूरे हो गए हैं।”
“अभी तो बस इतने ही हैं। आगे कोई प्रश्न होगा तो पूछ सकता हूँ?”
“अवश्य। जब तक आप के सभी प्रश्नों का समाधान नहीं हो जाता, आप प्रश्न पूछ सकते हो”

“आपके अंतिम प्रश्न के उत्तर से प्रारंभ करता हूँ। जन्म से नहीं किन्तु कर्म से मैं ब्राह्मण हूँ।”
“वह कैसे?”

“मेरे पिता कर्म से शूद्र हैं। किन्तु मुझे मेरे गुरु ने दीक्षित किया है और शास्त्रों का अध्ययन कर मैं गुरु कृपा से ब्राह्मणों के सभी कर्म कर रहा हूँ। यही कारण है कि ईश्वर की यह पूजा, आर्चना, आरती आदि कर्म करता हूँ। हाँ, इन कर्मों से पेट नहीं भरता क्यूँ कि मैं इन कर्मों के लिए कोई धन अथवा भेंट स्वीकार नहीं करता।”

“तो?”

“थोड़ी कुछ खेती है, उससे पेट भर जाता है।”

“अर्थात आप अयाचक ब्राह्मण हैं?”

वत्सर ने केवल स्मित किया।

“सूर्य की अंतिम किरण सभी ऋतु में इसी प्रकार ईश्वर को वंदन करती है पश्चात सूर्य अस्त हो जाता है।”

“यह तो बड़ी विशिष्ट बात है।”

“यह हमारी प्राचीन मंदिर रचना की कला के कारण होता है। हमारे मंदिरों की रचना में जो कला एवं विज्ञान का समन्वय है वह अद्‌वितीय है, अनूठा है।”

“यह तो असंभव सा प्रतीत होता है।”

“यदि आप इसका अनुभव करना चाहो तो आपको पूरा वर्ष यहाँ रुकना पड़ेगा। आप चाहो तो रुक सकते हो।”

“मन तो करता है किन्तु यह नौकरी!”

“सामान्य रूप से मंदिर में भगवान की मूर्तियाँ पाँच फुट के आसपास होती है। यह मूर्ति सात फुट की है उसका कोई विशेष कारण तो नहीं है। किन्तु जिस पत्थर से यह मूर्ति घड़ी गई है वह पत्थर ही इतना विशाल था तो मूर्ति भी स्वत: विशाल बन गई।

और यह मंदिर मैंने स्वयं अपनी मति अनुसार बनाया है। चार वर्ष की तपस्या के पश्चात यह संभव हो सका।” वत्सर क्षणभर रुका । आँख बंद कर समुद्र की ध्वनि को सुनने लगा। शैल ने प्रतीक्षा करना उचित समझा।

[14]

सूरज अब अस्त हो चुका था। पश्चिम आकाश अपना रंग बदल रहा था। शैल भी अपना रंग बदल रहा था।

वत्सर ने आँखें खोली तो शैल ने अपने मूल लक्ष्य की दिशा में बातें प्रारंभ की ।

“जब कोई सर्जक किसी रचना का सर्जन करता है तो केवल दो ही संभावनाएं होती हैं, श्रीमान सर्जक।”

शैल ने कहा।

“हो सकती है।” उसने कहा।

“वह तो मैं कह रहा हूँ। आप अपना कुछ कहोगे?”

“मैं आपके मत से सम्मत हूँ, मुझे बस यही कहना है।”

“बिना जाने इन दो संभावनाओं के विषय में आप सहमत हो गए श्रीमान सर्जक?”

उसने कोई प्रतिभाव नहीं दिया।
“बड़ी शीघ्रता है आपको मेरी बातों से सहमत होने की? प्रत्येक बात में ऐसे ही शीघ्रता से सहमत हो जाते हो क्या?”
उसने पुन: कोई प्रतिभाव नहीं दिया। किसी प्रतिमा की भांति स्थिर खड़ा रहा।
“श्रीमान सर्जक, आप न ही कोई उत्तर दे रहे हो न ही प्रतिभाव। अपने रचे हुए शिल्पों की भांति स्थिर क्यों खड़े हो? इतना संज्ञान तो होगा ही कि आप शिल्पकार अवश्य हो किन्तु शिल्प नहीं।” पुन: वह मौन ही रहा।
“मैं आप से कुछ कह रहा हूँ, आप से बातें कर रहा हूँ, कुछ पुछ रहा हूँ। और आप कुछ नहीं बोल रहे हो। आपका यह मौन आपके विरुद्ध जा सकता है, श्रीमान सर्जक।” क्षण भर शैल रुका। उसके मुख पर किसी भाव को खोजने का यत्न किया किन्तु उसका आनन शैल को भाव विहीन लगा। वहाँ केवल शून्यता का ही शैल ने अनुभव किया।
“श्रीमान सर्जक, नहीं, श्रीमान शिल्पकार। शिल्प ही रचते हो न तुम?”
“श्रीमान इन्स्पेक्टर, आपको जो कहना हो वह कहिए न। मेरे अनुमोदन की प्रतीक्षा क्यों करते हो? आप किसी दो संभावनाओं की बात कर रहे थे।”
“शैल नाम है मेरा। शैल स्वामी। इस समय मैं केवल शैल बनकर आपसे बात करना चाहता हूँ। मुझे आशा है आप मेरा सहयोग करेंगे तथा मुझे शैल से इन्स्पेक्टर शैल बनने के लिए विवश नहीं करोगे। मेरा सहयोग करोगे। यदि मेरे भीतर का इन्स्पेक्टर आपसे बात करने लगेगा तो उसका मूल्य ..।”
शैल ने शब्दों को अपूर्ण ही छोड़ दिया। शिल्पकार पर उन अपूर्ण शब्दों का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
शिल्पकार का धैर्य शैल को विचलित कर रहा था किन्तु शिल्पकार अविचल था।
“शिल्प रचते रचते, शिल्पों के साथ रहते रहते तुम भी शिल्प की भांति प्रस्तुत हो रहे हो, शिल्पकार।”
“आप बार बार क्या मुझे शिल्पकार के नाम से संबोधित कर रहे हो? और कभी कभी श्रीमान सर्जक भी कह रहे हो?”
“क्या यह दोनों नाम असत्य हैं? अनुचित हैं?”

“कोई भी सर्जक हो या शिल्पकार, उसका एक नाम होता है। इस सत्य को जानना उचित नहीं है इन्स्पेक्टर?”
“शैल नाम है मेरा। शैल स्वामी।”
“और वत्सर नाम है मेरा।”
“ओह। स्मरण कराने के लिए धन्यवाद। किन्तु यदि मैं तुम्हें शिल्पकार अथवा सर्जक कहूँ तो इसमें आपत्ति क्या है? क्या तुम सर्जक नहीं हो? क्या तुम शिल्पकार नहीं हो? श्रीमान वत्सर?”
“है, शत प्रातिशत आपत्ति है, श्रीमान शैल।”
“क्या है? क्यों है?”
“समय आने पर बता दूंगा। तुम भी तो इंस्पेक्टर हो। तुम्हें इन्स्पेक्टर कहूँ तो तुम्हें क्यों आपत्ति हो रही है?’’
“यदि मैं इन्स्पेक्टर बन गया तो तुम्हें आपत्ति ही आपत्ति हो जाएगी।”
“और यदि मैं सर्जक अथवा शिल्पकार बन गया तो तुम्हें अधिक आपत्ति होगी इस बात का स्मरण रखना।”
“तुम मुझे भय दिखा रहे हो।”
“भयाक्रांत करने का प्रारंभ मैंने तो नहीं किया।”
“तुम कहना क्या चाहते हो? बात को उलझा क्यों रहे हो?”
“स्पष्ट सुन लो, स्पष्ट समज भी लो। यदि तुम मुझे कुछ कहना चाहते हो तो मुझे मेरे नाम से ही संबोधित करोगे। यदि किसी प्रमाद में अथवा किसी दोष से भी मुझे तुमने सर्जक अथवा शिल्पकार से संबोधित किया या ऐसी चेष्टा की तो मैं कोई उत्तर, पतिक्रिया अथवा प्रतिभाव नहीं दूंगा।”
“ऐसा क्यों?”
“क्यों कि जब जब मैं शिल्पकार होता हूँ तब तब मैं मौन होता हूँ। तब पत्थर बोलते हैं। पत्थर के भीतर छिपी प्रतिमा मुझसे बात करती है। मैं उसे सुनता हूँ। मेरा पूरा ध्यान उसकी बातों पर होता है। वह जैसे जैसे कहती है मैं वैसे वैसे करता जाता हूँ। बिना कुछ कहे, बिना कुछ पूछे । उस समय मैं किसी भी बात को नहीं सुनता। न ही किसी वस्तु को देखता हूँ। इस प्रकार प्रतिमा स्वयं अपना अनावरण करवाती है। यह बात केवल मेरे लिए ही नहीं, किसी भी सर्जक के लिए

सत्य होती है। उस समय सभी सर्जक की यही अवस्था होती है। किसी भी सर्जक से बात करने का यह विवेक जितनी शीघ्रता से सिख लोगे उतना ही लाभ होगा, श्रीमान शैल जी।"
"चलो यह बात मैंने गांठ बांध ली। इसका कभी विस्मरण नहीं होगा।"
"इतनी सी बात स्वीकार करने के लिए धन्यवाद, श्रीमान शैल जी।"
"मैं मेरी बात कहूं उससे पुर्व दो बातें विशेष रूप से करनी है। एक, तुम मुझे शैल नाम से संबोधित करोगे। यह मेरा आग्रह है, वत्सर से।"
"स्वीकार्य है।"
"दूसरी बात, क्या मैं अपने प्रयासों से वत्सर नाम के अंतर्गत निहित किसी प्रतिमा का अनावरण कर सकूँगा?"
"यह तो तुम्हारे शिल्प कौशल्य पर निर्भर है जिससे इस समय तक तो मैं अनभिज्ञ ही हूँ।"
"मेरे कौशल्य की चिंता से तुम मुक्त रहो।"
"जैसी तुम्हारी मनसा।"
"तो मैं कह रहा था कि जब कोई सर्जक किसी रचना का सर्जन करता है तो केवल दो ही संभावनाएं हो सकती है, श्रीमान सर्जक।"
वत्सर ने शैल की आँखों में तीव्रता से देखा। शैल उस दृष्टि के भावों को शीघ्र ही समज गया।
"क्षमा, क्षमा करना। सर्जक नहीं वत्सर।"
वत्सर की दृष्टि कोमल हो गई।
"यदि तुम उनके विषय में बताना चाहते हो तो बता सकते हो, मैं पूछूँगा नहीं।"
"तथापि सुननी तो पड़ेगी ही।"
वत्सर निर्लेप रहा।
"एक, कोई भी सर्जन उसके सर्जक की कल्पना हो सकती है।" शैल कुछ घड़ी रुका। वत्सर के मुख पर कोई भाव को, किसी मुद्रा को खोजता रहा।
विफल।
वत्सर की सभी मुद्राएं स्थिर थीं। भाव शून्य थीं।
"दूसरी संभावना होती है कि सर्जक ने स्वयं कुछ ऐसा देखा हो, सुना हो, अनुभव किया हो।" शैल ने पुन: वत्सर के भावों को परखा । पुन: विफल।

“तो वत्सर, यह बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था उस समय कि तुमने उस शिल्प की रचना कर डाली? कहाँ है वह शिल्प?”
“तो, तुम्हारे यहाँ आने का मूल उद्देश्य कुछ भिन्न ही है।”
“मैं उस शिल्प के विषय में जानना चाहता हूँ।”
“जो शिल्प मैंने रचा है उसका तो तुम दर्शन कर चुके हो। उसके विषय में मैं बता भी चुका हूँ।” वत्सर ने कृष्ण की मूर्ति की तरफ संकेत किया।
“मैं इस शिल्प की बात नहीं कर रहा हूँ।”
“तो कौन से शिल्प की बात कर रहे हो?”
“आज से आठ वर्ष पूर्व गंगटोक की शिल्प प्रदर्शनी में जो शिल्प तुमने रखा था वह शिल्प।”
“वह शिल्प तो मैं वहीं छोड़कर आया हूँ।”
“और हत्या कर उसका मृतदेह सतलुज नदी में बहा आए हो?”
“हत्या? किसकी हत्या?”
“हर अपराधी अपराध करने के पश्चात अनभिज्ञ होने का नाटक करता है, तुम्हारी तरह।”
“मैंने किसी की हत्या नहीं की।”
“तो किसने की?”
“यह तो आप जानो। मुझे इस बात का कोई ज्ञान नहीं है।”
“पहले यह बताओ कि वह शिल्प कहाँ है? बाकी सब तुम स्वयं समझ जाओगे। कहाँ है वह शिल्प?”
“वह तो मेरे पास नहीं है।”
“तो कहाँ है?”
“मैं उसे किसी को दे चुका हूँ।”
“कौन है वह? कहाँ है वह?”
“उसका नाम येला है। और ..।”
वत्सर को सुनने का धैर्य खोते हुए शैल ने कहा, “और क्या? कहाँ है येला?”
वत्सर कुछ उत्तर दे उससे पूर्व ही येला ने कहा, “मैं यहाँ हूँ। श्रीमान शैल।”
“येला? तुम?” शैल और वत्सर एक साथ अचंभित होते हुए बोल पड़े।

[15]

“शैल, इस प्रकार किसी निर्दोष व्यक्ति को प्रताड़ित करना पुलिसवालों का स्वभाव होता है यह मैं जानती थी। इसीलिए मैं तुम्हारे पीछे पीछे आई। मैं नहीं चाहती कि वत्सर को कोई कठिनाई का सामना करना पड़े।”

“तो आपको मेरे विषय में येला ने सबकुछ बताया? तब तो उसने वह शिल्प कहाँ है वह भी बताया होगा।”

“नहीं। उसने नहीं बताया। ऊसने तो यह भी नहीं बताया कि वह कहाँ से आई थी।”
“अर्थात तुमने यह सुनने का धैर्य नहीं दिखाया। अभी जैसे बात बात पर अधीर हो रहे हो ऐसे अधीर ना होते तो येला अपने विषय में भी बताती। किन्तु आप तो पुलिसवाले हो न? आपसे धैर्य की अपेक्षा कैसी?”
“कहीं तुमने और येलाने मिलकर उस अज्ञात व्यक्ति की हत्या तो नहीं कर दी?” शैल ने अपनी रिवोल्वर निकालते हुए कहा।
“शैल, तुम अपनी सीमा का अतिक्रमण कर रहे हो।”
“मैं मेरा कार्य कर रहा हूँ।”
“बिना किसी प्रमाण के किसी पर भी झूठे अभियोग बना रहे हो। अपनी रिवॉल्वर दिखाकर भयभीत कर रहे हो।”
“शिल्पकार का शिल्प बनाना और उस शिल्प का तुम्हारे पास होना। इतने प्रमाण पर्याप्त है तुम दोनों को दोषी सिद्ध करने के लिए।”
“क्या तुम न्यायाधीश हो?”
“समय पर सब समझ जाओगी कि मैं क्या हूँ। मैं तुम दोनों का निग्रह [arrest] करता हूँ।”
“तुम ऐसा नहीं कर सकते। यह तुम्हारे अधिकार में नहीं है।“” येला ने आव्हान किया।
शैल आगे बढ़ा। वत्सर ने उसे रोक लिया।
“शैल। तुम बात क्या है यह मुझे बताओ। पश्चात तुम जो उचित हो वह करना। मैं नहीं रोकूँगा।” धैर्य से सुन रहे वत्सर ने कहा।
शैल ने पूरी घटना वत्सर को बताई। उसके पश्चात येला ने शिल्प की बात बताई वह भी कहा।
“शैल, आठ वर्ष पूर्व बनाए शिल्प से तुम कह रहे हो कि वत्सर ने किसी कि हत्या कर दी है?”
“हाँ। तुम ठीक समझ रही हो।”
“आठ वर्ष पूर्व की गई हत्या का मृतदेह आज आठ वर्ष के पश्चात मिल रहा है। इससे बड़ा आश्चर्य क्या होगा, शैल?”
“दो संभावनाएं है। एक, आठ वर्ष पूर्व हत्या कर दी हो और नदी में उसे अब बहा दिया गया हो।” येला और वत्सर के मुख पर कोई भाव परिवर्तन होता है या नहीं वह देखने के लिए शैल रुका। दोनों के मुख निर्लेप थे।

“दूसरी बात, हत्या कुछ दिन पूर्व ही की गई हो?” वह पुन: रुका। पुन: दोनों मुख निर्लेप।
“तो कहो, सत्य क्या है?”
“दोनों बातें असत्य है।” येला ने कहा।
“वह कैसे?”
“यदि आठ वर्ष पूर्व हत्या की गई है तो उस देह को इतने समय तक कैसे यथा स्थिति में रखा गया होगा? क्या कहता है आपका अन्वेषण?”
“कुछ रसायणों के उपयोग से यह संभव है।”
“संभावना की नहीं, तथ्यों की बात कहो।”
“अभी पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट नहीं आई है।”
“मृतदेह की स्थिति को देखकर आपको लगता है कि ऐसे रसायनों का प्रयोग हुआ होगा?”
“नहीं लगता।”
“तो प्रथम संभावना आपने ही निरस्त कर दी है, इन्स्पेक्टर शैल।”
“किन्तु दूसरी अभी भी ..।”
“वह भी निराधार है।”
“कैसे?”
“क्यों कि उस शिल्प प्रदर्शनी के पश्चात वत्सर इस गाँव में लौट आया है। अनंतर वह कभी भी इस गाँव से बाहर नहीं गया।”
“क्या तुम वत्सर की वकील हो?”
“समय आएगा तो वह भी बन जाऊँगी। किन्तु यह सत्य है कि वह कभी भी इस गाँव से बाहर नहीं गया।”
“यह बात तुम कैसे कह सकती हो?”
“तुमने इस मंदिर में आरती के पश्चात वत्सर को बाँसुरी बजाते हुए सुना था ना?”
“तुम बात को बदल रही हो, येला। बिना संबंध बात ना करो।”
“वही अधिरता! इस प्रकार तुम किसी रहस्य को नहीं जान सकोगे।”
“बाँसुरी के वादन का इस मंजूषा से क्या संबंध है?”
“पूरी बात सुनोगे तो समझोगे। धैर्य रखो। रख पाओगे?”

शैल ने स्मित से सम्मति प्रकट की।
“सिक्किम की पहाड़ियों में मैं शिल्प कार्य शाला चलाती हूँ। बारह वर्ष से देश विदेश के शिल्पकार वहाँ प्रशिक्षण ले रहे हैं। हम जिस शिल्प की बात कर रहे हैं वह शिल्प मेरी शाला में ही रखा गया है। सभी विद्यार्थी के लिए वह आदर्श शिल्प है। विश्व के प्रसिद्ध शिल्पकार केवल उस शिल्प को देखने के लिए वहाँ आते हैं। मैं सब को दिखाती हूँ। वह शिल्प मेरी प्रेरणा है।” येला रुकी। शैल धैर्य से उसे सुन रहा था। वह संतुष्ट हुई।
“उस शिल्प को श्रेष्ठ शिल्प घोषित किया गया। उस शिल्प को खरीदने के लिए बड़े बड़े शिल्पकार और व्यापारी उत्सुक थे। बड़ी बोलियाँ लगने लगी। वत्सर उसे बेचने के पक्ष में नहीं था तो उसने सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया।”
“यह बात कुछ अनूठी लग रही है। क्या कारण रहा था, वत्सर, कि तुमने उसे अच्छी कीमत मिलने पर भी नहीं बेचा?”
“कारण है येला, येला की यह बाँसुरी।”
“यह येला की बाँसुरी है?” शैल विस्मय से बोल पड़ा।
“ना केवल बाँसुरी, उस बाँसुरी से निकले सुर भी येला के ही हैं।”
विस्मय शैल के मुख पर विशाल हो गया।

[16]

“मैं बताती हूँ। उस प्रदर्शनी में मैंने अपना कोई शिल्प नहीं रखा था। किन्तु वहाँ मुझे सब के सम्मुख बाँसुरी बजाने का सौभाग्य मिला था। मेरी बाँसुरी सुनकर वत्सर मेरे पास आया था और कहने लगा ..
“क्या तुम मुझे बाँसुरी बजाना सीखा सकती हो?”

“अवश्य। किन्तु उसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। चुका पाओगे?” येला ने पहाड़ की तरफ देखते हुए कहा।
“यदि मेरे बस में होगी तो चुका दूंगा।”
“और नहीं हुई तो?”
“तो बाँसुरी को भूल जाऊंगा।”
“और बाँसुरीवाली को?”
“उसे नहीं भूलूँगा। कभी नहीं।”
“किंमत तो जान लो।”
“कहो।” वत्सर ने नि:श्वास के साथ कहा।
“मुझे तुम्हारा वह शिल्प देना पड़ेगा। स्वीकार्य है?”
“वह शिल्प?” वत्सर विचार में पड गया।
“क्यों, श्रीमान? किंमत दे पाओगे?”
“दी। वह शिल्प की मूर्ति दी। अब तो मुझे बाँसुरी सिखाओगी ना?”
“सीखने की तुम्हारी लगन देखकर मैं प्रसन्न हुई। मुझे कोई किंमत नहीं चाहिए। चलो मैं सिखाती हूँ।”
“अभी?”
“गुरु से ज्ञान लेने में शिष्यों को विलंब नहीं करना चाहिए। जब गुरु प्रस्तुत हो तो शीघ्र ही ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।”
“तुम तो मेरे देश की भाषा, मेरे देश की वाणी बोल रही हो।”
“हूँ तो विदेशी किन्तु अब भारत की हो गई हूँ। शिल्प सिखाती हूँ, बाँसुरी बजाती हूँ और भारत के ग्रंथों का अध्ययन भी करती हूँ।”
“तुम्हारा चरित्र अदभुत है। क्या नाम है तुम्हारा?”
“येला। येला स्टॉकर।”
“येला स्टॉकर।”
“चलो शिक्षा के लिए सज्ज हो जाओ।” येला वत्सर को बाँसुरी बजाना सिखाने लगी, वत्सर सीखने लगा।

कुछ दिन पश्चात वत्सर ने येला से कहा, “अब मैं मेरे गाँव लौट रहा हूँ। तुमने मुझे बाँसुरी सिखाई उसके लिए मैं तुम्हारा ऋणी रहूँगा।”
“तुम भी तो अच्छे शिष्य की भांति सिख गए हो।”
“यह शिष्य अपने गुरु को गुरु दक्षिणा देना चाहता है।”
“क्या दोगे?”
“वही जो गुरु ने मांग था।”
“वह शिल्प? क्या तुम मुझे वह शिल्प देने जा रहे हो?”
“हाँ, गुरु जी।”
“वत्सर, नहीं। तुम जानते हो कि विश्व में उस शिल्प का मूल्य क्या है?”
“तुमने मुझे जो ज्ञान दिया है वह भी तो अमूल्य है। तुम नहीं जानती कि बाँसुरी बजाकर मुझे कितना आनंद प्राप्त हो रहा है।”
“किन्तु वह शिल्प?”
“इन्हीं हाथों ने बनाया है उसे। यह हाथ ऐसा दूसरा बना लेगा। किन्तु तुम नहीं होती तो यह हाथ इस बाँसुरी को कभी नहीं बजा पाता। शिल्प तुम्हारी कार्यशाला में रहेगा। उससे उचित स्थान उस शिल्प का इस धरती पर अन्य नहीं हो सकता। अब यह शिल्प तुम्हारा हुआ।”
वत्सर की बात सुनकर येला गदगद हो गई। प्रसन्नता के कारण वह रो पड़ी। उसे देखते देखते वत्सर बाँसुरी बजाने लगा। कुछ समय उपरांत वत्सर ने, बाँसुरी ने तथा येला के अश्रुओं ने विराम लिया।
“यदि गुरु की आज्ञा हो तो मैं चलूँ?”
“अवश्य। किन्तु मेरी एक बात तुम्हें भी माननी पड़ेगी।”
“कहो गुरुदेव।”
“मेरी यह बाँसुरी मैं तुम्हें दे रही हूँ। तुम इसके सिवा अन्य किसी बाँसुरी को नहीं बजाओगे।”
येला ने अपनी बाँसुरी वत्सर को दे दी। वत्सर ने उसे गुरु प्रसाद के रूप में स्वीकार कर लिया।
“ओह। तो यह बाँसुरी येला की है?” शैल ने वत्सर के हाथ में रही बाँसुरी को स्पर्श करते हुए कहा।
“जी। गुरु प्रसाद है यह।”

“अब यह कहो कि जो व्यक्ति अपने अमूल्य शिल्प का त्याग कर सकता है वह किसी की हत्या कर सकता है?” येला ने शैल को मर्मघातक प्रश्न पूछ लिया। क्षणभर शैल उस प्रश्न से आहत हो गया।

स्वयं को संभाला और कहा, “अभी तो मान लेता हूँ कि आप दोनों निर्दोष हो। किन्तु संशय से पूर्णत: परे नहीं हो।”

“हम पूरा सहयोग करेंगे।” वत्सर ने कहा।

“ठीक है। आप दोनों का धन्यवाद।” शैल ने कहा। एल और वत्सर श्री कृष्ण जी के सम्मुख गए और प्रार्थना करने लगे। शैल आगे की योजनाआ बनाने में व्यस्त हो गया। कुछ विचार कर शैल ने कहा, “हमें उस शिल्प तक पहुंचना होगा। कहाँ है आपकी कार्यशाला?”

“मेरे साथ चलो। मैं ले चलती हूँ।”

“चलो। और वत्सर, तुम्हें भी हमारे साथ चलना होगा।”

“कब चलना है?”

“अविलंब चलना होगा।”

[17]

वकार के घर रात्री के समय भोजन के उपरांत सारा, निहारिका, सपन तथा वकार बैठे थे।
“वकार, कुछ व्यवस्था है या?” निहारिका के शब्दों का अर्थ वकार भली भांति जानता था। वह उठा। विदेशी उच्च कक्षा के दारू की बोतलें आदि लेकर वह लौटा।
वकार ने प्याले भरे।
“आज सबसे पहले सारा जी को दी जाएगी।” निहारिका ने वकार को सूचना दी। वकार सारा की तरफ बढ़ा, उसके सामने दारू धर दिया। सारा ने कुछ क्षण उस बढ़े हुए हाथ को देखा, निश्चय कर लिया और बोली, “जी नहीं। मैं नहीं पीती।”
“सारा जी, इसे अपना ही घर समझो। पी लो।”
“निहारिका जी, धन्यवाद। किन्तु मैं कह चुकी हूँ कि मैं नहीं पीती।”
“थोड़ा तो चलता है यार दोस्तों के साथ।” सपन ने कहा।
“थोड़ा भी नहीं। मेरे ना का अर्थ ना ही है।”
सारा के स्पष्ट उत्तर ने तीनों को जो संदेश दिया उसके पश्चात किसी ने सारा को आग्रह नहीं किया। सब पीते रहे। थोड़ी प्रतीक्षा के पश्चात सारा उठी, “मुझे नींद आ रही है। मैं सोने को चलती हूँ।”
“अरे, बैठो न कुछ देर।” वकार ने आग्रह किया।
“कल सवेरे आठ बजे मैं सज्ज हो जाऊँगी।” सारा चलने लगी।
“हम दस बजे चलेंगे।” सपन ने कहा। सारा चली गई।
तीनों ने देर रात तक पी, जागते रहे। अंत में एक ही बिस्तर पर निहारिका के एक तरफ वकार तो दूसरी तरफ सपन था। रात बितती गई।

+_+_+_+_+

दस बज गए थे। सारा सज्ज होकर बाकी के लोगों की प्रतीक्षा कर रही थी। तीनों में से किसी के कोई संकेत नहीं दिख रहे थे।
‘कहाँ रह गए यह सब? कहीं बाहर तो नहीं गए? घर में कोई गतिविधि नहीं हो रही है।’
‘क्या करूँ? कैसे पता लगाउँ?’
‘कुछ समय प्रतीक्षा कर लेती हूँ। तब तक सब आ जाएंगे।’
सारा प्रतीक्षा करने लगी। आधे घंटे से अधिक समय बीत गया किन्तु कोई संकेत नहीं मिले। सारा ने निहारिका को फोन लगाया।
“हेलो, कौन?” निहारिका ने नींद में फोन का उत्तर दिया।
“मैं, सारा। आप कहाँ हो? हमारे चलने का समय हो गया है।”
“तुम सज्ज हो गई?”
“कब की। प्रतीक्षा कर रही हूँ आप सब की।”
“अभी तो हमारी नींद भी नहीं उडी।” नींद में ही निहारिका ने कहा।
“तो क्या हमें नहीं चलना है?”
“रुको रुको। हम जल्दी से जल्दी तैयार हो जाते हैं।” निहारिका ने फोन काट दिया।
एक ही शयनखंड से तीनों निकले। तीनों के रूप को देखकर सारा ने आकलन कर लिया कि रातभर इन तीनों के मध्य क्या हुआ होगा। क्षण के लिए सारा ने आँखें बंद कर ली, खोली और घर से बाहर चली आई।
प्राय: बारह बजे सब सज्ज होकर आए।
“सारा जी, आप आगे बैठिए। मैं और सपन पीछे बैठते हैं।”
“जब गाड़ी वकार चल रहा है तो सपन जी आगे बैठेंगे तो उचित रहेगा।”
“नहीं, तुम यहाँ पहली बार आई हो। गाड़ी में आगे बैठकर इस स्थल के सौन्दर्य को अच्छी तरह से देख सकोगी।”
“नहीं। मैं पीछे से ही देख लूँगी।” सारा पीछे की सीट पर बैठ गई। तीनों के पास कोई विकल्प नहीं रहा। गाड़ी शिल्प की तरफ चलने लगी।

“वह शिल्प शाला यहाँ से प्राय: एक सौ अस्सी किलो मीटर के अंतर पर है। यह पहाड़ी मार्ग से हम पाँच घंटे में वहाँ पहुँच जाएंगे।” वकार ने सारा को बताया। सारा मन से गाड़ी के भीतर नहीं थी तथापि ऊसने सुना। कोई उत्तर नहीं दिया।
सारा के मन में विचार चल रहे थे।
‘कैसे हैं यह लोग? मुझे अभी दो तीन दिन ही हुए हैं इस धरती पर आए। किन्तु यहाँ की हवा में कुछ है जो मुझे मेरे सिद्धांतों पर चलने के लिए बल प्रदान कर रहा है। मुझे कुछ भी अनैतिक कार्य करने से रोक रहा है। हनी ट्रैप करने को भी मन नहीं हो रहा है। और यह लोग?’
‘जन्म से ही इसी धरती पर रह रहे हैं किन्तु एक भी अनैतिक कार्य करना नहीं छोड़ रहे हैं। ऐसा क्यूँ? क्या इस देश की हवा का इन पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा है?’
‘केवल हवा से ही प्रभाव नहीं पड़ता।’
‘और क्या बात हो सकती है?’
‘हवा से भी अधिक प्रभावशाली होते हैं संस्कार, शिक्षा, और पूर्व जन्म के कर्म।’
‘भारत में रहकर भी इनके यह संस्कार? यह कैसी शिक्षा पाई हैं इन लोगों ने?’
‘उसे छोड़ो। तुम्हें अपने संस्कार और शिक्षा के अनुरूप व्यवहार करना होगा। करोगी ना?’
‘अवश्य वही करूंगी।’
‘वचन देती हो?’
‘इसकी कोई आवश्यकता नहीं। मुझ पर विश्वास करते रहना।’
सहसा वकार ने गाड़ी रोक दी। सारा के विचार भी रुक गए।
“क्या हुआ, वकार?” निहारिका ने पूछा।
“यहाँ देखो। कितनी गाड़ियां खड़ी है! लगता है आगे कुछ हुआ है जिसके कारण मार्ग अवरुद्ध हो गया है।” सपन ने कहा।
“मैं अभी जाकर देख आता हूँ।” वकार चला गया। कुछ अंतराल के पश्चात वह लौटा।
“आगे भु-स्खलन हुआ है। पहाड़ से बड़ी बड़ी शिलाएं मार्ग पर गिर गई है। आधे घंटे पहले ही ऐसा हुआ है। मार्ग बंद कर दिया गया है। मार्ग को खुलने में समय लग सकता है।”
“कितना?”
“आठ से दस घंटे। अधिक भी लग सकता है।”

“तो अब क्या?” सारा ने पूछा।

“प्रतीक्षा कर लेते हैं।”

“इस मार्ग पर?”

“चाहो तो घर लौट सकते हैं। घर से एक घंटे की दूरी पर हैं हम।”

“यहाँ कोई होटल होगी क्या?” सारा ने कहा।

“पीछे तीन किलोमीटर पर एक होटल है। क्यों? वहाँ रुकना है?”

“आप सब घर जाइए। मैं होटल में रुक जाती हूँ। कल जब मार्ग चालू हो जाए तब मुझे लेते चलना।”

“क्यों? तुम घर नहीं चल रही हो?”

‘मन तो करता है कि कह दूँ कि तुम्हारा घर मुझे अच्छा नहीं लगता।’ सारा ने स्वयं को रोका। उत्तर बदल दिया।

“नहीं, मैं यहाँ रहकर पहाड़ का आनंद लेना चाहती हूँ। आप मेरी चिंता ना करें। आप घर लौट जाइए।”

“ठीक है। हम भी यहीं होटल में रुक जाते हैं। सब साथ रहें तो ठीक रहेगा।” निहारिका ने कहा। सब ने मान लिया।

होटल में सारा ने अपने लिए एक स्वतंत्र कक्ष लिया। तीनों एक ही कक्ष में रुक गए।

‘मुझे मेरा काम निकल जाए तब तक ही इन लोगों के साथ रहना है। यह लोग अच्छे नहीं हैं।’ सारा ने निश्चय कर लिया। स्वयं को अपने कक्ष में बंद कर लिया।

=-=-=-=-=-=

[18]

दूसरे दिन प्रभात होने पर सारा तथा बाकी के तीन लोग आगे की यात्रा की सज्जता करने लगे। यात्रा के लिए निकलने वाले ही थे कि होटल मेनेजर ने सूचना दी, "रात्री को भी भूस्खलन हुआ था इसलिए अभी भी मार्ग बंद है। और आज भी बंद ही रहेगा।" सभी रुक गए।
'एक और दिन इनके साथ व्यतीत करना पड़ेगा। कहीं इन लोगों के साथ आकर मैंने कोई भूल तो नहीं कि?'
सारा ने स्वयं से पूछा।
'जो हो चुका है उसे बदल नहीं सकती हो तुम, सारा।'
'तो अब क्या?'
'समय की प्रतीक्षा करो, समय पर विश्वास करो। समय पर सब छोड़ दो'
सारा ने आगे सोचना छोड़ दिया। सारा ने उन तीनों से अंतर बनाये रखा। दिन व्यतीत हो गया। तीसरे दिन सूचना मिली कि मार्ग खुल गया है। चारों चल पड़े, उस पहाड़ियों के मध्य बसी येला की शिल्प कार्यशाला की तरफ।
मार्ग में सारा ने कुछ विशेष बात नहीं की। वह बस पहाड़ों के सौन्दर्य को निहारती रही। बाकी तीनों ने खूब बातें की। सारा ने उसे सुना और सावध हो गई।

&*()_

“हमारे साथ कुछ अतिथि हैं जो आपकी शिल्प शाला देखना चाहते हैं।” सपन ने येला की शिल्पशाला में प्रवेश करते हुए कहा।
“शिल्पशाला अभी कुछ दिनों के लिए सभी के लिए बंद है।” उर्मिला ने कहा।
“क्यों?”
“यह येला का निर्णय भी है और आदेश भी।”
“किन्तु मैं तो यहाँ आता जाता रहता हूँ। तुम जानती हो ना?”
“यह आदेश सभी के लिए है, आप के लिए भी।”
“किन्तु मेरे अतिथि दूर से आए हैं। क्या उसे निराश होना पड़ेगा?”
“स्वाभाविक है।”
सपन ने निहारिका तथा सारा की तरफ देखा। निहारिका ने कुछ संकेत किया।
“अब यहाँ तक आए हैं तो कुछ सहायता कर दो हमारी।”
“कैसी सहायता?”
“पीछे के भाग में जो शिल्प है उस शिल्प का दर्शन करा दो। वह तो शिल्पशाला से बाहर है।”
“वह सतलुज नदीवाला?”
“वही। यदि ऐसा उत्तम शिल्प भी देख लेंगे तो मेरे अतिथि निराश नहीं होंगे।”
उर्मिला सपन के उस प्रस्ताव पर विचार करने लगी। कुछ समय पश्चात उसने कहा, “केवल वही शिल्प क्यों?”
“क्यों कि भीतर प्रवेश बंद है। वह शिल्प बाहर है, वह उत्तम है।”
उर्मिला कोई उत्तर दे उससे पूर्व किसी ने उर्मिला को संकेत दिया। उर्मिला ने उसे समझा।
“नहीं दे सकती मैं कोई अनुमति उस शिल्प को देखने की।”
“क्यों? कोई आपत्ति है क्या?”
“हाँ, है आपत्ति।” सभी ने उस स्वर की तरफ देखा। वह स्वर शैल का था। शैल को देखते ही सारा, सपन तथा निहारिका चौंक गए।
शैल ने सभी पर एक दृष्टि डाली। सारा उस दृष्टि को देखकर भयभीत हो गई। सारा उस दृष्टि का अर्थ भली भांति समझती थी।

“सारा, आप यहाँ क्या कर रही हो?”
“मैं तो इन लोगों के साथ ..।”
“तुम तो गंगटोक में किसी परिवार वाले से मिलने आई थी? हैं ना?”
“वह मुझसे मिलने आई है।” वकार ने उत्तर दिया।
“तुम्हारा घर तो गंगटोक में माल रोड के पीछे वाले महोले में है।”
“मैं तो उसे इन पहाड़ियों में ले आया था। यहाँ आने पर सपन सर तथा निहारिका जी ने कहा कि शिल्पशाला भी देखनी चाहिए।”
“असत्य कह रहे हो तुम। उसी शिल्प को विशेष रूप से देखने आए हो आप सब। क्या मैं ठीक कह रहा हूँ ना निहारिका जी?”
“यह विचार मेरा नहीं था। यह तो यहाँ आने के बाद वकार ने सुझाया था।”
“उस रात्री को सारा के कक्ष में सारा से मिलने आप और सपन ही गए थे ना?”
“तो आप सब जानते हैं।” निहारिका ने कहा।
“भारत की पुलिस की आँखें, कान तथा नाक की तीव्रता का आपको अनुमान ही नहीं है, निहारिका जी।”
शैल के शब्द सुनकर निहारिका और सपन मौन हो गए।
“आप यहाँ से चले जाओ। और पुन: कभी यहाँ आने का साहस भी नहीं करना।” निहारिका, सपन वकार तथा सारा वहाँ से जाने लगे।
“सारा जी। आप उनके साथ नहीं जाएंगे। आपको रुकना होगा।”
“क्यों? मैं तो उनके साथ ही आई थी।”
“स्मरण रहे कि आप भारतीय पुलिस के नेतृत्व में कार्यरत हो।”
“किन्तु मैं तो आधिकारिक अनुमति लेकर आई हूँ।”
“वह अनुमति मैंने ही दिलवाई थी, सारा जी।”
“और अब आप ही मुझे रोक रहे हो?”
“हाँ। क्यों कि जिस आधार पर अपने अनुमति मांगी थी वह आधार ही मिथ्या है।”
“यदि जानते थे कि आधार मिथ्या है तो अनुमति क्यों दी?”
“यदि अनुमति नहीं देते तो आपका यह रूप कैसे देख पाता?”

“तो अब क्या होगा सारा जी का?” निहारिका ने प्रश्न किया।
“आप अभी गई नहीं? आप हमारे कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने की चेष्टा कर रही हो। इसका परिणाम जानती हो आप?”
“सारा हमारे साथ आई है।”
“किन्तु जाएगी मेरे साथ ही।”
“इंस्पेक्टर आप ..।”
“आप अपनी सीमा में रहें यही उचित होगा।”
“अन्यथा?”
“आपको बंदी बनाने में मुझे विलंब नहीं होगा।”
निहारिका समझ गई कि यहाँ से निकल जाने में ही भलाई है। तीनों चले गए।
शैल ने सारा के मुख पर एक दृष्टि डाली। सारा के मुख पर अभी भी ग्लानि के भाव थे। शैल ने कुछ नहीं कहा, एक कुर्सी पर बैठ गया, सारा को देखता रहा। सारा शीश झुकाए बैठी रही। शैल का मौन उसे विचलित कर रहा था, किन्तु वह विवश थी। बैठी रही।
समय का एक विशाल टुकड़ा व्यतीत हो गया। शैल सारा के धैर्य की परीक्षा ले रहा था और क्षण क्षण सारा विफल हो रही थी। अंतत: सारा ने धैर्य खोया।
‘जो भी परिणाम होगा, भुगत लूँगी। किन्तु इस तरह बैठे रहना अब असह्य हो गया है। इस क्षण को तोड़ना होगा। इस क्षण के भार से मुक्त होना होगा।’ सारा ने निश्चय कर लिया। वह उठी। शैल के समीप गई।
“मेरे अपराध के लिए मुझे जो भी दंड देना चाहो दे दो। मैं उसके लिए सज्ज हूँ।”
शैल ने कोई प्रतिभाव नहीं दिया।
“मैं मेरा अपराध स्वीकार करती हूँ। मुझे दंड दीजिए। मुझ पर क्रोध कीजिए। मुझे डाँटिए।”
“मैं ऐसा क्यों करूँ?”
“आपके मौन से बड़ा दण्ड कोई नहीं है। कृपा कर कुछ बोलिए। नहीं तो मैं घुटकर मार जाऊँगी।”
शैल अभी भी मौन रहा। उसने आँखें बंद कर ली। सारा अपराध के भार तले भावुक हो गई, रो पड़ी। शैल ने उसे रोते हुए देखा। रोने दिया।

जब रोकर सारा शांत हो गई तब येला ने उसे पानी दिया, रुमाल दिया। सारा ने स्वयं को स्वस्थ किया। येला उसे किसी कक्ष में ले गई। उसे भोजन दिया।

#*#*#*#

[19]

संध्या हो गई। शैल, सारा, वत्सर और येला एक कक्ष में जमा हो गए। शैल ने सारा का स्वागत स्मित के साथ किया। उसे देखकर सारा को अच्छा लगा।
‘क्या शैल ने मुखे क्षमा कर दिया? अथवा?’ स्मित को देखकर सारा ने विचार किया।
सारा आगे विचार न कर सकी। समय की प्रतीक्षा करने लगी।
“येला, चलो उस शिल्प को दिखाओ।” शैल ने कहा।
“आओ मेरे साथ।” येला सभी को लेकर उस शिल्प के पास आ गई।
शिल्प को देखकर शैल तथा सारा एक साथ बोल पड़े, “अद्भुत।” दोनों उसे देखते ही रह गए।
“यह देखकर विश्वास ही नहीं हो रहा है।” सारा ने कहा।
“किन्तु यह सत्य है।” शैल ने कहा।
“कौन है यह कलाकार? मुझे उससे मिलना है।”
“क्यों मिलना है?”
“उससे मिलकर उस देह के विषय में सब कुछ जान सकेंगे।”

“आप तो केवल इस शिल्प को देखकर ही उस देह का रहस्य खोज लेना चाहती थी। लो वह शिल्प आपके सम्मुख है। कहो, क्या रहस्य खोजा है उस घटना का?”
“केवल शिल्प को देखकर कोई रहस्य कैसे खुलेगा?”
“क्यों नहीं खुलेगा? इसी लिए तो आप यहाँ आई हो।”
“मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं मेरे कार्य के लिए लज्जित हूँ। अब और कितना लज्जित करोगे?”
शैल ने कोई उत्तर नहीं दिया।
“जब आपने स्मित दिया तो मुझे लगा कि आपने मुझे क्षमा कर दिया है। वह मेरा भ्रम था।”
“किसी को क्षमा करने के लिए मनुष्य को कडा कष्ट सहन पड़ता है। मैंने उसे सहा है।”
“आपके उस कष्ट का कारण मैं हूँ। मुझे क्षमा कर दो, शैल सर।” सारा ने हाथ जोड़ दिए।
“आप हमारे अतिथि हो। हाथ जोड़ते हुए अतिथि अच्छे नहीं लगते।” शैल ने स्मित दिया।
“सारा जी। सर ने तुम्हें क्षमा कर दिया है।” येला ने सारा को आश्वस्त करते हुए कहा, “चलिए हम आपको इस शिल्प के रचयिता से मिलवाते हैं।”
शैल तथा येला ने सारा की आँखों में उत्साह देखा।
“इस शिल्प के रचनाकार है वत्सर। इनसे मिलिये सारा जी।” येला ने वत्सर की तरफ संकेत किया।
“आप हैं?”
“जी।” वत्सर ने कहा।
“आप तो सुबह से हमारे साथ हो किन्तु आपने एक भी शब्द नहीं कहा।”
“उसकी आवश्यकता नहीं हुई।”
“अब तो बोलोगे ना?”
“आवश्यकता होगी तो अवश्य।”
“सर्वप्रथम तो इस अद्भुत शिल्प के लिए अभिनंदन।”
“धन्यवाद।”
“क्या आप जानते हैं कि आपका इस शिल्प और दोनों देशों की सीमा पर मिले देह में समानता है।”

“हाँ।”
“केवल समानता ही नहीं है, बल्कि वही हुआ है।”
“जी।”
“तो आपने किसकी हत्या की है? कहाँ की है? कैसे की है? क्यों की है?”
“मैंने कुछ नहीं किया है?”
“तो यह शिल्प का क्या अर्थ है?”
“यह शिल्प आठ वर्ष पूर्व बनाया गया है।”
“तो आठ वर्ष पूर्व इसकी हत्या की योजना बनाई थी और अब उस पर काम भी कर डाला?”
“मैं कह चुका हूँ कि मैंने कोई हत्या नहीं की है।”
“तो यह शिल्प क्यों बनाया?”
“हाँ, सारा जी। मैंने भी यही प्रश्न पूछा था। किन्तु उसका उत्तर लेना मैं भूल गया।” शैल ने कहा।
“आपने केवल दो संभावनाओं की बात की थी। आपने कभी इस शिल्प की रचना का कारण नहीं पूछा था।”
“चलो अब पुछ लिया। सारा जी ने भी यही पूछा है। अब कहो कि इस शिल्प की रचना का रहस्य क्या है?”
“यदि आप दोनों मुझे किसी की हत्या का दोषी मानते हो तो मेरे पास कोई उत्तर नहीं है।”
“नहीं नहीं। मैं आपको दोषी नहीं मानती।”
“और शैल सर, आप?”
“अभी तो नहीं मान रहा। किन्तु संदेह से मुक्त भी नहीं हो तुम वत्सर।” वत्सर के मुख के भाव बदल गए।
“वत्सर, संदेह करना पुलिस का काम है। तुम उससे विचलित हुए बिना जो भी कहना हो कहो। मैं जानती हूँ कि तुम निर्दोष हो।” येला ने वत्सर को शांत करते हुए कहा।
“हाँ वत्सर। निर्भीक होकर कहो।” सारा ने भी कहा।
वत्सर स्वस्थ हुआ।

“किसी सर्जन की तीसरी संभावना भी होती है। कभी कभी चौथी भी हो सकती है।” वत्सर ने शैल की तरफ देखा।
शैल उस दृष्टि का मर्म समझ गया। उसने स्मित दिया, मौन रहा।
“नियति जब किसी को कोई कार्य हेतु चुनती है तो उसे किसी न किसी रूप में संकेत देती है। वह संकेत कभी स्पष्ट होता है तो कभी अस्पष्ट।
मुझे अस्पष्ट रूप से नियति संकेत देती रही किन्तु मैं उसे समझ नहीं सका।
एक दिन मैं शिल्प करते करते थक गया तो मुझे वहीं नींद आ गई। नींद के साथ स्वप्न भी आ गया।
स्वप्न में मैंने एक दृश्य देखा कि किसी नदी के ऊपर तीव्र बहाव में भी एक शव उलटा पड़ा है। उसे देखकर मैं भयभीत हो गया। मेरी नींद खुल गई। तब रात्री का तीसरा प्रहर बीत चुका था। स्वप्न के कारण मैं बाकी की रात सो नहीं सका। मैंने शिल्प बनाने में मन लगाया किन्तु मैं उस पर ध्यान नहीं दे सका। बड़ी कठिनाई से रात्री व्यतीत की मैंने। जब प्रभात हुआ, प्रकाश हुआ तो मन शांत हुआ। स्वप्न के प्रभाव से मुक्त हुआ।
शिल्प बनाता रहा। दो चार दिन बीत गए। वह स्वप्न नहीं आया।
किन्तु प्राय: सात आठ दिन के बाद वही स्वप्न पुन: आया। मैंने उसकी अवगणना की। किन्तु उस स्वप्न ने मेरी अवगणना नहीं की। वह अविरत रूप से प्रत्येक रात्री आता रहा। अब मैं उस स्वप्न से भयभीत नहीं था।
एक रात्री वही स्वप्न में एक बात हुई।” अविरत बोलते हुए वत्सर कुछ समय के लिए रुका।
शैल, सारा तथा येला बिना कुछ कहे वत्सर को सुन रहे थे। वत्सर के आगे बोलने की प्रतीक्षा करने लगे।
वत्सर ने गगन की तरफ देखा। जैसे वहाँ कुछ हो और वह उसे देखता हो, देखते देखते बोला, “उस रात्री स्वप्न में किसी ने मुझे कहा कि वह देह जिस नदी पर है वह सतलज नदी है।”
“किसने कहा था?”
“कोई था। किन्तु कौन था वह नहीं जान सका। उसने अपने आप को किसी आवरण से आवृत किया हुआ था।”
“क्या वह स्वर किसी पुरुष का था? किसी स्त्री का था?”

“उस समय नदी के बहाव की ध्वनि में मैं स्पष्ट रूप से उस स्वर को पहचान नहीं सका।”
“न मुख देखा, न स्वर पहचाना। मुझे तो लगता है कि वत्सर कोई कथा सुना रहा है।” सारा ने धैर्य खोते हुए कहा।
“नहीं सारा जी। हम कलाकारों के साथ ऐसा होता है। आप वत्सर का विश्वास करें। वह सत्य कह रहा है।”
“आप भी, येला जी?”
“सारा जी। हम कलाकारों का यह दुर्भाग्य है कि जब हम सत्य कह रहे होते हैं तब भी लोगों को लगता है कि हम कथा कह रहे हैं।”
“किन्तु यह बात तो कथा जैसी ही लग रही है।”
“कभी कभी सत्य कथा से भी अधिक रोचक, अधिक नग्न होता है।”
“यह आप कैसे जानती हैं?”
“क्यों कि मैं भी कलाकार हूँ। और मैं पिछले आठ वर्षों से वत्सर को जानती हूँ।”
“सारा जी। अभी आप पुलिस बनकर नहीं, कला के एक भावक के रूप में बात सुनो। पुलिस बनने के अनेक अवसर हमें मिलेंगे।” शैल ने कहा। सारा ने सम्मति दी।

[20]

“तो वत्सर, आगे क्या हुआ? बताओ।” सारा ने पूछा।
वत्सर ने गहन सांस ली। अभी भी उसकी दृष्टि व्योम में स्थिर थी।
“मैंने उस स्वर, उस व्यक्ति और उन शब्दों को पहचान ने का, उसका स्मरण करने का तीव्र प्रयास किया किन्तु मैं विफल रहा।” क्षण भर वत्सर रुका। उसके मुख के भाव बताया रहे थे कि वह समय की उस क्षण से कुछ खोज रहा हो। विफलता मुख पर स्पष्ट प्रकट गई थी।
“पश्चात अनेक दिन बिना स्वप्न के व्यतीत हो गए। धीरे धीरे स्वप्न का विस्मरण होने लगा। कुछ दिनों के पश्चात नया स्वप्न आया।”
“क्या था उस नए स्वप्न में?” शैल ने रुचि प्रकट की।

“एक पहाड़ी थी जहां बड़ी सी पत्थर की एक शीला थी। समीप उसके शिल्प के साधन थे। एक झरना, नदी सा विशाल झरना बह रहा था। एक अदृश्य हाथ उस शीला को आकार दे रहा था। मैं चकित होकर, मंत्र मुग्ध होकर देख रहा था। क्षणों में उसने एक अद्भुत शिल्प बना डाला।”
“कैसा शिल्प?”
“यही जो अभी हमारे सम्मुख है।” येला ने उस शिल्प की तरफ संकेत किया। सभी ने उसे देखा।
“अर्थात आपका कहना है कि यह शिल्प वत्सर ने नहीं बनाया किन्तु वत्सर के स्वप्न में आकर किसीने बना दिया और वत्सर उसे यहाँ लेकर या गया?” सारा ने पूछा ।
“येला और वत्सर। आप दोनों कुछ काम की बात करो, कथाएं सुनाना बंद करो।” अब शैल ने भी धैर्य खोया।
“आप दोनों बड़ी शीघ्रता से अपना धैर्य खो देते हो। पुलिसवाले हो ना?” येला ने व्यंग्य किया।
“वत्सर बात ही ऐसी कर रहा है कि धैर्य रखना कठिन हो जाता है।” शैल ने कहा।
“स्वप्न में किसी ने यह शिल्प बना दिया और उस शिल्प को अपना शिल्प बताकर महान शिल्पी होने का दंभ कर रहा है आपका यह कलाकार। येला जी।”
“नहीं सारा जी। वत्सर की बात का मूल उद्देश्य आप समझी नहीं।” शैल ने वत्सर की तरफ देखा और आगे कहा, “ऐसी बातें कर वह स्वयं को शिल्प से, हत्या से और अपराध से पृथक सिद्ध करना चाहता है। अपने अपराध से बचना चाहता है।”
“हो गई पुलिसवाली बातें? कर लिया न्याय? पा लिया हत्या के रहस्य को?” येला ने प्रश्न पूछे।
“हाँ। हाँ। अब शेष बचा ही क्या है? वत्सर जैसे चतुर अपराधी यही करते हैं, ऐसे ही करते हैं।” सारा ने कहा।
“आप दोनों ..।” येला ने कुछ कहना चाहा, वत्सर ने उसे रोका।
“येला, इन लोगों से तर्क करना, कला की बात करना व्यर्थ है। हमें यह स्मरण रखना था कि हम अपनी कला की बात किससे कर रहे हैं। अंततः यह दोनों है तो पुलिसवाले ही। प्रत्येक बात पर संशय करना, न्यायाधीश बन जाना इनका स्वभाव है, यही इनका व्यवहार है। अब हमें इनसे कला की कोई भी बात नहीं करनी है।” वत्सर क्षण भर रुका। सारा और शैल की तरफ मुड़ा, “चलो मुझे बंदी बना लो। और न्यायालय में प्रस्तुत करो। मुझे दोषित सिद्ध कर दो।” वत्सर ने अपने दोनों हाथ दोनों पुलिसवाले के सामने धर दिए। नत मस्तक हो गया।
वत्सर की इस प्रतिक्रिया से दोनों अचंभित हो गए। सारा और शैल क्षण भर उन हाथों को देखते रह गए। अब क्या करें? क्या कहें? उन दोनों को कुछ भी नहीं सुझा। दोनों ने एक दूसरे को

देखा। दोनों की आँखों में दुविधा थी। अनिर्णायकता थी । दोनों ने वत्सर को पुन: देखा। वह अभी भी हाथ धरे नत मस्तक खड़ा था।
शैल ने पुन: सारा को देखा। संकेतों से प्रश्न किया, 'डाल दें बेड़ियाँ?' सारा ने संकेतों से ही कहा, 'नहीं। अभी नहीं।'
सारा ने मौन तोडा, "वत्सर जी, आप तो अप्रसन्न हो गए। हमारा तात्पर्य था कि ...।"
"शब्दों के तात्पर्य को पुलिसवालों से अधिक कलाकार समझते हैं। हमें तात्पर्य समझाने का कष्ट ना करें।" येला ने कहा।
"चलो हम आपकी बात मानकर आगे बढ़ते हैं। वत्सर, कहो जो कह रहे थे।"
"कहने को अब कुछ नहीं है। आप मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं कर रहे हो अत: अब मैं कुछ नहीं कहूँगा। आप जो कार्यवाही करना चाहो, कीजिए।" वत्सर उस शिल्प के समीप जाकर खड़ा हो गया। सारा और शैल शिल्प के साथ वत्सर को देखने लगे।
सहसा शैल ने अपने मोबाइल से शिल्प के साथ वत्सर के अनेक चित्र लिए, कुछ चलचित्र भी बना लिए। येला और वत्सर ने उसका कोई विरोध नहीं किया।
"वत्सर, अभी भी कुछ कहना चाहते हो तो कह सकते हो। अपनी निर्दोषता सिद्ध कर सकते हो।"
"नहीं, मुझे अब आप दोनों से कुछ नहीं कहना।"
"क्यों?"
"क्या आप दोनों न्यायाधीश हो?"
"नहीं तो?"
"अब मुझे जो कहना होगा वह पुलिसवालों से नहीं, न्यायाधीश से कहूँगा, न्यायालय में कहूँगा।"
सारा और शैल को वत्सर के शब्दों ने आहत कर दिया, तथापि दोनों मौन ही रहे।

[21]

येला की कार्यशाला में भोजन के उपरांत सारा तथा शैल चिंतन करने लगे कि अब इस मंजूषा में आगे कैसे बढ़ा जाए? दोनों में से किसी को भी कोई मार्ग दिख नहीं रह था। दोनों इसी कारण मौन थे। तभी उर्मिला ने आकर कहा, “आप जब जाना चाहो, हमारा वाहन आप को स्टेशन तक छोड़ देगा।”

सुनते ही दोनों को झटका लगा, “हम को यहाँ से जाने का आदेश दे रही है येला।” सारा ने कहा। “तो हमें चले जाना चाहिए।”

“बात तो ठीक है किन्तु..।” सारा रुकी। घड़ी भर विचार कर बोली, “हमें यहाँ से चलना ही चाहिए। यही उचित होगा, हैं न?”
“आप जो बात किन्तु शब्द के पश्चात करना चाहती थी वह क्या है?”
“कुछ नहीं। वह तो..।”
“कहो, जो भी बात है।”
“मेरा मत है कि वत्सर को भी साथ ले चलें?” शैल ने सारा की तरफ देखा। शैल की आँखों में चमक थी, कुटिल स्मित अधरों पर। सारा उन भावों का अर्थ समझती थी। उसने भी कुटिल प्रतिभव दिया।
“उर्मिला, हम अभी येला से मिलना चाहते हैं। कहाँ होगी वह?” शैल ने पूछा ।
“मैं उसे सूचना देती हूँ। आप मेरे साथ चलें।” दोनों उर्मिला के पीछे येला के कक्ष में गए। वत्सर वहीं था।
“येला, हम कल प्रा : काल यहाँ से जाना चाहेंगे।”
“ठीक है। आप दोनों के लिए उचित्त व्यवस्था कर दी जाएगी।”
“दो नहीं, तीन व्यक्तियों के लिए व्यवस्था करनी होगी आपको।”
“तीसरा कौन?”
“वत्सर! वह भी हमारे साथ फिरोजपुर चल रहा है।” शैल ने वत्सर के मुख भावों को देखा। वह स्थिर था। शैल के शब्दों से बिल्कुल अविचल। शैल और सारा के लिए वत्सर की स्थितप्रज्ञता विचलित करने वाली थी।
“वत्सर, क्या तुम भी दोनों के साथ जाने को तत्पर हो?”
येला को उत्तर देते हुए वत्सर ने कहा, “इस मंजूषा के अन्वेषण में मैं मेरा प्रत्येक दायित्व निभाने को सदैव तत्पर रहूँगा।”
“किन्तु बिना किसी प्रमाण के, बिना किसी वैधानिक आधार के वह तुम्हें कैसे ले जा सकते हैं?”
“येला जी, हम वत्सर को बंदी नहीं बना रहे हैं। केवल कुछ औपचारिकताएं पूर्ण करके उसे मुक्त कर देंगे।” शैल ने आश्वस्त किया।
“शैल, आप के व्यवहार को मैं देख चुकी हूँ। अत: आपके आश्वासन से मैं आश्वस्त नहीं हो सकती।”

“हम चाहें तो आपको भी बलात साथ ले जा सकते हैं। किसी को भी ले जा सकते हैं।” सारा ने अपना पुलिसवाला चरित्र प्रकट कर दिया।
“सारा, मैं इस दश में वर्षों से रह रही हूँ। अब तो मैं इस देश की नागरिक भी हूँ। यहाँ के नियम, यहाँ के विविध विधि विधान से पूर्ण रूप से परिचित हूँ। आप भी इससे परिचय कर लें तो उचित होगा क्यों कि इस मंजूषा के अन्वेषण में आपको इसकी आवश्यकता पड़ने वाली है।”
सारा को येला के शब्दों से गहरा आघात लगा।
“मेरे विदेशी होने के कारण येला मुझे ऐसे शब्दों से प्रहार कर रही है। काश! मैं भी भारतीय होती।” सारा ने कहा।
“सारा जी, आप मूलत: भारतीय ही हैं।” शैल ने कहा।
“येला, आप तो अभी अभी इस देश की नागरिक बनी हो। मैं तो मूलत: भारतीय ही हूँ।”
“आप थीं। अब नहीं हो। यह स्मरण रखो सारा जी। यह अधिकार आप 1947 में ही खो चुकी हो।”
सारा के पास इस तर्क का कोई उत्तर नहीं था, वह मौन हो गई।
“वत्सर, आप को हमारे साथ चलना होगा, कल ही।” शैल ने आदेश दे दिया।
“ऐसे आप उसे नहीं ले जा सकते, इन्स्पेक्टर शैल।”
“येला, उन्हें अपना काम करने दो। तुम निश्चिंत रहो। मुझे कुछ नहीं होगा। मुझे मेरे कृष्ण पर, उसके न्याय पर पूर्ण विश्वास है।” वत्सर ने अपने अधरों पर बाँसुरी लगा दी। पहाड़ों की घाटियों में बाँसुरी के स्वर के साथ रात व्यतीत होने लगी। प्रात: काल येला ने तीनों को विदा कर दिया।

***** *****

“श्रीमान, सतलुज वाली मंजूषा का पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट आ गया है।”
“कहाँ है?”
“अभी लाकर देता हु।“ विजेंदर चल गया। शीघ्र ही वह शैल के पास लौट आया।
“क्या मैं इसे देख सकती हूँ?”
“देख लीजिए, साराजी। इसमें कुछ भी नहीं है।” विजेंदर ने कहा।

“क्या?” सारा और शैल एक साथ बोल पड़े।
“मेरा तात्पर्य ..।”
“रिपोर्ट में कुछ भी नहीं है? ऐसा कैसे हो सकता है?” शैल ने पुछा ।
“जी, आप स्वयं इसे देख लीजिए।” विजेंदर ने रिपोर्ट धर दी।
सारा ने विजेंदर से रिपोर्ट ली और उसे पढ़ने लगी। शैल सारा के मुख के भावों को पढ़ने लगा। विजेंदर चला गया।
रिपोर्ट पढ़ने से सारा को कोई दिशा नहीं मिली, न ही सारा के मुख को पढ़कर शैल को कोई दिशा मिली। सारा ने उस रिपोर्ट को बंद कर टेबल पर रख दी। शैल की तरफ देखा, शैल की आँखों में प्रश्न था - ‘क्या कहती है यह रिपोर्ट?’
सारा की आँखों में उत्तर था - ‘रिपोर्ट कुछ नहीं कह रही है।’
कुछ क्षण व्यतीत हो गए। दोनों विचार करने लगे। सहसा शैल ने रिपोर्ट उठाई और उसे पढ़ने लगा। पढ़कर बंद कर दिया।
“वास्तव में इस रिपोर्ट में कुछ नहीं है। इससे अन्वेषण को तो कोई दिशा नहीं मिल रही।”
“शैल, मृत्यु कैसे हुई? कहाँ हुई? कब हुई? देह पर कोई घाव के या रक्त के कोई चिह्न आदि विषय पर कुछ भी नहीं बता रहा यह रिपोर्ट।”
“लिखा है कि पानी के बहाव से क्षत विक्षत इस देह में रक्त शेष नहीं रहा है। घाव के भी कोई संकेत नहीं है। इसकी मृत्यु के पश्चात अधिक समय व्यतीत हो गया है कि कोई स्पष्ट संकेत प्राप्त करना संभव नहीं है।”
“और अंत में लिखते हैं कि - कोई निर्णय नहीं निकलता है अत: इसकी फोरेंसिक जांच कराने का परामर्श दिया जाता है।”
“क्या काम का यह रिपोर्ट?” सारा ने निराशा प्रकट की।
“इस रिपोर्ट में इतना सब लिखा है तो एक पंक्ति और जोड़ देते तो ठीक होता।”
“कौन सी पंक्ति, शैल?”
“यही कि - संभव है कि इसकी मृत्यु प्राकृतिक रूप से हुई हो।”
“इससे से क्या होता?”

“इस संभावना को पकड़कर इस मंजूषा को बंद कर देते। बात वहीं सम्पन्न हो जाती। आप अपने देश चली जाती, मैं अपने मुख्यालय लौट जाता।”
“नहीं ..।” सारा चीख पड़ी।

[22]

“क्या हुआ सारा जी?”

“ऐसा कभी मत करना। यदि यह मंजूषा बंद कर दी गई तो ..।” सारा आगे बोल न सकी। बलात उसने अपनी भावनाओं पर नियंत्रण किया, स्वयं को रोने से रोक लिया।

“लीजिए, पानी पपी लीजिए।” शैल ने पानी धरा, सारा ने पी लिया।

“यदि मेरी बात से आपको कोई कष्ट हुआ हो तो ...।”

“नहीं शैल, ऐसी कोई बात नहीं है।”

“तो आप इतनी विचलित क्यों हो गई?”

“मैं तो अपनी ही बात से विचलित हो गई।”

“क्या बात है? आप चाहो तो मुझे कह सकती हो।”

सारा ने क्षण भर विचार किया, ‘मैं लौटकर पाकिस्तान नहीं जाना चाहती हूँ, कभी नहीं। यह बात और इसका कारण शैल को बता दूँगी तो कदाचित वह मुझे शीघ्र ही पाकिस्तान भेजने की चेष्टा करेगा। इसे अभी नहीं बताना ही उचित होगा।’

“साराजी, यदि आप नहीं बताना चाहो तो कोई बात नहीं।”

“ऐसी कोई बात नहीं है। मैं तो बस यही चाहती हूँ कि इस मृत्यु का रहस्य प्रकट हो जाए तो अच्छा। किन्तु यह भी चाहती हूँ कि यह रहस्य कभी प्रकट न हो। हमारा अन्वेषण चलता ही रहे, निरंतर, अनंत काल तक।”

“ऐसा क्यों?”

“मैं अब लौटकर पाकिस्तान नहीं जाना चाहती हूँ। इसी देश में मृत्यु तक रहना चाहती हूँ।”

“ऐसा क्या है?”

“चलो छोड़ो उसे। वह बात समय आने पर बताऊँगी।” सारा ने बात टाल दी, शैल ने आगे नहीं पूछा।

“तो अब क्या करेंगे? कैसे आगे बढ़ेंगे?” सारा ने बात बदल दी।

“परामर्श अनुसार फोरेंसिक जांच करवा लेते हैं। इसके लिए आवश्यक अनुमति आज ही मांग लेते हैं।”

“कितना समय लग सकता है?”
“दो से तीन दिन लग सकते हैं अनुमति में।”
“नहीं। मैं जानना चाहती हूँ कि फोरेंसिक जांच में कितना समय लग सकता है?”
“सामान्य रूप से बीस से पचीस दिन लग सकते हैं। इस मंजूषा में साक्ष्य और प्रमाण आदि कुछ नहीं है तो कह नहीं सकते कि कितना समय लगेगा। हो सकता है दो से तीन महीना लग जाए।”
“तब तक हमें क्या करना होगा?”
“कोई योजना नहीं हैं।”
“तब तक वत्सर का क्या करेंगे?”
“वह तो मैंने सोचा ही नहीं। आपने कुछ सोचा है क्या?”
“मैंने? सोचा तो मैंने भी नहीं है। किन्तु ...।”
“किन्तु क्या?”
“इतने दिनों तक वत्सर को यहाँ रोके रखना मुझे ऊचित नहीं लगता। आपका क्या विचार है?”
“तो उसे जाने दें अपने गाँव?”
“करना तो ऐसा ही चाहिए।”
“उसे छोड़ दिया तो वह कुछ उलटा सीधा करके हमें भटका सकता है।”
“वत्सर ऐसा नहीं कर सकता।”
“ऐसा किस आधार पर कह रही हो?”
“यहाँ आकर ही ज्ञात हुआ कि भारत के पुरुषों में भी संवेदनाएं हैं। वह भी मृदु स्वभाव वाले, कोमल व्यवहार वाले होते हैं। वत्सर में सरलता देखि है मैंने। हमारे यहाँ तो ...।” सारा ने स्वयं को रोक लिया।
“आपके यहाँ क्या?”
“कुछ नहीं, कुछ नहीं।” सारा ने बात पुन: टाल दी। शैल ने प्रश्न से भरी तीव्र दृष्टि से सारा को देखा। क्षणभर सारा भयभीत हो गई। आँखें बाद कर स्वस्थ होने का प्रयास करने लगी। शीघ्र ही स्वस्थ होकर सारा बोली, “तो वत्सर को छोड़ दें?”
“यदि उसने कुछ किया या विदेश भाग गया तो?”

"वत्सर ऐसा कुछ भी नहीं करेगा।"
"इतना विश्वास है वत्सर पर?" शैल की बात में कटाक्ष था। सारा उस कटाक्ष को पी गई।
"अब मैं पुरुषों पर भी विश्वास करने लगी हूँ। आपके देश के पुरुषों पर मैं विश्वास कर सकती हूँ।"
"अच्छा? तो क्या आप मुझ पपर भी?"
"हाँ, आप पर भी। आप भी भारतीय पुरुष हैं।"
सारा के शब्दों ने शैल को नि:शब्द कर दिया।
"मैं वत्सर को लेकर आती हूँ।" सारा कक्ष से बाहर चली गई। शैल प्रतीक्षा करने लगा।
वत्सर के साथ सारा जब लौटी तो शैल ने वत्सर को बैठने का संकेत किया, वह बैठ गया।
"वत्सर, अभी तो हम आपको मुक्त कर रहे हैं। आप अपने गाँव जा सकते हैं। किन्तु आपको निरंतर हमारे संपर्क में रहना होगा। इस मंजूषा से जुड़े किसी भी तथ्यों के साथ आप कोई छेड़छाड़ नहीं करोगे। न ही देश छोड़कर जाओगे। क्या आपको यह सभी बातें स्वीकार्य है?" शैल ने कहा।
वत्सर के अधरों पर स्मित था। शैल ने उसे देखा। 'यह तो वही स्मित है जो मैंने वत्सर के मंदिर में कृष्ण के अधरों पर देखा था। इस स्मित का अर्थ मैं जानता हूँ। अब वत्सर से कोई प्रश्न नहीं करना है, ना ही कोई संशय।' शैल ने स्वयं से बात की।
"आपको यह सब स्वीकार्य है यह जानकर प्रसन्नता हुई। आप कुछ समय प्रतिक्षा करें। विजेंदर से कहकर मैं आवश्यक औपचारिकता पूर्ण करवाता हूँ। और सारा जी, आप वत्सर के भोजन का प्रबंध कर देना।" शैल चला गया। पश्चात वत्सर अपने गाँव लौट गया।

[23]

“शैल जी, मृतदेह के विषय में कुछ ज्ञात हुआ क्या?”

“क्या ज्ञात करना चाहती हो?”

“यही कि वह व्यक्ति कौन थी? किस देश परदेश की थी? क्या आयु होगी? आदि।”

“आयु का भी अनुमान नहीं लगा सका पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट।”

“कैसा है यह पोस्ट मॉर्टम करनेवाले डॉक्टरों का दल?”

“क्यों?”

“मृत्यु का कारण, समय आदि नहीं बात सके यह तो मान लिया किन्तु आयु भी नहीं जान सके।”

“इतना तो बता ही दिया है कि वह एक स्त्री थी।”

“यह जानने के लिए पोस्ट मॉर्टम करना पड़ता है क्या?”

“क्या आपको डॉक्टरों की कुशलता पर संदेह है?”

“हाँ।”

“स्मरण रहे कि यह भारतीय डॉक्टर्स हैं, बड़े कुशल हैं।”

“तो आयु का ज्ञान कैसे नहीं हो सका? और भी कोई जानकारी नहीं मिल रही है।”

“आपका प्रश्न उचित ही किन्तु किसी की भी क्षमता पर संशय नहीं करना चाहिए।”

“ठीक है। अब आगे क्या कर सकते हैं हम? हमें क्या करना चाहिए?”

“फोरेंसिक जांच की अनुमति प्राप्त हो गई है। उस पर कार्य आरंभ हो चुका है।”

“उपरांत इसके क्या करना चाहिए?”

शैल विचारने लगा, 'क्या कर सकते हैं? कुछ तो करना होगा। किन्तु क्या? इस मंजूषा ने तो उलझा दिया है।'
"शैल, एक प्रस्ताव रखूं?" सारा ने ने पूछा।
शैल की विचार यात्रा भंग हुई। "जी, क्या?"
"मेरे पास एक प्रस्ताव है।"
"कहो।"
"क्या हम मृतदेह का DNA परीक्षण करवा सकते हैं?"
"डीएनए? ओह, हाँ। करवा सकते हैं। किन्तु इससे क्या होगा?"
"यह ज्ञात हो सकेगा कि वह कौन थी? किस देश प्रदेश की थी? किस अनुवंश से थी?"
"यह अच्छा विचार है।"
"तो यही करते हैं।"
"करना तो यही होगा किन्तु ...।"
"इसमें भी किन्तु?"
"डीएनए परीक्षण के लिए पुन: अनुमति मंगनी पड़ेगी।"
"अनुमति देने में उन्हें कोई आपती थोड़ी न होगी?"
"चलो, आप भी साथ चलो। स्वयं देख लो।"
"कहाँ?"
"अनुमति मांगने के लिए।"
"मेरा चलना आवश्यक है क्या?"
"नहीं, सर्वथा नहीं। किन्तु वहाँ क्या क्या नखरे होंगे यह देखना हो तो चलो मेरे साथ।"
"अरे, नहीं, नहीं। मैं नहीं चल रही हूँ।" सारा एक कुर्सी पर बैठ गई। शैल चल गया।

****

"तो श्रीमान शैल, अब आप उस मृतदेह का डीएनए परीक्षण चाहते हैं?"
"जी महोदय।"
"क्यों?"

“इससे ज्ञात होगा कि यह व्यक्ति किस देश की है।”
“तुम्हें क्या लगता है, कौन देश से होगी?”
“इतना कह सकता हूँ कि वह भारतीय आनुवंशिकता से भिन्न है।”
“यह तो सब को ज्ञात है, इसमें नया क्या है?” अधिकारी क्रोधित हो गया।
शैल ने मौन ही रहना उचित समझा। शैल के मौन से वह अधिक भड़क गया, “बोलते क्यों नहीं हो?”
“जी, जी।”
“क्या जी - जी कर रहे हो? जी जी से काम नहीं चलेगा। यह बताओ कि इन अठारह दिनों में आपने इस मंजूषा की कौन सी पहली को सुलझाया?”
“प्रयास कर रहे हैं। और इसी के लिए ही यह अनुमति चाहिए थी।”
“प्रथम पोस्ट मॉर्टम किया, पश्चात फोरेंसिक जांच। क्या इतना पर्याप्त नहीं था?”
“पोस्ट मॉर्टम प्रत्येक बात पर मौन है। मृत्यु का समय, स्थान कारण जैसी किसी भी बात का संकेत नहीं दे रहा है। फोरेंसिक जांच होने में कई सप्ताह लगते हैं।”
“अर्थात अब तक कोई प्रगति नहीं हुई है। क्या कर रहा है तुम्हारा अन्वेषण दल? और वह पाकिस्तानी इंस्पेक्टर? कोई काम के नहीं हो तुम सारे। एक हत्या का रहस्य अठारह दिनों के बाद भी जान नहीं सकते हो।” अधिकारी ने अपना रोष उलट दिया, क्षण भर रुका। शैल ने अपना धैर्य बनाये रखा।
एक घूंट पानी पीकर अधिकारी पुन: बोल, “तुम जानते हो ना यह घटना अब अंतर्राष्ट्रीय हो गई है। हम पर कितना दबाव है उसका तुम्हें कोई अनुमान भी है? प्रश्नों के उत्तर देते देते हम थक जाते हैं। तुम समझ रहे हो न हमारी, अपनी स्थिति को?”
“जी, इसीलिए डीएनए परीक्षण करवाना आवश्यक है।”
“इससे क्या होगा? मान लो वह युवती यूरोप से या अमेरिका से या अफ्रीका से है तो क्या? इससे मंजूषा सुलझ जाएगी?”
“हमें कुछ दिनों का समय मिल जाएगा। तब तक आप भी जवाब देने से बच जाएंगे।”
“क्या?”
शैल ने संकेतों से सहमति प्रकट की।

“तब तो यह अनुमति अवश्य देनी पड़ेगी। पहले क्यूँ नहीं बताया?” अधिकारी ने अनुमति पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

“धन्यवाद, महोदय।” शैल जाने लगा।

जाते हुए शैल को अधिकारी ने कहा, “इसके उपरांत भी कोई अन्य परीक्षण करवाना चाहो तो अनुमति मांग लेना, उसे देने के लिए मैं तत्पर रहूँगा।” अधिकारी के होंठों पर कुटिल स्मित था। उस स्मित और उन शब्दों का अर्थ शैल पूर्ण रूप से जान चुका था। वह मौन रहा, स्मित देते हुए कक्ष से बाहर चल गया।

[24]

“डीएनए परीक्षण आरंभ हो चुका है। आठ दिनों में रिपोर्ट या जाएगा।”

“तब तक क्या करने का सोचा है, शैल जी?”

“हमें इतने समय की प्रतीक्षा नहीं करनी है।”

“क्यों?”

“हमें प्रत्येक क्षण का उपयोग करना होगा। कुछ भिन्न रूप से सोचना होगा।”

“यदि आठ दस दिनों तक डीएनए रिपोर्ट की प्रतीक्षा कर लेते तो?”

“उसका कोई अर्थ नहीं है।”

“क्यों नहीं है?”

“डीएनए रिपोर्ट से मृतक की आनुवंशिकता का ज्ञान मिल जाएगा किन्तु उससे उसकी मृत्यु का कारण तथा उसके मारक के विषय में कोई ज्ञान थोड़े ही प्राप्त होगा?”

“यह ‘मारक’ का अर्थ क्या है?”

“हत्यारा।”

“इतना तो ज्ञात हो जाएगा कि यह व्यक्ति किस देश कि नागरिक है।”

“डीएनए रिपोर्ट किसी व्यक्ति का पासपोर्ट नहीं है, साराजी।”

“किन्तु।”

”यह विश्व अब सीमाओं में संकुचित नहीं रहा, अत्यंत विस्तृत हो गया है। डीएनए से किसी की नागरिकता ज्ञात नहीं हो सकती।”
“मैं आपका तात्पर्य नहीं समाज सकी।”
“तो स्पष्ट शब्दों में कहना पड़ेगा, हैं न?”
प्रतिक्रिया में सारा ने स्मित दी।
“आप येला को मिल चुकी हैं। जन्म से वह जर्मन है। उसका डीएनए यूरोपिय आनुवंशिय प्रतीत होता है।”
“यही तो।”
“धैर्य रखें साराजी। बात अभी अधूरी है।” शैल क्षणभर रुका, सारा को देखा। वहाँ उत्सुकता और जिज्ञासा के भाव थे।
“येला कई वर्षों से भारत में रह रही है। अब वह भारतीय नागरिक है। यदि उसके डीएनए के आधार पर उसकी नागरिकता ढूँढेंगे तो भ्रमणा में फंस जाएंगे।”
“ओह, यह बात है। मैं समझ गई।”
कुछ क्षण मौन ही व्यतीत हो गए।
विजेंदर ने कक्ष में प्रवेश करते हुए पूछा, “भोजन यहीं भेज दूँ या चलते हो उपाहार गृह में?”
“सारा जी, आप विजेंदर के साथ जाकर भोजन कर लें।”
“और आप?”
“मैं यहीं भोजन करूंगा। मेरा भिजवा देना।”
“चलो, साराजी चलें?”
“नहीं, मैं भी यहीं शैल जी के साथ ही भोजन करूंगी।”
“जैसी आपकी इच्छा।” कहते हुए विजेंदर चल गया। भोजन पूर्ण होने तक कक्ष में मौन बना रहा।
“आगे क्या योजना है, शैल जी?”
“कुछ भी सूझ नहीं रहा है कि क्या करें? कैसे आगे बढ़ें?”
“कुछ तो करना पड़ेगा। क्यों कि …।”
“क्यों कि?”

“प्रतिदिन हमें इस विषय की प्रगति पर निवेदन देना होता है।”
“इस प्रकार स्मरण दिलाकर भयभीत न करें। आप ही कुछ मार्ग दिखाएं, सारा जी।”
“मेरा आशय तो आपको विचार करने के लिए प्रेरित करने का था। तथापि मैं मेरे शब्दों के लिए क्षमा चाहती हूँ।” सारा ने हाथ जोड़ दिए।
“नहीं, नहीं। आप न तो हाथ जोड़िए, न ही क्षमा मांगिए। आप वरिष्ठ हैं; इस क्षेत्र में भी, आयु में भी।”
शैल के शब्दों को सुनते ही सारा के नयनों से अनायास ही जल बहने लगा। शैल को उन अश्रु जल का कारण समझ नहीं आया। वह दुविधा में उसे देखता रहा। सारा ने स्वयं को संभाला, स्वस्थ हुई, अश्रु को पोंछ दिया। थोड़े घूंट पानी पिया, आँखें बंद की, क्षण में ही खोल दी। शैल अभी भी सारा की चेष्टा को समजने का प्रयास करता रहा।
“कुछ नहीं शैल जी, बस यूं ही।” क्षण भर रुकी सारा, “वास्तव में मुझे इतने अछे व्यवहार का अभ्यास नहीं है। आपके व्यवहार से मैं भावुक हो गई।”
“अब इसका अभ्यास कर लो, आप भारत में हैं।”
“जी, मैं अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने का प्रयास करूंगी।”
“एक और प्रयास भी करना होगा आपको।”
“मैं सब करूंगी, कहो क्या करना होगा?”
“आप मुझे केवल शैल कहकर पुकारेंगे। और आप नहीं तुम कहकर बात करोगे। करोगे न?”
सारा के मुख पर जो भाव थे वह शब्दों से अतीत थे।

$ $ $ $$$ $ $ $

फिरोजपुर से लौटते ही वत्सर सीधे अपने मंदिर की तरफ गया। मंदिर से आता कोलाहल इसके कानों में पड़ने लगा।
‘इतना कोलाहल? मंदिर में क्या हुआ होगा? कहीं कोई अनिष्ट तो नहीं हुआ होगा?’ विचार करते करते वह मंदिर पहुँच गया। वहाँ उसने भीड़ देखि।

'यह सब मेरे गाँव के लोग तो नहीं हैं। कौन है ये लोग? कहाँ से आए हैं? क्यों आए हैं? मंदिर तो सुरक्षित होगा न?' अनेक विचारों से घिर गया वत्सर। क्षणभर के लिए विचलित हो गया। मन में श्री कृष्ण का स्मरण करने लगा।
'श्री कृष्ण शरणं मम, श्री कृष्ण शरणं मम, श्री कृष्ण शरणं मम।'
उसका विचलित मन स्थिर होने लगा। पूर्ण विश्वास और श्रद्धा के साथ वह मंदिर के प्रांगण में आ पहुँचा।
'यह सब तो पत्रकार प्रतीत होते हैं। अनेक उलटते सीधे प्रश्न करेंगे, जो नहीं है उसे भी बड़ी बड़ी बातें बनाकर समाचार माध्यमों में प्रसारित कर देंगे। मुझे इन लोगों से बचना होगा, सावध रहना होगा।'
वत्सर को आते देख सभी ने उसकी तरफ दौड़ लगाई। क्षणभर में अनेक माइक वत्सर के सामने प्रस्तुत हो गए। सभी एक साथ प्रश्न पर प्रश्न करने लगे। वत्सर ने कोई उत्तर नहीं दिया।
"वत्सर, आप हमारे प्रश्नों के उत्तर क्यों नहीं दे रहे?"
"उत्तर दो।"
"सारा संसार आपसे सत्य जानना चाहता है।"
वत्सर ने दाहिना हाथ उठाकर सबको शांत रहने का आग्रह किया। शांत हो गए सब, वत्सर के शब्दों की प्रतीक्षा करने लगे।
"इस श्री कृष्ण मंदिर में आप सभी का स्वागत है। धैर्य रखें। मुझे बैठने दीजिए, आप सभी भी बैठ जाइए। कुछ चाय पान, उपाहार आदि ग्रहण कर लें। पश्चात पूरा समय लेकर हम शांति से सारी बातें करेंगे।"
"नहीं, हमें अभी आपसे उत्तर चाहिए।" भीड़ से एकसाथ अनेक स्वर उठे।
वत्सर ने स्मित के साथ कहा, "थोड़ा धैर्य रखें। मैं अभी अभी तो इतनी लंबी यात्रा से आया हूँ।"
"तो क्या हुआ? हम आपसे कुछ प्रश्न करेंगे। पश्चात आप विश्राम कर सकते हो। अब हमारे प्रश्नों के उत्तर दें।"
"देखिए, आप मुझे ऐसे न तो प्रश्न कर सकते हो न ही ऐसा व्यवहार कर सकते हो।"
"हम पत्रकार हैं, हमें यह अधिकार है।"
"आप हम पत्रकारों का अपमान कर रहे हो।"

“आप को इतना तो स्मरण होगा ही कि आप मेरे मंदिर में हो, बिना बुलाए आए हो। अनधिकृत प्रवेश कर चुके हो। किसी के अंगत परिसर में घुसना, अतिक्रमण करना, दुर्व्यवहार करना अपराध है। इस अपराध का दंड क्या है वह तो आप सब जानते ही होंगे। आप तो पत्रकार हैं। हैं न?”

वत्सर की बात सुनकर पत्रकार भड़क गए किन्तु वत्सर से आगे कुछ भी कहने का कोई साहस नहीं कर पाए। एक एक कर सब वहाँ से चले गए। जाते जाते धमकी भी देते गए, “हमारा अपमान आप को महंगा पड़ेगा।”

[25]

शैल के फोन की घंटी बजी, “महाशय, यहाँ वत्सर के मंदिर से सारे पत्रकारों को तो वत्सर ने भगा दिया है किन्तु वह दो वामिए वत्सर के साथ हैं। अभी अभी प्रांगण में आए हैं। आगे क्या आदेश है?” मोहनन ने कहा।

“तुम उन पर दृष्टि बनाये रखो। पूरी बातचीत का वीडियो ले लो। और लता कहाँ है?” शैल ने कहा।

“वह मेरे साथ ही है।”

“ठीक है, काम पर लग जाओ।” शैल ने फोन काट दिया। लता के साथ मोहनन ने अपना कार्य आरंभ कर दिया। वत्सर के साथ बैठे सपन और निहारिका पर अपना ध्यान केंद्रित कर दिया।

# # # # #

“शैल, तुमने सपन, निहारिका और वकार को छोड़ दिया तो वह अब वत्सर के पास पहुँच गए।” सारा ने कहा।
“वह तो पत्रकारों की सारी भीड़ भी ले गए थे साथ में।”
“वत्सर ने पत्रकारों को क्या बताया?”
“वत्सर ने कुछ भी नहीं बताया। सभी को भगा दिया।”
“ठीक किया वत्सर ने। क्या अभी भी हम उन लोगों को पकड़ना नहीं चाहेंगे?”
“नहीं साराजी, उन्हें अभी तो अनेक भूलें करनी हैं। ऐसा करना उनका स्वभाव है।”
“तो पकड़ लेते हैं। बंद कर देते हैं कारागृह में।”
“ऐसा करने से कोई लाभ नहीं है।”
“ऐसा क्यों?”
“उसे पकड़ तो लेंगे किन्तु दूसरे दिन ही न्यायालय उन्हें मुक्त कर देगी। ऊपर से हम पर आरोप भी लगा दिया जाएगा कि हम उस घटना का रहस्य उद्घाटित करने में असफल रहे हैं इसलिए निर्दोषों का उत्पीड़न कर रहे हैं। इससे हमारा ही अपयश और अपमान होगा।”
“वे निर्दोष कहाँ हैं? न्यायालय से कैसे मुक्त हो जाएंगे?”
“यहाँ का न्यायालय भी वामपंथियों का है, अल्पसंखयकों का है। यहाँ न्याय व्यक्ति का धर्म, विचारधारा आदि को देखकर होता है। तथ्यों, साक्ष्यों और प्रमाणों का कोई अर्थ नहीं है।”
“यह तो दु:खद है।”
“दु:खद ही नहीं, चिंता का विषय भी है।” शैल ने एक नि:श्वास भरा।
शैल की बात सुनकर सारा विचार में पड गई। कक्ष की हवा भारी हो गई। दोनों मौन हो गए।
सहसा शैल के फोन में घंटी बजी।
“शैल जी, मैंने पूरा वीडियो आपको प्रेषित किया है, देख लो। अब हमारे लिए क्या आज्ञा है?”
“आप दोनों उन दोनों पर दृष्टि बनाये रखो। राजीव को वत्सर पर दृष्टि रखने को कह देना।”
शैल ने फोन काट दिया।
“शैल, क्या है?”
“सारा जी, मोहनन और लता निरंतर सपन - निहारिका पर दृष्टि रख रहे हैं। मुक्त होकर भी दोनों हमारी दृष्टि के कारा में ही हैं। उनकी क्षण क्षण की गतिविधि का हमें संज्ञान प्राप्त होता

रहता है। आज वे वत्सर से बात कर अभी अभी वत्सर के गाँव से निकले हैं। मोहनन ने उसका वीडियो भेजा है। देखते हैं क्या हुआ है।"
शैल ने वीडियो चलाया।
"वत्सर, हमें ज्ञात है कि शैल को तुम पर संदेह है कि तुमने ही उस लड़की की हत्या की है।" सपन कह रहा था।
"मैंने?"
"यह मैं नहीं कह रहा हूँ। ऐसा शैल मान रहा है।"
"किन्तु मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है।"
"हम जानते हैं कि तुम ऐसा नहीं कर सकते।" निहारिका ने बात की डोर अपने हाथ में ली। "इसीलिए तो हमने पत्रकारों को बुलाया था कि तुम अपना पक्ष सारे संसार के सम्मुख रख सको। तुमने तो उन लोगों को ही भगा दिया।" सपन ने कहा, क्षणभर रुका। वत्सर के मुख पर बदलते भावों को देखने की अपेक्षा थी उसे किन्तु वत्सर निर्लेप था। "वत्सर तुम मेरी बात समझ रहे हो ना?" सपन ने अपनी बात पूरी की।
"हाँ, समझ रहा हूँ।"
"तो बुला लूँ उन सबको? सभी यहीं गाँव में ही अभी रुके हैं। मेरे एक संकेत पर सारे यहाँ आ जाएंगे। तुम अपनी बात रखना, अपने आप लो निर्दोष सिद्ध कर देना। पश्चात उसके, कोई पुलिसवाला तुम पर संदेह नहीं करेगा, न ही तुम्हें कोई हाथ लगाएगा। हम सब संभाल लेंगें। तुम्हारे पक्ष में पूरा गेंग खड़ा कर देंगें।" निहारिका ने उत्साह प्रकट कर दिया।
"मुझ पर आपकी ऐसी कृपा का कारण?"
"वत्सर जी, आप एक कलाकार हो, मैं भी कलाकार हूँ। हमारा परिचय आठ वर्ष से अधिक का है। आप मेरे मित्र हो। इस कारण हमारा भी कुछ कर्तव्य बनता है कि नहीं?" सपन ने कहा।
"परिचय और मित्रता भिन्न भिन्न बातें हैं। मैं आपका मित्र या आप मेरे मित्र कभी नहीं रहे। उल्टा आप तो मेरी कला से ईर्ष्या करते रहे हो। इतना तो स्मरण होगा ही, सपन जी?"
"वह तो आपकी कला की बात थी, आपसे थोड़े न ईर्ष्या करते हैं सपन जी। हैं न सपनजी?" निहारिका ने बात को संभालना चाह।
"यही तो मैं कह रहा हूँ जो निहारिका जी ने कहा।"

“मेरे लिए इतना सब कुछ करने से आपको क्या लाभ होगा?”
“एक कलाकार दूसरे कलाकार की सहायता करे यही सबसे बड़ा लाभ।”
“और इससे भारत सरकार, भारत की पुलिस और भारतीय गुप्तचरों की विफलता प्रकट हो जाएगी। पूरे विश्व में इस पर चर्चा होगी। सरकार के विरुद्ध सारा वामपंथ, सभी बुद्धिजीवी, सभी सेकयुलर्स, सभी लिबरल्स , सभी कलाकार, एक हो जाएंगे। हम सरकार को विवश कर देंगे।” निहारिका ने कहा।
“किस बात के लिए सरकार को विवश करना चाहते हो?” वत्सर ने मार्मिक प्रश्न किया। वत्सर के इस प्रश्न का उत्तर सपन देने ही जा रहा था कि निहारिका ने उसका हाथ दबा दिया, सपन रुक गया। निहारिका ने कहा, “वत्सर जी आप इस स्थिति को समज नहीं पा रहे हो।”
“वह कैसे, निहारिका जी?”
“जब यह सब हो जाएगा तो सारा विश्व आपको जानने लगेगा। बड़े बड़े मंच पर आपको आमंत्रित किया जाएगा। प्रत्येक स्थान पर आपकी ही चर्चा होगी। आपका कितना बड़ा नाम होगा यह सोचा है?”
“और हमारे लिबरल संगठन में आपको उच्च स्थान मिलेगा।” निहारिका ने नैनों का कटाक्ष करते हुए कहा।
“उससे क्या होगा?”
“आप सोच भी नहीं सकते कि आप कहाँ से कहाँ तक पहुँच सकते हो।” निहारिका ने कहा।
“आप मलाला, अरुंधती रॉय, तीस्ता सेतलवाड, मो. यूनुस, ग्रेटा थनबर्ग आदि को जानते हो? आज वे कहाँ पहुँच गए? एक समय पर वे कुछ भी नहीं थे। यह सब हमारे नेटवर्क से संभव हुआ है। हमने उन्हें सारे विश्व में मंच प्रदान किया। आपको भी यह मंच प्राप्त हो सकता है। कहो, क्या विचार है?” सपन ने अपना दांव चला।
वत्सर उचित उत्तर देने की लिए, विचार करने के लिए रुका उसे सहमति मानते हुए निहारिका बोली, “तो बुला लें पत्रकारों को?”
“नहीं। मैं आपकी भांति न तो वामपंथी हूँ, न धर्म निरपेक्ष हूँ, न लिबरल हूँ और न ही तथाकथित बुद्धिजीवी।”
“एक कलाकार होकर भी इन सबका अस्वीकार कर रहे हो? प्रत्येक कलाकार वामपंथी होता ...।”

“बस, आगे कोई बात नहीं। मैं कलाकार अवश्य हूँ किन्तु आपकी भांति असत्य के मार्ग पर चलकर मेरे ही देश को अस्थिर करने की आपकी योजना का हिस्सा नहीं बन सकता। मेरे लिए मेरा देश, मेरा धर्म सर्व प्रथम है, कला नहीं।” वत्सर क्षणभर रुका, सपन - निहारिका के मुख के भाव भावहीन थे।
“आप दोनों यहाँ से इसी क्षण विदा हो जाइए अन्यथा परिणाम गंभीर होंगे।” वत्सर ने चेतावनी दी। दोनों कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं रहे, अपमानित होकर जाने लगे।
जाते जाते निहारिका ने कहा, “यदि विचार बदल जाए तो मुझसे इस नंबर पर बात कर लेना। हम शीघ्र ही उपस्थित हो जाएंगे।” निहारिका ने अपना विजीटिंग कार्ड वत्सर के पास छोड़ दिया। वत्सर ने न तो उसे देखा, न ही उन दोनों को।
मंदिर में प्रवेश कर श्री कृष्ण को प्रणाम कर एक आसन पर ध्यान मग्न होकर वत्सर बैठ गया।
निहारिका का विजीटिंग कार्ड
हवा की तरंगों के साथ कहीं दूर उड गया।
शैल का वीडियो सम्पन्न हो गया। सारा और शैल ने एक दूसरे को देखा। दोनों कुछ कहना चाहते थे तथापि दोनों मौन रहे। एक दूसरे के बोलने की प्रतीक्षा करने लगे।
कुछ समय पश्चात सारा ने मौन भंग किया, “मुझे प्रतीत होता है कि इस व्यक्ति में कुछ तो विशेष बात है।”
“क्या बात है?”
“मैं तो इन लोगों की बातों में आ गई थी किन्तु इसने तो उनके उद्देश्यों को एक ही क्षण में परख लिया। ऐसा व्यक्ति किसी की हत्या करेगा ...।”
“ऐसा आप नहीं मानती, हैं न?”
“मेरा तात्पर्य ...।”
“सारा जी, हम पुलिसवाले हैं। हमें प्रत्येक व्यक्ति पर संदेह रखना चाहिए।”
“मैं तो बस ...।”
“आप भारत के पुरुषों के अच्छे व्यवहार से शीघ्र ही पिघल जाती हो। ठीक है किन्तु पुलिसवाले हैं आप यह स्मरण सदैव रखना होगा।” सारा ने उत्तर नहीं दिया।

[26]

“दो दिन से हमने कुछ भी नहीं किया है। इस प्रकार बैठे रहने से तो कार्य आगे बढ़ेगा ही नहीं।”

“अगले दो दिनों में DNA रिपोर्ट भी आ जाएगी। तब तक ...।”

“इसी प्रकार प्रतीक्षा करते रहने का ही आशय है क्या, श्रीमान?”

“कुछ कर भी तो नहीं सकते।” शैल ने कहा।

“यदि आप अन्यथा न लें तो मैं एक प्रस्ताव रखूं?”

“रखो, सारा जी। वैसे भी हमारे पास और कुछ काम तो है नहीं और न ही कोई दिशा सूझ रही है।”
“पुलिस अन्वेषण का सिद्धांत है कि, तुम भी तो जानते ही हो, शैल।”
“क्या?”
“यही कि प्रत्येक अपराध का रहस्य स्वयं अपराध में ही छिपा हुआ होता है। इसी प्रकार हत्या का रहस्य मारे हुए शरीर में ही होता है।”
“ठीक है, किन्तु यह मृत शरीर स्वयं कुछ नहीं बोल रहा। पूर्ण रूप से चुप है। जैसे उसे अपने मृत्यु के रहस्य को जानने की या हमें बताने की कोई मनसा ही न हो!”
“तुम पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट की बात कर रहे हो।”
“वही तो।”
“किन्तु मैं स्वयं मृतदेह की बात कर रही हूँ।”
“क्या?”
“एक बार पुन: उस मृतदेह को हम देखते हैं। कुछ नए तथ्य, नए प्रमाण, नए साक्ष्य द्रदिख जाए जिस पर अभी तक हमने ध्यान ही नहीं दिया हो।”
“वाह, वाह। यह बात तो हो सकती है। अब तक हमें यह कैसे नहीं सुझा?”
“चलो अब करते हैं।”
“ऐसा करने से पूर्व हमें एक और बात करनी होगी।”
“क्या इसके लिए भी हमें अनुमति माँगनी पड़ेगी?” सारा के शब्दों में व्यंग था, अधरों पर स्मित। शैल ने उसे देखा, समझा भी।
“आप व्यंग भी कर लेती हो यह जानकार प्रसन्नता हुई।” शैल ने कहा।
“वह तो बस यूं ही मन के भार को दूर करने के लिए। तुम कुछ और काम करने की बात कर रहे थे?”
“हाँ। जब हमारी सीमा पर यह मृतदेह मिला तब हमने मृतदेह के, उस स्थान के अनेक चित्र और चलचित्र बनाये थे। हमें उसको भी देखना होगा। संभव है वहाँ से कुछ मिल जाए, कोई कड़ी कोई संकेत प्राप्त हो जाए।”

शैल ने ताले में बंद उन चित्रों और चलचित्रों को मुक्त कर दिया। सारे चित्र टेबल पर रख दिए। दोनों एक एक कर सभी चित्रों को देखने लगे।
“सभी चित्र देख लिए। प्रत्येक में कुछ खोजने की हमने निष्ठापूर्वक चेष्टा की है किन्तु, किन्तु सारे के सारे चित्र मौन! कुछ भी नहीं कह रहे। न कोई कड़ी न कोई संकेत दे रहे हैं।” सारा निराश हो गई।
“जब मृतदेह स्वयं मौन है तो मृतदेह के चित्र क्या कहेंगे?”
“तो अब क्या?”
“घूम फिर कर वहीं आ गए जहां से चले थे।”
“अभी भी यह चलचित्र देखने बाकी हैं, चलो उसे देखते हैं।”
शैल ने सभी चलचित्र एक एक कर के चलाए।
“इसमें भी कोई विशेष संकेत नहीं मिल रहा है, शैल।”
“बार बार देखना पड़ेगा तब कुछ काम का मिलेगा।”
“बस अब यही शेष बचा है करने को।” सारा ने लंबी सांस छोड़ी।
“सारा जी आप ऐसा क्यूँ कह रही हो?”
“मैं जानती हूँ कि मेरे शब्दों में कटुता है, व्यंग भी है। उसके लिए मैं लज्जित भी हूँ किन्तु निराशा और विफलता के कारण ऐसे शब्द अनायास निकाल जाते हैं।”
“निराश तो अवश्य है ही, इसी निराशा से आशा की दिशा में जाने का कोई मार्ग मिलेगा।”
“किन्तु कैसे?”
“बस यही तो खीजना है।”
“और वही नहीं मिल रहा है। है न विडंबना?” दोनों मौन हो गए।
चलचित्र अभी भी स्वत: चल रहे थे, दोनों की आँखें उसे देख तो रही थी किन्तु उस पर किसी का भी ध्यान नहीं था। मन कहीं अन्यत्र थे।
“सारा जी चलिए, चलते हैं।” सहसा शैल बोल उठा।
“घर जाने का मन ही नहीं हो रहा है, शैल।”
“घर नहीं जाना है हमें।”
“तो?”

“उस सीमा पर चलते हैं, उस घटना स्थल पर चलते हैं।”
“चलो।”
()()()()

“यहाँ से मृतदेह मिला था।” शैल ने स्थान बताते हुए कहा।
“तो यह है घटना स्थल?” सारा ने कहा और नदी के प्रवाह को ध्यान से देखने लगी।
“हाँ, यही है।”
“तुम मुझे अबतक यहाँ लेकर क्यों नहीं आए?”
“मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है।”
“कोई बात नहीं।” सारा अभी भी नदी के प्रवाह को देख रही थी। नदी की प्रत्येक लहर का निरीक्षण किया पश्चात तट के प्रत्येक कण कण को भी देखते हुए बोली, “यहाँ तो कोई कड़ी नहीं दिख रही। ऐसा घटना स्थल पूर्व में कभी नहीं देखा।”
“सारा जी, यहाँ कुछ मिलने वाला भी नहीं है।”
“ऐसा क्यों कह रहे हो?”
“क्यों की यहाँ नदी का गतिमान प्रवाह है। यहाँ कुछ भी ठहरता नहीं है। यदि यहाँ कुछ होता भी तो जल प्रवाह में बहकर कहीं विलुप्त हो गया होगा।”
“हाँ, नदी तो निरंतर बहती रहती है। जिस नदी ने उस मृतदेह को यहाँ लाकर रख दिया था वह नदी तो कहीं दूर निकल गई है।”
“और अपने साथ सभी प्रमाणों को भी बहा ले गई है।”
“तो क्या हमें नदी के प्रवाह के साथ उसके अंतिम बिन्दु तक जाना होगा?”
“हो सकता है।”
“अर्थात पुन: नदी के पीछे पीछे पाकिस्तान में जाना पड़ेगा?”
“हाँ, जाना चाहिए यदि रहस्य तक पहुंचना हो तो।”
“मैं नहीं जानेवाली अब कभी पाकिस्तान में।”
“कभी नहीं से क्या तात्पर्य है?”

“कभी नहीं।”
“ऐसा क्यों कह रही हो? जब यह घटना, यह विषय सम्पन्न हो जाएगा तब तो आपको लौटना होगा आपके अपने देश पाकिस्तान में।”
“मैं निश्चय कर चुकी हूँ, किसी भी स्थित में मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।”
“आपने ऐसा दूसरी बार कहा है। क्या कोई विशेष कारण है?”
“हाँ, है।”
“ठीक है। आपके अपने कारण होंगे। उसे जानने की मुझे अभी रुचि नहीं है। अभी तो इस विषय का रहस्य जानने की चिंता है, रुचि है।”
शैल उस स्थान पर घूमने लगा। सहसा नदी के समीप गया। नदी के जल में पग रख दिया। जल की शीतलता ने उसके समग्र तन में एक प्रवाह संचारित कर दिया। वह झुका, नदी के जल से अपनी हथेली भर ली। कुछ क्षण हथेली को, हथेली में रहे जल को देखता रहा। सहसा दूर पश्चिम आकाश में अस्त हो रहे सूर्य का प्रतिबिंब हथेली में रहे जल में देखा। उसने हथेली के जल को स्थिर किया। सूर्य प्रतिबिम्ब स्थिर हो गया। प्रतिबिंब से उसने बिम्ब की तरफ देखा। सूर्य अस्त होने ही वाला था। बड़ा सा गोल सूर्य! लाल सूर्य! शैल ने प्रतिबिंब को देखने के लिए हथेली के जल को देखा। हथेली का पानी सरक कर नदी में घुल गया था। खाली हथेली देख शैल बोला, “हथेली खाली क्यों रह जाती है? अभी अभी तो भरपूर थी, अब खाली?”
“इस घटना में भी हमारी हथेली खाली ही है, शैल।”
“सारा जी, आप?” शैल चोंक गया। “मैं तो बस यूं ही कह रहा था।”
“सत्य कह रहे थे।” सारा ने गहन श्वास ली।
शैल ने अस्ताचल के सूर्य को देखा, हथेली में पानी भरा और अस्त हो रहे सूर्य को अर्घ्य दिया। शैल को देखकर सारा ने भी वही किया। क्षणभर पश्चात वह पुछ बैठी, “तुमने डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया। किन्तु आप लोग तो उदय होते हुए सूर्य को अर्घ्य देते हो न?”
“आपने भी तो अस्त हो रहे सूर्य को अर्घ्य दिया न?”
“वह तो तुम्हें देखकर। अस्त होता सूर्य तो अंत का प्रतीक है न?”
“नहीं, नए प्रारंभ का प्रतीक है वह।”
“क्या?”

“अस्त होता सूर्य कहता है कि मैं विश्राम करने जा रहा हूँ क्यों कि अब रात्री होगी। समग्र संसार को भी अब विश्राम की आवश्यकता है।”
“यही तो अंत है न?”
“प्रत्येक अंत किसी न किसी नए आरंभ की तरफ ले जाता है।”
“और प्रत्येक रात्री नए प्रभात की तरफ!” अपने शब्दों पर सारा हंस पड़ी। मुक्त मन से हंसती रही। नदी के निनाद में मिश्रित होता हुआ सारा का हास्य सुंदर - मधुर - कर्णप्रिय संगीत का सर्जन कर रहा था। शैल उसे सुनते हुए अस्त हो गए सूर्य के द्वारा व्याप्त अनेकों रंगों से भरे आकाश को देखता रहा।

[27]

“घटना स्थल पर भी कुछ नहीं मिला, शैल?”
“मिलता भी कैसे?”

“क्यों?”
“वह स्थल घटना स्थल है ही नहीं।”
“क्या कह रहे हो? शैल, मृतदेह वहीं से मिला था न? क्या कहीं अन्य स्थल से तो मृतदेह नहीं मिल था?”
“अधीर न हो सारा जी। मैंने यही कहा है कि वह स्थल घटना स्थल नहीं है। घटना स्थल तो अन्यत्र कहीं है।”
“कहाँ है?”
“वही तो हमें खोजना है।”
“जहां से मृतदेह मिला वह स्थल घटना स्थल नहीं है। अन्यत्र जो घटना स्थल है वह कहाँ है वह हम जानते नहीं हैं। क्या है यह सब, शैल?”
“यही तो दुविधा है।”
“क्या उपाय है इस दुविधा का?”
“आरंभ से प्रारंभ करते हैं।” शैल ने कहा, सारा ने पूरा ध्यान शैल की बातों पर केंद्रित कर दिया।
“वह मृतदेह यहाँ तक जल प्रवाह से आया है। अर्थात इसकी मृत्यु अन्यत्र कहीं हुई है और समय के साथ वह नदी के जल में बहकर यहाँ आ गई। नदी के उस बिन्दु पर आकर अटक गई। मृत्यु इस सीमा स्थान पर नहीं हुई है।” शैल रुका, सारा प्रतीक्षा करने लगी।
“मृत्यु का स्थान नदी के किसी तट पर है जो यहाँ से कहीं दूर है। हमें उस स्थान को खोजना पड़ेगा।”
“कैसे खोज पाएंगे?”
“मैं नहीं जानता। मैं प्रयास कर रहा हूँ। आप भी प्रयास करें।” दोनों विचार ग्रस्त हो गए। दोनों ने भोजन किया। पुन: विचार में डूब गए।
“शैल, भोजन के उपरांत का समय कितना मंद गति से बह रहा है!”
“बह तो रहा है। बिना किसी प्रयास के।”
“और बिना किसी उपाय के भी।” सारा ने कहा। शैल ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
“उपाय भी मिल जाएगा। उचित समय को आने दो, शैल।” सारा ने बात का संधान किया।
“वह उचित समय आज क्यों नहीं आ रहा? अभी क्यों नहीं आ रहा?”

सारा के पास उसका कोई उत्तर नहीं था। संध्या हो गई। घर जाने का समय हो गया।
“सारा जी, मुझे एक लंबी यात्रा पर चलना है।”
“कैसी यात्रा?”
“हम कल जिस घटना स्थल पर गए थे वहाँ से मेरी यात्रा प्रारंभ होगी और सतलज नदी के प्रवाह के समानांतर चलते रहना है।”
“तो तुम पाकिस्तान जा रहे हो?” सारा ने संशय किया।
“नहीं मैं पाकिस्तान नहीं जा रहा हूँ।”
“तो?”
“नदी का प्रवाह ऊपर से नीचे आ रहा है। मैं नदी के प्रवाह के विरुद्ध नीचे से ऊपर की दिशा में प्रयाण करूंगा। नदी जिस मार्ग से होकर यहाँ तक आई है उस मार्ग पर मैं चलूँगा।”
“कहाँ तक जाओगे?”
“जहां घटना स्थल होगा वहाँ तक।”
“कहाँ है घटना स्थल?”
“कहीं तो होगा। इस नदी के तट पर ही होगा।”
“यदि घटना स्थल नदी के उद्गम बिन्दु पर होगा तो? जानते हो नदी कितनी लंबी है? उसका उद्गम स्थान कहाँ है? वहाँ तक जाने में कितना समय लगेगा? कितना कष्ट होगा? इन सब बातों का विचार और आयोजन किया है तुमने?”
“नहीं। कुछ भी नहीं किया है। मुझे तो यह भी ज्ञात नहीं कि सतलज कहाँ से निकलती है, कितना अंतर बहकर यहाँ तक आती है।”
“रुको। मैं गूगल से नदी के विषय में पूरा ज्ञान ले लेती हूँ।”
“ठीक है। मैं प्रतीक्षा करता हूँ। कल बता देना।”
“श्रीमान, यदि कल निकलना है तो ज्ञान आज ही होना चाहिए, अभी ही होना चाहिए।”
“तो अभी बता दो।” शैल रुक गया। सारा गूगल पर सतलज नदी को खोजने लगी।
“सुनो, शैल। यह नदी का स्रोत कैलास पर्वत के समीप स्थित राक्षस ताल है। वहाँ से बहती हुई सतलज हिमाचल प्रदेश से पंजाब होती हुई पाकिस्तान तक जाती है। इसका मार्ग 1500 किलो

मीटर लंबा है। इसके मार्ग में कुछ पहाड़ी क्षेत्र है, कुछ जंगल का विस्तार भी है। बाकी क्षेत्र में मैदान है।"

"ठीक है। माहिती के लिए धन्यवाद।"

"तो कहो कैसे चलना है हमें? कब चलना है? कितने दिन लग सकते हैं? जीप से चलें तो आठ दस दिन में काम हो जाएगा।"

"सारा जी, वहाँ पर्यटन हेतु नही जा रहा हूँ। अन्वेषण करना है।"

"इतना ध्यान है मुझे।"

"जीप से चलने से मूल घटना स्थल कहीं छूट जाएगा।"

"तो? क्या विचार है?"

"पैदल चलना होगा, नदी के प्रवाह के साथ साथ। ऊर्ध्व दिशा में, प्रवाह की उलटी दिशा में।"

"इससे क्या होगा?"

"हमें यह ज्ञात नहीं कि उस लड़की ने अपनी अंतिम सांस किस स्थान पर ली थी? कब ली थी?"

"अर्थात अंधेरे में तीर चलाना है?"

"और कोई उपाय भी तो नहीं। जब तक मूल घटना स्थल नहीं मिल जाता, किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते। न ही उस रहस्य को पा अकते हैं।"

"नदी की परिक्रमा करनी होगी?"

"यही समझ लो।"

"यह अत्यंत कठिन, दुष्कर एवं अनंत समय तक करते रहनेवाला प्रयास है जिसके पश्चात भी कार्य की सफलता की कोई निश्चितता नहीं है। यदि यही शेष मार्ग है तो यही सही। हमारे भाग्य में ही ऐसा कार्य लिखा है तो हमें यह कार्य करना पड़ेगा। चलो हम पैदल ही चलते हैं।" सारा ने गहरी सांस ली और बैठ गई।

"सारा जी, हम नहीं, मैं ही चलूँगा, अकेला ही।"

"क्यों? मैं भी चलना चाहती हूँ। मुझे साथ ले चलो।"

"मार्ग अति कठिन है, दुष्कर है, लंबा है। आप …।"

"मैं पुलिसवाली हूँ। तुम्हें इतना तो स्मरण होगा ही।"

"किन्तु आप ….।"

“यही न की मैं एक स्त्री हूँ? मैं तुम्हाररे साथ चल रही हूँ। इस रहस्य को हमें साथ मिलकर पाना है तो मैं तो सदैव साथ ही रहूँगी।”

“ओह!”

“चलो चलने की तैयारी करते हैं। आओ, बैठो। योजना बताते हैं।”

“आप बड़ी हठीली हैं, सारा जी।”

“जगत की सभी स्त्रीयां हठीली ही होती हैं। उसे हठ करने के लिए योग्य व्यक्ति मिलनी चाहिए।” सारा ने शैल को ज्ञान बाँट दिया।

“मार्ग में कुछ स्थान पर गाँव आते हैं, कुछ स्थान पर जंगल। कुछ स्थान पूर्ण रूप से निर्जन भी हैं। मेरा मानना है कि जहां गाँव हैं, मानव बसे हैं वहाँ किसी ने उस लड़की की हत्या नहीं की होगी। या तो जंगल में या तो निर्जन स्थान पर किसी ने लड़की को मारा होगा।” शैल ने संभावनाएं प्रकट की।

“शैल, एक बात कहूँ? अप्रसन्न नहीं होंगे?”

“आप मुझ से वरिष्ठ हैं, कहो।”

“हम हर बार उस मृतदेह के लिए ‘उस लड़की’ का शब्द प्रयोग करते हैं। क्या यह उचित होगा आप जैसे नारी सम्मान करने वाले व्यक्ति के लिए?”

“नहीं। किन्तु हम उसका नाम भी नहीं जानते। ऐसी स्थिति में और क्या कर सकते हैं?”

“उसे हम अपनी तरफ से तो कोई नाम दे सकते हैं न?”

“तो उसे अनामिका कहें?”

“नहीं। अनामिका तो वही हो गया - नाम विहीन!”

“तो?”

“मेरे मन में एक नाम आ रहा है जो यूरोपीय देश में भी, भारत में भी, हिन्दू में भी, मुस्लिम में भी, ख्रिस्तीयों में भी प्रचलित है।”

“कौन स नाम?”

“मीरा। उसे हम मीरा नाम दे दें?”

“मीरा?”

“हाँ। कैसा लगा यह नाम?”

“वाह। मीरा नाम सुंदर है। आज से ही हम उस घटना को मीरा नाम देते हैं। सभी स्थान पर हम मीरा ही कहेंगे, मीरा ही लिखेंगे।”

“किन्तु एक समस्या है।”

“कैसी समस्या?”

“हमारे मन से हम इस घटना को मीरा नाम नहीं दे सकते।”

“क्यों?”

“इसके लिए हमें अनुमति लेनी पड़ेगी।”

“उसी से?”

“और नहीं तो क्या?”

“ठीक है, मांग लेना अनुमति। दे तो भी ठीक है, न दे तो भी ठीक। हम तो उसे मीरा ही कहेंगे। क्या विचार है तुम्हारा?

चलो छोड़। कल से यात्रा आरंभ करते हैं।”

“कल से नहीं।”

“क्यों?”

“इसके लिए भी तो अनुमति लेनी पड़ेगी।” शैल के शब्दों का व्यंग सारा समझती थी। हंस पड़ी। शैल भी हंसने लगा।

[28]

“तो अब आप पदयात्रा पर जाना चाहते हो श्रीमान शैल?” अधिकारी ने व्यंग रचा। शैल ने उस व्यंग को समझा, मौन रहा।
“और साथ में उस पाकिस्तानी लड़की को भी ले जाना चाहते हो?”
“वह कोई लड़की नहीं है। इंस्पेक्टर सारा उलफ़त नाम है उनका।” शैल के प्रत्युत्तर से अधिकारी लज्जित हो गया।
“हाँ, वही।” अधिकारी ने स्वयं को संभाला, “और उस मृत अनामी लड़की को अपनी तरफ से एक नाम देना चाहते हो।”
“हमारे यहाँ मृत व्यक्ति को स्वर्गस्थ कहा करते हैं, महाशय।” शैल ने अधिकारी को पुन: विचलित कर दिया।
“क्या नाम देना है उस स्वर्गस्थ को?”
“मीरा।”
“और कितने दिनों तक चलेगी आप दोनों की पदयात्रा?”
“जब तक मूल घटना स्थल नहीं मिल जाता।”
“तब तक इस घटना पर कोई कार्य नहीं होगा? कोई प्रगति नहीं होगी?”
“कार्य के लिए ही जा रहे हैं।” अधिकारी के पास अब कोई तर्क नहीं था। उसने कहा, “ठीक है। कुछ समय बाहर प्रतीक्षा करो। मैं उचित कार्यवाही करता हूँ।”
शैल कक्ष से बाहर चल गया। जाते जाते नाम पट पर लिखा अधिकारी का नाम शैल के मुख से निकाल गया, “नदीम पठान, IAS।”
शैल के बाहर जाते ही नदीम ने फोन लगाया, “हमारे लिए एक अवसर अपने आप चलकर आया है।”
“कैसा अवसर?” सामने से उसने पूछा।
“वह दोनों नदी के उद्गम की दीशा में पैदल चलते हुए मूल घटना स्थल तक जाना चाहते हैं।”

“तुमसे अनुमति मांगी है उसने?”
“वह तो अनिवार्य है।”
“कितने समय तक जाएंगे?”
“अनिश्चित काल तक।” नदीम कुटिल हास्य कर बैठा।
“वाह, यह तो सुंदर अवसर है। दे दो, उन्हें अनुमति दे दो। दोनों को अनुमति दे दो। ध्यान रहे कि अनुमति निश्चित समय के लिए ही देना किन्तु थोड़े अधिक दिनों के लिए देना। वे जब यहाँ से दूर रहेंगे तब ही हम अपनी योजना पर काम कर सकेंगे।”
“ठीक है, पंद्रह दिनों के लिए अनुमति दे देता हूँ। तब तक अपनी योजना काम कर लेगी। न बजेगा बांस, न बजेगी बाँसुरी।”
नदीम का हास्य अधिक कुटिल हो गया।
“इसी प्रकार काम करते रहो, तुम्हारा लाभ होगा।”
“सपन को भेज देना। उसकी आवश्यकता रहेगी। और अपनी चेनल पर यह ब्रेकिंग न्यूज भी चल देना।”
“हमारा चेला सपन कल ही तुम्हारे पास आ जाएगा। एक और बात सुन लो नदीम, तुम अभी कच्चे खीलाड़ी हो। रविश राठी को क्या करना है, कब करना है, क्यों करना है वह तुमसे मुझे नहीं सीखना है। स्मरण रहे कि तुम और सपन केवल मेरे प्यादे हो। खेल तुम नहीं मैं खेलता हूँ।” रविश राठी ने फोन काट दिया।
रविश के शब्दों ने नदीम को क्रोधित और लज्जित कर दिया। उसने दो चार घूंट पानी पिया और अनुमति पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। शैल को बुलाकर कहा, “मैंने अनुमति दे दी है। प्रयास करना कि पंद्रह दिनों में कोई ठोस प्रमाण प्राप्त हो जाए और रहस्य प्रकट हो जाए।”
“जी।”
“तुम इन पंद्रह दिनों तक सारा के साथ जितना चाहो, प्रकृति का पूरा आनंद ले लेना।”
शैल ने अनुमति पत्र ले लिया, “श्रीमान नदीम, आप अपने मन की विकृति प्रकट कर रहे हो। अपनी गंदगी अपने पास ही रखो।” शैल ने एक तीव्र दृष्टि नदीम पर डाली, नदीम विचलित हो गया।

“पुलिसवाला हूँ, स्मरण में रखना।” कहते हुए शैल कक्ष से चला गया। नदीम क्षणभर शैल के शब्दों के आघात से घिरा रहा। उसे प्रस्वेद होने लगा। उठकर एसी के सामने खडा हो गया। जब आघात से उभरा तब पानी पिया और खुरसी पर बैठ कर अपने आप बोला, “यह अपमान का प्रतिशोध लेकर रहूँगा, शैल।”

^^^^^^^

“शैल, दस दिन बित गए, अभी तक हमें ऐसा कोई स्थान नहीं मिला जो घटना का मुल स्थल हो और न ही ऐसे कोई संकेत मिल रहे हैं।”

“साराजी, इन दस दिनों में हम 272 किलो मीटर की पैदल यात्रा कर चुके हैं तथापि कोई कड़ी नहीं मिल रही है।”

“कहाँ होगा वह घटना स्थान?”

“शेष 1200 किलो मीटर में कहीं होगा।”

“इस प्रकार चलते रहने पर अभी भी चालीस पचास दिनों के पश्चात शेष बारह सौ किलोमीटर की यात्रा सम्पन्न होगी।”

“और तभी ही हम कैलास पर्वत तक जा पहुंचेंगे।”

“शैल, हम पुलिसवाले हैं, कोई पर्वतारोही नहीं। इस बात का विस्मरण कैसे हो गया तुम्हें?”

“स्मरण है, मुझे सब स्मरण है, किन्तु इसके अतिरिक्त कोई उपाय भी नहीं है।”

“यह कैसा रहस्य है? यह कैसी घटना है? अपने भीतर न जाने क्या क्या छिपा के बैठी है!” कहते हुए सारा नदी के प्रवाह के समीप जाकर बैठ गई। नदी के बहाव को अनिमेष देखती रही। नदी में कुछ क्षण पूर्व उगे सूर्य का प्रतिबिंब पड रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे प्रवाह के साथ सूर्य भी स्वयं बह जाना चाहता हो। सारा के मन में भी विचारों का प्रवाह बहने लगा।

‘हम भी तो समय नाम की नदी के प्रवाह में बहते जा रहे हैं, इस सूर्य के प्रतिबिंब की भांति।’

‘किन्तु वास्तव में सूर्य तो बह नहीं जा रहा।’

‘हमें तो दिख रहा है कि वह भी प्रवाह के साथ बह रहा है।’

‘यह भ्रमणा है। बह तो पानी रहा है, सूर्य नहीं। गगन में देखो, सूर्य कितना स्थिर, कितना निश्चल है, कितना निर्लेप भी। पानी के बहाव का उस पर कोई प्रभाव नहीं है।’

‘तो आँखें जो देख रही है वह क्या है?’

‘छलना, केवल छलना। तुम्हें छलना से बचना होगा। स्थिर रहना होगा। सूर्य की भांति।’

“मैं ..., मैं ...।”

“क्या बात है साराजी?”

“हं हं ...।” सारा अपने विचारों से जागी।

“सारा जी आप स्वयं से कुछ बातें कर रही थीं?”

“बस यूँ ही। नदी के इस प्रवाह को देखकर मन विचारों में उलझ गया।”

“होता है, मन कभी कभी भटक जाता है।”

“नहीं, नहीं।”

“ऐसा भटकाव भी उपकारक होता है। कभी कभी यह हमें नई दीशा देता है। नया उत्साह प्रदान करता है।”

“तुम्हारी यह बात को मैं स्मरण में रखूंगी।” सारा ने आँखें बंद की और मनोमन सूर्य को वंदन किया।

“आज ग्यारहवाँ दिन है, सारा जी। हमें दी गई अवधि पाँच दिनों में पूर्ण हो जाएगी। तब हमें लौटना पड़ेगा।”

“तभी नहीं, आप दोनों को अभी ही लौटना होगा।” किसी अज्ञात स्वर ने दोनों को चौंका दिया। दोनों ने स्वर की दिशा में मुंह घुमाया, सम्मुख उनके नदीम खड़ा था!

[29]

“आप?” दोनों ने एक साथ पूछा।

“हाँ, मैं। इतने दिनों के समय में आप के पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है। अत: ...।”

“किन्तु हमारा प्रयास चल रह है।”

“प्रयास नहीं, परिणाम चाहिए हमें। शीघ्र ही।”

“और अभी भी पाँच दिन शेष हैं।”

“नहीं, सारा जी। इनसे कोई तर्क वितर्क न करें। हाँ तो नदीम महाशय, जो भी स्थिति है आपको विदित ही है। कहो, हमारे लिए क्या आदेश है?” शैल ने स्थिति को संभालने के लिए प्रयास किया।

“अब आप दोनों को हम कोई आदेश नहीं देंगे।”

“अर्थात?” सारा ने संशय प्रकट किया।

“इस घटना का अन्वेषण अब किसी अन्य को सौंप दिया गया है। आप दोनों को इससे मुक्त किया गया है। यह रहे आदेश।” नदीम ने एक पत्र दोनों को धर दिया। उस पत्र का तात्पर्य सारा और शैल भली भांति जानते थे। सारा ने चिंतित मुद्रा में शैल की तरफ देखा। शैल ने संकेतों से कहा, ‘शांत रहकर स्थिति को स्वीकार कर लो।’

सारा ने नदीम से पत्र ले लिया।

“अब आप दोनों मुक्त हो। प्रकृति भी आपके साथ है। जितना चाहो आनंद प्रमोद कर लो। सारा, शैल का पूरा ध्यान रखना।”

नदीम के शब्दों में व्यंग के साथ ईर्ष्या भी थी। सारा उन शब्दों से उत्तेजित हो गई, नदीम की तरफ दौड़ गई, “क्या कहा? श्रीमान नदीम, अपनी विकृति का प्रदर्शन करते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आ रही? ऐसे विकृत पुरुषों को केवल पाकिस्तान में ही देखे थे, अब यहाँ भी देख लिया। चाहूँ तो अभी इसी क्षण तुम्हें इन हाथों से पीट डालूँ, पुलिसवाली का हाथ है यह, आईएएस नदीम! एक बार पड गया तो उठने के योग्य भी नहीं रहोगे।” सारा का रौद्र रूप देखकर नदीम भयभीत हो गया। क्षण भर गहन श्वास लिया और पलटवार किया, “तुम इसी उद्देश्य से तो आई हो यहाँ। इसी काम के लिए तुम्हें तुम्हारी सरकार ने भेजा है। भारत के पुलिस और सेना के जवानों को अपने रूप की जाल में फँसाकर यहाँ से संवेदनशील एवं गोपनीय रहस्यों को अपने देश में भेज सको।”

नदीम की बात सुनकर सारा की सारी उत्तेजना ठंडी पड गई। कुछ बोल ही न पाई।

“सीधे सीधे अपने देश चली जाओ, इसी में तुम्हारा हित है।” नदीम ने स्पष्ट कह दिया और वहाँ से चला गया।

शैल इन बातों को सुनकर आघात में पड गया। सारा ने शैल की तरफ देखा। शैल ने अप्रसन्नता से मुंह घुमा लिया। वहाँ से वह चलने लगा।

“शैल मेरी बात सुनो, मेरा विश्वास करो। मैंने ऐसा...।” सारा के शब्द हवा में विलीन हो गए। नदी के घोष में सारा का शब्दघोष लुप्त हो गया। शैल कहीं दूर चला गया। नदी के तट पर बैठकर सारा रोने लगी। तभी किसी ने रुमाल धर दिया। सारा ने उन हाथों को देखा, हाथवाले को देखा।

“निहारिका जी, आप यहाँ?”

“जहां आप, वहाँ हम। लीजिए इस रुमाल से अश्रुओं को पोंछ डालिए।”

सारा ने रुमाल के बिना ही अपने अश्रुओं को रोक लिया। मन को साहस दिया, स्वस्थ हो गई। समग्र घटना क्रम के पीछे के रहस्य को सारा ने क्षणभर में समज लिया।

“सारा जी, हम आपकी सहायता कर सकते हैं। आप चाहो तो अभी भी मीरा की घटना के अन्वेषण से जुड़ी रह सकती हो।”

“इतनी बड़ी बात हो जाने पर ...।”

“बात हमने ही बिगाड़ी है, हम ही बना देंगे।”

“मुझ पर इतना घृणित आरोप?”
“क्या यह आरोप सत्य नहीं है?”
“सत्य था, अब नहीं है।”
“पुलिसवाले कभी भी अपनी योजना को छोड़ते नहीं है। कुछ समय तक भूल सकते हैं किन्तु समय आने पर उस योजना को पार लगा ही देते हैं।” सपन ने घाव पर नामक छिडा। सारा ने मौन रहना ही उचित समझा।
“तो क्या बात बना दें? यहाँ के गुप्त दस्तावेजों एवं माहिती हम आप तक पहुँचा देंगे। आप उसे अपने देश भेज देना। स्वीकार है क्या?”
सपन के इस प्रस्ताव पर सारा ने क्रोध करना चाहा किन्तु वह शांत रही।
“आपका मौन हमारा उत्साह बढ़ा रहा है।” निहारिका के इन शब्दों पर भी सारा मौन ही रही।
“इसके लिए आपको छोटी सी कीमत चुकनी पड़ेगी। नदीम और कभी कभी मुझे प्रसन्न कर देना। तुम्हारा सारा काम हो जाएगा।” सपन के इन शब्दों से सारा की आँखों में तीव्र अग्नि और मुख पर तीव्र क्रोध प्रकट हो गया। उसे देख सपन और निहारिका वहाँ से चलने लगे।
“इस पर विचार अवश्य करना।” जाते जाते निहारिका ने कहा।

+++++++

“विजेंदर, मीरा घटना की सारी सामग्री लेकर आपको नदीम महाशय ने बुलाया है।” नदीम के इस संदेश को सुन विजेंदर सारी योजना को समझ गया। उसने शीघ्र ही शैल को फोन जोड़ा। फोन बंद पाया। विजेंदर ने पुन: लगाया, पुन: बंद पाया।
विजेंदर ने सारा से संपर्क किया। “क्या बात है, विजेंदर?” सारा ने पूछा।
“कुछ ठीक नहीं है। मुझे मीरा की सारी सामग्री के साथ नदीम महाशय ने बुलाया है। मेरा मन आशंकित हो रहा है।”
“तुम्हारी आशंका सत्य है। मीरा घटना से हम दोनों को हटा दिया है।”
“क्या?”
“हं।”

“किसने बताया?”

“आज प्रात: स्वयं नदीम यहाँ आए थे। हमें हटाने का पत्र वह स्वयं दे गए हैं।”

“शैल महाशय कहाँ हैं? मैं उनसे बात करने का प्रयास कर रहा हूँ। उसका फोन बंद आ रहा है। उसे फोन दो, मेरी बात कराओ उससे।”

सारा ने पूरा प्रयास किया तथापि वह फोन पर ही रो पड़ी।

“सारा जी, शैल महाशय कहाँ है?”

“मैं नहीं जानती।”

“क्या?”

“कुछ बात पर मुझसे अप्रसन्न होकर कहीं चल गया है।” सारा निर्बाध रो पड़ी। विजेंदर ने उसे आश्वस्त करने का प्रयास किया किन्तु विफल।

“अभी मध्याह्न हो गया है और अभी तक वह लौटा नहीं है। वह अब कभी नहीं लौटेगा।”

“धैर्य रखो। मुझे अब जाना होगा। नदीम महाशय का दूसरी बार बुलावा आ गया है।” विजेंदर ने फोन रख दिया।

[30]

‘शैल को गए इतना समय हो गया। अभी तक नहीं लौटा। क्या कभी नहीं लौटेगा?’
‘संभव है सारा, सब कुछ संभव है।’
‘मैं जानती हूँ कि दोष मेरा है किन्तु मुझे अपना पक्ष रखने का एक अवसर भी नहीं दिया शैल ने?’
‘इतना सब कुछ जानकर किस बात पर तुम अपना पक्ष रखती? क्या उस पर शैल विश्वास करता?’
‘नहीं। कोई भी विश्वास नहीं करता। किन्तु एक बार बात को सुन लेता। पश्चात वह चले जाता, मुझ पर अप्रसन्न रहता, क्रोध करता तो भी मैं सह लेती।’
‘अब तो वह संभव नहीं है सारा।’ सारा ने स्वयं से बात बंद कर ली। आँखें बंद कर ली।
उद्विग्न मन लेकर बैठी रही। जब विजेंदर का फोन आया, उससे बात की तो उसका अशांत मन अधिक अशांत हो गया।
वह उठी, नदी में जाकर मुंह धोया, पानी पिया। पानी की शीतलता और शीतल हवा ने सारा को शांत कर दिया। नदी में पग रखे हुए वह खड़ी रही। नदी का प्रवाह उसे स्पर्शता हुआ अपने मार्ग

पर आगे बढ़ता रहा। नदी का घोष उसे अच्छा लगा। उसे सुनते हुए सारा नदी में निश्चल सी खड़ी थी, जैसे कोई जल प्रतिमा हो! नदी के साथ साथ समय का प्रवाह भी चलता रहा।
समय की एक बूंद ने सारा को कुछ शब्द सुनाए। "सारा जी, आओ। भोजन कर लेते हैं।"
भ्रमणा मानते हुए सारा ने उन शब्दों को अनसुना कर दिया।
समय की दूसरी बूंद ने भी यही शब्द घोष किया। "सारा जी, आओ। भोजन कर लेते हैं।"
वह घोष नदी के घोष से भिन्न था, सारा उसकी अवगणना नहीं कर पाई। उसने शब्द की दिशा में देखा। वह अचंभित रह गई। सहसा वह रोने लगी। सम्मुख उसके शैल खड़ा था, वह उसे देखती रही, रोती रही।
"सारा जी, भोजन का समय तो निकल गया है। मैं जानता हूँ कि आपने कुछ नहीं खाया है। चलो, खा लो।"
सारा ने स्वयं को संभाला। "शैल, तुम?" वह आगे बोल न सकी।
"सारी बातें भोजन के पश्चात। अभी खाना खा लो।"
"नहीं। मुझे नहीं खाना।"
"क्यों?"
"मुझे भूख नहीं है।"
"भूख तन को लगती है, मन को नहीं। खिन्न मन का त्याग करोगे तो भूख की प्रतीति होगी।"
"मैंने कहा न, मुझे भूख नहीं है?"
"अब मान भी जाओ। बड़े लोग हठ नहीं करते।"
"यह हठ नहीं है शैल, मेरे कर्मों का दंड है।"
"दंड तो जगत नियंता देते हैं, मनुष्यों को स्वयं को दंड देना का अधिकार नहीं है। और जो कर्म, जो अपराध आपने किया ही नहीं उसका दंड कैसा?" शैल ने कहा।
"क्या?"
"यह सत्य है कि आपको यहाँ जिस उद्देश्य से भेजा गया था वह निश्चय ही अपराध का कर्म है किन्तु अभी तक तो आपने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है तो दंड का औचित्य नहीं है।"
"तुम क्या कह रहे हो, शैल?"
"जो मुझे प्रतीत हो रहा है वही कह रहा हूँ।"

“तो क्या तुम मुझ पर विश्वास करते हो?”

“हाँ, करता हूँ।”

“तो मुझ पर अप्रसन्न क्यों हो?”

“तब था, अब नहीं हूँ।”

सारा के मुख पर प्रश्न थे।

“बाकी सब भोजन के पश्चात। मुझे तो खूब भूख लगी है।” शैल भोजन खोलकर बैठ गया। सारा भी आकर बैठ गई। दोनों ने मौन ही भोजन सम्पन्न किया।

( ) ( ) ( )

शैल के फोन की घंटी बजी, “बोलो विजेंदर।”

“आप कहाँ थे? मैंने कई बार प्रयास किया।”

“वह बंद था। अब चालू रहेगा। कहो क्या बात है?”

“प्रथम तो बता दूँ कि मैंने एक घंटे पूर्व सारा जी से बात की थी। वह रो रही थी।”

“अब वह मेरे साथ ही है, प्रसन्न हैं. भोजन भी कर लिया है। दूसरी बात है कुछ?”

“मीरा घटना की सभी सामग्री के साथ मुझे नदीम ने बुलाया था।”

“क्या? तुमने उसे दी तो नहीं?”

“देना पड़ा। आदेश तो मानना पड़ेगा न?”

“ओह।”

“वह सब उन्होंने राहुल और सोनिया को दे दी। अब वे दोनों मीरा घटना को देखेंगे।”

“धत्त तेरी की। अब वे दोनों अन्वेषण करेंगे?” विजेंदर मौन रहा।

“और क्या सूचना दी है नदीम ने उन दोनों को?”

“मुझे शीघ्र ही कक्ष से बाहर जाने को कहा तो मैं चला गया। किन्तु कुछ बात अवश्य है। कोई योजना बनाई जा रही थी उस कक्ष में।”

“कैसी योजना?”

“मुझे ज्ञात नहीं है। किन्तु प्राय: आधे घंटे तक दोनों नदीम के कक्ष में थे।”

“ओहो हो।”

“अब क्या होगा?”
“देखते हैं क्या होता है। तुम अपने आँख कान खुले रखना।” शैल ने फोन समाप्त किया।
सारा ने शैल को प्रश्नार्थ दृष्टि से देखा। शैल ने सारी बात सारा को बता दी।
“कौन है यह दोनों? क्या नाम बताया?”
“राहुल और सोनिया। बड़े शातिर हैं। किसी को भी फँसाकर मीरा घटना का रहस्य प्रकट करने का दावा कर देंगे और मीरा घटना बंद कर दी जाएगी।”
“तो सत्य तो सदैव अद्रश्य ही रहेगा क्या? सत्य का क्या होगा?”
“सत्य की किसे चिंता है यहाँ? सत्य से सभी भागते रहते हैं।”
“यह तो अनुचित है।”
“उन दोनों की यही कार्य पद्धति है। यही उनका चरित्र है। नदीम का पूरा पूरा सहयोग है उनको।”
“यह तो पाप है।”
“पाप या पुण्य उनके शब्दकोश के शब्द नहीं हैं। वैसे तो नदीम, राहुल, सोनिया सब केवल मोहरे हैं।”
“तो खिलाड़ी कौन है?”
“बहुत बड़े हैं वे। अद्रश्य रहते हैं।”
“तो अब क्या करेंगे?”
“क्या करना चाहिए, सारा जी?”
“अभी तो कुछ भी नहीं सूझ रहा है।” सारा मौन हो गई। शैल भी।
“राहुल और सोनिया को प्रमाण के लिए मूल घटना स्थल तक तो जाना ही पड़ेगा न? उसे ढूँढना तो पड़ेगा ना?” सारा ने सहसा अपनी बात कह दी।
“नहीं, उन्हें ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है।”
“वह कैसे?”
“प्रमाणों और साक्ष्यों का सर्जन किया जाएगा। किसी निर्दोष गरीब को खरीदकर दोषित सिद्ध किया जाएगा। उन दोनों को एक और चंद्रक मिल जाएगा।”
“आप जैसे निष्ठावान व्यक्ति कैसे टिक सकते हैं इन परिस्थितियों में?”

“बस टिक जाते हैं, जैसे आप अपने देश में टिकी हुई हैं। बिना चंद्रक के, बिना किसी प्रतिष्ठा के।”
“यहाँ भी वही भ्रष्ट स्थिति है जो वहाँ है।”
“स्वयं को बचाए रखना है हमें।”
“कितना कठिन है यह सब!”
“सरल मार्ग हमारे लिए नियति ने रखा ही नहीं है, सारा जी।”
“तो अब कौन से कठिन मार्ग पर चलना है, शैल?”
“मूल घटना स्थल की खोज चालू रखनी है।”
“मुझे छोड़कर तो नहीं जाओगे?”
“जब तक आप मेरा विश्वास नहीं तोड़ोगी, मैं आपके साथ रहूँगा।”
“मैं वचन देती हूँ।” शैल ने सारा की बात सुनकर संतोष प्रकट किया।
“राहुल और सोनिया के विषय में पूरी बात कहो, शैल।” सारा ने उत्कंठा से पूछा।
“राहूल राहुल खान है। और सोनिया सोनिया पीटर है।”
“तो क्या राहुल मुसलमान है? सोनिया ख्रिस्ती है?”
“नहीं, हिन्दू है। सेक्युलर हिन्दू। सोनिया भी सेक्युलर हिन्दू है।”
“तब तो वे दोनों तटस्थ होंगे न?”
“हमारे यहाँ सेक्युलर का अर्थ भिन्न है। राहुल मुस्लिम से बढ़कर मुसलमान है और सोनिया ख्रिस्ती से बढ़कर ख्रिस्ती।”
“वह कैसे?”
“हिन्दू परिवार में जन्म लेने के पश्चात दोनों देश की ऐसी विश्वविद्यालय में पढे हैं जो भारतीय संस्कृति की शत्रु है।”
“अर्थात जे एन यु?”
“हाँ। आपने कैसे जाना?”
“तब तो दोनों निहारिका के चेले हैं।”
“इन दोनों को मीरा घटना सौंपने का अर्थ अनर्थ ही है।”
“हमें कुछ करना चाहिए। इन लोगों को रोकना चाहिए।”

“जब तक नदीम जैसे अधिकारी हैं, यह संभव नहीं है।”
“नदीम के स्थानांतरण के पश्चात?”
“दूसरा नदीम आएगा। यह चलता रहेगा।”
“तुम इतने निराश क्यों हो रहे हो, शैल?”
“क्यों कि भारत में सरकार किसी की भी हो, सिस्टम तो वामपंथियों की ही है। प्रत्येक छोटी सी कचेरी से लेकर सर्वोच्च
न्यायालय तक।”
“यह शब्द तो सुने हैं किसी से?”
“सपन और निहारिका ने आपसे कहे थे, हैं न?”
“हाँ यही तो, शैल तुम तो अंतर्यामी हो।”
“ऐसी कोई बात नहीं है। किन्तु ऐसा हम सदैव सुनते हैं, देखते हैं, अनुभव करते हैं। इतने वर्षों की नौकरी में ऐसा अनेकों बार अनुभव किया है। हमारे लिए यह नई बात नहीं है।” कहते कहते शैल के मुख पर पीड़ा के भाव उभर आए। सारा ने उन भावों को ध्यान से देखा। आगे कुछ कहकर पीड़ा बढ़ाने का पाप न करने का उसने सोच लिया। मौन हो गई।

[31]

सोनिया और राहुल ने मीरा घटना के सभी कागजों, फ़ाइलों, चित्रों, रिपोर्टों, चलचित्रों आदि का अभ्यास प्रारंभ कर दिया। तीन दिनों के पश्चात दोनों नदीम के कक्ष में थे।
“हमारे पास एक प्रस्ताव है। आपकी अनुमति चाहिए।” सोनिया ने कहा।
“क्या प्रस्ताव है? पूरी बात कहो। बैठो। क्या पीओगे? ठंड या गरम?”
“अभी तो कार्यालय में हैं, गरम ही पियेंगे।” राहुल ने गूढ़ार्थ में कहा।
“कार्यालय के पश्चात ठंडा ही पिलाते हो न?” सोनिया ने नदीम को छेड़ा। सोनिया के वदन पर उभरे भावों में नदीम के लिए आमंत्रण था। नदीम ने उसे पढ़ लिया। उसने एक कुटिल स्मित

दिया। सोनिया और राहुल ने अपनी पूरी योजना और प्रस्ताव नदीम के समक्ष रखा। नदीम को उसे सुनकर प्रसन्नता हुई।
“वाह, क्या योजना है आप दोनों की! वाह वाह। आप दोनों में से यह किसकी योजना है?” नदीम ने पूछा ।
“मेरी।” “मेरी।” उत्साह से राहुल और सोनिया एक साथ बोल पड़े।
क्षण में ही सुधार करते हुए बोले, “हम दोनों की यह योजना है।”
नदीम ने प्रस्ताव को अनुमति दे दी। दोनों योजना पर शीघ्रता से काम करने लगे।
!@!@!@!@

“डीएनए परीक्षण का रिपोर्ट आ गया है, महाशय।” विजेंदर ने शैल को फोन पर सूचना दी।
“क्या कहता है वह?”
“विशेष कुछ नहीं।”
“यह तो ज्ञात हो गया होगा कि मीरा किस अनुवंश की है।”
“नहीं। लिखा है कि डीएनए परीक्षण विफल हो गया है। मीरा का डीएनए किसी भी अनुवंश से मिलता नहीं है।”
“क्या? ऐसा कैसे हो सकता है?”
“यही सत्य है, यही इस रोपर्ट में लिखा है।”
“यह तो आश्चर्य है। ठीक है, और क्या जानकारी है?”
“एक घंटे पूर्व सोनिया और राहुल नदीम के कक्ष में गए थे। जाते समय दोनों उत्साह से भरे थे।”
“और लौटते समय?”
“लौटकर आए तब उनका वह उत्साह अधिक बढ़ गया था। दोनों अत्यंत प्रसन्न दिख रहे थे।”
“तब तो अवश्य ही कोई चिंता की बात होगी किसी निर्दोष के लिए। क्या बात थी, कुछ ज्ञात हुआ?”
“नहीं विदित हुआ है। आपके सामने भी कुछ बात हो सकती है।”

“उसकी मुझे कोई चिंता नहीं है। मुझे तो किसी अज्ञात निर्दोष की चिंता हो रही है। कौन होगा वह अभागा?”
“जानकारी प्राप्त होते ही बात दूंगा।”
“सतर्क रहना, विजेंदर।” फोन सम्पन्न हो गया।
फोन पर हो रही बातों से अनुमान करने का प्रयास कर रही सारा ने आँखों से ही शैल को प्रश्न पुछ डाले। शैल ने उत्तर देते हुए सारी बातें कह दी।
“यदि ऐसी बात है तो निश्चित ही चिंता की बात है, शैल।”
“और एक नए रहस्य की भी।”
“वह कैसे?”
“डीएनए परीक्षण का विफल होना, मीरा का डीएनए का किसी भी अनुवंश से न मिलना ही बड़े सहस्य की बात है। आज तक यह परीक्षण किसी के लिए विफल नहीं रहा।”
“वह तो है ही। किन्तु इससे अन्वेषण में कोई लाभ भी नहीं हो सकता था।”
“किन्तु मीरा की मृत्यु के साथ स्वयं मीरा रहस्य बन रही है। मीरा अपने साथ कैसे कैसे रहस्यों को लेकर आई है?”
“और वह भी मृत होकर! यदि जीवित आती तो?”
“तो कोई रहस्य ही शेष नहीं रहता।”
“यहाँ तो रहस्य जीवन में नहीं, मृत्यु में छिपा है। कैसी विस्मयभरी घटना है?”
सारा ने लंबा नि:श्वास लेते हुए कहा। शैल मौन हो गया, गहन विचार में डूबा हुआ अनंत आकाश को देखता रहा।
“चलो, आगे चलें?” सारा ने बात करने का प्रयास किया। शैल ने कुछ नहीं कहा। बस चलने लगा। सारा भी उसका अनुसरण करते हुए चलने लगी। चलते चलते दोपहर ढल गई। तब मार्ग में किसी को देखकर सारा रुक गई।
“शैल, तुमने कुछ देखा?”
“आप उन दो व्यक्तियों की बात कर रही हो जो ब्रह्मचारी के वेश में थे? जो अभी अभी यहाँ से गए हैं?”
“हाँ, वही।”

“देखा है, तो?”

“इसका अर्थ है कि समीप ही कोई ऋषि या संत का निवास है। क्या कहते हैं उस निवास को?”

“आश्रम या गुरुकुल।?”

“हाँ। आश्रम और गुरुकुल निकट ही होगा।”

“हाँ, अवश्य होगा।”

“वहाँ चलते हैं। आज रात्री वहाँ विश्राम करते हैं।”

“नहीं, नहीं। हमारे कारण उन्हें व्यवधान हो सकता है।”

“शैल, इतने दिनों से खुले आकाश के नीचे पत्थर की शिलाओं पर या किसी वृक्ष के नीचे धरती पर हमने रात्री व्यतीत की है। ठंड को सहा है। वनचरों का भय भी सहा है। आज यदि एक रात्री आश्रम के कक्ष में कुछ विश्राम कर लेंगे तो? मुझे नहीं लगता कि कोई भी संत हमें आश्रय देने में कोई संकोच करेंगे। संत बड़े दयालु होते हैं।”

“संतों के विषय में आप इतना विश्वास से कैसे कह सकती हैं? आप तो मौलानाओं से परिचय रखती हैं?”

“मैं दोनों से परिचय रखती हूँ।”

“दोनों से?”

“पाकिस्तान में मौलानाओं से परिचय होना स्वाभाविक है।”

“किन्तु संतों का परिचय?”

“धैर्य रखना होगा शैल। बताती हूँ। आओ बैठो यहाँ, नदी के प्रवाह से तन को धो डालो, मन को शांत कर डालो।”

“वह तो ठीक है, आप अपनी बात कहो।”

“बात सुनने के लिए धैर्य और मन की सज्जता आवश्यक होती है। कर सकते हो?”

“क्या कोई रहस्य का उद्‌घाटन करने जा रही हो?”

सारा ने कुछ नहीं कहा। नदी के समीप गई। हाथ मुंह धोए। स्वस्थ होकर तट पर पड़ी एक शीला पर जाकर बैठ गई। शैल ने सारा का अनुकरण किया, दूसरी शील पर बैठ गया। नदी के प्रवाह से आता हुआ मंद मंद समीर दोनों के तन को स्पर्श करता हुआ बहने लगा। दोनों को यात्रा के श्रम से कुछ मुक्ति मिली। शैल प्रतीक्षा करने लगा, सारा के शब्दों का।

शैल की प्रतीक्षा का अंत करते हुए सारा ने कहा, “शैल, 1947 की भारत विभाजन की बात से तो तुम परिचित हो।”
“हाँ।” शैल ने रुचि प्रकट की।
“हमारा परिवार पूर्व बंगाल के किसी छोटे से गाँव में रहता था। 1927 में वहाँ से हम वर्तमान में पाकिस्तान के पंजाब में आ बसे। हमारे पूर्वजों ने वहाँ व्यापार प्रारंभ किया। व्यापार चलने लगा। धन जमा होने लगा। हमने पंजाब में दो कोठियाँ खरीद ली। उस समय भी हमारे पास कार थी। घोड़े थे, तांगे थे। हमारे परिवार का बड़ा सम्मान था उस समय पूरे प्रांत में।” सारा रुकी। भूतकाल के किसी क्षण को जैसे वह अपने भीतर अनुभव कर रही हो। शैल उसे अनिमेष जिज्ञासा के साथ देखता रहा।
सारा ने समय के उस बिन्दु से आगे बढ़ते हुए कहा, “पश्चात वर्ष आया 1947 का! देश की स्वतंत्रता का समय। स्वतंत्रता? हमारे साथ इस शब्द से बड़ी कोई छलना नहीं हुई। वास्तव में वह देश विभाजन का समय था। हमारे नेताओं की, विशेष रूपसे गांधी और नेहरू की विफलता की वह घटना थी। उस विफलता को स्वतंत्रता जैसा सुंदर नाम देकर सफलता के रूप में प्रस्तुत कर दिया। हमारी मति को भ्रमित कर दिया गया। स्वतंत्रता नामके नए शब्द के नशे में डुबो दिया। हम जिसे मुक्ति समझ रहे थे वह तो वास्तव में एक छलना थी, भ्रम था, षड्यन्त्र था। उस समय हम वह समझ न सके। अंतत: देश का विभाजन हो गया।” सारा रुक गई। उसके मुख पर बीते हुए समय का कोई गहरा घाव भाव बनकर उभर आया। शैल ने उसे देखा।
‘कोई तीव्र वेदना, अत्यंत पीड़ा प्रतीत हो रही है साराजी के शब्दों में। कुछ तो है जिससे आज भी उसका मन घाव से भरा है, ह्रदय छलनी छलनी हो चुका है। विभाजन की पीड़ा के विषय में बहुत सुना है, पढा है किन्तु वह सब परोक्ष ज्ञान था। साराजी जो कह रही है, कहने जा रही है वह प्रत्यक्ष है। परोक्ष बातों से कभी किसी की पीड़ा का अनुमान या अनुभव नहीं हो सकता। यह तो प्रत्यक्ष से ही संभव है। क्या आज साराजी की पीड़ा का प्रत्यक्ष अनुभव मुझे विचलित कर देगा?’
“ओ ईश्वर, मुझे शक्ति देना उसे सहने की।” शैल बोल पड़ा।
“क्या कहा, शैल?”
“कुछ नहीं।”

“कुछ हुआ क्या?”

“नहीं, नहीं। आप कहिए, आगे क्या हुआ?”

[32]

“विभाजन के साथ ही प्रारंभ हुआ स्थानांतरण। लाखों लाखों लोग अपने स्थायी स्थान को छोड़कर अच्छे और सुरक्षित भविष्य के सपने साथ लिए चल पड़े दूसरे देश में जाने को। भारत से पाकिस्तान, तो पाकिस्तान से भारत जाने वाले लोगों का समुद्र सीमाओं पर लहराने लगा। भारत से पाकिस्तान आनेवाले सभी सुरक्षित और सकुशल आ गए किन्तु पकिस्तान से चलनेवाले लाखों लाखों व्यक्तियों में से केवल कुछ हजार ही भारत पहुँच सके। बाकी सभी ने अपने प्राण सीमाओं को पार करने से पूर्व ही गंवां दिए। जो भारत पहुँच सके थे उनमें से भी अधिकतर क्षत विक्षत थे। कोई कुशल नहीं था। सभी ने अपना कुछ न कुछ खोया था। उस देश, जो कभी उसका ही देश था, की सीमा पार कर इस देश में प्रवेश करने का मूल्य चुकाया था उन्होंने। कैसा मूल्य, जानते हो?”
शैल के पास कोई उत्तर नहीं था। उसने अपने भावों से ही पूछा, “?”
“अपनी धन संपत्ती तो सभी ने खोई थी। जो सबसे मूल्यवान खोया था वह था अपनों को। मां, बहन, पिता, भाई, पुत्र। मित्र, शत्रु! किसी न किसी को वहीं सीमा के उस पार मृत छोड़कर भागे थे सभी। जो जीवित रहे उनके अंगों को काटा गया, स्त्रियों का बलात्कार किया गया। अनेक स्त्रियों ने तो निर्वस्त्र अवस्था में भारत में प्रवेश किया। किन्तु, भारत प्रवेश से उनकी यातनाओं का अंत नहीं आया।” सारा ने कुछ घूंट पानी पिया, आंसुओं के घूंट भी। उसकी आँखों में उमडती वेदना का, मुख पर उभरी पीड़ा का शैल प्रत्यक्ष अनुभव करता रहा। मन उसका भी घावों से भर गया, ह्रदय तीव्र व्यथा से भर गया। किसी प्रकार से प्रयत्न पूर्वक उसने अपने आंसुओं को रोके रखा था। अपने आंसुओं से वह सतलज नदी के प्रवाह को अपवित्र नहीं करना चाहता था। अभी तक वह उसमें सफल रहा था किन्तु इससे उसे बड़ा कष्ट हो रहा था। वह उसे सहता रहा, मौन रहकर। स्थिर होकर।
“भारत की सीमा में प्रवेश करनेवाले प्रत्येक को अपना कुछ न कुछ छूट जाने का, कुछ न कुछ खोने का दु:ख अवश्य था तथापि भारत में अपने सुरक्षित भविष्य की आशा से बलात प्रसन्न हो रहे थे। वह प्रसन्नता उनकी नियति में थी ही नहीं। क्यों कि भारत में उनकी नियति विधाता ने नहीं, गांधी ने लिखनी थी।
गांधी? महात्मा गांधी! एक ऐसा महात्मा जिसे कभी विस्थापितों की वेदना, पीड़ा, कष्ट, दु:ख, यातना, समस्या आदि की चिंता ही नहीं थी। उसके मन में विस्थापितों के लिए क्या जाने क्या

घृणा थी, क्या तिरस्कार था? विस्थापित सभी हिन्दू थे। उनका कष्ट देखकर उस महात्मा को कोई विशेष आनंद प्राप्त हो रहा था। उसे 'महात्मा' कहना विश्व के सभी संतों और ऋषियों का अपमना है।" सारा थक गई, बोलते बोलते। रुकी। गहन श्वास लेने लगी। अब जो बात वह कहने जा रही थी उसके लिए स्वयं को वह सज्ज कर रही थी। हिम्मत और साहस जूटा रही थी। उसे समय लगा सज्ज होने में।

"भारत से पाकिस्तान गए मुसलमानों के घर, मस्जिद, मदरसे भारत के गांवों में खाली होते गए। वैसे ही पाकिस्तान में घर, मंदिर, दुकानें आदि की स्थिति बनती गई। पाकिस्तान में प्रवेश करते ही मुसलमान उन हिंदुओं के खाली घरों और मंदिरों में घुस गए, उसे भोगने लगे। उन्हें वहाँ घर - निवास सरलता से मिल गए। कुछ ही समय में काम धंधा भी मिल गया। उनका जीवन वहाँ स्थिर होने लगा। किन्तु ...।" सारा रुकी, एक लंबी श्वास छोड़ी।

"किन्तु क्या?" शैल अधीर हो गया।

"भारत आए हिंदुओं का ऐसा भाग्य नहीं था। किसी को भी न घर मिला, न आश्रय मिला न ही कोई काम धंधा। खाली मस्जिदों, मदरसों और मकानों में प्रवेश करने से उन्हें रोका गया। जानते हो किसने रोका उन्हें?"

"नहीं।"

"गांधी ने, महात्मा गांधी ने। गांधी का तर्क था कि जब कभी भारत से पाकिस्तान गए मुसलमान पुन: भारत में आएंगे तो उन्हें उनकी संपत्ति का उपयोग करने में सरलता रहे इसलिए उन खाली स्थानों का उपयोग करने से महात्मा ने हिंदुओं को रोक दिया।

विस्थापित हिंदुओं के लिए ऊपर आभ और नीचे धरती। न खाने को कुछ न पीने को। न रहने को न सोने को। वर्षा, ठंड, गर्मी सभी को उन्हें सहन करना था। जैसे वे सभी जंगल के पशु हो ! जंगल के पशुओं के लिए तो सुरक्षित रहने के लिए जंगल की गुफ़ाएं भी होती हैं किन्तु इन अभागों के लिए गुफ़ाएं भी कहाँ?

महीनों बीत जाने के पश्चात उन्हें शरणार्थी शिविरों में आश्रय दिया गया। वहाँ उनके साथ पशुओं से भी निम्न स्तर का व्यवहार होता रहा। सभी उसे चुपचाप सहते रहे, अपने भाग्य पर रोते रहे। वह महात्मा हँसता रहा, विकृत आनंद लेता रहा। सभाएं करता रहा, मिथ्या वचनों से उपदेश देता रहा। हिंदुओं को मरने के लिए छोड़ दिया गया।

अपने ही देश में, अपनी ही भूमि पर, अपने ही महात्मा के कारण शरणार्थी बन गए। इन बातों की पीड़ा का हम केवल अनुमान ही कर सकते हैं। इनके पास पाकिस्तान में अखूट धन संपदा थी, व्यापार था, घर था, परिजन थे, मान सम्मान था, सुख था। सब छोड़कर आए थे। सब खो दिया था। और पाया क्या? भारत में आकर कष्ट, पीड़ा, वेदना, यातना, भूख, प्यास, अपमान। ऐसे जीवन से मृत्यु श्रेयस्कर था। किसी भी नेता का रक्त उनकी यातनाओं से गरम नहीं होता था। रक्त जम गया था। स्वतंत्रता के आभासी चित्रों को देश के सामने प्रस्तुत कर सभी नेता उत्सव मना रहे थे। तभी, तभी ...।" सारा रुक गई।

"तभी क्या हुआ सारा जी? रुक क्यों गई?"

[33]

गहन सांस लेकर वह बोली, “यह गांधी का देश है। मेरी बात सुनकर तुम्हें बूरा लग सकता है। संभव है तुम मुझ से घृणा करोगे। मुझे छोड़कर चले जाओगे। अत: अब मैं मौन हो जाती हूँ।”
“आप निश्चिंत होकर कहिए। मैं विचलित नहीं होऊँगा।” शैल ने सारा को आश्वस्त किया।
“तभी एक नर वीर ने शस्त्र उठाया। महात्मा को मार दिया”
“वह आतंकवादी नाथुराम गोडसे था। देश का प्रथम आतंकवादी।”
“शैल, तुम भी भ्रमित हो गए? वीर पुरुष को आतंकवादी कहना तुम्हारे देश का स्वभाव बन गया है।”
“सुना तो यही है कि नथुराम गोडसे आतंकवादी था।”
“वह आतंकवादी नहीं, वीर था। उससे बढ़कर विरपुरुष उस समय सारे भारत में कोई नहीं था। देश के शत्रु को मारनेवाला वीर होता है, आतंकवादी नहीं। शरणार्थियों की दुर्दशा देखकर उसका यौवन तड़प उठा। उसने समस्या की जड़ को ही समाप्त कर दिया। उस वीर पुरुष को भारत ने कभी सम्मान नहीं दिया। फांसी दे दी। सब के सब नपुंसक निकले।” सारा ने बात पूर्ण की। पानी पिया। आकाश को देखती रही।
“इन सारी घटनाओं के विषय में मैंने सुना था। कहीं कहीं छुटपुट लिखा हुआ पढ़ा भी था। किन्तु यह बात इतनी गंभीर थी, इतनी पराकाष्ठा पर थी यह मुझे ज्ञात न था।”
“इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम्हारे देश में सत्य इतिहास लिखना, उसे पढ़ना अपराध है। तुम तो पंजाब में रहते हो। क्या तुमने अपने पूर्वजों से यह सब सुना नहीं था?”
“नहीं। पंजाब हमारा घर नहीं है। हम दक्षिण भारत से हैं। यहाँ मैं कुछ वर्षों से ही आया हूँ।”
“यह भारतीय विडंबना है कि उत्तर वालों की चिंता दक्षिण वाले नहीं करते और दक्षिण वालों की चिंता उत्तर वाले नहीं करते।”
“आपका कहना सत्य हो सकता है किन्तु एक बात मुझे सता रही है। आप तो पाकिस्तानी हो, मुसलमान भी हो। आपको इन बातों की पीड़ा, इन बातों से पीड़ा आज क्यों हो रही है? आपने तो कुछ नहीं खोया है।” शैल ने बड़ा तीखा प्रश्न पूछा किन्तु उसके उस प्रश्न से सारा विचलित नहीं हुई।

“मैं न तो पाकिस्तानी थी न ही मुसलमान।” सारा के शब्दों से शैल विचलित हो गया।
“क्या?”
“मेरी कथा सुनना चाहोगे?” सारा ने शैल की आँखों में आँखें डालकर पूछा।
“मेरी मां ने सिखाया है कि किसी के जीवन की व्यक्तिगत कथा में कभी रुचि नहीं लेना।”
“मेरी कथा सार्वजनिक है। हमारे देश की बात है। हम दोनों के देश की बात है। तब भी सुनना नहीं चाहोगे?”
शैल ने मौन सम्मति दी।
“मैंने कहा था न कि हमारा परिवार पूर्व बंगाल में रहता था। 1927 में वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हम आकार बसे थे। 1947 तक बीस वर्ष की अवधि में हमारे परिवार ने व्यापार में प्रगति कर ली थी। सभी प्रकार के सुख थे। हमारा परिवार हिन्दू था, अपितु ब्राह्मण था। सारा नगर हमें पण्डितजी के नाम से सम्मान देता था। घर में पूजा होती थी, वेद, रामायण - महाभारत आदि ग्रंथों का पठन पाठन होता था। एक संत नगर से दूर अपने आश्रम में रहते थे। अनेक विद्यार्थी वहाँ भारतीय ग्रंथों का अध्ययन किया करते थे। बड़े ज्ञानी एवं निर्लेप व्यक्ति थे वह।
विभाजन के समय उस संत ने हमें कहा था कि हमारे परिवार को भी भारत चले जाना चाहिए। मेरे परदादा ने कहा कि जहां वह संत रहेंगे वहीं हमारा परिवार रहेगा। संत ने हमें अपना आदेश मानने को कहा था किन्तु हमारे परिवार ने उनको नहीं माना। वहीं पाकिस्तान में ही हम रुक गए। समय व्यतीत होता रहा। विभाजन की प्रक्रिया पूर्ण हो गई थी। यहाँ सरकार बन गई थी, वहाँ भी। विस्थापितों का प्रवाह मंद होते होते रुक गया था। तभी प्रशासन और उनके गुंडों के द्वारा हिन्दू परिवारों की प्रताड़ना आरंभ हो गई। हमें देश छोड़कर भारत चले जाने को कहा गया। यदि वहाँ रहना हो तो इस्लाम को स्वीकार करने को कहा गया। आश्रम वाले गुरुजी ने पुन: कहा कि भारत चले जाओ। परदादा ने कहा, यदि गुरुजी भारत चलते हैं तो हम भी भारत चले जाएंगे। गुरुजी ने परदादा का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।
1971 तक जैसे तेसे समय बित गया। बांग्लादेश युद्ध में पाकिस्तान की पराजय वहाँ के हिन्दू परिवारों का दुर्भाग्य लेकर आया। परास्त पाकिस्तान हिन्दू परिवारों को यातना देकर बलात मुसलमान बनाने लगा। हमारे परिवार पर भी यह दुर्भाग्य आया। कुछ समय के विरोध के

पश्चात मेरे दादा ने हिन्दू धर्म त्याग दिया। गुरु जी ने अपना धर्म नहीं त्यागा। उसने शस्त्र उठाया, विरोध किया किन्तु उसे मार दिया गया। एक एक अंग काट दिए गए। तथापि अंत समय तक अपने धर्म को, अपने ईश्वर को गुरुजी ने नहीं छोड़ा।"

"ओह ! यह कब की बात है। सारा जी?"

"वह वर्ष था 1973. मैं तब तीन साल की थी। मेरा नाम सरिता था। सारा हो गया।"

"इतना कष्ट? इतनी प्रताड़ना?"

"इतना पर्याप्त न था। हमारे व्यापार को हमसे छिन लिया गया। हमसे हमारा सारा धन लूट लिया। संपत्तियाँ छीनी गई। घर से निकाल दिया।"

"धर्म त्याग के पश्चात भी इतनी प्रताड़ना?"

"क्या करें? हम विवश थे। उस समय दादा को कहीं नौकरी करनी पड़ी। पिताजी भी कहीं काम करने लगे। एक समय जिनके यहाँ अनेक नौकर चाकर थे उन्हें किसी के यहाँ नौकरी करनी पड़ी। गुरुजी का आदेश दादा जी को तब समज आया था। यदि गुरुजी का आदेश मान लिया होता तो बात कुछ और होती। किन्तु तब तक समय आगे निकल गया था।"

"कितने कष्ट सहे हैं आप लोगों ने!"

"यातनाएं अभी पूरी नहीं हुई है। कहने को तो मैं वरिष्ठ पुलिस इंस्पेकटर हूँ किन्तु आज भी हिन्दू से मुसलमान बने परिवारों के साथ उचित व्यवहार नहीं किया जाता है। बात बात पर अपमान सहना पड़ता है। तभी तो मैं कह रही हूँ कि मैं कभी उस देश लौटकर नहीं जाना चाहूँगी।"

"किन्तु कभी न कभी तो जाना पड़ेगा ही।"

"शैल, वह मैं आप पर छोड़ती हूँ। केवल आपका ही आश्रय है। मुझे किसी भी तरह से यहाँ रोक लीजिए। मैं आपको हाथ जोड़ती हूँ।" सारा ने शैल के पाँव छु लिए। शैल पीछे हट गया।

"ऐसा नहीं करते सारा जी। आप मेरी मां के समान हो। उठिए।"

सारा धरती पर बैठ गई। शैल दुविधा में वहीं खडा रहा। कुछ समय वह नदी को ताकता रहा। सहसा एक पंखी नदी पर उड़ता हुआ आकाश की तरफ गया। शैल की दृष्टि ने पंखी का पीछा किया। दृष्टि पश्चिम आकाश में सूर्य पर अटकी। सूरज अस्त होने को था। वह सारा के समीप

गया, “सारा जी आप कहती थी न कि आज रात्री हम आश्रम में रहेंगे। चलो उठो। सूर्यास्त हो रहा है। हमें आश्रम की ओर चलना चाहिए।”
सारा उठी, शैल चल पडा। सारा भी चलने लगी।

[34]

शैल ने सारा के साथ आश्रम में प्रवेश किया। संध्या हो चुकी थी। आश्रम में विशेष गतिविधियां नहीं दिख रही थी। दो चार शिष्य अपने अपने कार्य में व्यस्त थे। एक कोने से धूँआ आ रहा था।
“देखो, वहाँ भोजन पक रहा है।” सारा ने वहाँ देखा। दोनों ने उस दिशा में चरण बढ़ाए ही थे कि पीछे से किसी ने कहा, “आप दोनों को गुरुजी ने बुलाया है। आईये मेरे साथ।”
दोनों ने मौन अनुसरण किया। एक कुटीर के सम्मुख वह रुका, “भीतर गुरुजी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।” वह चला गया। शैल भीतर प्रवेश करने आगे बढ़ा। सारा वहीं रुक गई। वह कुटीर को देखती ही रही।
“सारा जी, रुक क्यों गई? भीतर चलिए, गुरुजी से मिलते हैं।” सारा अभी भी कुटीर को निरख रही थी। स्थिर प्रतिमा सी खड़ी थी। शैल समीप गया, “सारा जी?” सारा कहीं अन्यत्र थी, अविचल थी। शैल ने तीन चार बार पुकारा किन्तु वह निश्चल सी रही।
गुरुजी स्वयं कुटीर से बाहर आए, “सरिता बेटी, तुम्हारा स्वागत है।”
सरिता नाम सुनते ही सारा तंद्रा से जागी, गुरुजी को देखा, दो हाथ जोड़े और वंदन करते हुए बोली, “प्रणाम गुरुजी।”
“भीतर आओ सरिता।” गुरुजी भीतर गए। सारा ने भीतर प्रवेश किया, शैल ने भी।
अपने आसन पर बैठते हुए गुरुजी ने कहा, “आप दोनों आसन पर स्थान ग्रहण कर लें।” दोनों बैठ गए। एक युवक गरम दूध की दो कटोरी लेकर आया। दोनों ने उसे ग्रहण किया।
“बेटी सरिता, कैसी हो? शैल तुम कैसे हो?” अपने अपने नाम सुनकर दोनों अचंभित हो गए।
शैल ने कहा, “मैं ठीक हूँ गुरु जी। यह सरिता नहीं, सारा जी है। आप मेरे विषय में कैसे जानते हैं?”

“मिलेंगे। तुम्हारे प्रत्येक प्रश्न के उत्तर मिलेंगे। आप दोनों की प्रत्येक दुविधा का भी समाधान होगा। जिस कार्य को आप सम्पन्न करना चाहते हैं, जिस उद्देश्य से आप चल पड़े हैं वह भी पूर्ण होगा।”
गुरुजी की वाणी ने शैल को प्रसन्न कर दिया, ऊर्जावान बना दिया। सारा अभी भी कुटीर को देख रही थी, भीतर से। शैल ने उसे जगाना चाहा तो गुरुजी ने उसे संकेतों से रोक दिया। कुछ समय व्यतीत हो गया तब सारा ने गुरु जी की तरफ देखा।
“मैं जानता हूँ बेटी कि इस कुटीर को देखकर तुम कुछ स्मृतियों में चली गई हो। प्रयास करने पर भी तुम यह जानने में विफल हो रही हो कि तुमने यह सब कहाँ देखा है, हैं न?”
“जी, जी।”
“तुम स्वयं को सरिता के रूप मे स्वीकार करोगी तभी पूरी बात समझ में आएगी।”
“किन्तु सरिता तो ....?”
“धर्म त्यागने से नाम भले ही बदल गया हो किन्तु तुम आज भी सारा नहीं, सरिता हो।”
“सारा जी ने मुझे अभी अभी अपने भूतकाल की बात कही थी। तब वह सरिता थी यह सत्य को आप कैसे जानते हैं, गुरुजी?”
“यह एक विज्ञान ही है। इस विषय में उचित समय पर बात करेंगे। अभी जो संशय तुम्हारे मन में है उसकी बात करते हैं। पाकिस्तान में सारा के पूर्व धर्म में जो गुरुजी थे वे मेरे भी गुरुजी हैं। सारा जब सरिता थी तब वह हमारे गुरुजी के आश्रम में परिवार के साथ जाया करती थी। तब वह अल्प आयु थी। तब उसने उस आश्रम को, आश्रम में स्थित गुरुजी की कुटिया को अनेक बार देखा है। जब आज यहाँ इस आश्रम को, इस कुटिया को देखा तो उसकी स्मृति उसे बार बार कह रही है कि उसने ऐसे एक स्थान को पूर्व में भी देखा है। बस, स्थान का स्मरण नहीं हो रहा है। वह स्थान गुरुजी का था। यह स्थान उसी गुरुजी के स्मरण में पूर्णत: वैसा ही रचा गया है जैसा वहाँ था। क्यों सरिता, कुछ स्मरण आया?”
“जी। मुझे सब कुछ स्मरण हो आया है। यह स्थान पूरी तरह वैसा ही है। कुटिया भी वैसी ही है, बाहर से भी, भीतर से भी। मुझे विस्मृति हो गई थी। पचास वर्ष हो गए उस बात को। धर्म त्याग के पश्चात कभी ऐसे स्थान पर जाना नहीं हुआ तो विस्मृति स्वाभाविक है।”

“हमारा मस्तिष्क एक बार जो देख लेता है उसे कभी नहीं भूलता। समय आने पर उसका स्मरण हो ही जाता है। हैं न गुरुजी?”

“सत्य कहा, शैल। यह भी विज्ञान है। बाकी बातें भोजन के पश्चात करेंगे। थोड़ा विश्राम कर लो। भोजन का समय हो रहा है। सूर्यास्त के पश्चात अवनी पर अंधकार प्रवेश करे उससे पूर्व हमें भोजन ग्रहण करना है। शैल, यह भी विज्ञान है।” गुरुजी के अधरों पर मधुर स्मित था। उसने दोनों का अधिकांश श्रम हर लिया।

[35]

वत्सर ने संध्या आरती सम्पन्न की। कृष्ण के अधरों पर स्थित बाँसुरी को उठाया और शीला पर बैठकर नित्यक्रम से उसे बजाने के लिए गर्भगृह से जैसे ही बाहर निकला तो उसने अपने सम्मुख पुलिस अधिकारी को पाया। वह रुक गया। प्रश्न के साथ उसने अधिकारी को देखा।
“वत्सर, तुम्हें हमारे साथ चलना होगा। अभी, इसी समय।” अधिकारी ने कहा।
“कहाँ और क्यों?”
“हम पंजाब पुलिस से हैं। हमारे साथ तुम्हें फिरोजपुर चलना होगा। मीरा मृत्यु घटना के संदर्भ में। यह रहा न्यायालय का सूचना पत्र। दो दिन पश्चात तुम्हें न्यायालय में प्रस्तुत किया जाएगा। तब तक तुम हमारे कारावास में रहोगे।”
“कौन मीरा?”
“वही लड़की जो तुम्हारे शिल्प की भांति सतलज नदी से मरी हुई मिली थी।”
वत्सर को सब समज आ गया। उसने अधिकारी से पत्र लिया, पढ़ा और बोला, “मैं न्यायालय के पत्र का सम्मान करता हूँ। मुझे बस कुछ समय दीजिए। तब तक मैं भगवान के शयन की विधि सम्पन्न कर लेता हूँ।”
“इतना समय नहीं है हमारे पास। तुम्हें अभी चलना होगा।”
अधिकारी ने वत्सर का हाथ पकडा और खींचने लगा। वत्सर ने झटके से हाथ छुड़ाया। झटका इतना तीव्र था कि अधिकारी के पूरे तन में एक प्रवाह बह गया। अधिकारी को वत्सर से ऐसी

प्रतिक्रिया की अपेक्षा नहीं थी। वह मन से आहत हुआ तथापि दूसरी बार वत्सर का हाथ पकड़ने का साहस नहीं कर पाया।
“तुम इस प्रकार पुलिस पर घात नहीं कर सकते, वत्सर।”
“क्या नाम है, आपका?”
“राहुल खान, पुलिस इंस्पेक्टर फिरोजपुर, पंजाब।”
“शैल जी और सारा जी कहाँ हैं?”
“अब उन दोनों को इस घटना से मुक्त कर दिया गया है। अब मैं और सोनिया यह कार्य कर रहे हैं।”
राहुल ने सोनिया की तरफ संकेत किया। वत्सर ने उसे देखा।
“वत्सर, चलो। अब और कोई बात नहीं।” सोनिया ने आदेश करते हुए कहा।
“न्यायालय के पत्र अनुसार दो दिन पश्चात मुझे स्वत: उपस्थित होना है। अत: आपके साथ जाने के लिए मैं बाध्य नहीं हूँ। न ही आप मुझे बाध्य कर सकते हो।”
“तुम्हें हमारे साथ ही चलना होगा। हम तुम्हें लेकर ही चलेंगे।”
“आपका यह अधिकार है ही नहीं। आप जाइए, मैं स्वयं उपस्थित हो जाऊंगा।”
“हम तुम्हें घसीटकर भी ले जा सकते हैं।”
“प्रयास करके देख लो। मुझे घसीटने का साहस है आपमें?”
वत्सर के आव्हान से राहुल का अभिमान भंग हो गया। उसने अपनी रिवॉल्वर निकाली, वत्सर के सामने धर दी, “चलते हो या मैं गोली चला दूँ?”
राहुल के वाक्य पूर्ण होते ही कहीं से किसी ने राहुल के हाथ पर पत्थर मार दिया। रिवॉल्वर नीचे गिर पड़ी। राहुल ने देखा कि गाँव वालों की एक भीड़ वहाँ जुड़ चुकी थी। क्षण में उसने स्थिति का आकलन कर लिया।
“ठीक है, मंगलवार को न्यायालय में आ जाना। इसमें चुकने पर गोली चलाने में मैं विलंब नहीं करूंगा।” राहुल ने अपनी रिवॉल्वर उठाई और लौट गया।
वत्सर ने बाँसुरी यथा स्थान रखी, भगवान के शयन की प्रक्रिया पूर्ण की। अपने पूजा के श्वेत वस्त्र बदलकर सादे वस्त्र पहन लिए।

मंदिर के द्वार बंद करते समय वत्सर ने एक दृष्टि कृष्ण की आँखों में डाली। कृष्ण ने स्मित दिया। उस स्मित का अर्थ वह जानता था। उसने कृष्ण को नमन किया और द्वार बंद करते हुए बोला, “तेरी लीला तू ही जाने। जब तक मैं लौटकर न आऊं, तुम यहीं रहना। तब तक यह द्वार बंद ही रहेंगे। कोई नहीं खोलेगा। मैं भी देखता हूँ कितने दिन तुम अंदर रहोगे!” वत्सर ने द्वार बंद किया। चला गया।

“गुरुजी, ऐसा क्यों होता है?”
“कैसा होता है?”
“असीम प्रयत्न करने पर भी हम जिसे प्राप्त करना चाहते हैं वह हाथ नहीं आ रहा है।”
“तुम जिस कार्य पर निकले हो उसमें सफलता होगी।”
“तो आप जानते हैं हमारा लक्ष्य क्या है?”
“उस लक्ष्य को आप दोनों अवश्य प्राप्त करोगे।”
“किन्तु कब?”
“जब उसका योग बनेगा तब।”
“कैसा योग?”
“जब तक आप दो रहोगे तब तक वह योग नहीं बनेगा। दो से चार हो जाओगे तभी योग बनेगा।”
“हम चार? अन्य दो से आपका संकेत कहीं राहुल और सोनिया की तरफ तो नहीं, गुरुजी?”
“नहीं गुरुजी, हम उन दोनों के साथ एक चरण भी नहीं चल सकते हैं। हमें चलना भी नहीं है।”
“तब तो लक्ष्य कभी नहीं मिलेगा, गुरुजी।”
“धैर्य रखो। जो दो व्यक्ति आपके साथ जुड़ेंगे वे राहुल - सोनिया नहीं होंगे।”
“कौन हो सकते हैं?”
“उचित समय की प्रतीक्षा करो, वत्स।”
“यह सब कब होगा? कैसे होगा?”

“सब होगा, अवश्य होगा। किन्तु उस मार्ग पर चलने से पूर्व आपको इस अभियान को एक बार छोड़ना पड़ेगा। अनेक घटनाओं का प्रतिकार करना पड़ेगा। अनेक संघर्ष करने पड़ेंगे। अनेक समस्याओं से पार उतरना पड़ेगा।”

“क्या हम दोनों उस पर विजय प्राप्त कर पाएंग?”

“दो नहीं, चार। जब आपके साथ वे दोनों जुड़ेंगे तभी आप उस मार्ग पर चल सकोगे।”

“जैसी गुरु जी की आज्ञा। अभी कल प्रात: हमें अपने मार्ग पर निकलना है।”

“कल का आपका मार्ग शुभ हो। अब विश्राम कर लो।”

दोनों गुरुजी को प्रणाम कर चले गए।

[36]

“प्रात: काल की नूतन ऊर्जा और गुरुजी के आशीष से मैं अपने मार्ग पर चलने को सज्ज हूँ। तुम सज्ज हो न, शैल?”

“जी। गुरुजी को प्रणाम कर चलते हैं।”

दोनों गुरुजी की तरफ चलने लगे। एक वृक्ष के नीचे गुरुजी किसी ग्रंथ का अध्ययन कर रहे थे।

“प्रणाम गुरुजी। हमें अनुमति दें।”

“आपका मंगल हो।”

दोनों चल पड़े।

“रुको।” दोनों रुक गए।

“आज आप उस मार्ग पर नहीं चलोगे जहां जाने की आपकी योजना है।”

“तो?”

“आज विपरीत मार्ग पर जाना पड़ेगा आपको।”
“अर्थात?”
“अपने कार्यालय लौटना पड़ेगा।”
“वह तो हमारा लक्ष्य नहीं है। उस मार्ग पर तो. . ।”
“उस मार्ग से ही लक्ष्य का मार्ग निकलेगा। बस लौट जाओ।”
“कैसे गुरु जी? क्यों गुरुजी?”
“बस वह समय आ ही गया है।” गुरु जी ने कहा।
उसी क्षण आश्रम के द्वार पर एक जीप रुकी। उसमें से उतरकर नदीम शैल - सारा की तरफ बढ़ा। गुरुजी ने दोनों को उस तरफ देखने का संकेत किया। दोनों ने देखा। गुरुजी की बातों का अर्थ अब दोनों की समज में आया।
नदीम ने गुरुजी को देखा। उसने उनकी अवगणना की और सीधे सारा और शैल के पास जाकर उन्हें एक पत्र पकडा दिया।
“क्या है?”
“स्वयं पढ़ लो।”
दोनों ने पत्र पढ़ा।
“यह तो न्यायालय का बुलावापत्र है। किस घटना में हमें प्रस्तुत होना है?”
“वही, मीरा मृत्यु घटना। जिसका अन्वेषण आप दोनों कर रहे थे।” नदीम ने व्यंग किया।
“अब तो हम इस घटना से मुक्त कर दिए गए हैं तो हमें क्यों बुलाया है?”
“वह तो न्यायालय ही बताएगा। दो दिन पश्चात फिरोजपुर न्यायालय में उपस्थित हो जाना।”
“हमें क्यों बुलाया जा रहा है? उस घटना से अब हमारा कोई संबंध नहीं रहा है।”
“मेरा काम था आप दोनों तक यह पत्र पहुंचना, सो हो गया। मैं तो चला।” नदीम चलने लगा। क्षणभर रुका, पलटा।
“इस पर आप दोनों हस्ताक्षर कर दीजिए।”
“कैसे हस्ताक्षर?”
“न्यायालय का पत्र प्राप्त हो चुका है उसकी पुष्टि के लिए यह आवश्यक है। यह प्रक्रिया से तो आप दोनों भली भांति अवगत हो।”

नदीम ने पत्र दिया, कलम भी। दोनों ने हस्ताक्षर कर दिए, नदीम चला गया।
दोनों ने गुरुजी तरफ देखा। उनके मुख पर मंद हास्य था। आँखों में दिव्यता थी। उसे देख दोनों के उद्विग्न मन को सांत्वना मिली।
शांत होकर सारा ने पुछा, “यह कैसी नियति है गुरुजी?”
“यही नियति है, सरिता। यह विपरीत मार्ग ही आप दोनों को सही मार्ग पर ले जाएगा। धैर्य रखना। नियति पर विश्वास रखन।”
“यहाँ तक आकर लौट जाने से मन अधीर हो उठा है। यह कैसी विडंबना है?”
“यह विडंबना ही विजय की चाबी है। इस मार्ग से आप जो प्राप्त करोगे वह इतना मूल्यवान एवं दुर्लभ होगा जिसे आज तक कोई भी मनुष्य नहीं पा सका है।”
“इतना विशिष्ट है क्या वह?”
“क्या आप जैसे ऋषियों के लिए भी वह दुर्लभ है?”
“जिस रहस्य को प्राप्त करोगे उसे प्राप्त करना ऋषियों के लिए भी दुर्लभ होता है।”
“कैसा रहस्य है गुरुजी?”
“उचित समय आने तक उसे भी रहस्य ही रहने दो। अब दोनों लौट जाओ। विलंब न करो। न्यायालय आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।”
मन में अनेक प्रश्न, अनेक दुविधा लेकर शैल और सारा फिरोजपुर के लिए निकल पड़े।
#$%#$%

“शैल, गुरुजी की बातों का अर्थ अब समज में आ रहा है।”
“क्या?”
“लक्ष्य को प्राप्त करने से पूर्व हमारी कड़ी कसौटी होने वाली है। प्रतीत होता है कि उसका प्रारंभ हो चुका है।”
“यही तो गुरुजी का कथन था, हैं न?”
“मैं यही कहना चाहती थी।”
“तो अब गुरुजी के वचनों पर श्रद्धा रखकर जो भी विघ्न आएंगे उसका हम प्रतिकार करेंगे।”
“और उन विघ्नों से विचलित नहीं होंगे।”

“जी, सारा जी।”
“शैल, तुम कह रहे थे कि राहुल और सोनिया मीरा का रहस्य खोज निकालेंगे। किसी न किसी को दोषित सिद्ध कर देंगे। किसको दोषित सिद्ध करने के लिए यह अभियोग चलाया होगा? किसके विरुद्ध न्यायालय में सारी प्रक्रिया होगी?”
“किसी निर्दोष को ही पकड़ा होगा।”
“कौन होगा वह निर्दोष?”
“नहीं जानता।”
“कोई अनुमान?”
“वे दोनों अनुमान से परे हैं।” शैल विचार में पड गया। सारा भी।
“शैल, अपना एक व्यक्ति वहीं कार्यालय में ही है। उससे बात करो न?”
“कौन? विजेंदर?”
“हाँ, वही। फोन लगाओ उसे।”
“यह बात मैं कैसे भूल गया? विजेंदर भी कैसे भूल गया हमें इस बात की सूचना देने से?”
शैल ने विजेंदर को फोन लगाया।
“जी महाशय।”
“विजेंदर, यह बताओ कि राहुल - सोनिया ने किसके विरुद्ध न्यायालय में अभियोग लगा दिया?”
“कोई जानकारी नहीं है।”
“क्यों? क्या हो गया?”
“बड़ी गुप्तता से सब कुछ हुआ है। किसी को कुछ भी जानकारी नहीं है।”
“तो जानकारी प्राप्त कर मुझे बताओ।”
“नहीं कर सकता मैं।”
“क्यों? क्या हो गया है तुम्हें? या तुम भी उसके साथ मिल गए हो और मुझे बताना नहीं चाहते?”
“मैं कभी उन लोगों के साथ नहीं मिल सकता। यह बात आप भी जानते हैं, महाशय।”
“तो क्या बात है? कहो न?”

“राहुल और सोनीया के अतिरिक्त सभी कर्मचारियों को नदीम ने बलात अवकाश पर भेज दिया है। मुझे भी। यही कारण है कि कोई जानकारी नहीं मिल रही है।”
“वह ऐसा कैसे कर सकता है? इतनी चालाकी? ठीक है। वह सब अभी छोड़ो। हम दोनों लौट रहे हैं। तुम्हारे घर पर मिलेंगे। अपना ध्यान रखना।” शैल ने वार्तालाप सम्पन्न किया।
“क्या हुआ?” सारा ने प्रश्न किया।
“सभी को अवकाश पर भेज कर बड़ी गुप्तता से काम कर रहे हैं दोनों।”
“और नदीम का पूरा सहयोग मिल रहा होगा।”
“यही तो।”
“कौन होगा वह निर्दोष व्यक्ति?”
“वह तो अब दो दिन के पश्चात न्यायालय में जाकर ही ज्ञात होगा।” शैल ने कहा, सारा ने गहन नि:श्वास छोड़ा।
“हम क्या कर सकते हैं? हमें क्या करना चाहिए?”
“कुछ समज नहीं आ रहा।”
“हम इतना तो कर सकते हैं कि यदि वह व्यक्ति निर्दोष है तो उसे बचाना होगा। किसी निर्दोष को दंडित नहीं होने देंगे हम। क्या कहना है शैल?”
“हम प्रयास कर सकते हैं।”
“तुम्हारे शब्दों में विश्वास नहीं दिख रहा, शैल।”
“आप नहीं जानती यहाँ की प्रणाली को। यहाँ ऐसी व्यवस्था रची जा सकती है कि किसी भी निर्दोष को दोषी सिद्ध कर दिया जाता है। निर्दोषता स्वयं को ही सिद्ध करनी पड़ती है। जाल में ऐसा फंसा देते हैं कि व्यक्ति निर्दोष होते हुए भी अपराध स्वीकार लेने पर विवश हो जाता है।”
“इसका अर्थ है, सरकार किसी की भी हो प्रणाली तो हमारी ही चलेगी। यही तो कहा करते हैं सपन और निहारिका।”
“उनका कहना सत्य है।”
“जो भी हो, हमें हार नहीं मनानी है। एक बात अच्छी हुए कि न्यायालय ने हमें पक्षकार बनाया है। हमारे रहते हम उनकी योजना को सफल नहीं होने देंगे।”

“यही कर सकते हैं हम। यही नियति होगी। कदाचित गुरजी के शब्दों का यही तात्पर्य होगा।”

[37]

“राहुल, तुमने वत्सर को छोड़ दिया? हमें अपने साथ लेकर चलना था।”
“सोनिया, तुम जानती हो कि वहाँ सारा गाँव जमा हो गया था। वहाँ से भागते नहीं तो हम फंस जाते।”
“अब क्या? वह मंगलवार को न्यायालय नहीं पहुँचा तो क्या होगा?”
“वह अवश्य आएगा।”
“नहीं आया तो?”

“वत्सर सामान्य नागरिक है भारत का, कोई विशिष्ट व्यक्ति या राजनीति करनेवाला नहीं है। अत: वह अवश्य आएगा।”
“सो तो है।”
“वैसे तो हम उस मंदिर से खाली हाथ लौट आए हैं, अभी हम यहीं छिपकर ही रहेंगे। देखते हैं कि वत्सर क्या करता है। थोड़ा सा भी संदेह हुआ तो पकड़ लेंगे।”
“उस समय गाँव वाले होंगे तो?”
“रात को जब सारा गाँव सो रहा होगा, तब जाकर उठा लेंगे।”
“अभी क्या करें?”
“वत्सर पर दृष्टि बनाये रखो।”
दोनों वत्सर की गतिविधियों को देखने लगे।”
मंदिर बंद कर वत्सर घर आया। यात्रा की तैयारी कर निकल पडा न्यायालय के आदेश का पालन करने। राहुल सोनिया भी पीछे पीछे चल पड़े।
“वत्सर समीप के नगर से ट्रेन पकड़ेगा। ट्रेन में चड़े उससे पूर्व ही पकड़ लेते हैं।”
“नहीं, सोनिया। अभी नहीं।”
“क्यों नहीं? इस मार्ग पर उसे बचाने कौन आएगा?”
“पकड़ तो सकते हैं किन्तु हमें ऐसा नहीं करना है। इसके दो कारण है, एक, वह स्वयं न्यायालय में उपस्थित होने जा रहा है। दूसरा, विधि के अनुसार यदि हमारे पास पर्याप्त प्रमाण होते कि मीरा का वध वत्सर ने ही किया है तो सीधे ही पकड़ लेते।”
“प्रमाण तो है। उस शिल्प के साथ वत्सर के चित्र, चलचित्र हैं। वह प्रमाण नहीं तो और क्या है?”
“वह पर्याप्त नहीं है, सोनू।”
“तो न्यायालय में अभियोग किस आधार पर लड़ेंगे?”
“तर्क और अनुमान पर।”
“किन्तु न्यायालय इसे मानेगा?”
“न्यायालय हमारा ही तो है।”
“क्या होगा वहाँ?”

“न्यायालय में ही देख लेना।”
वत्सर जिस ट्रेन में चड़ा वह दिल्ली जा रही थी। राहुल सोनिया भी उसीमें चड गए। वत्सर इस बात से अनभिज्ञ था।
“पूरी यात्रा में हमें उस पर दृष्टि बनाये रखनी होगी।” सोनिया ने कहा, राहुल ने सम्मति दी।
ट्रेन चलने लगी, चलते चलते दिल्ली आ पहुंची। वाहन से वत्सर फिरोजपुर चल पड़ा। फिरोजपुर जा कर किसी होटल में चला गया। वत्सर पर दृष्टि रखने के लीये सोनिया ने अपने व्यक्तियों को होटल में नियुक्त कर दिया।
$$$$$
फिरोजपुर न्यायालय का प्रांगण। प्रात: दस बजे का समय। सारा और शैल न्यायालय क्रमांक सत्रह पर जा पहुंचे। दोनों उद्विग्न थे, ‘किस निर्दोष पर अभियोग चलेगा?’ दोनों ने यह जानने के लिए प्रयास किया किन्तु विफल। अधीर होकर प्रतीक्षा करने लगे। कुछ ही क्षणों में राहूल - सोनिया भी आ गए। उन्होंने सारा शैल को देखा, तिरस्कृत दृष्टि से। सारा - शैल ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
“हमें अपने भावों को अप्रकट ही रहने देना है। किसी भी बात से हमें विचलित नहीं होना है, शैल।”
“जी, मैं पूरा प्रयास करूंगा।”
“मैं जानती हूँ कि तुम किसी भी प्रकार के असत्य को सह नहीं पाओगे। हमें धैर्य बनाये रखना है। अपने क्रोध को नियंत्रण में रखकर उचित समय पर ही उसे शक्ति के रूप में प्रयोग करना है। गुरुजी के शब्दों का स्मरण तो है न, शैल?”
“गुरुजी के शब्दों पर इतना विश्वास है आपको?”
“समय आने पर तुम भी विश्वास करने लगोगे।”
न्यायाधीश के आगमन की सूचना होते ही कक्ष में स्थित सभी व्यक्ति मौन हो गए। खड़े होकर न्यायाधीश का अभिवादन किया। जब उसने अपना स्थान ग्रहण कर लिया तब सभी ने अपने अपने आसन ग्रहण किए।

प्रथम एक घंटे में अन्य तीन घटनाओं पर न्यायायले ने कार्य किया। मीरा वध का क्रमांक चौथा था। 12.17 बजे उसका क्रम आया। सारा - शैल जागृत हो गए, प्रतीक्षा करने लगे। अभियुक्त को प्रस्तुत किया गया। उसे देखते ही सारा - शैल चकित रह गए।
“वत्सर !” दोनों के होंठों से अति मंद स्वर में शब्द निकले। न्यायालय की गरिमा को बनाये रखते हुए शांत ही रहे, मौन हो गए। सारा ने शैल को देखा। उसके मुख पर क्रोध के भाव थे। सारा ने उसे संकेतों से ही शांत रहने को कहा। शैल ने स्वयं के भावों पर नियंत्रण रखा। वत्सर एक कुर्सी पर बैठ गया।
अधिवक्ता कपिल सिंघवी ने पक्ष रखते हुए कहा, “मी लॉर्ड।” शीघ्र ही न्यायाधीश ने उन्हें रोका, “महोदय, मेरे लिए आप यह ‘मी लॉर्ड’ सम्बोधन नहीं करेंगे।”
“क्यों मी लॉर्ड?”
“यह संबोधन अंग्रेजों का है, हमारा नहीं। स्वतंत्रता प्राप्त हुए हमें 75 से अधिक वर्ष हो गए हैं।”
“यही सम्बोधन का प्रयोग सभी न्यायालयों में होता आ रहा है।”
“मेरे लिए प्रयुक्त नहीं होगा। कब तक दासता की मानसिकता साथ रखोगे?”
“तो आपको क्या संबोधन करें?”
“महाशय शब्द का प्रयोग कर सकते हो।”
“ठीक है महाशय।” कपिल रुका, न्यायाधीश की सम्मति के पश्चात बोला, “महाशय, नदी के प्रवाह में एक मृतदेह प्राप्त हुआ है। मीरा का।”
“क्या मृतदेह की परख हो गई है?”
“नहीं महाशय। पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट, डीएनए रिपोर्ट आदि से कुछ विशेष ज्ञात नहीं हो सका है।”
“किस आधार पर कह सकते हो कि उसका वध हुआ है? कौन है यह मीरा? किसने की है हत्या?”
“उस मृत कन्या के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। वह कौन है? कहाँ से आई है? किस देश - प्रदेश की है? मृत्यु कैसे हुई? किसने मारा आदि सभी प्रश्न अनुत्तरित ही है, महाशय।”
“तो उसका नाम मीरा है वह कैसे ज्ञात हुआ?”
“यह नाम तो उसे शैल ने दिया है।”
“शैल कौन है? उसे प्रस्तुत करो।” शैल प्रस्तुत हुआ।

“कहो, इसका नाम मीरा कहाँ से आया?”
“उसके विषय में कुछ भी ज्ञात न होने पर उसे बार बार मृत लड़की कहना उचित नहीं लग रहा था अत: उसे कोई नाम देना चाहा तो मीरा नाम दे दिया।”
“मीरा ही क्यों? अन्य कुछ क्यों नहीं है।”
“मीरा नाम प्राय: सभी धर्मों में, सभी देश - प्रदेशों में सामान्य रूप से पाया जाता है। बस यही कारण था।”
“क्या इस घटना का अन्वेषण तुम कर रहे हो?”
“यह घटना का अन्वेषण मुझे सौंपा गया था किन्तु अब मुझे हटाकर राहुल - सोनिया को दिया गया है।”
“श्रीमान कपिल महोदय, जब डीएनए रिपोर्ट, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट यदि से मृत्यु के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है तो फोरेंसिक जांच क्यों नहीं करवाई?”
“महाशय, उस पर काम चल रहा है।”
“अभी तक क्या प्रगति है?”
“कुछ खास नहीं।”
“जब आपको यह व्यक्ति कौन है? कहाँ से आई है? किस प्रदेश की है? नाम क्या है? मृत्यु कब और कैसे हुई? कहाँ हुई? किसने हत्या की? कैसे की? क्यों की.. ..?”
“महाशय, इसकी हत्या ..।”
“महोदय, जब मैं अपनी बात पूर्ण न कर लूँ तब तक उसे सुनने का और समझने का धैर्य रखना सीखो, श्रीमान कपिल जी। आप वरिष्ठ अधिवक्ता हो।”
“जी महाशय। क्षमा चाहता हूँ।”
“इस हत्या का कारण क्या है? आदि जो भी मैंने प्रश्न किये उसमें से किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं है तो न्यायालय में आप क्यों आए हो?” न्यायालय में कुछ क्षण मौन व्याप्त हो गया। न्यायाधीश ने आगे कहा, “किस आधार पर इस व्यक्ति पर अभियोग चला रहे हो?”
“महाशय, मीरा की हत्या इसी व्यक्ति ने की है।”
“किस व्यक्ति ने?”

“इसने, वत्सर ने।” अधिवक्ता कपिल ने वत्सर के प्रति संकेत किया। वत्सर न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित हो गया।

[38]

“क्या तुमने मीरा की हत्या की है?” न्यायाधिस ने पूछा।

“जी नहीं।” वत्सर ने कहा।
“क्या तुम मीरा को जानते हो?”
“नहीं।”
“कपिल महोदय, आपको क्यों लगता है कि मीरा की हत्या वत्सर ने की है? कोई प्रमाण?”
“जी, है न?”
“प्रस्तुत करो।” कपिल ने घटना स्थल के विविध चित्र - चलचित्र न्यायाधीश के समक्ष रखे। न्यायाधीश ने उसे ध्यान से देखा।
“इस चित्र और चलचित्र में ऐसा विशेष क्या है जो प्रमाण हो?”
“प्रमाण यह चित्र - चलचित्र नहीं है। प्रमाण प्रस्तुत करने से पूर्व यह सब देख लेना आवश्यक था।”
“मान लिया। अब प्रमाण प्रस्तुत कीजिए।”
“अब जो प्रस्तुत करूंगा उस पर ध्यान देना आवश्यक है। यह चलचित्र एक शिल्प का है। उस शिल्प में ही सारे प्रमाण छिपे हैं।” कपिल ने येला की शिल्पशाला में स्थित वत्सर के शिल्प का चलचित्र प्रस्तुत किया। अस्सी सेकंड के चलचित्र के सम्पन्न होने पर कपिल बोला, “यहाँ इसे रोकता हूँ। इस शिल्प को देखो।”
सारा सभाखण्ड निश्चल होकर उस शिल्प को देखने लगे।
“इस शिल्प में एक द्रश्य है - नदी का प्रवाह है। प्रवाह के मध्य में दो देशों की सीमा है। एक तरफ भारत तो दूसरी तरफ पाकिस्तान लिखा हुआ है। नदी का नाम भी सतलुज लिखा हुआ है। उस नदी में एक युवती का मृतदेह भी है जो आधा भारत की सीमा में और आधा पाकिस्तान की सीमा में है।” कपिल क्षणभर रुका। सभी का ध्यान स्थिर हुए उस शिल्प के चित्र पर था। सभी अवाक थे। तभी न्यायाधीश ने कहा, “यह दिखाकर आप क्या सिद्ध करना चाहते हो, श्रीमान कपिल?”
“यह शिल्प में जो दृश्य है वही दृश्य मीरा घटना में सीमा पर वास्तविक रूप में प्राप्त हुआ है। वैसी ही घटना हुई है।”
“ठीक है। उससे क्या?”
“महाशय, वह शिल्प के शिल्पकार और कोई नहीं किन्तु वत्सर ही है।”

“क्या यह शिल्प तुमने बनाया है?” वत्सर ने न्यायाधीश के प्रश्न का उत्तर दिया, “जी, हाँ।”
“कब बनाया? मृतदेह मिलने के पश्चात?”
“नहीं महाशय, वत्सर ने यह शिल्प आज से प्राय: आठ वर्ष पूर्व बनाया है।”
“क्या यह सत्य है, वत्सर?”
“जी, यह सत्य है।”
“आठ वर्ष पूर्व ऐसा शिल्प बनाने का कारण?”
“यह केवल एक कलाकृति ही है, उससे अधिक कुछ नहीं, महाशय।”
“नहीं महाशय, यह असत्य कह रहा है। सत्य कुछ और ही है।” कपिल ने कहा।
“क्या है सत्य? श्रीमान कपिल?”
“यही कि वत्सर ने मीरा की हत्या की और वर्षों तक उसके मृतदेह को कहीं छिपा कर रखा। पश्चात ऐसा शिल्प रचकर विश्व के प्रसिद्ध शिल्पकारों में अपना नाम, अपनी कीर्ति बना ली। अब आठ वर्ष का समय व्यतीत हो जाने पर मृतदेह को सतलज नदी में छोड़ दिया। किन्तु नियति कहो या चमत्कार, मृतदेह नदी में ठीक उसी प्रकार से अटक गया, जिस प्रकार मृतदेह उस शिल्प में दिख रहा है।”
“वत्सर, क्या ऐसा ही हुआ है?”
“जी नहीं।”
“कैसे नहीं? सभी संकेत तो यही कह रहे हैं, वत्सर।” नयाधीश ने कहा।
“यही तो मैं कह रहा हूँ, महाशय। इससे स्पष्ट रूप से सिद्ध हो रहा है कि यह हत्या वत्सर ने ही की है।
“वत्सर, तुम क्या कहना चाहोगे?”
“मीरा की हत्या मैंने की है या हत्या के पश्चात मृतदेह को नदी में मैंने छोड़ दिया है यह दोनों बात सत्य नहीं है। पिछले आठ वर्षों से इस घटना होने तक मैं अपने गाँव से बाहर कहीं नहीं गया। तो मैं कैसे किसी मृतदेह को नदी में छोड़ सकता हूँ? मैंने उस नदी को, उस स्थान को भी कभी नहीं देखा।”
“महाशय, चलो मान लिया कि वत्सर नदी तक नहीं गया। किन्तु वत्सर के लिए कोई और उस काम को कर सकता है न?”

“और कोई से आपका तात्पर्य क्या है? क्या आप उस कोई और को जानते हो? किसी ने उस मृतदेह को किसी और के द्वारा नदी में रखते हुए देखा है?” नयाधीश ने पूछा।
“नहीं महाशय, यह तो केवल मेरा अनुमान है।”
“कपिल महोदय, आप वरिष्ठ अधिवक्ता हो। आपको इतना ज्ञान तो है ही कि अनुमन पर न्यायालय नहीं चलते, न ही न्याय होता है।”
“क्षमा चाहता हूँ। ऐसी भूल अब नहीं होगी।”
“ठीक है, इस बात का ध्यान रखना।”
कपिल ने सम्मति में सिर हिलाया।
“इस बात का क्या तर्क है आपके पास कि नदी के प्रचंड प्रवाह में यह मृतदेह ठीक दोनों देशों की सीमा पर आकर ही कैसे रुक गया? इतने प्रचंड वेगवाले पानी में भारी से भारी वस्तु भी बह जाती है।”
“जी, कोई तर्क नहीं है।”
“कपिल महोदय, बिना किसी आधार के, बिना किसी प्रमाण के किसी निर्दोष पर अभियोग क्यों कर रहे हो?”
“वह शिल्प ही एक मात्र प्रमाण है, एक मात्र कड़ी है जिसके आधार पर यह सिद्ध हो सकता है कि वत्सर ने ही मीरा की हत्या की है।”
“महोदय, क्या वास्तव में यह शिल्प ही है या किसी तकनीक से रचा हुआ है यह चलचित्र?” न्यायाधीश ने संदेह प्रकट किया।
“यह शिल्प वास्तविक ही है, कोई भ्रम नहीं है। और यह देखो शिल्प के साथ खड़े शिल्पकार वत्सर को।” कपिल ने शिल्प के साथ खड़े वत्सर का चित्र प्रस्तुत किया। “महाशय, स्वयं शिल्पकार वत्सर ने अभी अभी यह स्वीकार भी किया है कि शिल्प उसी ने ही रचा है। अत: शिल्प कोई भ्रम नहीं है।”
“मान लिया कि यह शिल्प वास्तविक है। तो यह शिल्प इस समय कहाँ है? उसे न्यायालय में प्रस्तुत किया जाए।”
“इस समय यह चित्र सिक्किम की पहाड़ियों में स्थित येला की शिल्पशाला में विद्यमान है। उसे न्यायालय में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।”

“क्यों?”

“शिल्प पत्थर का बना है। उसे वहाँ से यहाँ लाना संभव नहीं।”

“तो क्या आप यह कहते हैं कि प्रमाण के बिना ही न्यायालय न्याय करे?”

“नहीं महाशय। एक उपाय है। आप स्वयं वहाँ जाकर शिल्प देख सकते हो, संतुष्ट हो सकते हो। पश्चात न्याय कर सकते हो।”

“अर्थात न्यायालय स्वयं चलकर प्रमाण के पास जाए? यह संभव नहीं है, महोदय। न्यायालय के पास इतना समय नहीं है। ऐसे प्रस्ताव रख कर आप न्यायालय को भटकाना चाहते हो?”

“क्षमा चाहूँगा महाशय।” कपिल मौन हो गया।

“क्या मैं कुछ प्रस्ताव रख सकती हूँ?” सोनिया ने अनुमति मांगी।

“अवश्य। किन्तु उस प्रस्ताव निराधार न हो इसका ध्यान रखना।”

“जी। हम येला से वीडिओ कॉल पर बात कर सकते हैं। वह हमें शिल्प तक ले जाएगी।”

“यह व्यवहारू बात है। येला से बात करवाओ।”

[39]

न्यायालय से ही येला को वीडियो कॉल किया गया। येला ने उसे लिया।
“येला जी, फिरोजपुर न्यायालय के न्यायाधीश आपसे बात करना चाहते हैं।”
“जी, किस विषय में?”
“वह स्वयं न्यायाधीश ही बताएंगे।”
“येला, मैं न्यायाधीश भूपेन्द्र बात कर रहा हूँ।”
“नमस्ते महाशय। मैं क्या कर सकती हूँ?”
“हमें बताया गया है कि वत्सर नाम के किसी शिल्पी ने एक शिल्प बनाया है जिसके संदर्भ में आप से सारा और शैल मिले थे।”
“जी, वह नदी और मृतदेह वाला शिल्प?”
“हाँ, वही। क्या उस शिल्प का हमें दर्शन करा सकती हो?”
“जी। मैं उस स्थान पर जाती हूँ। बस एक मिनट।” येला शिल्प के प्रति चलने लगी। न्यायालय ने उस मार्ग पर शिल्प शाला के कुछ शिल्पों को देखा। एक स्थान पर येला रुकी। उसने वत्सर का शिल्प न्यायालय को दिखाया।
“अद्भुत! अद्भुत!” न्यायालय में उपस्थित सभी के मुख से स्वत: यह उद्गार निकल पड़े। न्यायाधीश भूपेन्द्र भी मंत्र मुग्ध होकर उस शिल्प को देखते रहे। समय का एक टुकड़ा बह गया तब अधिवक्ता कपिल ने बात आगे चलाई, “महाशय, अब आप पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गए होंगे कि यह शिल्प कोई कल्पना नहीं, वास्तविकता है।”
“मैं संतुष्ट ही नहीं, अभिभूत हूँ, मंत्र मुग्ध हूँ।”
“महाशय, क्या मैं येला से कुछ प्रश्न पुछ सकता हूँ?”
“नहीं महोदय। इसकी अनुमति नहीं है। येला, आपका धन्यवाद। कॉल समाप्त किया जाए।” न्यायाधीश के आदेश पर फोन समाप्त हो गया।
“महाशय, येला से मेरा प्रश्न पूछना आवश्यक है। उसे न्यायालय में बुलाए जाने की अनुमति दीजिए।”
“महोदय, क्या यह अति आवश्यक है?”

“जी महाशय।” न्यायाधीश ने येला को न्यायालय में बुलाने का आदेश दिया। “और कोई प्रमाण, कोई तर्क करना चाहोगे श्रीमान?”
“जी। वत्सर को पुलिस कारावास में रखा जाए ऐसा मेरा निवेदन है।”
“क्यों? इसकी क्या आवश्यकता है?”
“कुछ पूछताछ करनी है।”
“वह आप यहीं न्यायालय में ही कर सकते हैं।”
“किन्तु न्यायालय का ...?”
“यही उचित होगा कि आप यहीं जो कुछ पूछना - कहना हो करें।”
“महाशय, वत्सर हत्यारा है। वह भाग सकता है।”
“हत्यारा नहीं, अभियुक्त कहो, महोदय। वत्सर से आपको किस बात का भय है?”
“वह प्रमाणों के साथ ...।”
“प्रमाण है ही कहाँ?”
“वह शिल्प?”
“वत्सर, तुम उस शिल्प के साथ कुछ नहीं करोगे।”
“जी। मैं उस स्थान पर जाऊंगा ही नहीं। यदि न्यायालय का आदेश होगा तो मैं फिरोजपुर से अन्यत्र किसी स्थान पर यात्रा भी नहीं करूंगा।”
“तुम्हारे इस वचन पर विश्वास रखकर तुम्हें पुलिस कारावास में रखने की मांग अस्वीकृत की जाती है। अपेक्षा है कि तुम इसका पालन करोगे।” वत्सर ने सम्मति दी।
“कपिल महोदय, और कुछ?”
“नहीं, आज नहीं।”
“अगली सुनवाई पंद्रह दिन बाद होगी। तब तक कुछ ठोस प्रमाण जमा करके ही न्यायालय में प्रस्तुत होना, महोदय।”
)+)+)+(+(
नियत तिथि पर सब न्यायालय में उपस्थित हो गए। येला भी। न्यायालय का कार्य प्रारंभ करते हुए न्यायाधीश ने कपिल सिंघवी को अपना पक्ष रखने को कहा।
“महाशय, मैं येला से कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ।”

“अनुमति है।” येला न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत हो गई।
“येला, आप क्या काम करती हैं?”
“मैं शिल्प शाला चलाती हूँ।”
“शिल्पशाला आपकी है या अन्य किसी की?”
“मैं ही स्वामिनी हूँ।”
“शिल्पशाला में कितने विद्यार्थी हैं?”
“एक साथ पेंतीस से चालीस।”
“क्या आप वत्सर को जानती हैं?”
“हाँ।”
“कब से?”
“प्राय: आठ से अधिक वर्षों से।”
“कैसे जानती हैं?”
“जैसे एक शिल्पकार दूसरे शिल्पकार को जानता है वैसे ही।”
“क्या वत्सर आपका शिष्य था?”
“नहीं, कभी नहीं। वास्तव में शिल्पकला के कुछ गुण मैंने वत्सर से सीखे हैं।”
“तो आप वत्सर की शिष्या हैं?”
“कला क्षेत्र में प्रत्येक कलाकार अन्य कलाकारों से कुछ न कुछ सीखता रहता है। यह बात सामान्य है।”
“वत्सर का वह शिल्प आपके पास कैसे आया?”
“स्वयं वत्सर ने मुझे दिया था।”
“वास्तव में गुरुदक्षिणा के रूप में आपको वत्सर को कुछ देना चाहिए था किन्तु आपने उल्टा वत्सर से ही उसका वह शिल्प ले लिया?”
“ऐसी कोई बात नहीं है।”
“तो क्या बात है? वत्सर ने वह शिल्प आपको ही क्यों दिया? किस मूल्य पर दिया?”
“दो कलाकारों के मध्य कला के आदान प्रदान का कोई मूल्य नहीं होता है।”
“तो क्या वत्सर ने आपको यूं ही इतना अद्भुत शिल्प दे दिया?”

“नहीं ऐसे नहीं दिया।”

“तो क्या मूल्य चुकाया है आपने? न्यायाधीश महाशय, यदि कोई व्यक्ति बिना मूल्य के कोई वस्तु किसी को देता है तो हमें उस लेन देन पर अधिक ध्यान देना होगा।”

“कपिल महोदय, ऐसा क्या हो सकता है? आपका संकेत किस ओर है?”

“सरल एवं स्पष्ट शब्दों से कहता हूँ। वत्सर ने मीरा की हत्या की। येला ने उसे छिपाया। समय आने पर मीरा के मृतदेह को नदी में बहा दिया। येला के उस कार्य का मूल्य वत्सर ने अपने उस अद्वितीय शिल्प को देकर चुकाया।”

[40]

अभीतक शांति से सब कुछ सुन रहे येला और वत्सर के अधिवक्ता श्री हरीश ने खड़े होकर कहा, "चलो, एक क्षण के लिए मेरे मित्र कपिलजी के कुतर्क को भी स्वीकार लेते हैं। तो ..."
"देखो महाशय, हरीशजी ने मेरी बात को स्वीकार लिया है। अर्थात वत्सर ने हत्या की है यह सिद्ध हो जाता है। इस अभियोग में अब और कुछ शेष रहा ही नहीं।" कपिल ने उत्साह और उत्तेजना प्रकट की।
"श्रीमान कपिल जी, शब्दों को पूरा सुनने का अभ्यास छूट गया है आपका। होता है। इस बढ़ी हुई आयु में अनेकों के साथ ऐसा होता है। यह सहज है।" हरीश ने कहा।
"तो क्या अब मैं बहरा हो गया हूँ? वृद्ध हो गया हूँ? महाशय, मेरे मित्र मेरी शारीरिक क्षमता पर प्रहार कर रहे हैं।"
"महोदय, शारीरिक नहीं मैं तो मानसिक क्षमता की बात कर रहा था।"
"वह कैसे?"
"क्यों कि आपने मेरी बात यदि पूरी सुनी होती तो आप ऐसा कुतर्क नहीं करते।"
"मैंने कौन सी बात नहीं सुनी?"
"मैंने कहा था कि चलो एक क्षण के लिए आपकी बात स्वीकार कर लेते हैं। इन शब्दों का अर्थ तो आप भली भांति जानते ही होंगे, महोदय?"
"ठीक है, ठीक है।"
"तो मैं अपनी बात रखूं, महोदय?" कपिल ने मुक सम्मति दी।
"यदि मेरे मित्र का तर्क मान लेते हैं कि वत्सर ने हत्या की, येला ने उसकी सहायता की और इस के लिए वत्सर ने वह शिल्प येला को दे दिया। तो कपिल जी यह बता दो कि मीरा की हत्या कब हुई?"
"इसके विषय में निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं है।"
"यह तो बता सकते हो कि वह शिल्प कब रचा गया?"

“प्राय: आठ वर्ष पूर्व, ऐसा इन सबका कहना है। हो सकता है कि यह बात असत्य हो।”
“सत्य मैं बताता हु, अभी। पूरे प्रमाण के साथ।”
“हरीश महोदय, आप क्या सिद्ध करना चाहते हैं? कैसे?” न्यायाधीश ने पूछा।
“मैं शिल्पकार सपन से प्रश्न पूछना चाहता हूँ।”
“कौन है सपन? उसे प्रस्तुत किया जाए।”
सपन प्रस्तुत हुआ।
“सपन जी आप एक शिल्पकार हैं?”
“जी, हाँ।”
“आप वत्सर को जानते हैं?”
“हाँ।”
“कब से?”
“प्राय: आठ वर्षों से।”
“कैसे जानते हो?”
“आठ वर्ष पूर्व शिल्प मेले में जब वत्सर ने वह शिल्प प्रस्तुत किया था। उस समय मेरी भेंट वत्सर से हुई थी।”
“अर्थात शिल्प की आयु आठ वर्ष ही है।”
“जी महोदय।”
“ठीक है। आप जा सकते हैं।” सपन अपने स्थान पर बैठ गया।
“श्रीमान कपिल जी, यह तो आपके ही साक्षी हैं। क्या वह असत्य कह रहे हैं?”
“नहीं।”
“तो शिल्प आठ वर्ष प्राचीन है। मीरा की मृत्यु तिथि इतनी प्राचीन नहीं है। हैं न कपिल जी?”
कपिल ने कोई उत्तर नहीं दिया।
“वत्सर वह शिल्प येला को आठ वर्ष पूर्व ही दे चुका है यह सिद्ध होता है।”
“इस बात का इस अभियोग से क्या संबंध है, श्रीमान हरीश जी?”
“संबंध है, कपिल जी। महाशय, अब तो मुझे प्रतीत हो रहा है कि मेरे मित्र कपिल जी अपनी स्मरण शक्ति भी खो चुके हैं।”

“नहीं, मुझे सब स्मरण है।”
“तो यह भी स्मरण होगा कि अभी अभी आपने यह कहा था कि वत्सर ने येला को वह शिल्प मीरा की मृत्यु छिपाने के लिए दिया था। शिल्प येला के पास आठ वर्षों से अधिक समय से है। मीरा की मृत्यु तिथि इतनी प्राचीन नहीं है। अर्थात येला और वत्सर के मध्य ऐसा कोई अनुबंध नहीं हुआ था जैसा कपिल जी का तर्क है।”
“महोदय, हरीश जी के इस तर्क का कोई उत्तर देना चाहोगे?” न्यायाधीश ने कपिल से पूछा।
“जी नहीं, महाशय।”
“तो यह सिद्ध होता है कि मीरा की हत्या वत्सर ने की है ऐसा कोई स्पष्ट और ठोस प्रमाण न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया है। तो क्या इस अभियोग को सम्पन्न मान लें? या कुछ और तर्क देना चाहोगे श्रीमान कपिल महोदय?”
“हम कुछ अन्य प्रमाण प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। हमें कुछ समय दिया जाए।”
“कितना समय?”
“एक सप्ताह का।”
“हरीश महोदय, विपक्षी अधिवक्ता को समय दिया जाए तो आपको कोई आपत्ति है क्या?”
“केवल इतनी आपत्ति है कि सात दिन का लंबा समय न दिया जाए।”
“सात दिनों के लिए क्यों आपत्ति है?”
“एक, इतने समय में निराधार प्रमाण उत्पन्न करने में यह सब सक्षम हैं। दूसरा, बिना कारण वत्सर को इतने दिनों तक मानसिक प्रताड़ना होगी। अत: शीघ्र से शीघ्र इसे सम्पन्न किया जाए।”
“हरीश जी, आप सरकारी तंत्र का उपहास एवं अपमान कर रहे हो।”
“मैं क्षमा प्रार्थी हूँ, महाशय।”
“कुछ भी बोलने से पूर्व उन शब्दों के अर्थों को समझ लो पश्चात ही बोलो।”
“जी महाशय।” हरीश ने कहा।
“तीन दिन का समय दिया जाता है। कपिल जी, स्मरण रहे कि जो भी प्रमाण प्रस्तुत हो वह वास्तविक हो।”
“जी पूरा प्रयास करेंगे।”

“तीन दिन के पश्चात पुन: इस पर कार्यवाही होगी।”

[41]

राहुल, नदीम, सोनिया, कपिल, सपन, निहारिका। सभी एक कक्ष में बैठकर न्यायालय द्वारा दिए गए तीन दिनों के समय में क्या करना है उसकी गंभीर चर्चा में लग गए।
“इन तीन दिनों में कौन सा प्रमाण प्रस्तुत करेंगे, कपिल जी?” नदिम ने चिंता से पूछा।
“वैसे तो कोई प्रमाण है ही कहाँ?” कपिल ने कहा।
“राहुल और सोनिया। कुछ करो और कोई ठोस प्रमाण कपिल जी को दो।”
“किन्तु कोई प्रमाण मिले तो न?” सोनिया ने कहा।
“बिना प्रमाण के मैं कुछ नहीं कर सकता।”
“आपको पैसे दिए गए है, आपने मांगे थे उतने सारे दिए हैं। तो आपको ही इसमें कुछ करना होगा।” नदीम ने पैसों का प्रभाव प्रकट किया।
“न्यायालय में मुझे आपकी बात और आपके तर्क रखने के लिए पैसे दिए गए हैं। अधिवक्ता हूँ मैं, खोजी पुलिसकर्मी नहीं। न ही अन्वेषण मेरा काम है। प्रमाण लाना मेरा काम नहीं है।”
“किन्तु आप ...।?”
“यदि आप मुझ पर अनावश्यक दबाव डालोगे तो मैं सबको बता दूंगा कि आपने मुझे जो पैसा दिया है वह कहाँ से आया है और किसने दिया है। और इस अभियोग को भी छोड़ दूंगा।”
“कपिल जी, आप तो अप्रसन्न हो गए। हम सबके हाथ रंगे हुए हैं। इसलिए ऐसे आपस में लड़ते नहीं हैं। बैठिए न?” नदीम के कहने पर कपिल बैठ गया।
“कपिल जी, अब क्या कर सकते हैं उस पर विचार करते हैं।” निहारिका ने कक्ष के तंग वातावरण को बदलने का प्रयास किया।

“मुझे कुछ समय दीजिए। कुछ सोचता हूँ।” कपिल ने वातायन खोल दिया। हवा के कुछ टुकड़ों ने कक्ष में प्रवेश कर शीतलता प्रदान की।
कपिल कुछ समय तक एक चित्त से दूर कहीं देखता रहा। किसी ने उसमें व्यवधान नहीं डाला। समय के एक अंश के व्यतीत होने पर वह बोला, “चलो, सब कुछ प्रारंभ से सोचते हैं, प्रारंभ से देखते हैं - चित्र, चलचित्र, रिपोर्ट आदि जो कुछ भी है। कदाचित वहीं से कोई प्रमाण प्राप्त हो जाए।”
“यह ठीक रहेगा।” सभी ने सम्मति और उत्साह प्रकट किया।
सभी उस कक्ष में गए जहां मीरा घटना के सभी कागज - पत्र, अभिलेख आदि रखे थे। एक एक कर सब कुछ देखा गया, बार बार देखा गया। अंतत: कुछ भी कड़ी, कोई दिशा, कोई प्रमाण; कुछ भी नहीं मिला।
“एक बार वत्सर के मंदिर के चित्र और चलचित्र पुन: देख लेते हैं।” कपिल ने सुझाया।
सभी ने उन्हें पुन: देखा। कुछ हाथ न लगा।
“मुझे एक युक्ति सूझ रही है, कपिल जी।” नदीम ने कहा।
“कैसी युक्ति?”
“वत्सर के घर और मंदिर पर राहुल और सोनिया को भेज देते हैं। वहाँ कुछ ड्रग्स और हथियार रखवा देते हैं। राहुल-सोनिया उसे प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करेंगे। आप न्यायालय में कहना कि वत्सर का चरित्र ही ऐसा है। वह अवैध कार्य भी करता है तो उसके लिए किसी की हत्या करना कोई बड़ी बात नहीं है। बस सिद्ध हो जाएगा कि वत्सर ही अपराधी है।”
“असत्य प्रमाण उत्पन्न करना, उसे प्रस्तुत करना और न्याय प्रक्रिया को न्याय से विमुख करना हमारा चरित्र है यह मान लिया। हमने ऐसा अनेकों घटनाओं में किया है। किन्तु इस घटना में ऐसा करना हमारे काम नहीं आएगा। हो सकता है कि उलटा वह हमारे ही विरुद्ध प्रयुक्त हो। क्यों कि हरीश इसे शीघ्र ही पहचान लेगा।”
“कैसे पहचान लेगा?” सपन ने पूछा।
“यह बताओ कि राहुल और सोनिया वत्सर के मंदिर कब और कैसे जाएंगे?”
“हवाई यात्रा से। तीन दिनों में यही एक मार्ग है।”

“हरीश और उसके साथी हमारी प्रत्येक गतिविधि पर दृष्टि रखे हुए हैं। जैसे ही यह दोनों यहाँ से निकलेंगे, हरीश सतर्क हो जाएगा। उसका साथी राहुल-सोनिया के पीछे लग जाएगा। वह सिद्ध कर देगा कि यह दोनों वहाँ कब गए थे? क्यों गए थे? क्या क्या किया था वहाँ जाकर?”

“उसे कैसे ज्ञात होगा?”

“आप लोग शैल और सारा का विस्मरण कर रहे हो।”

“उन्हें तो इस घटना से हटा दिया है।”

“वे दोनों मुक्त हैं। उनके अनेक साथी वत्सर के घर - गाँव-मंदिर के समीप घूम रहे हैं। स्मरण है न? क्या उन लोगों से यह दोनों बच पाएंगे? यदि उन्होंने राहुल - सोनिया का चलचित्र बनाकर न्यायालय में प्रस्तुत कर दिया तो हम सब फँसेंगे।”

“न्यायाधीश भूपेन्द्र को हम मना लेंगे।” निहारिका ने कहा।

“कैसे मनाओगे?”

“सरकार किसी की भी हो, तंत्र तो हमारा ही है।” नदीम ने अट्टहास्य किया।

“तंत्र भले ही आपका हो, भूपेन्द्र आपके नहीं है, न कभी हो सकते हैं। उसकी प्रतिष्ठा, उसकी कार्यशैली भिन्न है।” कपिल ने कहा।

“तो क्या करें?” क्षणभर पूर्व अट्टहास्य करनेवाले नदीम ने चिंतित होकर कहा।

“अब कोई भी ऐसी किसी युक्ति नहीं बताएगा जिसे न्यायालय में प्रस्तुत करने पर हम सब फंस जाएँ।” कपिल ने अपना पक्ष स्पष्ट कर दिया.

“तो?” सब एक साथ बोल पड़े।

“एक बार पुन: वत्सर के घर और मंदिर को देखते हैं।” कपिल ने कुछ सोचकर कहा।

वत्सर के घर और मंदिर के चित्र- चलचित्र सब देखने लगे। एक बिन्दु पर कपिल ने कहा, “रुको। यहाँ पर रुको।” चलचित्र रुक गया। सब उत्साह और अपेक्षा से कपिल को देखने लगे।

“यह देखो। यह कृष्ण का मंदिर है।” कपिल ने कहा।

“वह तो सब जानते हैं।”

“ठीक है। देखो, उसमें क्या दिख रहा है?”

“कृष्ण की प्रतिमा।”

“बस, केवल कृष्ण की प्रतिमा, हैं न?” कपिल ने पूछा।

“इस पर मैं कुछ युक्ति करूंगा। चलचित्र का यह भाग विशेष रूप से रख लो। इसकी अनेक प्रतियां बनाकर रखो। न्यायालय में इसे ही प्रस्तुत करेंगे।”
“किन्तु क्या होगा इससे?”
“एक तर्क लगाएंगे। हो सकता है काम बन जाए।”
“कैसा तर्क? कैसा काम?”
“वह न्यायालय में देख लेना, सुन लेना। भूपेन्द्र जैसा सनातनी न्यायाधीश भी मान जाएगा।”
“अभी बता दो न?” सोनिया ने नयन के कटाक्ष भरे भाव से कपिल को लिपटकर कहा।
“अभी नहीं सोनिया जी। दीवारों को भी कान होते हैं, आँख भी। थोड़ी प्रतीक्षा करो।” कपिल ने कहा। सब बिखर गए।

[42]

“कपिल महोदय, क्या प्रमाण लेकर आज ऊपस्थित हुए हो?” न्यायाधीश ने पूछा।
“महाशय, कभी कभी व्यक्ति का चरित्र ही स्वयं प्रमाण होता है। तब अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहती।”
“क्या कहना चाहते हो?”
“मैं कुछ दिखाना चाहता हूँ।” कपिल ने वत्सर के मंदिर के भीतरी भाग का चलचित्र प्रस्तुत किया। कृष्ण की प्रतिमा पर उसे रोक दिया।
“यह वत्सर के मंदिर का दृश्य है। इस मंदिर को स्वयं वत्सर ने अपने हाथों से बनाया है। शिल्पकार वत्सर ने! मैं सत्य कह रहा हूँ न वत्सर?”
“जी।”
“महाशय, समग्र भारत में और अन्य देशों में कृष्ण के सेंकड़ों हजारों मंदिर हैं। आपने भी अनेक मंदिर देखे होंगे।”
“महोदय, रुकिए। कृष्ण नहीं कहते, श्री कृष्ण कहते हैं।”
“जी महाशय। श्री कृष्ण के मंदिरों की एक विशेषता रही है जो सभी मंदिरों में बराबर से देखी जाती है।”
“कौन सी विशेषता?”
“उन सभी मंदिरों में श्रीकृष्ण कभी अकेले नहीं होते हैं। श्रीकृष्ण के साथ सदैव कोई होता है। किसी की प्रतिमा होती है।”

“हाँ, देखा है।”
“वह प्रतिमा राधा जी की होती है। अब इस मंदिर में स्थित श्रीकृष्ण की प्रतिमा को देखिए। यहाँ श्रीकृष्ण अकेले हैं, राधा जी कहीं नहीं है। राधा जी की प्रतिमा क्यों नहीं है?”
“हो सकता है कि यह मंदिर अभी अपूर्ण हो। पूर्ण होने पर वह प्रतिमा भी लग जाएगी।” हरीश ने वत्सर की तरफ से तर्क दिया।
“नहीं महोदय। यह मंदिर पूर्ण हो चुका है। और राधा जी की प्रतिमा सर्जन का कार्य कहीं नहीं चल रहा। उपरांत इस मंदिर में श्रीकृष्ण की प्रतिमा के समीप किसी प्रतिमा के लिए कोई स्थान भी नहीं छोड़ गया है।”
“वत्सर, क्या यह सत्य है?” भूपेन्द्र ने पूछा।
“जी, सत्य है महाशय।”
“किन्तु इससे क्या सिद्ध करना चाहते हो, महोदय?”
“यही कि वत्सर को स्त्रीयों से घृणा है। इसी कारण राधा जी की प्रतिमा इस मंदिर में नहीं है। यही इसका चरित्र है। यही कारण है कि वत्सर ने मीरा की हत्या की है।”
“यह कोई तर्क नहीं है, महोदय।” हरीश ने कपिल की बात काट दी।
“तो राधा जी की प्रतिमा न होने का अन्य क्या तात्पर्य हो सकता है?” कपिल ने कहा।
“तात्पर्य तो हो सकता है कि ...।” हरीश की बात को रोकते हिए वत्सर ने कहा, “क्षमा चाहता हूँ, महोदय। इस प्रश्न का, इस तर्क का उत्तर मैं ही दूंगा। यह बात मेरे श्रीकृष्ण की है।”
हरीश मौन हो गए। स्थान पर बैठ गए।
“कहिए वत्सर। क्या कारण है कि आपने राधा जी की प्रतिमा क्यों नहीं रची? क्यों उसे मंदिर में नहीं लगाई? क्यों मीरा की हत्या की?” कपिल ने एकसाथ अनेक प्रश्न वत्सर पर छोड़ दिए। मन ही मन अपने प्रश्नों पर प्रसन्न होने लगा, ‘अब इसके पास कोई उत्तर नहीं होगा। यहीं फंस गया। मेरी जीत हो गई है।’ उसने विजयी मुद्रा से नदीम को देखा।
तभी वत्सर ने कहा, “महाशय। मैं एक प्रश्न कपिल महोदय से पूछना चाहता हूँ।”
न्यायाधीश ने अनुमति दे दी।
“महोदय, आपकी जेब में सदैव एक चित्र रहता है। उसे न्यायालय को दिखाएंगे?” कपिल ने एक क्षण तीव्र दृष्टि वत्सर पर डाली और डिगमूढ़ सा खड़ा रहा।

“महोदय, वत्सर ने जो कहा वह चित्र न्यायालय को दिखाइए।”
कपिल ने विवश होकर वह चित्र न्यायाधिश को दिखाया।
“वत्सर, क्या है इस चित्र में? इस चित्र का क्या तर्क है? क्या औचित्य है?” न्यायाधीश ने पूछा।
“महोदय, इस चित्र में आपके साथ कौन है?” वत्सर ने पूछा।
“मेरी पत्नी है।”
“अर्थात आप विवाहित हैं। कितना समय हो गया आपके विवाह को?”
“छबीस वर्ष।”
“इस चित्र में आपकी पत्नी तो है ही किन्तु कोई संतान क्यों नहीं है?”
आघात से कपिल क्षणभर विचलित हो गया। दो चार घूंट पानी पिया, स्वस्थ हुआ और बोला, “ईस चित्र में मेरी संतान का चित्र नहीं है क्यों कि मेरी कोई संतान नहीं है। मैं संतान हीन हूँ। जो नहीं है उसे मैं कहाँ से लाऊँ? जो नहीं है उसका चित्र नहीं होता है इतनी सी बात वत्सर जानता ही होगा।” कहते कहते कपिल टूट गया, रो पडा। संतानहीन होने की पीड़ा से आज वर्षों के पश्चात वह आहत हो गया। अपने स्थान पर बैठ गया। दीर्घ श्वास लेते हुए पानी पीने लगा।
“वत्सर, जो नहीं है उसका चित्र नहीं हो सकता। यह स्पष्ट बात है। इससे क्या कहना चाहते हो?” न्यायाधीश ने वत्सर से पूछा।
“मेरा भी कहना यही है जो कपिल जी ने कहा, जैसे कि आपने भी अभी अभी पुष्टि की है। जो नहीं है उसका चित्र नहीं होता है। इसी प्रकार जो नहीं है उसकी प्रतिमा भी नहीं होती है।” वत्सर ने कहा।
“क्या? क्या कह रहे हो वत्सर?” नयाधीश ने व्याकुल होकर पूछा।
“यही महाशय कि राधा नाम की कोई व्यक्ति है ही नहीं जिसकी प्रतिमा श्रीकृष्ण के साथ रखी जाए।”
“महाशय, वत्सर अब कुछ भी कहे जा रहा है। हमारे शास्त्र, हमारी साहित्य रचनाएं, कविताएं, चित्र, गीत-संगीत, सभी का अपमान कर रहा है वत्सर।” कपिल उत्तेजित हो गया।
“कपिल जी, आप तो स्वयं श्रीकृष्ण जी के अस्तित्व को भी सर्वोच्च न्यायालय में अस्वीकार कर चुके हो। आपके अनुसार श्री कृष्ण तो काल्पनिक हैं। तो अब राधा जी के नाम पर इतना तर्क क्यों कर रहे हो?” हरीश ने अवसर देखकर कपिल पर प्रहार कर दिया।

“वह भिन्न बात है, हरीश महोदय। अभी तो हम इस पर ही बात करें?” कपिल ने आगे बात रखी, “राधा जी की अनेक कथाएं हैं। अनेक शास्त्रों में राधा कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है। अनगिनत कवीयों की हजारों कविताओं और गीतों में राधा जी का वर्णन है। श्रीकृष्ण की कथा करने वाले प्रत्येक कथाकार व्यासपीठ से राधा जी का श्रीकृष्ण के साथ जो संबंध है उसकी कथा कहते हैं। व्रज क्षेत्र में, वृंदावन में अनेक स्थानों पर राधा जी के प्रमाण हैं। इतना सब होने के उपरांत भी तुम कह रहे हो कि राधा जी का कोई अस्तित्व ही नहीं है। क्या वह सब असत्य है? यदि राधा जी का अस्तित्व नहीं है तो श्रीकृष्ण का भी कोई औचित्य नहीं हो सकता। राधा विण कृष्ण के उपासक हो तुम?
महाशय, मुझे तो प्रतीत हो रहा है कि वत्सर वास्तव में पागल हो गया है या पागल होने का नाटक कर रहा है। मीरा के हत्या कांड से न्यायालय को भटका रहा है। इस पर किसी प्रकार की दया न रखते हुए कडे से कडा दंड दिया जाए।” कपिल ने उत्साह में सबकुछ कह डाला। अपने विजय को निश्चित मानने लगा। उसके मुख पर कटु स्मित आ गया। तिरछी दृष्टि से हरीश को देखने लगा।
“वत्सर, तुम राधा जी के अस्तित्व का अस्वीकार करते हुए सनातन इतिहास की अवगणना कर रहे हो। शास्त्रों का और स्वयं श्रीकृष्ण का अपमान कर रहे हो। यह बात आघातपूर्ण है। राधा जी के होने के हजारों प्रमाण हैं, तो उनके न होने की बात कैसे मान ली जाए?” स्वयं नयाधीश भी वत्सर से क्रुद्ध हो गए तथापि बड़े संयम से उसने पूछा।
“यह केवल तर्क का विषय नहीं है महाशय। वास्तव में राधा जी का कोई अस्तित्व नहीं है।”
“क्या प्रमाण है तुम्हारे पास?”
“स्वयं श्रीमद भागवत महापुरण इस बात का प्रमाण है।”
“वह कैसे?”

[43]

“भागवत ग्रंथ में श्रीकृष्ण का पूरा जीवन चरित्र है। जन्म से लेकर देह त्याग पर्यंत श्रीकृष्ण का चरित्र महर्षि वेद व्यासजी ने लिखा है। भागवत के उपरांत व्यासजी ने दूसरे ग्रंथ महाभारत में भी श्रीकृष्ण चरित्र का वर्णन किया है। दोनों ग्रंथों में राधा नाम का एक शब्द भी नहीं है। कहीं भी राधा का उल्लेख नहीं है। जो भागवत में नहीं है, जो महाभारत में नहीं है, जो श्रीकृष्ण के पूर्ण जीवनकाल में नहीं है उस का अस्तित्व कैसे हो सकता है, महाशय?” वत्सर ने कहा।
“क्या बात कर रहे हो? भागवत और महाभारत में राधा जी का नाम तक नहीं है? तुम असत्य कह रहे हो, वत्सर।” न्यायाधीश ने धैर्य खो दिया।
“किन्तु महाशय, यही सत्य है।”
“यह कैसे हो सकता है?”
“जो नहीं है उसको व्यासजी ने नहीं लिखा है। बस इतनी सी बात है।” वत्सर की बात से न्यायाधीश विचलित होने लगे। स्वयं से प्रश्न करने लगे।

'प्रात:काल मैं घर में स्थित श्रीकृष्ण के साथ जिसकी पूजा करता हूँ वह कौन है? राधे राधे की मला जपता हूँ वह कौन है? सारा संसार राधे कृष्ण कहता है वह राधा कौन है? वह है भी या नहीं? राधा कृष्ण में स्थित मेरी दीर्घ आस्था क्यों डगमगा रही है? वास्तव में वेद व्यासजी ने राधा का नाम ही नहीं लिखा है? मुझे मेरी आस्था पर संदेह क्यों हो रहा है? मुझे संदेह नहीं करना चाहिए। मैं न्यायाधीश हूँ। मुझे किसी की बात से विचलित न होकर तटस्थ रहना है, स्थिर रहना है।'

"कपिल महोदय, क्या यह सत्य है कि भागवत - महाभारत में राधा जी का नाम एक बार भी नहीं लिखा गया?" न्यायाधीश ने पूछा।

"नहीं। नहीं महाशय। ऐसा नहीं है। भागवत में राधा कृष्ण की रासलीलाओं का वर्णन स्वयं वेद व्यासजी ने ही लिखा है। वत्सर असत्य कह रहा है।"

"क्या तुम असत्य कह रहे हो? न्यायालय में असत्य कहना दंड को आमंत्रित करना होता है। यह जानते हो न?"

"महाशय, मैं सत्य कह रहा हूँ।"

"प्रमाण दो।"

"क्या आपने श्रीमद भागवत पढ़ी है? कपिल महाशय, आपने?"

"नहीं।" "नहीं।" कपिल और न्यायधिश ने एक साथ कहा।

"किन्तु हमने भागवत कथाकारों से भागवत सुनी अवश्य है। उसमें राधा कृष्ण की बात है।"

"हमारे तर्कों से कुछ भी सिद्ध नहीं हो रहा है। कपिल महोदय, वत्सर की बात की परीक्षा एकमात्र भागवत ही है। अत: भागवत को ही न्यायालय में प्रस्तुत किया जाए।" न्यायाधीश ने आदेश दिया।

"महाशय, भागवत तो अभी प्रस्तुत हो जाएगी। किन्तु इतना विशाल ग्रंथ पढ़ेगा कौन? कैसे? इसमें तो न्यायालय के समय का प्रलंब व्यय होगा।"

"तो क्या उपाय है?"

"एक उपाय है। किसी भागवत कथाकार को न्यायालय में बुलाकर सत्यासत्य की परीक्षा हो सकती है।"

"महोदय, क्या आप ऐसे किसी कथाकार को अभी प्रस्तुत कर सकते हो?"

“नहीं, महाशय। कुछ दिनों का समय चाहिए।”
“कितना समय?”
“पंद्रह दिनों का।”
“यह तो दूर की बात हो जाएगी।”
“इसमें समय तो लगेगा ही। प्रथम तो प्रकांड विद्वान एवं प्रखर कथाकार को खोजना होगा। उसे सारा कांड समझाना होगा। पश्चात उनकी काथा के दिनों का भी विचार करना होगा। उसे न्यायालय तक लाने के लिए प्रसन्न करना होगा। तभी बात बनेगी।” कपिल ने उचित तर्क रखा।
“ठीक है। पंद्रह दिनों के पश्चात न्यायालय इस पर आगे विचार करेगा। वत्सर, समय देने में तुम्हें कोई आपत्ति है क्या?”
“नहीं महाशय।” न्यायालय स्थगित हो गया।

****

न्यायाधीश भूपेन्द्र की आस्था भी विचलित होने लगी। उसी अवस्था में वह घर लौटे। उसे देखकर पत्नी ने पूछा, “क्यों आज चिंतित दिख रहे हो? मीरा कांड का अंतिम निर्णय सुनाकर किसी निर्दोष को दंड देकर तो नहीं आए हो?”
“नहीं, ऐसा नहीं है।”
“तो बात क्या है?”
“वैसे देखा जाए तो बात कुछ है ही नहीं।”
“तो कैसे देखने से कोई बात होती है?” पत्नी का व्यंग समझकर भूपेन्द्र हंस पड़े।
“मीरा कांड में आज सहसा नया घुमाव आ गया है।” भूपेंदार क्षणभर रुके। पत्नी ने अधीरता से उसे देखा।
“कैसा घुमाव, पिताजी?” पुत्री ने भी रुचि प्रकट की।
“क्या कोई एक तर्क हमारी वर्षों की श्रद्धा को चलित कर सकता है?”
“यदि श्रद्धा सत्य पर आधारित हो तो वह किसी से भी चलित नहीं हो सकती।”
“पिताजी, जो भी बात है, स्पष्ट कहिये।”
“आज अधिवक्ता कपिल ने अभियुक्त वत्सर को घेरते हुए कहा कि वत्सर के मंदिर में केवल श्री कृष्ण की प्रतिमा है और राधा रानी की नहीं है। सारे संसार में राधा रानी के साथ ही श्री

कृष्णजी मंदिरों में विराजमान हैं किन्तु वत्सर ने राधारानी की प्रतिमा पूरी सजगता से नहीं स्थापित की। उसके आधार पर कपिल ने उसे स्त्री द्वेषी सिद्ध कर वत्सर को ही मीरा की हत्या का दोषी मानने को आग्रह किया।"

"और आपने उस तर्क को मानकर वत्सर को दंड भी दे दिया?" पुत्री ने विस्मय से पूछा।

"नहीं। मेरा न्याय इतना दुर्बल नहीं है यह बात तुम अपनी बेटी को भी समझाओ।"

"तो?" पुत्री ने पुन: संशय किया।

"वत्सर ने तो कह दिया कि राधा नाम की कोई व्यक्ति का अस्तित्व ही नहीं है अत: राधारानी की प्रतिमा नहीं रखी है और न कभी रखेगा।"

"क्या? राधा रानी का अस्तित्व ही नहीं है?" माँ बेटी एक साथ बोल पड़ी।

"वह तो कहता है कि राधारानी केवल कल्पना है, इससे अधिक कुछ नहीं। और उसका तर्क सुनकर मेरी आस्था भी अब विचलित होने लगी है।" पश्चात भूपेन्द्र ने न्यायालय में किए गए सभी तर्कों को पत्नी और पुत्री को बता दिया।

"तो अब आगे क्या होगा?"

"पंद्रह दिन पश्चात कपिल किसी भागवत कथाकार को प्रस्तुत करेंगे। वह सिद्ध करेगा कि भागवत में राधारानी का नाम है।"

"इसमें क्या? यह तो हम दोनों भी सिद्ध कर सकते हैं कि राधा जी का अस्तित्व होते हुए भी व्यासजी ने भागवत में उसका नाम क्यों नहीं लिखा।" पुत्री ने कहा।

"आप अपनी श्रद्धा को बनाये रखना।" पत्नी ने कहा।

"पंद्रह दिनों की प्रतीक्षा क्यों करनी है? हम कल ही यह सिद्ध कर देंगे, आप कल न्यायालय में हमें अवसर दें।" पत्नी और पुत्री ने उत्साह से कहा।

"आप दोनों?"

"हाँ। कोई संदेह है आपको?"

"संदेह तो नहीं है क्यों कि आप दोनों की कृष्ण भक्ति एवं गहन अध्ययन का मैं साक्षी रहा हूँ। किन्तु मीरा कांड में मैं आप दोनों को तर्क रखने की अनुमति नहीं दे सकता।"

"क्यों?"

"न्यायतंत्र के कुछ नियम होते हैं।"

“कैसे नियम?”

“जिस कांड का न्यायाधीश मैं हूँ उस कांड में यदि कोई प्रमाण, कोई साक्षी या किसी पक्षकार का संबंध मुझसे है तो कोई भी पक्षकार विरोध कर सकता है और NOT BEFORE ME- का प्रस्ताव रखकर मुझे उस कांड के न्यायाधीश के पद से दूर कर सकता है। इस स्थिति में इस कांड की कार्यवाही मेरे न्यायालय में कभी नहीं हो सकती। मुझे इस कांड से मुक्त कर दिया जाएगा और मैं इस कांड से मुक्त नहीं होना चाहता।”

“इस कांड से इतनी ममता क्यों, पिताजी?”

“इसलिए कि मेरा अंत:करण कह रहा है कि वत्सर हत्या नहीं कर सकता।”

“तो आपको वत्सर के प्रति पक्षपात हो रहा है?”

“नहीं बेटी, आजतक मुझे कभी भी किसी पर पक्षपात नहीं हुआ। मैं सदैव तटस्थ रहा हूँ। कल भी तटस्थ ही रहूँगा।”

“ठीक है किन्तु हमें अपना पक्ष रखना हो तो कोई उपाय है क्या?”

“उपाय तो है। यदि कोई भी पक्षकार आप दोनों का विरोध न करे तो आप अपना तर्क रख सकती हो।”

“तो पुछ लो सभी पक्षकारों को कि किसी को कोई आपत्ति तो नहीं।”

“अब तो पन्द्रह दिनों पश्चात यदि भागवत कथाकार राधा जी का प्रमाण देने में विफल रहेंगे तो आप दोनों के प्रस्ताव पर विचार किया जा सकता है।”

“ठीक है। इन पंद्रह दिनों तक राधारानी पर अपनी श्रद्धा बनाये रखना।”

भूपेन्द्र ने अपनी श्रद्धा को निश्चल रखने का प्रयास किया तभी पुत्री ने कहा, “पिताजी, न्यायालय में हम अपना पक्ष रखें तो किसी को आपत्ति हो सकती है। यदि हम पूरी कार्यवाही के समय न्यायालय में उपस्थित रहें तो किसी को कोई आपत्ति हो सकती है क्या?”

“केवल उपस्थित रहना चाहो तो किसी को आपत्ति नहीं होगी किन्तु स्मरण रहे कि आप दोनों पूर्ण रूप से मौन होकर ही सब कुछ देखेंगे। यह बात स्वीकार्य हो तो ही आप आ सकते हैं।”

“हमें स्वीकार्य है।” पत्नी - पुत्री ने एक साथ कहा। परस्पर देखकर स्मित किया। उस स्मित का तात्पर्य भूपेन्द्र नहीं जानते थे।

[44]

न्यायालय का समय होते ही न्यायाधीश ने प्रवेश किया। उपस्थित जन समुदाय पर विहंगम दृष्टिपात किया। भागवत कथाकार चेतन महाराज, इस्कॉन के स्वामी जी सम्पूर्ण गोविंददासजी, अन्य व्यक्तियों के साथ साथ अपनी पत्नी एवं पुत्री को भूपेन्द्र ने देखा। उसने अपने मन को प्रश्न किया, 'इन सबको झेल पाएगा वत्सर?'

उसने वत्सर को देखा।

'कितना शांत, स्थिर और निश्चिंत प्रतीत होता है! कितनी श्रद्धा, कितना विश्वास होगा उसे अपने तर्क पर, अपने कृष्ण पर?'

भूपेन्द्र ने स्थान ग्रहण किया। कार्यारंभ का संकेत किया।

“महाशय, आज मैं देश के प्रखर भागवत कथाकार और प्रकांड ज्ञानी प. पु. श्री चेतन महाराज को प्रस्तुत करने की अनुमति चाहता हु।” कपिल ने कहा।
“अनुमति है।”
“महाशय, मेरा नाम चेतन महाराज है। मैं सत्ताईस वर्षों से भागवत कथा करता रहा हूँ। अब तक मैंने आठ सौ से अधिक कथा की है। भागवत के एक एक श्लोक, एक एक शब्द मुझे पूर्ण कंठस्थ है। प्रश्न यह है न कि श्रीमद भागवत में राधा रानी का उल्लेख है कि नहीं। हैं न वत्सर?”
“महाराज, यह प्रश्न नहीं है, सत्य है कि राधा जी का उल्लेख कहीं नहीं है।”
“मैं प्रमाण देता हूँ, भागवत के ही एक श्लोक से। भागवत के अष्टम स्कन्ध के दसवें अध्याय का चालीसवाँ श्लोक है कि ...।”
महाराज उस श्लोक को बोले उससे पूर्व ही वत्सर उस श्लोक का उच्चारण करने लगा,
“कबंधास्तत्र चोत्पेतु: पतितस्वशिरोक्षीभि: ।
उध्यतायुधदोरडंडैराधावंतों भटान मृधे ।।
यही श्लोक न महाराज?”
अचंभित होकर महाराज बोले, “हां, हां। वही श्लोक। उसमें द्वितीय पंक्ति में राधावंतों शब्द है। वत्सर ने भी यही पाठ किया है। आप सभी ने भी उसे सुना है। इस प्रकार राधारानी का नाम होने का प्रमाण स्वयं वत्सर ने ही दे दिया है। इससे सिद्ध होता है कि श्रीमद भागवत में राधारानी का अस्तित्व है।” महाराज प्रसन्न होकर बोले। उसे देखकर कपिल भी प्रसन्नता से उत्साहित हो गए।
“सत्य है, महाराज कि इस श्लोक में राधावंतो शब्द है।”
“तो अब क्या प्रमाण चाहिए?”
“प्रमाण का निर्णय करने से पूर्व एक प्रश्न पुछ सकता हूँ आपको, महाराज?”
“पूछो बालक।” महाराज स्वयं को गुरु होने का, ज्ञानी होने का अनुभव करने लगे।
“क्या आप व्याकरण जानते हो?”
“कथाकार को व्याकरण की क्या आवश्यकता, बालक?”
“क्या आप व्याकरण जानते हैं?” वत्सर ने प्रश्न दोहराया।

“नहीं।”

“कोई बात नहीं। क्या आप इस श्लोक का पूरा अर्थ जानते हैं?”

“भागवतकार हूँ। अर्थ जानता हूँ। सुनो, राधावन्त होकर कबंध ने आयुध उठाए। यही अर्थ है, वत्सर।”

“यह अर्थ नहीं, अनर्थ है। वहाँ राधावन्त शब्द से पूर्व दोरदंडै शब्द है। अत: व्याकरण की दृष्टि से शब्द दोरदंडै: अधोवन्त बनता है। जिसका अर्थ होता है - धोवन्त अर्थात दौड़कर । और तब पूरे श्लोक का अर्थ स्पष्ट होता है।”

“कैसा अर्थ?”

“जिस अध्याय का यह श्लोक है वह अष्टम स्कन्ध का दशम अध्याय है। उस अध्याय का नाम है - देवासुर संग्राम। देव और असुरों के मध्य हुए भीषण युद्ध की बात है उस अध्याय में। और इस श्लोक का अर्थ होता है - तब वहाँ बहुत से धड़, अपने कटकर गिरे हुए सिरों के नेत्रों से देखकर हाथों में शस्त्र उठाकर वीरों की ओर दौड़ने और उछलने लगे। - यही अर्थ है न महाराज?”

“मैं इतना गहन अध्ययन नहीं कर पाया, महाशय।” चेतन महाराज ने न्यायाधीश को कहा।

“कोई बात नहीं, महाराज। इतना तो बता दो कि अष्टम स्कन्ध के दसवें अध्याय में देवासुर संग्राम की ही कथा है न?”

महाराज ने श्रीमद भागवत की बड़ी सी पुस्तक खोली, पन्ने पलटकर खोजने लगे। कुछ समय पश्चात बोले, “हाँ महाशय। वह देवासुर संग्राम का ही अध्याय है।”

“देवासुर संग्राम में राधा जी का क्या काम? उस भीषण संग्राम से राधारानी का क्या संबंध है महाराज?”

“वह तो महाशय, ऐसा, संबंध तो ...।” महाराज की वाणी ने उसका साथ छोड़ दिया। मौन होकर वह बैठ गए।

“महाशय, पूरे भागवत ग्रंथ में केवल एकबार राधावंतो शब्द प्रयोग हुआ है जो संधि के नियम अनुसार राधा नहीं किन्तु आधावंतो है। और यह शब्द देवासुर संग्राम के वर्णन में प्रयुक्त हुआ है। क्या इससे किसी राधा के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है?”

“महाराज, वत्सर के प्रश्न का उत्तर दीजिए।” न्यायाधीश की बात का ऊतर देते हुए चेतन महाराज ने कहा, “मैं अनुत्तर हूँ।”
“तो कपिल महोदय, क्या यह मान लिया जाए कि वत्सर का तर्क सत्य है और राधा नाम के किसी व्यक्ति का अस्तित्व नहीं है और न ही उसका श्री कृष्ण से कोई संबंध है?”
“इस समय तो मेरे पास कोई तर्क नहीं है, महाशय।” कपिल ने चेतन महाराज की तरफ तिरस्कार दृष्टि से देखा।
“तो यह सिद्ध होता है कि राधा का अस्तित्व ...।”
“रुकिए महाशय। अभी किसी निर्णय पर नहीं आ सकते हैं।” कपिल ने सहसा स्वामी सम्पूर्ण गोविंददास जी को देखकर उसे अपना तर्क रखने के लिए संकेत किया।
स्वामीजी उठे और कहा, “गीताजी में स्वयं श्रीकृष्ण ने अपने मुख से राधा जी के होने का प्रमाण दिया है। अनुमति हो तो वह श्लोक पढ़ूँ?”
न्यायाधिश ने वत्सर की तरफ देखा। संकेतों में वत्सर ने सम्मति प्रदान की।
“कहो स्वामी जी।”
“गीताजी के नवें अध्याय के तेरहवें श्लोक में भगवान कृष्ण स्वयं कहते हैं कि -
महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिता: ।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम । ।
जिसका अर्थ है, ही पार्थ ! महान आत्माएं जो मेरी दिव्य शक्ति का आश्रय लेती हैं वे मुझे समस्त सृष्टि के उद्गम के रूप में जान लेती हैं। वे अपने मन को केवल मुझ में स्थिर कर अनन्य भक्ति करते हैं।”
“स्वामीजी, इसमें राधारानी का उल्लेख कहाँ है?”
“है, महाशय है। श्रीकृष्ण स्वयं जिस दिव्य शक्ति की बात कर रहे हैं वह शक्ति कोई और नहीं स्वयं योगमाया है। जो गोपनीय रूप से राधा का ही संकेत है।”
“स्वामीजी, यह योगमाया, यह दिव्य शक्ति जिसकी महिमा स्वयं कृष्णजी कर रहे हैं वह शक्ति साकार है या निराकार?” वत्सर ने पूछा।
“बालक वत्सर, शक्तियां कभी साकार नहीं होती। वह तो चेतन होती है। निराकार ही होती है।”

“सहमत हूँ, स्वामीजी। यदि यह शक्ति के द्वारा राधारानी का संकेत कृष्ण करते हैं तो वह राधारानी तो निराकार हुई ना?”
“अवश्य, वत्सर।”
“तो वह राधारानी देहधारी बनकर श्री कृष्ण की प्रेयसी, विरहिणी स्त्री कैसे बन गई?”
स्वामीजी इस प्रश्न की अपेक्षा में नहीं थे। अत: मौन हो गए। कपिल ने उसकी तरफ देखा जिसमें स्पष्ट आदेश था कि वत्सर के तर्क को काटकर कोई उत्तर दिया जाए।
‘मेरे पास कोई उत्तर नहीं है, मैं क्या कहूँ?’ स्वामीजी ने मौन ही कपिल को संकेत कर दिया।
“स्वामीजी, कुछ कहना चाहोगे वत्सर की बात के उत्तर में?”
“नहीं महाशय।” स्वामीजी ने स्वयं को उस चर्चा से पृथक करते हुए कहा।

[45]

“कपिल महोदय, और कोई तर्क है क्या?” या इस बात को यहाँ सम्पन्न मानकर स्वीकार कर लें कि राधाजी का कोई साकार अस्तित्व नहीं था?”
कपिल निरुत्तर रहा।

“यदि अन्य कोई इस विषय में अपना पक्ष रखना चाहता हो तो उसका स्वागत है।” न्यायाधीश के इस आह्वान पर उपस्थित जनसमूह में बातें होने लगी। कोई पक्ष रखने के लिए प्रस्तुत नहीं हुआ।
“तो यह मान लिया जाता है कि इस विषय में अब किसी को कुछ नहीं कहना।”
“मैं कुछ कहना चाहती हूँ।” स्वयं न्यायाधीश की पत्नी ने कहा। उसकी तरफ देखकर न्यायाधीश भूपेन्द्र ने कहा, “वत्सर। यह स्त्री मेरी पत्नी भद्रा है। इस कांड में उसके द्वारा पक्ष रखना न्यायोचित नहीं है। आप चाहो तो उसे रोक सकते हो अथवा उसे पक्ष रखने की अनुमति देकर मेरे लिए **NOT BEFORE ME**
कर सकते हो जिससे मैं इस कांड से पृथक हो जाऊंगा। कोई अन्य न्यायाधीश इस कांड का न्याय करेगा। आप कौन से विकल्प को पसंद करेंगे?”
“वत्सर, यह हमारा अधिकार है। आप चाहो तो हम न्यायाधीश बदल सकते हैं।” हरीश ने वत्सर को कहा।
“वैसे तो मुझे इस विकल्प का थोड़ा ज्ञान है तथापि मैं **NOT BEFORE ME** विकल्प का प्रयोग नहीं करना चाहता।”
“एक बार पुन: विचार कर लो, वत्सर।” हरिश ने कहा।
“जी, मैं अपने निर्णय पर स्थिर हूँ। मुझे न्यायाधीश पत्नी के तर्क से कोई आपत्ति नहीं है।” वत्सर ने अनुमति दे दी।
“ठीक है। आप अपना पक्ष रख सकती हो।” नयाधीश ने कहा।
भद्रा ने अपना पक्ष रखते हुए कहा, “श्रीमद भागवत कथा श्री शूकदेवजी ने महाराज परीक्षित को सुनाई थी। यह सर्व विदित है। यह भी सर्व विदित है कि परीक्षित महाराज के पास केवल सात दिनों का समय था। इतने समय में श्री शूकदेवजी को पूरी भागवत कथा सुनाकर परीक्षित महाराज को मोक्ष प्राप्त हो ऐसा कार्य करना था। एक और बात, राधा रानी जी श्री शूकदेवजी की अध्यात्म गुरु थी। कहा जाता है कि जब भी शूकदेवजी अपनी गुरु राधा का स्मरण मात्र भी करते थे तब तब वह दीर्घ समाधि में चले जाते थे। इसलिए यदि परीक्षित महाराज को कथा सुनाते समय श्री शूकदेवजी द्वारा राधा रानी का स्मरण मात्र भी किया गया होता तो वे दीर्घ समाधि में चले जाते, सात दिनों का समय व्यर्थ ही व्यतीत हो जाता। परीक्षित मजाराज की

मृत्यु साधारण मृत्यु बन जाती। उसे मोक्ष प्राप्त नहीं होता तब श्रीमद भागवत कथा का मूल हेतु ही सिद्ध न हो पाता। बस यही कारण है कि श्री शूकदेवजी ने भागवत करते हुए एक बार भी अपनी गुरु राधा रानी का स्मरण नहीं किया, न ही नाम का उल्लेख किया। इससे स्पष्ट है कि राधा का अस्तित्व था, श्री शूकदेवजी के गुरु के रूप में।" भद्रा ने अपनी बात पूर्ण करते हुए वत्सर के प्रति तीव्र कटाक्ष युक्त दृष्टिपात किया। वत्सर के मुख भाव स्थिर थे। प्रतीत होता था कि वह भद्रा के तर्क से लेश मात्र भी विचलित नहीं हुआ हो।

"वत्सर, क्या तुम्हें उचित उत्तर मिल गया है?"

वत्सर ने सस्मित कहा, "सर्वप्रथम भद्राजी को मेरा प्रणाम।" वत्सर ने भद्रा को प्रणाम किया। "तर्क अत्यंत प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया है। मैं इस तर्क का सम्मान करता हूँ। किन्तु महाशय, यह तर्क सर्वथा मिथ्या है।"

"वह कैसे?"

"माता जी, श्रीमद भागवत किसकी रचना है?"

"श्री शूकदेवजी ने कही है तो स्पष्ट है कि वह श्री शूकदेवजी की ही रचना है।"

"श्री शूकदेवजी ने परीक्षित महाराज को यह कथा सुनाई अवश्य ही है किन्तु वे इसके रचयिता नहीं है। इसकी रचना स्वयं महर्षि वेद व्यास जी ने की है। श्री शूकदेवजी ने तो केवल उसका कथा पान करवाया है, जैसे चेतन महाराज करते हैं। अत: यहाँ श्री शूकदेवजी की प्रत्यक्ष कोई भूमिका नहीं है। अत: राधाजी का नाम लेना, उनका दीर्घ समाधि में चले जाना, परीक्षित जी का मोक्ष से वंचित रह जाना आदि तर्क सिद्ध नहीं होते हैं।"

"किन्तु इससे राधा जी के न होने का प्रमाण तो नहीं मिलता।"

"होने का प्रमाण भी तो नहीं मिलता। न होने का तो स्वयं ही प्रमाण है। जो नहीं है उसका उल्लेख नहीं है। यदि राधाजी का अस्तित्व होता तो व्यासजी से इतनी बड़ी भूल कैसे हो गई कि वे इतने परम और महान पात्र का नाम तक लिखना भूल गए? क्या व्यास जी जैसे समर्थ रचयिता से यह भूल हो संभव है क्या?"

"व्यास जी से ऐसी भूल की संभावना नहीं है। किन्तु राधा रानी एक महान गुरु थे यह बात तो वत्सर को माननी ही पड़ेगी।"

“चलो क्षणभर मान ली आपकी बात। तो जब भागवत काथा पूर्ण हो गई, परीक्षित महाराज का मोक्ष निश्चित हो गया तब तो शूकदेवजी अपने गुरु का नाम लेते, गुरु का धन्यवाद करते, अपने गुरु के प्रति आभार व्यक्त करते, पश्चात दीर्घ समाधि में चले जाते। किन्तु उन्होंने ऐसा कुछ किया ही नहीं।”
“किन्तु राधा जी उनकी गुरु थी यह बात सत्य है।”
“अर्थात राधा जी महान गुरु थी, प्राचीन विदुषी भी थी। हैं न भद्रा जी?”
“हाँ। नि:संदेह।”
“आप आस्तिक हैं या नास्तिक?”
“यह कैसा प्रश्न है? ऐसे प्रश्न का मेरे तर्क के उत्तर से क्या संबंध? ऐसा प्रश्न कर तुम मुझे भटकाना चाहते हो क्या?”
“जी नहीं मैया। भटकाना नहीं, मैं तो लक्ष्य तक ही ले जाना चाहता हूँ। अत: कृपया कर कहो कि आप आस्तिक हैं या नास्तिक?”
“मैं कृष्ण भक्त हूँ तो आस्तिक ही हुई न?”
“आस्तिक की यह अवधारणा मिथ्या है।”
“वत्सर, ईश्वर में श्रद्धा रखने वाला आस्तिक ही होता है। तो यह मिथ्या कैसे है?” न्यायाधीश ने पूछा।
“महाशय, आस्तिक और नास्तिक की परिभाषा के विषय में अनेक भ्रमणाएं व्याप्त है। यदि आप अनुमति दें तो इनकी सत्य परिभाषा प्रस्तुत करूँ।”
“अनुमति है।”
“आस्तिक वह है जो वेदों के ज्ञान को स्वीकार करता है। वेदों को ही प्रमाण मानता है। नास्तिक वह है जो वेदों का, वेदों के प्रमाणों का स्वीकार नहीं करता। इस प्रकार किसी भी बात को सिद्ध करना, उसका सत्य या असत्य होना आदि वेदों की कसौटी पर निर्भर होता है। ईश्वर को मानने या न मानने के साथ इसका कोई संबंध नहीं है।”
“स्वामीजी और महाराज जी। आप दोनों ज्ञानी हैं। तो कहिए की आस्तिक - नास्तिक विषय में वत्सर जो कह रहा है वह सत्य है या मिथ्या?”
“सत्य है।” दोनों ने एक साथ कहा।

“तो कहो कि इस आधार पर आप आस्तिक हैं या नास्तिक, मैया?”
“मैं आस्तिक हूँ।”
“तो वेद के प्रमाणों को आप स्वीकार करोगी न?”
“अवश्य।”
“वेदों में अनेक विदुषियों के नाम और काम का वर्णन ऋषियों द्वारा किया गया है। उन विदुषियों के नाम बात सकती हैं आप?”
“गार्गी, अदिति, अरुंधती, घोष आदि।”
“इतने ही नाम नहीं है। शची, शत्रुप, शाकल्य, संध्या, विश्वतारा, अपाला, तपती, लोपामुद्रा, मैत्रेयी, सिकता, रत्नावली, रोमशा, सुलभा, उशिज, प्रातिपेई, मदालसा, कामायनी, विलोमी, सावित्री, यमी, विश्वंभरा, देवयानी। इतनी सारी विदुषियाँ पूर्वकाल में हो गई। इनके विषय में वेदों में बातें लिखी हुई है। किन्तु कहीं भी राधारानी का उल्लेख नहीं है। क्या वेदों के ऋषियों से भी राधारानी के विषय में कोई चूक हो गई है? यदि राधारानी उत्तम गुरु होती, श्री शूकदेवजी की गुरु होती तो वेदों में तो उसका नाम अवश्य होता। वहाँ क्यों नहीं है?”
“मैं नहीं जानती।”

[46]

“मैं जानता हूँ। वेदों में राधा का नाम है। ऋग्वेद में है जो सबसे प्राचीन ग्रंथ है।” सहसा स्वामीजी ने उठकर कहा।

“क्या आप वह श्लोक सुना सकते हैं?”

“एकम ज्योति राभू द्विधा, राधा माधव रूपकम। जिसका अर्थ है - एक मात्र तेज परब्रह्म राधा और माधव के रूप में देदीप्यमान है।”

“उत्तम, स्वामीजी। आपने ऋग्वेद की बात कही। ऋग्वेद के किस अध्याय में किस मण्डल में, कौन से सूक्त में, कौन सी ऋचा में यह श्लोक है? इसके ऋषि कौन हैं? देवता कौन हैं?”

“क्या तात्पर्य है तुम्हारा वत्स?”

“ऋग्वेद की सरंचना के विषय में आप कुछ जानते हैं?”

“संरचना क्या होती है?”

“ऋग्वेद कुल दस मंडलों में है। प्रत्येक मण्डल में अनेक अध्याय होते हैं। प्रत्येक अध्याय में सूक्त होते हैं। सूक्त का अर्थ तो आपको विदित ही होगा स्वामीजी?”

स्वामीजी ने कोई उत्तर नहीं दिया। किन्तु उनके मुख भावों से उनकी अज्ञानता प्रकट हो रही थी।

“सूक्त का अर्थ है देवों की स्तुति। प्रत्येक सूक्त में मंत्र होते हैं। जिसे ऋचा कहा जाता है। हैं न स्वामीजी?”

स्वामीजी ने उत्तर तो नहीं दिया किन्तु उनके मुख पर कुछ तीव्र रेखाएं प्रकट हो गई जिन्हें सारे न्यायालय ने देखा।

“प्रत्येक सूक्त के एक या एक से अधिक ऋषि होते हैं। प्रत्येक सूक्त का एक देवता होता है। तो

‘एकम ज्योति राभू द्विधा, राधा माधव रूपकम’

इस श्लोक का मण्डल, अध्याय, सूक्त का नाम, ऋचा का क्रम, इसके ऋषि का नाम और इसके देवता का नाम बताइए, स्वामीजी।”

स्वामीजी के पास वैसे तो कोई उत्तर नहीं था तथापि वे बोले, “वह सब तो, मैं तो, इस श्लोक...।” स्वामीजी बोल नहीं पाए।

“यह श्लोक ऋग्वेद में कहीं नहीं है, न ही किसी अन्य वेदों में। यह श्लोक ऋग्वेद के परिशिष्ट में है ऐसा कहा जाता है जो पूर्णतया मिथ्या है।”

“सत्य क्या है?”
“किसी भी वेद के परिशिष्ट नहीं है। वेद स्वयं में पूर्ण है अत: उसे किसी परिशिष्ट की आवश्यकता ही नहीं है।”
“यह परिशिष्ट कहाँ से आया है?”
“संस्कृत के कुछ मिथ्या रचयिताओं ने अपनी मनसा पूर्ति के लिए ऐसे अनेक श्लोकों को रचा है जिसे वेद के श्लोकों के रूप में प्रचलित करने का प्रयास भी किया है। वेदों में कभी कोई श्लोक नहीं होते, मंत्र होते हैं जिसे ऋचा कहते हैं। जैसे आजकल अनेक रचनाएं कवि गुलजार या हररिवंशराय या गालिब के नाम से घूम रही है।”
“इससे क्या सिद्ध करना चाहते हो?”
“यही कि राधा रानी नाम का कोई उल्लेख वेदों में भी नहीं है। यही कारण है कि श्री शूकदेवजी के कोई गुरु राधा नाम से थे ही नहीं। अत: राधा नामक कोई व्यक्ति - विशेष रूप से स्त्री का अस्तित्व ही नहीं था। कृष्ण के साथ उसकी लीलाओं का, प्रेमकथाओं का भी कोई अस्तित्व नहीं है।”
“यदि इन तर्कों पर विचार करें तो मुझे भी प्रतीत होने लगा है कि राधा जी का कभी भी अस्तित्व नहीं रहा होगा।” न्यायाधीश ने अपने मन की बात कही।
“किन्तु मुझे एक जिज्ञासा है, संशय है।” एक युवती ने कहा। सब ने उसकी तरफ देखा।
“यह मेरी पुत्री पारुल है। वत्सर, क्या पारुल अपनी बात रखे तो तुम्हें कोई आपती है?” न्यायाधीश ने पूछा।
“जी नहीं, महाशय। पारुल, कहो क्या संशय है?”
“हमारे देश के अनेक पुराणों में, अनेक कथाओं में, गीतों में राधा कृष्ण की बात कही गई है। यदि राधा मिथ्या है तो राधा का पात्र इन सब में कहाँ से आया? कैसे आया?”
“पुराणों, कथाओं और गीतों में राधा का पात्र कैसे आया यह अनुसंधान का विषय है जो मेरा कार्य नहीं है। किसी विद्वान को यह कार्य करना चाहिए। और सत्य को संसार के समक्ष रखना चाहिए। इससे मिथ्या कथाओं से रचित भ्रमणाओं को तोड़ा जा सके। क्या तुम ऐसा अनुसंधान करने को तत्पर हो?”
“मैं?” पारुल चौंक गई।

“हाँ, तुम। तुम क्यों नहीं?” पारुल निरुत्तर रही।
“पुराणों, कथाओं और गीतों के रचयिता हमारे जैसे मनुष्य ही हैं। इनमें कोई भी ऋषि या वेद व्यास या वाल्मीकि जैसे सक्षम रचनाकार नहीं है। अत: वह सब काल्पनिक बातें लिखते हैं जिसका सत्य से कोई संबंध नहीं होता।”
“कवियों ने राधा का पात्र सर्जन क्यों किया? यदि वे ऐसा नहीं करते तो क्या होता?” पारुल ने नई जिज्ञासा प्रकट की।
“राधा के पात्र द्वारा उन कवियों ने अपनी अतृप्त वासना को ही प्रकट किया है और उसे कृष्ण के साथ जोड़कर अपनी वासना को पवित्र सिद्ध करने का प्रयास भी किया है। यदि किसी भारतीय व्यक्ति को कविता करनी है, कवि के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करना है तो वह सर्व प्रथम राधा कृष्ण के विरह की बात कहेगा क्यों कि वह सरल है, सस्ता विषय है और सहज स्वीकार्य भी है। जिसे कुछ नहीं आता है उसे श्री कृष्ण के साथ राधा की कथा और कविता करना अवश्य आता है, भले न वह पूरी बात मिथ्या क्यों न हो?”
“यह तो अत्यंत गंभीर बात है, राधा पर प्रतिबंध होना चाहिए।” पारुल ने निर्दोष भाव से कहा।
“महाशय, यदि राधा नाम पर प्रतिबंध लगा दिया जाए तो अनेक कथाकार, अनेक स्वामीजी, अनेक कवि, अनेक व्यक्ति, अनेक रचयिता विधवा हो जाएंगे, अनाथ हो जाएंगे। उनकी दुकान बंद हो जाएगी।” वत्सर ने चिंता प्रकट की।
“राधा नाम के उपयोग करने पर कोई हानी है क्या?” कपिल ने पूछा।
“राधा के नाम से कोई हानि नहीं है। हानि तो तब है जब उसे श्रीकृष्ण के साथ जोड़ा जाता है, उसे कृष्ण की त्यक्ता प्रेयसी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। शृंगार रस के अति निम्न स्तर पर राधा का उपयोग किया जाता है। इससे राधा के पात्र के चरित्र का ही हनन होता है। और श्री कृष्ण के साथ उसे जोड़ने पर योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरित्र का भी हनन किया जा रहा है। विडंबना तो यह है कि ऐसे कवि स्वयं को कृष्ण भक्त भी कहते हैं। अपने आराध्य के चरित्र का ह्रास करना और आरध्य के भक्त के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करना, इससे बढ़कर लज्जा की बात क्या हो सकती है?”
“कृष्ण का चरित्र कैसा था?” पारुल की जिज्ञासा बढ़ रही थी।

[47]

“श्रीकृष्ण के चरित्र के विषय में बात करना किसी के भी सामर्थ्य की बात नहीं। तथापि इतना समझ लो कि कृष्ण जो भी करते थे; प्रकट रूप से करते थे। प्रेम भी प्रकट करते थे, शत्रुता भी। एक उदाहरण देता हूँ-
एक अज्ञात युवती कृष्ण को पत्र लिखकर विनती करती है कि मेरी रक्षा करो। उसकी रक्षा हेतु कृष्ण शीघ्र ही अनेक योद्धाओं से युद्ध करने चल पड़ते हैं। शत्रुओं को परास्त कर उस युवती से कृष्ण विवाह भी करते हैं। उस युवती का नाम जानती हैं?”
“रुक्मिणी?”
“हाँ। रुक्मिणी के साथ ऐसा व्यवहार करने वाल कृष्ण किसी का त्याग कर सकता है क्या? किसी प्रेयसी को विरह में तड़पने को छोड़कर उसे जीवनभर वेदना देगा क्या? और वह भी ऐसी प्रेयसी कि जिसका कोई साकार या निराकार अस्तित्व ही नहीं है? हम कैसे लोग हैं जो किसी की अतृप्त वासना से भरी कल्पना को सत्य मानकर अपने ही आराध्य का अपमान करते हैं, चरित्र खंडन करके उसका आनंद लेते हैं? क्या हमारा आराध्य कृष्ण ऐसा चरित्र वाला है?”
“नहीं। कृष्ण तो परम योगी थे। क्या ऐसे चरित्र की कथा और गीत आदि की रचना पर सर्वथा प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता?”
“इसका निर्णय न्यायालय करेगा। मैं सक्षम नहीं हूँ।” वत्सर ने कहा।
“न्यायालय? अर्थात तुम्हारा तात्पर्य मुझसे है? मैं यह कार्य नहीं कर सकता। यह मेरे अधिकार क्षेत्र से परे है। और हाँ, यह भारत है। यहाँ किसी बात पर प्रतिबंध की बात करोगे तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर यह कवि - रचयिता, कलाकार आदि विराट आंदोलन करने निकल पड़ेंगे। मैं सत्य कह रहा हूँ न निहारिकाजी? सपन जी?”

न्यायाधीश के मुख से अपने अपने नाम सुनकर सपन और निहारिका स्तब्ध हो गए। न्यायालय में भी क्षणभर स्तब्धता व्याप्त हो गई। क्षणों के व्यतीत होते ही कपिल उठे, “महाशय। यह कांड मीरा की हत्या का है। वत्सर ने हत्या की है या नहीं? न्यायालय ‘राधा का अस्तित्व है या नहीं? राधा कृष्ण की प्रेयसी थी कि नहीं?’ जैसे विषयों पर चर्चा क्यों कर रही है? क्या न्यायालय को मूल बात से भटकाया जा रहा है? ऐसी निरर्थक चर्चा से न्यायालय का समय व्यर्थ ही नष्ट किया जा रहा है? इसे शीघ्र ही रोका जाए।”

हरीश ने त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए कहा, “महोदय, राधा का तर्क तो आपने ही रखा था। इतने सारे व्यक्तियों को न्यायालय में राधा नाम पर तर्क रखने के लिए प्रस्तुत किसने किया? यह कथाकार, यह स्वामीजी, आदि किसके साक्ष्य हैं, कपिल जी? न्यायालय का समय तो आपने ही नष्ट किया है। इसका दंड आपको ही दिया जाना चाहिए।”

हरीश का तर्क सुनकर कपिल क्षुब्ध हो गए। स्वयं को परास्त प्रतीत करने लगे। निराश होकर मौन हो गया। बैठ गया।

“कपिल महोदय, आपके शब्दों को न्यायालय की अवमानना मानकर मैं कुछ दंड घोषित करूँ उससे पूर्व कुछ कहना चाहते हो?”

“मैं क्षमा चाहता हूँ। दंड न देने की प्रार्थना करता हूँ। ऐसी बात पुन: कभी नहीं करूंगा।” कपिल ने कहा।

“इस बार दंड नहीं दे रहा हूँ किन्तु आगे ध्यान रखना और बिना तर्क की कोई बात यहाँ न रखना।”

“जी महाशय।”

“जब आज न्यायालय में राधारानी के विषय में इतनी चर्चा हुई है, तर्क दिए गए हैं तब मैं भी वत्सर से एक संशय के विषय में जानना चाहूँगा। वत्सर, क्या तुम मेरे संशय का समाधान करोगे?”

“महाशय, श्री कृष्ण की कृपा होगी तो।”

“मैंने सुना है, कहीं कहीं पढा भी है कि स्वयं ब्रह्माजी ने श्रीकृष्ण के साथ राधा जी का विवाह करवाया था। क्या यह भी मिथ्या है?”

“महाशय, जब कहीं भी राधा जी के होने का ही प्रमाण नहीं है तो श्रीकृष्ण जी के साथ विवाह कैसे हो सकता है? और यदि वास्तव में राधा जी का श्रीकृष्ण जी के साथ विवाह हुआ था तो कृष्ण पर लगे सभी आरोप / लांछन स्वत: निरस्त हो जाते हैं। कृष्ण ने राधा से अन्याय किया था वह बात ही मूल से मिथ्या हो जाती है। अब मैं आप पर छोड़ता हूँ कि राधा का अस्तित्व मिथ्या था या श्रीकृष्ण पर लगे आरोप मिथ्या हैं?”

“मुझ पर क्यों छोड़ते हो?”

“आप न्यायाधीश हैं, न्याय करना - निर्णय करना आपका कर्म है। आपको ऐसा करने का अभ्यास है। आप ही निर्णय कर सकते हो।”

“इस बात का निर्णय तो मैं नहीं कर सकता किन्तु आज न्यायालय का समय सम्पन्न होने को है। कपिल महोदय, अब कोई प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हो या मैं मीरा कांड का निर्णय घोषित करूँ?”

“महाशय, वैसे हमारे समक्ष कोई सीधे प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु इससे वत्सर पर लगा अभियोग मीट नहीं जाता है। अभी भी वह मुख्य अभियुक्त है। अत: न्यायालय से अनुरोध करते हैं कि हमें वत्सर का न्यायिक कारावास प्रदान करें।”

“कोई विशेष कारण?”

“अभियुक्त वत्सर एक चतुर और चालाक व्यक्ति है। वह पूर्ण सहयोग नहीं कर रहा। अत: प्रस्ताव है कि हमें वत्सर का डीएनए परीक्षण, लाई डिटेक्टर परीक्षण, नार्को परीक्षण तथा आवश्यकता पड़ने पर ब्रैन मेपिंग और हिप्नोटिज्म की प्रक्रिया की भी अनुमति दी जाए।”

“महाशय, सर्वोच्च न्यायालय के 2010 के निर्णय अनुसार संविधान के आर्टिकल 20(3) अंतर्गत व्यक्ति के मूलभूत अधिकार के अनुसार अभियुक्त की सहमति के बिना ऐसे परीक्षण नहीं किए जा सकते। मैं ऐसे परीक्षणों के लिए सहमति नहीं देता हूँ।” हरीश ने प्रतिरोध किया।

“महोदय कपिल, आपको यह तो सुविदित ही होगा कि अभियुक्त की सहमति के बिना इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती। और उसने असहमति प्रकट की है।”

“किन्तु यह आवश्यक प्रतीत होता है।”

“मैं सभी परीक्षणों के लिए सज्ज हूँ, सहमत हूँ।” वत्सर ने कहा।

“वत्सर, यह तुम्हारा अधिकार है। इसे सहमति न दो। यह तुम्हारे विरुद्ध प्रयोग होगा और तुम निर्दोष हो तो …।”
“इसिलए ही मैं सहमति दे रहा हूँ, हरीश जी। मुझे संशय के किसी भी प्रकार से, किसी भी अंश से, किसी भी कारण से मुक्त होना है। मैंने मेरे कृष्ण को यह वचन दिया है।”
“महाशय, अभियुक्त ने सहमति दी है तो न्यायालय से अनुमति की अपेक्षा है।” कपिल ने आग्रह किया।
“वत्सर, पुन: एक बार विचार कर लो। तुम अभी भी असहमत हो सकते हो। तो कहो क्या विचार है?” न्यायाधीश ने कहा।
“मैं सभी परीक्षणों के लिए सहमत हूँ।”
“जैसी तुम्हारी इच्छा।” हरीश ने स्वयं को खींच लिया।
“सभी परीक्षणों के लिए न्यायालय अनुमति देता है और आठ दिन में सभी परीक्षण पूर्ण करके न्यायालय में रिपोर्ट प्रस्तुत किया जाए।”

[48]

“वत्सर ने सभी परीक्षणों की अनुमति दे दी है। अब सत्य प्रकट होकर रहेगा।” सपन ने कहा।
“मुझे तो प्रतीत होता है कि अनुमति देकर वत्सर स्वयं हमारे व्यूह में फंस गया है।” सोनिया ने उत्साह प्रकट किया।
“बस अब आठ दिन में सारा खेल समाप्त हो जाएगा। वत्सर को फांसी भी हो सकती है। हैं न कपिल जी?” नदीम ने पूछा।
“यह सब केवल इन परीक्षणों के परिणाम पर निर्भर है। हमें तब तक प्रतीक्षा करनी होगी।” कपिल ने वस्तु स्थिति कही।
“संभव है कि वत्सर निर्दोष हो या अति चतुर - चालाक हो और परीक्षणों में वह ऐसे प्रस्तुत हो कि हम जो चाहते हैं वह परिणाम मिले ही नहीं। तब क्या कर सकते हैं?” निहारिका ने संशय प्रकट किया।
“आप सब परिणामों की चिंता ना करें। वत्सर कुछ भी उत्तर देगा, परिणाम हमारी इच्छा अनुसार ही होगा।” राहुल ने सब को आश्वस्त करना चाहा।
“कैसे होगा?”

“न्यायाधीश हमारा नहीं है तो क्या हुआ? तंत्र तो हमारा ही है। हम अपनी इच्छानुसार परिणाम न्यायालय में प्रस्तुत कर देंगे।” सपन ने अट्टहास किया। सभी ने सुर मिलाया।
“तो यह निश्चय रहा कि परिणाम हमारे पक्ष में बनेगा और सपन जी, यह दायित्व आप पर रहा।” सोनिया ने कहा।
“आप निश्चिंत रहिए। मैं और सपन यह संभाल लेंगे।”
“ठीक है निहारिका जी। इस अवसर का आनंद लिया जाए?” नदीम ने प्रस्ताव रखा। सभी दो कक्ष में बंट गए। एक कक्ष में नदीम, राहुल और निहारिका तो दूसरे कक्ष में सपन, कपिल और सोनिया रातभर आनंद लेते रहे।
#@#@#@
वत्सर के सभी परीक्षण सम्पन्न हो गए। परीक्षणों का परिणाम तैयार कर रहे दल के नेता विनय के कक्ष में सपन, निहारिका और कपिल विनय के आतिथ्य का लाभ ले रहे थे।
“विनय जी, आप समझ रहे हो न कि हमें क्या करना है? हमने आपको जो कहा है वही परिणाम तैयार करके हमें मिलना चाहिए।”
“जी, जी। आपने कहा वही होगा। यह तंत्र आप ही का तो है। हम तो आपके सेवक हैं।” विनय ने कहा।
सभी ने विनय की बात का सस्मित स्वागत किया।
“बस, कुछ प्रतीक्षा कर लें।” कहकर विनय उठा और कक्ष से बाहर आ गया। अपने विश्वासु साथी विकास से कुछ बात की, कुछ दिशा निर्देश दिए और कक्ष में लौट आया।
“एक काम करते हैं। आप हमारे अतिथि हैं। क्यों न हम भोजन साथ में करें। तब तक परिणाम तैयार होकर आ जाएंगे।” विनय ने प्रस्ताव रखा। सभी ने भोजन किया।
विकास ने सारे परीक्षणों के परिणाम विनय के समक्ष रख दिए। विनय ने उसे सपन, निहारिका और कपिल को पढ़ने के लिए दिए। तीनों परिणाम से संतुष्ट थे। विनय ने उस पर हस्ताक्षर कर दिया। एक आवरण में उसे डालकर, उसे बंद कर दिया। उस पर अपनी मुद्रा लगा दी।
“यह परसों न्यायालय में प्रस्तुत कर दूंगा।” विनय ने कहा।
“जी, जी। अवश्य। आप तो हमारे साथी निकले, विनय जी। समय आने पर इसका पुरस्कार मिल जाएगा। अंततः यह तंत्र तो हमारा ही है।” निहारिका ने कहा। सभी प्रसन्न होकर विदा हो गए।

#@#@#

न्यायालय का कक्ष अनेक व्यक्तियों से भरा था। सपन, निहारिका, कपिल, सोनिया, राहुल, नदीम इस कांड के अपेक्षित न्याय से प्रसन्न थे। उनकी प्रसन्नता देखकर येला, शैल और सारा विचलित थे। हरीश समग्र स्थिति का आकलन कर आनेवाले समय को कैसे संभाला जाए उसकी चिंता में, चिंतन में मग्न था। वत्सर नि:स्पृह था। दूर कोने में विनय और विकास परिणामों का आवरण पकड़े निश्चल से बैठे थे।
न्यायाधीश ने प्रवेश किया। सभी का अभिवादन कर न्यायालय का कार्य आरंभ हुआ।
कपिल ने अत्यंत उत्साह से कहा, “महाशय, सभी परिक्षणों के परिणाम प्राप्त हो चुके हैं। मुझे अपेक्षा है कि आज न्यायालय वत्सर को उचित दंड दे ही देगा। इस कांड का आज अंतिम दिन होगा। मैं विनय जी से अनुरोध करता हूँ कि सारे परीक्षणों के परिणाम न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत किए जाए। वत्सर ही हत्या …।”
“रुकिए महोदय। आप न्यायाधीश हैं क्या? इतनी अधीरता क्यों? मुझे परिणाम देखने दीजिए, समझने दीजिए।” न्यायाधीश ने कपिल को टोका।
“महाशय, परिणाम तो स्पष्ट ही है। बस आपके अंतिम निर्णय की औपचारिकता शेष है।” कपिल के शब्दों को सुनकर हरीश चिंताग्रस्त हो गए। शैल - सारा - येला आश्चर्य से दिगमूढ़ हो गए। वत्सर अभी भी स्थितप्रज्ञ था।
“उचित समय तक प्रतीक्षा करना नहीँ सिखा आपने, कपिल महोदय?” न्यायाधीश ने पुन: कपिल को टोका।
“विनय महोदय, परिणामों को प्रस्तुत करो।” विनय ने बंद आवरण न्यायाधीश के हाथों में सौंप दिया। भूपेन्द्र ने उसे खोला, ध्यान से पढ़ने लगे। पश्चात बोले, “महोदय, इन सारे परीक्षणों के परिणामों से यह स्पष्ट हो जाता है कि …।”
“वत्सर ही इस हत्या का दोषी है। उसे मृत्यु दंड ही मिलना चाहिए ऐसी मेरी प्रार्थना है इस न्यायालय से।” उत्साह और उत्तेजना से कपिल बोल पडा।

“महोदय कपिल, यदि आप इसी प्रकार अधिवक्ता से न्यायाधीश बनने का दु:साहस करते रहोगे तो मुझे आपका अधिवक्ता होने का अधिकार भी छिनना पड़ेगा।” न्यायाधीश ने कपिल को डांटा।
“क्षमा करें महाशय। अति उत्साह में ऐसा हो गया। मेरी इस धृष्टता के लिए मैं लज्जित हूं।” कपिल नत मस्तक हो गया। उसे उस स्थिति में देखकर भूपेन्द्र कहा।
“आप जैसे वरिष्ठ अधिवक्ता को संयम रखना चाहिए। यहाँ अनेक युवा अधिवक्ता हैं जो आपके ऐसे व्यवहार से क्या सीखेंगे?”
कपिल ने मौन रहना ही श्रेयस्कर समझा।
“इन परिणामों से स्पष्ट है कि मीरा की हत्या वत्सर ने नहीं की। वह निर्दोष है।” न्यायाधीश के शब्द सुनकर सारा - येला - शैल - हरीश प्रसन्न हो उठे। कपिल - राहुल - सोनिया - सपन - निहारिका - नदीम आघात से स्तब्ध हो गए। सभी एक दूसरे को ताकने लगे। सभी के मुख पर प्रश्न था - ‘यह कैसे हो गया?’
सभी ने विनय को देखा। विनय ने उसे भाव नहीं दिया। वत्सर अभी भी निर्लेप खड़ा था।
“महाशय, यह परिणाम मिथ्या है। वास्तविक परिणाम कुछ भिन्न हैं। परिणामों को बदल दिया गया है।” कपिल ने आक्रोश व्यक्त किया।
“विनय महोदय, क्या यह सत्य है कि आपने जो परिणाम यहाँ रखे हैं वह मिथ्या है, बदले गए हैं?”
विनय उठा, न्यायाधीश के सम्मुख आया, “यह सत्य है कि जो परिणाम कपिल एवं उनके सहयोगी देखकर गए थे वह यह नहीं है। परिणाम अवश्य बदले गए हैं किन्तु केवल सत्य परिणाम ही प्रस्तुत किया गया है।”
“महाशय, परिणामों को बदला गया है ऐसा विनय ने भी स्वीकार है।” कपिल ने कहा।
“महोदय, उसने यह भी कहा है कि यह परिणाम मिथ्या नहीं, सत्य है।” हरीश ने कपिल की बात काटी।
“महोदयों, कृपया शांत हो जाइए। विनय, क्या बात है? क्या है वास्तविकता? न्यायालय के समक्ष पूरी बात रखो।”
“जी महाशय। मैं पूरी कथा सुनाता हूं।”

[49]

“दो दिन पूर्व मेरे कार्यालय में सपन और निहारिका के साथ कपिल महोदय भी आए थे। उन्होंने मुझे उनकी इच्छानुसार, वत्सर को दोषी सिद्ध करे ऐसे परिणामों को बनाने को कहा था। मैंने वैसे ही परिणाम बनाए, उन्हें दिखाए भी। पढ़कर वे तीनों संतुष्ट हो गए। तब मैंने उस पर हस्ताक्षर कर, आवरण में बंद कर उस पर हमारी मुद्रा अंकित कर दी। तीनों कार्यालय से विदा हो गए। ऐसा करने के लिए उन्होंने मुझे तथा मेरे साथियों को लोभ - लालच भी दिया। किन्तु मैंने और विकास ने वास्तविक परिणाम ही न्यायालय में प्रस्तुत किए। सभी परीक्षणों का जीवंत मुद्रण होता है और उनके आधार पर ही परिणाम बनते हैं इस बात को कपिल महोदय जैसे वरिष्ठ अधिवक्ता भी भूल गए। हमने वही परिणाम प्रस्तुत किए हैं जो सत्य है, जो आपके समक्ष है। सारे परीक्षणों की प्रक्रिया का जीवंत मुद्रण भी उपलब्ध है। यदि न्यायालय चाहे तो प्रस्तुत किए जाएंगे।” विनय ने सभी कथा कह डाली।
सारी बातों को ध्यान से और धैर्य के साथ सुन रहे भूपेन्द्र सहसा क्रोधित हो गए, “कपिल महोदय, विनय ने जो कहा वह सत्य है?”

“जी।” लज्जित होकर कपिल ने कहा।
“सपन और निहारिका कहाँ है?” भूपेन्द्र ने उन्हे खोजा।
अपने नाम सुनकर दोनों भागने लगे। शैल और सारा ने उन्हें पकड़ लिया।
“दोनों को बंदी बनाने का पुलिस को आदेश देता हूँ।” सपन और निहारिका को पुलिस ने पकड़कर बंदी बना दिया। “न्यायालय से बाहर ले जाया जाए। सात दिनों तक कारावास में रखा जाए। उसके लिए कोई जमानत नहीं होगी।” उन्हें बाहर ले जाया गया।
“कपिल महोदय, आपकी सभी चेष्टाएं न्याय तंत्र के लिए कलंक हैं। आप ही कहें आप पर कौन सा दंड उचित रहेगा?”
कपिल मौन ही रहा।
“यह न्यायालय आदेश देता है कि वरिष्ठ एवं ज्ञानी अधिवक्ता कपिल महोदय को तीन मास कारावास में रखा जाए। यह दंड बिना जमानत पात्र है। कारावास समाप्त होने के पश्चात अगले तीन महिनों तक किसी भी कांड में वह किसी भी न्यायालय में उपस्थित होकर किसीका भी पक्ष नहीं रख सकेंगे। इसमें कुछ भी चूक हुई तो दंड दुगुना कर दिया जाएगा।”
दंड सुनकर कपिल ने कहा, “दया, महाशय दया। मैं मेरे अपराधों के लिए लज्जित हूं। आपसे दया की प्रार्थना करता हूँ।” कपिल ने हाथ जोड़ दिए।
“महोदय, एक व्यक्ति जिसने कोई अपराध नहीं किया है उसे दंड, मृत्यु दंड देने के लिए अभी तो आप कूद रहे थे। उस पर तो कोई दयाभाव नहीं रखा आपने। और आपने इतने सारे अपराध किए हैं और आप दंड से मुक्ति चाहते हैं? आपके अपराध क्षमा के योग्य है ही नहीं। किसी निर्दोष को दोषित सिद्ध करने का आपका प्रयास निंदनीय है। अत: इस दंड का सम्मानपूर्वक स्वीकार कर लें। अब कोई प्रार्थना करोगे तो अधिक कठोर दंड दिया जाएगा। पुलिस को आदेश दिया जाता है कि अधिवक्ता कपिल को बंदी बना लिया जाए।”
कपिल को बंदी बनाकर बाहर ले जा रहे थे तभी कपिल ने कहा, “महाशय, मैं आपके इस निर्णय को उच्च न्यायालय में चुनौती दूंगा। देख लेना।” कपिल को बाहर ले जाया गया।
जब तक यह हो रहा था, समग्र न्यायालय में पहाड़ों की कन्दराओं के समान शांति व्याप्त रही। कोई कुछ नहीं बोला, न कोई हिला।

“मैं अपना आदेश, निर्णय घोषित करूँ उससे पूर्व किसी को कुछ कहना हो तो स्वागत है।” भूपेन्द्र ने कहा।
“मैं कुछ कहना चाहता हूँ।” राहुल ने कहा।
“कहो महोदय।”
“महाशय, अभी भी मेरा यह मत है कि वत्सर ही इस हत्या का दोषी है।”
“इतनी सारी प्रक्रिया के उपरांत भी ऐसा क्यों लगता है? अभी भी कोई महत्वपूर्ण प्रमाण है आपके पास?”
“प्रमाण तो कोई नहीं है किन्तु ...।”
“किन्तु क्या?”
“तर्क है मेरे पास जो वत्सर को दोषित सिद्ध कर देगा। अपना तर्क रखने की अनुमति चाहता हूँ।”
“प्रस्तुत करें।”

“धन्यवाद महाशय। वत्सर को ध्यान से देखें। वह कृष्ण के मंदिर का पुजारी है। माथे पर चोटी है। साधु से वस्त्र हैं। गले में और हाथ में रुद्राक्ष की माला है। माथे पर तिलक है। कलाई में कलावा है। है न?”
“हैं। तो?”
“ऊपर से ज्ञानी भी है, चतुर भी है। और सबसे बड़ी बात कि वह हिन्दू भी है।” सोनिया ने कहा।
“इन सबसे क्या तात्पर्य है?”
“यही कि ऐसा चरित्र वाला व्यक्ति ही वास्तव में अपने इस परिवेश में छिपकर किसी अवैध कार्य जैसे चोरी, लुंट, हत्या आदि कार्य करता है। वत्सर ने भी यही किया है।”
“ऐसा चरित्र तो उत्तम माना जाता है। वह हत्या कैसे कर सकता है?”
“ऐसा चरित्र ही हत्या कर सकता है।”
“किस आधार पर ऐसा कह रहे हो?”

“अधिकांश फिल्मों में, कथाओं में ऐसे ढोंगी व्यक्तियों द्वारा ही सभी अपराध किए जाते हैं ऐसा हमने देखा है। अत: वत्सर भी ...।”
“राहुल और सोनिया अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं यह स्पष्ट दिख रहा है। महाशय, यदि इन दोनों का तर्क स्वीकार कर लिया जाए तो फिल्मों में यह भी दिखाया जाता है कि अधिकांश पुलिसवाले भी सभी अवैध कार्यों में सहयोगी होते हैं, भ्रष्ट होते हैं, देश के शत्रु के साथ मिले होते हैं। इस आधार पर राहुल और सोनिया को ही मीरा हत्या के दोषी क्यों न माना जाए?” हरीश ने सशक्त प्रत्युत्तर दिया।
“हरीश महोदय के तर्क का कोई उत्तर है आपके पास, राहुल और सोनिया?”
“नहीं।” दोनों मौन हो गए।
“न्यायालय सदैव प्रमाणों के आधार पर निर्णय करता है। किसी फिल्म की कथाओं के आधार पर नहीं।”
“तथापि मीरा की हत्या हुई है तो प्रश्न यही है कि यदि वत्सर ने हत्या नहीं की है हत्या किसने की है, वत्सर?” सोनिया ने पूछा।
“आप मुझसे क्यों पुछ रही हो? हत्या किसने की यह खोजने का कार्य मेरा नहीं है, आपका है।”
“महाशय, पुलिस अपना कार्य सुचारु ढंग से नहीं कर रही है और वत्सर पर उसका दायित्व डालने का प्रयास कर रही है। यह निंदनीय है। वत्सर दोषित नहीं होते हुए भी इस न्यायालय में अभियोग सह रहा है। क्यों? पुलिस की त्रुटि के कारण ही।” हरीश ने कहा।
“महोदय, पुलिस की अक्षमता के कारण ही वत्सर जैसे निर्दोष पर अभियोग चल रहा है। पुलिस तर्कहीन बातों को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत कर रही है। न्यायलय का समय व्यर्थ नष्ट कर रही है। शैल जैसे निष्ठावान पुलिस कर्मी को निलंबित किया जाता है। निष्ठापूर्वक चल रहे अन्वेषण से शैल को हटाया जाता है। हमारे अतिथि समान सारा उलफ़त को भी इस कांड से हटाकर हमने न केवल अपरिपक्वता अपितु स्त्री दाक्षिण्य के अभाव का परिचय समग्र विश्व को दिया है। यह सब अक्षम्य है। अत: यह न्यायालय आदेश करता है कि राहुल और सोनिया को पने दायित्व से त्वरित प्रभाव से निलंबित किया जाए। मीरा कांड को अनसुलझे रहस्य के रूप में स्वीकार करते हुए सम्पन्न मानकर बंद किया जाए। शैल का निलंबन निरस्त किया जाए। सारा उलफ़त को ससम्मान पाकिस्तान भेजने का प्रबंध किया जाए। वत्सर को निर्दोष मुक्त किया जाए। नदीम

का स्थानांतरण किया जाए। न्यायालय के इस आदेश का त्वरित पालन किया जाए।" भूपेन्द्र ने निर्णय सुनाया और विदा हो गए।

%^%^%%^

[50]

अपनी निर्दोषता सिद्ध होने पर वत्सर मन ही मन श्री कृष्ण का धन्यवाद करते हुए स्तुति करने लगा। न्यायालय के प्रांगण में स्थित एक पीपल वृक्ष के नीचे पद्मासन में आँखें बंद कर बैठे वत्सर को येला ने देखा। उसे इस अवस्था में देखकर वह रुकी, प्रतीक्षा करने लगी। जब वत्सर ने अपनी स्तुति सम्पन्न की तो आँखें खोली। उसने सम्मुख येला को पाया।
"येला?" भाववश वह और कुछ बोल नहीं पाया।
"वत्सर। मैं आज अत्यंत प्रसन्न हूँ किन्तु ग्लानि भी हो रही है कि मेरे कारण तुम्हें इतनी कष्ट से भरी यातना भुगतनी पड़ी। मैं इसके लिए क्षमा की प्रार्थना लेकर आई हूँ।"

“अरे ! नहीं, नहीं। ऐसी कोई बात नहीं है।”
“है, वत्सर है। यदि मैं उत्साह में आकर उस शिल्प के विषय में शैल को नहीं बताती तो तुम इस कांड से कभी नहीं जुडते और इतना कष्ट भोगना नहीं पड़ता।”
“यदि तुम न बताती तो उस शिल्प के विषय में हमारे मित्र सपन वह काम कर देते। तब भी यही होता। अत: स्वयं को दोष न दो। यह सारा चक्र नियति का है। उसे सहर्ष स्वीकार लेने में ही श्रेय है।”
“तुम्हारे स्तर पर मैं अभी नहीं पहुंची हूँ। अभी मेरी साधना इतनी परिपक्व नहीं हुई है। अत: मन में ग्लानि और दु:ख होना स्वाभाविक है।”
“चलो छोड़ो उसे। यह बताओ कि शिल्प शाला कैसे चल रही है? कैसे कैसे शिल्पों के तपस्वी वहाँ शिल्प रच रहे हैं?”
“उसका उत्तर तो यही है वत्सर कि शब्द से इसका वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ। क्यों न तुम स्वयं आकर देख लेते? चलो मेरे साथ।” येला ने उत्साह और प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा।
“उसे देखने को मेरा भी मन कर रहा है किन्तु इस समय नहीं। पश्चात कभी आऊँगा।”
“इस समय से श्रेष्ठ समय कौन सा हो सकता है, वत्सर?”
“यह समय ही श्रेष्ठ है। किन्तु इस समय मुझे मेरे श्रीकृष्ण के पास जाना है। इतने दिनों से मेरा कृष्ण मंदिर में बंद है। पूजा, अर्चना, आरती आदि से वह वंचित है। उसे बाँसुरी भी कौन सुनाता होगा? ऐसे में मेरा वहाँ जाना आवश्यक है।”
“वहाँ जाने से मैं नहीं रोकूँगी किन्तु पश्चात तो तुम आ सकते हो। बोलो कब आओगे?”
“जब कृष्ण का आदेश होगा चला आऊँगा।”
“जय श्री कृष्ण।”
“जय श्री कृष्ण।”
येला का अभिवादन कर वत्सर जाने लगा तब शैल ने वत्सर को पुकारा, “जय श्री कृष्ण।” वत्सर शैल को उत्तर दे उससे पूर्व सारा ने भी कहा, “जय श्री कृष्ण” वत्सर ने दोनों का ‘जय श्री कृष्ण’ से अभिवादन किया।
“तुम जा रहे हो? कब?”
“शिघ्र ही जाना होगा मुझे शैल।”

“हम दोनों भी तुम्हारी क्षमा याचना करते हैं।” सारा शैल ने हाथ जोड़े।
“आप दोनों ऐसा न करें। कृपा करके ऐसा न कहें। जो समय व्यतीत हो चुका है उसकी विस्मृति ही उत्तम होती है। आप सभी प्रसन्न होकर मुझे गमन की अनुमति दें। जय श्री कृष्ण।”
येला, सारा और शैल को छोड़कर वत्सर ने प्रस्थान किया। सब उसे जाते हुए देखते रहे। कुछ क्षण तक कोई कुछ भी बोलने चालने की स्थिति में नहीं था।
“मैं भी चलती हूँ।” येला ने स्वस्थ होकर कहा।
“पुन: मिलेंगे।” सारा ने कहा।
“पुलिस से पुन: भेंट न हो तो ही उचित है।” शैल ने कहा।
येला ने स्मित से उत्तर दिया और अपने गंतव्य के लिए चल पड़ी।
“हम भी चलें अब?” शैल ने कहा।
“कहाँ?”
“हमारे कार्यालय में। कुछ औपचारिकताएं हमें सम्पन्न करनी होगी।”
“पश्चात मुझे भारत छोड़कर पाकिस्तान लौटना पड़ेगा, हैं न?” सारा ने एक लंबा श्वास छोड़ते हुए कहा। शैल सारा की पीड़ा समझते हुए भी मौन रहा। किन्तु उसके मन में सारा की व्यथा को लेकर चिंतन प्रारंभ हो गया।

[51]

पुलिस कार्यालय में नदीम के स्थान पर श्रीधर को स्थानांतरित किया गया था। उसने त्वरित कार्यभार संभाल लिया। उसके कक्ष में शैल और सारा उपस्थित हो गए।
“शैल, तुम्हारे पर लगे सभी अभियोगों से तुम्हें मुक्त कर दिया गया है। तुम्हें सेवा में पुन: स्थापित किया जा रहा है। अभिनंदन। यह है उस आदेश का पत्र। इसे ग्रहण करो।” श्रीधर ने एक पत्र शैल को दिया।

“धन्यवाद महाशय।” शैल ने पत्र ले लिया।
“सारा जी आप भी इस कार्य के भार से मुक्त हो। आप को सात दिनों में अपने देश पाकिस्तान लौटना होगा। लीजिए यह पत्र।” श्रीधर से सारा ने चिंतित मन से उसे ग्रहण किया। प्रयत्न पूर्वक किए गए स्मित के साथ उत्तर दिया। शैल ने उस स्मित के अर्थ को पढ़ लिया और मन ही मन विचारता रहा ‘मैं क्या कर सकता हूँ? कैसे सारा जी को भारत में रोक सकता हूँ?’
इसी विचार में शैल ने श्रीधर का कक्ष छोड़ दिया, सारा ने भी।
“शैल, क्या मैं कुछ समय के लिए तुम्हारे कक्ष में आ सकती हूँ?” अपने कक्ष में जाते शैल को सारा ने अनुनय किया।
“जी, जी। अवश्य। आइए। मैं भी आपको यही कहने वाला था।”
शैल के कक्ष में सारा ने भी प्रवेश किया।
“बैठिए सारा जी। एक लंबे अंतराल के पश्चात हम पुन: इस कक्ष में हैं। आप क्या लेंगी? विजेंदर को ...।”
“शैल तुम बैठो। मुझे इस समय कुछ नहीं चाहिए।”
“आपके शब्दों में विषाद है। मैं जानता हूँ। किन्तु मैं क्या कर सकता हूँ?”
“मेरा विषाद अधिक गहरा होकर तुम्हारे मन को प्रभावित कर रहा है ऐसा तुम्हारे मुख के भावों से स्पष्ट प्रतीत होता है। मुझ से अधिक तुम मेरे लिए चिंतित हो यह मैं जानती हूँ।”
“जी, मैं तो ...।”
“यही अंतर है भारत के पुरुषों में और पाकिस्तान के पुरुषों में।” सारा के शब्दों में वही परिचित पीड़ा प्रकट हो गई।
“मैं जानता हूँ कि आप पुन: पाकिस्तान लौटना नहीं चाहती। मैं भी इसी विषय पर विचारग्रस्त हूँ। कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। आप चिंता ना करें। हमारे पास अभी सात दिनों का समय है। तब तक कुछ न कुछ उपाय ..।”
“धन्यवाद तुम्हारा, शैल। इन शब्दों से मुझे आश्वस्त करने की तुम्हारी चेष्टा की मैं प्रशंसा करती हूँ। सात दिन तो अभी व्यतीत हो जाएंगे। इन दिनों में तुम अपने कार्यों में व्यस्त हो जाओगे।”

“समय बड़ा विचित्र है, सारा जी। कब कैसा रंग धारण कर ले, कोई नहीं जानता। हम समय पर सब कुछ छोड़ देते हैं।”
सारा मौन रही। कुछ क्षण पश्चात विजेंदर ने प्रवेश करते हुए कहा, “महाशय, आज के दिन आप मुक्त हो। कल से अनेक काम करने हैं। मैं सारी फ़ाइलें कल लाकर दे दूंगा।” वह चला गया।
“आज तो मैं मुक्त हूँ। तो कहीं बाहर चलते हैं कुछ सोचते हैं।”
दोनों ने कक्ष छोड़ दिया। जहां से दूर पहाड़ियाँ दिख रही थीं ऐसे एक स्थान पर रुकते हुए सारा ने कहा,
“शैल, यहाँ बैठते हैं।” शैल बैठ गया, सारा भी।
“वैसे तो मीरा कांड बंद कर दिया गया है किन्तु उसकी मृत्यु का अनसुलझा रहस्य मुझे विचलित कर रहा है। क्या आपको भी ऐसा होता है?”
“शैल, इस संसार में असंख्य अनसुलझे रहस्य हैं। एक और सही।”
“सत्य है। किन्तु यह मीरा हत्या कांड भिन्न है।”
“वह कैसे?”
“इस संसार के जीतने भी अनसुलझे रहस्य हैं उन सभी से हमारा सीधा सीधा कोई संबंध नहीं है। मीरा के रहस्य से हमारा सीधा संबंध है। यदि इस कांड से मैं जुड़ा नहीं होता तो मुझे भी कोई अंतर नहीं पड़ता। यह जुड़ना ही मुझे विचलित कर रहा है। मेरा मन मुझे कह रहा है कि तुम इस रहस्य को सुलझा सकते हो। तुम इसके तल तक जा सकते हो। बस केवल प्रयास करना है। ऐसा क्यों हो रहा है यह मैं नहीं जानता। मुझे कोई मार्ग नहीं सुझ रहा है। मुझे अब क्या करना चाहिए?” शैल ने गहन सांस ली।
“आपको कोई मार्ग दिख रहा है क्या?”
कुछ क्षण विचार के पश्चात सारा बोली, “मेरे दादाजी कहते थे कि जीवन में जब कोई मार्ग न सूझे तब या तो प्रकृति पास चले जाना …।”
“प्रकृति के पास ही हैं हम तथापि मार्ग क्यों नहीं सूझ रहा?”
“तुम भी पूरी बात सुनने का धैर्य खो चुके हो, शैल।” शैल ने सारा की बात पर स्मित दिया।
“या तो प्रकृति के पास जाना चाहिए या किसी गुरु के पास चले जाना चाहिए। कोई न कोई मार्ग दिखाने में गुरु समर्थ होते हैं।”

“गुरु?” सहसा शैल खड़ा हो गया।

“हाँ, गुरु। किन्तु तुम सहसा खड़े क्यों हो गए? क्या बात है?”

“सारा जी, मार्ग तो हमारे समक्ष ही है और हम कहीं अन्यत्र उलझ रहे हैं।”

“कैसा मार्ग, शैल?”

“आपको स्मरण होगा कि हम मीरा कांड के मूल घटना स्थल हेतु नदी के प्रवाह के साथ साथ जा रहे थे तब एक रात्रि हम एक आश्रम में रुके थे। जहां हमें एक गुरु जी मिले थे।”

“जो हमारे लाहोर वाले गुरु के शिष्य थे वही न?”

“हाँ, वही। वहाँ जाते हैं, उन्हें मिलते हैं। हमारा प्रश्न, हमारी बात उनके सम्मुख रखते हैं। वे हमारा अवश्य मार्गदर्शन करेंगे।”

“वाह शैल। यही उचित मार्ग है। कब चलना है? कल चलें?”

“कल क्यों? आज ही, अपितु इसी समय चलते हैं। मैं वाहन की व्यवस्था करता हूँ।”

“चलो।” सारा उत्साह से उठी। शैल के पग ने भी नवीन ऊर्जा को पा लिया था।

[52]

वत्सर घर लौट रहा था तब वह मन ही मन अपने आराध्य श्रीकृष्ण का धन्यवाद करता रहा था। साथ साथ स्वयं को दोषी भी मान रहा था कि इतने दिनों तक वह कृष्ण की सेवा से वंचित रहा था।

‘हे कृष्ण! इतने दिनों तक मैं तुमसे दूर रहा। तुम्हारी सेवा नहीं कर सका। किन्तु तुम ही साक्षी हो कि एक क्षण भी मैं तुम्हारे स्मरण से विमुख नहीं रहा। यह सब तुम्हारी ही तो लीला है, तुम्हारा ही प्रपंच है। इसमें मेरा क्या दोष? अब मैं लौट आया हूँ। अब अविरल तुम्हारी सेवा में लगा रहूँगा। बस मुझ पर तुम कृपा बनाये रखना।’
ऐसे विचार करते करते वत्सर जब अपने गाँव पहुँचा तो सीधे ही मंदिर आ पहुँचा। दूर से ही मंदिर को देखकर वह आश्चर्य और आशंका के मिश्रित भावों से घिर गया। वह वहीं रुक गया।
‘यह मंदिर खुला क्यों है? मैं तो इसे बंद करके गया था। किसने इसे खोला? मंदिर के ताले तोड़कर कोई कुछ चोरी कर गया? या स्वयं भगवान की मूर्ति को ...?’
वत्सर दौड़ा, सीधे मंदिर में प्रवेश कर गया।
‘”मूर्ति तो यहीं है। तो चोर क्या चोरी कर गया?” उसने समग्र मंदिर का विहंगावलोकन किया। उसे कोई विशेष वस्तु ध्यान में नहीं आई जिसकी चोरी हो गई हो। प्राय: सभी वस्तुएं अपने स्थान पर यथा स्थिति पड़ी थी।
“मैं भी मूर्ख हूँ। मंदिर में मूर्ति के उपरांत ऐसा कुछ है ही क्या जीसमें चोरों की रुचि हो, उसे चोरी करे। ”वह मन ही मन मुस्कुराया। कृष्ण की मूर्ति को देखने लगा।
कृष्ण! जैसे अपने अधरों से स्मित कर रहे हो। नयनों से अमी वृष्टि कर रहे हो। वत्सर ने इस स्मित और अमी वृष्टि को अपनी आँखों से पिया। अनायास ही वत्सर के होंठों पर भी स्मित आ गया। दोनों स्मित के साथ अपलक परस्पर निहारते रहे। दोनों से प्रवाहित होकर प्रवाह एक रूप हो गया। सब कुछ स्थिर हो गया। समय के कुछ टुकड़े वहीं रुक गए। भक्त और भगवान के इस अनूठे संगम को देखने की लालसा समय की क्षणों को भी हो आई। वत्सर के नयनों से अश्रु धारा स्वत: बहने लगी।
सहसा मंदिर में किसी के पदचाप की ध्वनि सुनाई दी। वत्सर की समाधि भंग हुई। उसने मुड़कर देखा।
“वत्सर, तुम आ गए? कुशल तो हो न?” शैल के गुप्तचर मोहनन और रेखा को वत्सर ने देखा।
“मैं कुशल हूँ। आप दोनों यहाँ कैसे?”

“जब से तुम यहाँ से गए हो, तब से हम दोनों इस मंदिर की रक्षा कर रहे हैं। शैल का आदेश था कि तुम्हारी अनुपस्थिति में इस मंदिर और परिसर में कुछ भी ऐसा न हो कि जो शत्रु द्वारा किया गया हो। उनके द्वारा ऐसा करने पर मंदिर को और तुम्हें क्षति हो।”
“धन्यवाद। किन्तु मेरी वे क्या क्षति कर सकते थे? मंदिर में तो कुछ है ही नहीं जो किसी के काम की हो। हाँ, मैंने देखा कि यहाँ सब कुछ सुरक्षित है। यह आपके कारण है।”
“यहाँ अनेक संभावनाएं थी जो तुम्हें क्षति कर सकती थी।”
“जैसे?”
“मंदिर से चोरी करने जैसा तो कुछ है ही नहीं। किन्तु मूर्ति की चोरी हो सकती थी। मूर्ति को या मंदिर को नष्ट किया जा सकता था। उपरांत उसके ...।” रेखा बोलते बोलते अटक गई।
“उपरांत उसके क्या? जो भी बात हो, स्पष्ट कहो।”
“शैल ने बताया था कि जब तुम्हारे विरुद्ध कोई प्रमाण प्रस्तुत करने में विफल रहे तब राहुल -सोनिया -नदीम की योजना थी कि मंदिर में प्रतिबंधित ड्रग्स और कुछ हथियार रख दिया जाए। स्थानीय पुलिस के द्वारा उसे प्राप्त हुआ ऐसी स्थिति उत्पन्न करना।”
“ऐसा क्यों करना चाहते थे?”
“ऐसा होता तो वे सिद्ध कर देते कि तुम्हारा चरित्र ही अपराधियों जैसा है। अत: मीरा की हत्या भी तुमने ही की है। इस प्रकार तुम्हें न्यायालय से मृत्यु दंड या आजीवन कारावास का दंड दिलाना चाहते थे।”
“किन्तु मैं तो निर्दोष हूँ।”
“वे दोषित सिद्ध कर देते।”
“तो उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया?”
“उनके अधिवक्ता कपिल ने उन्हें रोका था। वे जानते थे कि हम दोनों अविरत रूप से यहाँ मंदिर को ही देख रहे थे। तुम्हें बता दें कि हमने मंदिर के चारों तरफ गुप्त केमेरा लगा रखे हैं। यदि वे ऐसा कोई प्रयास करते तो उसका मुद्रण उसमें अंकित हो जाता जिसे न्यायालय में रखते ही उनके सारे षड्यन्त्र का परिचय सब को मिल जाता।”
“ओह, यह बात थी? मुझे फँसाने की ऐसी योजना थी। आप दोनों एवं शैल का मैं ऋणी हूँ। आपने मुझे इन सबसे बचा लिया।”

“हम तो केवल निमित्त मात्र हैं। शैल भी इस योजना से अपरिचित थे। यह समग्र दूरंदेशी सारा जी की थी। उसने ही शैल को कहा और हमें यहाँ काम पर लगा दिया था। वत्सर, यह सारी योजना वास्तव में श्री कृष्ण की ही प्रतीत होती है।”
अंतिम शब्दों को सुनते ही वत्सर ने कृष्ण की तरफ देखा। कृष्ण की आँखों में बड़े नटखट भाव थे। वत्सर उन भावों के मर्म को समझ गया। स्मित करने लगा।
“एक बात पूछूँ आप दोनों को?”
“जी पूछो, वत्सर।”
“मैं जब यहाँ से गया था तब मंदिर बंद करके गया था। जब आज अभी आया तो मंदिर के द्वार खुले पाए। आप दोनों यहाँ दिन रात मंदिर की रक्षा करते रहे हो तो बताओ कि मंदिर के द्वार किसने खोले? कब खोले? कैसे खोले? या आप दोनों ने ही इसे खोला?”
प्रश्न सुनकर दोनों ने एक दूसरे को देखा। दोनों की दृष्टि में विस्मय था।
“कहो कैसे हुआ यह सब? किसने किया?”
“हमने नहीं किया है यह सब। ऐसा पुछकार तुम अनभिज्ञ क्यों बन रहे हो, वत्सर?”
“क्या तात्पर्य है?”
“वत्सर, प्रतिदिन एक व्यक्ति आता था जिसके हाथों में मंदिर के ताले की चाबी होती थी। तुम्हारी ही भांति वस्त्र परिधान करता था। नित्य नियत समय पर मंदिर खोलता था। नित्य क्रम अनुसार सेवा, पूजा, वंदना, आरती करता था। दोनों समय भोग भी लगाता था। संध्या समय पर तुम्हारी ही भांति बाँसुरी बजाता था। तुम्हारी ही भांति मंदिर बंद कर चला जाता था।”
“क्या बात करते हो?”
“यही सत्य है, वत्सर।”
“अर्थात मेरी अनुपस्थिति में भी मेरे कृष्ण की पूजा, वंदना, अर्चना आदि सब कुछ वैसे ही चलता रहा जैसे मैं करता रहता था?”
“यही तो हम कह रहे हैं। आज भी वैसा ही हुआ है। मंदिर को उसने ही खोला है। देखो, उस कोने में पड़े हैं ताला और चाबी। और देखो, अभी अभी पूजन अर्चन भी किया गया है।”
वत्सर ने कृष्ण की मूर्ति को निहारा। अचंभित होकर वह बस देखता ही रहा।

“यह सब तो मैंने देखा ही नहीं। यह तो आनंद और आश्चर्य की बात है।” वत्सर क्षणभर रुका। समग्र मंदिर परिसर पर दृष्टि डाली।
“यह कैसे हो सकता है?”
“क्यों नहीं हो सकता?”
“मंदिर के ताले की चाभी तो मैं अपने घर पर रखता था। अभी भी वहीं होगी। तो यह चाबी यहाँ कैसे?”
वत्सर ने चाबी को देखा, उठाया, परखा।
“यह तो वही चाबियाँ हैं। ये यहाँ कैसे?”
“तुमने ही उसे कहा होगा कि घर से चाबी ले लेना।”
“किसे? मैंने किसीको ऐसा नहीँ कहा। न ही किसी को यह दायित्व दिया। तो? यह किसने किया? कौन है वह?”
“वह तो तुम जानो। हम क्या जानें? चलो ढूंढते हैं उसे। यहीं कहीं होगा।”
सभी ने सारे मंदिर परिसर में उसकी खोज की।
“यहाँ तो इस समय कोई नहीं है।” वत्सर ने आश्चर्य प्रकट किया।
“कुछ समय पूर्व ही वह आया था। यहीं कहीं गया होगा। लौट आएगा। तब तक प्रतिक्षा करते हैं।”
वत्सर के साथ मोहनन और रेखा प्रतीक्षा करने लगे।
“भोग का समय हो गया है किन्तु कोई नहीं आया, कोई भोग नहीं लगा। मेरा मत है कि यह तुम्हारी कोई भ्रमणा ही होगी।”
“नहीं, वत्सर, कोई भ्रमणा नहीं है। सत्य ही है।”
“तो अभी तक वह कहाँ है? आया क्यों नहीं?”
“एक क्षण रुको। मैं तुम्हें कुछ दिखाती हूँ।” रेखा ने अपने मोबाइल से कुछ ढूँढने का प्रयास करते हुए कहा। “हमारे केमरे में सारी गतिविधियां बंद है। उसमें वह भी है। मैं दिखाती हूँ। तुम स्वयं उसे देख लो, परख लो, मान लो, स्वीकार लो।” रेखा ढूंढती रही, अधिक समय तक। उसने सारे द्रश्य देखे किन्तु इन दृश्यों में वह नहीं मिला।

“ऐसा कैसे हो सकता है? इसमें सारी घटनाएं समाविष्ट हैं, मंदिर के ताले खुलते हैं वह भी है। किन्तु ऐसा करने वाला व्यक्ति ही नहीं दिख रहा। जैसे कोई अदृश्य हाथ यह कर रहे हो! यह चमत्कार है या हमारी भ्रमणा?”

तीनों ने सभी मुद्रित भाग देखे, आश्चर्य से देखते ही रहे।

वत्सर ने श्री कृष्ण की आँखों में देखा। वहाँ एक अलौकिक भाव था, अधरों पर था भुवन मोहिनी स्मित। क्षण भर में वत्सर सारा रहस्य जान गया। मनोमन कृष्ण को वंदन किया, स्मित किया और बोला,

“ओहम नमो भगवाते वासुदेवाय।” मोहनन और रेखा भी साथ साथ इस मंत्र का जाप करने लगे।

[53]

सारा के साथ शैल निकल पडा गुरु जी के आश्रम को जाने के लिए। मार्ग में ही सूर्यास्त हो गया तो एक स्थान पर दोनों रुक गए।

“इस मार्ग पर पूर्व में भी हम यहीं रात्री निवास कर चुके हैं। आज भी यहीं करना होगा।”

“हाँ। आश्रम अभी भी दूरी पर है अंधेरा भी हो गया है।”

“आज हमारे पास वाहन है, आप उसके भीतर सो जाइए।”

“और तुम?” शैल ने कोई उत्तर नहीं दिया। नदी में डूब रहे सूर्य को देखता रहा।

प्रात: काल होते ही निकल पड़े, आश्रम वाले स्थान पर जा पहुंचे।

“यहीं था न वह आश्रम, सारा जी?”

“हाँ, था तो यहीं किन्तु ...।” सारा ने चारों तरफ देखा और कहा।

“किन्तु यह तो वैसा नहीं है जैसा हमने देखा था, हम रुके थे। यह तो भिन्न लग रहा है। कहीं हम भटक तो नहीं गए?”

“स्थान तो यही है। देखो उस छोटी सी पहाड़ी को, नदी के इस प्रवाह को भी देखो। सब वही है। हम भटके तो नहीं हैं। तो वह आश्रम है कहाँ?” सारा पुन: आश्रम खोजने लगी। दूर दूर तक दृष्टि डाली।

“शैल, वहाँ देखो। दूर कुछ आश्रम जैसा दिख तो रहा है। कदाचित वही होगा।”

दोनों उस दिशा में चल पड़े।

एक अत्यंत छोटी कुटिया के समीप दोनों रुके। कुटिया के द्वार पर एक साधु सा व्यक्ति अपने कार्य में व्यस्त था।

“स्वामीजी, नमस्ते।”

शैल के अभिवादन के प्रत्युत्तर में स्वामीजी ने कहा, “नमस्ते। आप दोनों अतिथि प्रतीत हो रहे हैं। यात्रा से थके होंगे। आइए, भीतर आइए। थोड़ा विश्राम कर लें। जल पान कर लें। तब तक मैं भोजन का प्रबंध करता हूँ।”

“धन्यवाद स्वामीजी।” सारा के साथ शैल भीतर गया।

प्रवेश करते ही दोनों चौंक गए। एक कोने में पड़े चित्र को देख सारा ने पूछा, “स्वामीजी यह चित्र किसका है?”

“मेरे गुरु जी का। लाहोर में उनका आश्रम था।”

“जिसे विधर्मियों ने नष्ट कर दिया था? गुरु जी का वध कर दिया था? वही न?”

“जी, यही तो हुआ था उनके साथ। किन्तु आप यह कैसे जानती हैं?”

“मैं लाहोर से हूँ। मेरा परिवार गुरु जी से सदैव आशिष प्राप्त करता रहता था।”

“आप गुरु भक्त हैं? आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई।”

“किन्तु स्वामीजी, हमें आश्चर्य हो रहा है।” शैल ने सशंक कहा।

“कैसा आश्चर्य?”

“इस स्थान पर कुछ दिन पूर्व भी हम आए थे।”

“इसमें आश्चर्य की क्या बात है?”

“तब यहाँ जो था वह आज कहीं नहीं है। यही आश्चर्य की बात है।”

“क्या तात्पर्य है?”

“मैं बताती हूँ। जब हम यहाँ आए थे तब यहाँ एक विशाल आश्रम था। अनेक कक्ष थे। हम जिस गुरु जी से मिले थे वह भी स्वयं को इसी गुरुजी के शिष्य बताते थे। उसने हमें नाम से ही पहचान लिया था। यहाँ तक कि जब मैं और मेरा परिवार हिन्दू थे तब बचपन का मेरा जो नाम था मुझे उसी नाम से संबोधित भी किया था। वह जो आश्रम था वह लाहोर के आश्रम के समान ही था। पश्चिम दिशा वाले कक्ष में हमने रात्री निवास किया था। स्वामी जी ने हमसे अनेक बातें की थी। किन्तु आज इस स्थान पर कुछ भी नहीं है।”

“बस, आपकी यह एक कुटिया ही है। न जाने वह कहाँ लुप्त हो गया?”

शैल और सारा की बातें सुनकर स्वामीजी हंसने लगे। उनके हास्य में प्रसन्नता थी। कुछ क्षण वह हँसते रहे। उनका इस प्रकार हँसना शैल और सारा को नहीं खला। उस हास्य में उन्हें उस स्वामीजी के होने का भास होने लगा।
स्वामीजी ने हँसना रोककर कहा, “धन्य हैं। आप दोनों धन्य हैं।” दोनों को कुछ समझ नहीं आया तो स्वामीजी को देखते रहे।
“आप दोनों को स्वयं गुरुजी का साक्षात्कार हो गया। मैं तो दशकों से साधना में लगा हूँ किन्तु मुझ पर अभी तक गुरुजी की कृपा नहीं हुई है।”
“इस प्रकार हमें गुरु जी का दर्शन देना किस बात का संकेत है? इन घटनाओं का अर्थ क्या है?” शैल ने पूछा।
“इसका अर्थ है कि गुरु जी ने अपने योगबल से लाहोर के मूल आश्रम का अनुभव करवाया है। स्वयं आपसे बात की है। गुरु कृपा से बड़ी कोई कृपा नहीं हो सकती।”
“हम पर ऐसी कृपा क्यों?”
“गुरु जी ने आपसे कोई विशेष बात की थी क्या?”
“विशेष? विशेष तो …।” सारा ने प्रयास किया किन्तु उसे स्मरण नहीं हो सका।
“एक बात उन्होंने कही थी कि हम जिस रहस्य का उत्तर जानना चाहते हैं वह हमें अवश्य मिलेगा। किन्तु …।” शैल ने कहा।
“किन्तु वह रहस्य आप दोनों अकेले प्राप्त नहीं कर सकते। इस हेतु आपको अन्य दो व्यक्तियों का साथ मिलेगा तभी यह संभव होगा।” संत ने बाकी बात कही।
“ऐसा ही कहा था गुरु जी ने। आपने यह सब कैसे जाना?” सारा ने पूछा।
“इतनी कृपा तो गुरु जी ने मुझ पर की है।” स्वामीजी हंस पड़े।
“किन्तु यह सब हुआ कैसे? क्या कोई भ्रमणा थी या सत्य? या कोई चमत्कार था?” शैल ने आशंका व्यक्त की।
“सब सत्य था। कोई भ्रमणा नहीं। चमत्कार या जादू जैसा कुछ नहीं होता इस संसार में।”
“तो वह क्या था?”
“सत्य। सत्य ही था।”
“वह सत्य अब कहाँ है?”

“सत्य अपना कार्य कर चुका। पश्चात विलुप्त हो गया।”
“यह तो प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है। ऐसा कैसे संभव हो सकता है?”
“कोई भी बात प्रकृति के नियमों के विरुद्ध नहीं होती है।”
“किन्तु यह तो ...।”
“हम प्रकृति के नियमों को कितना जानते हैं?”
“विज्ञान के नियमों का ज्ञान है हमें। यही प्रकृति के नियम हैं।”
“यह हमारी मिथ्या अवधारणा है, शैल और सारा। प्रकृति के जिस नियम से हमारा परिचय नहीं है उसका अर्थ यह नहीं है कि उस नियम का अस्तित्व ही नहीं है। प्रकृति के जिन नियमों को हम जानते हैं वह तो केवल अंशमात्र भी नहीं है। हमारा विज्ञान जिन नियमों की बात करता है, जानता है वह अति अल्प ज्ञान ही है। और जिसका हमें ज्ञान नहीं है उसका अस्तित्व नहीं ऐसा मानना हमारी अल्प मति है।
प्रकृति अपने नियमों को जानती है, भली भांति मानती भी है। विज्ञान के नियम जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम, गति के नियम आदि हमारे जानने से पहले भी विद्यमान थे। उसी का अनुसरण प्रकृति युगों युगों से करती आ रही है। आपने जो अनुभव किया था वह भी प्रकृति के नियम के अंतर्गत ही है, किसी नियम का उल्लंघन नहीं हुआ है। केवल उस नियम से हम अनभिज्ञ हैं।”
“अर्थात प्रकृति का रहस्य अगाध है?”
“नि:संदेह।”
“ठीक है स्वामीजी। गुरुजी ने हमें कहा था कि दो और व्यक्ति हमारे साथ जुड़ेंगे तब हम रहस्य तक पहुँच सकेंगे। कौन हैं वे दो व्यक्ति जो साथ जुडने वाले हैं? कैसे हैं? कहाँ, कब, कैसे मिलेंगे?”
“और हमें अब क्या करना चाहिए उस पर भी हमारा मार्गदर्शन कर दें तो?” सारा।
“गुरु कृपा रही तो अवश्य मार्गदर्शन करूंगा। किन्तु वह सब भोजन के पश्चात। अभी भोजन कर लो।”
स्वामीजी ने भोजन परोसा। दोनों ने ग्रहण किया। तृप्त हो गए।
“आप दोनों नीम के वृक्ष के नीचे विश्राम करें। मैं अभी वहाँ उपस्थित होता हूँ।”

दोनों नीम के वृक्ष तले आ गए। अपना अपना स्थान देख बैठ गए।
“इतना सारा भोजन और इतना स्वादिष्ट! कुछ तो है स्वामीजी की इस कुटिया में। बड़ी बड़ी भोजन शाला में बड़े बड़े व्यंजन का स्वाद लिया है किन्तु इस सादे भोजन के स्वाद के समान कुछ नहीं। क्या विशेष बात होगी इसमें?”
“शैल, आश्रमों के भोजन ऐसे ही होते हैं, उनकी तुलना अन्य किसी से क्या करनी?”
“ऐसा क्या है?”
“धान की शुद्धधता और आश्रमवासियों के मन की निर्मलता। बस और कुछ नहीं।”
“सत्य कह रही हो सरिता।” स्वामीजी ने आते हुए कहा। दोनों खड़े हो गए।
“बैठे रहिए।” स्वामीजी ने आसन ग्रहण किया पश्चात दोनों बैठ गए।
“आप दोनों के लिए गुरु जी का संदेश है।”
“क्या है?”
“पूर्व की भांति आप दोनों नदी के साथ साथ उलटी दिशा में नदी के मूल तक यात्रा करो। उसी दिशा में आपको आपके प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे।”
“कहाँ तक चलना होगा? कब तक चलना होगा?”
“कब उत्तर मिलेंगे?”
“कब वे अन्य दो व्यक्ति जुड़ेंगे?”
“शांत हो जाओ। इतने सारे प्रश्नों का होना स्वाभाविक है। किन्तु इस समय आपके लिए गुरुजी का यही आदेश है। वे दोनों जुड़ जाएंगे, बस आप अपने मार्ग पर चलते रहिए।”
“क्या उन दोनों के बिना …?”
“नहीं हो सकता। उन दोनों के बिना लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती।”
“किन्तु हमें …।”
“उन दो व्यक्तियों की चिंता त्याग कर लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करो। लक्ष्य का मार्ग स्वयं समय समय पर मार्गदर्शन करेगा। जाओ, अब विलंब न करो और कार्य आरंभ करो।”
“गुरुजी, मुझे तो सात दिन में देश छोड़कर जाना है। इन सात दिनों में हमारा लक्ष्य प्राप्त हो जाएगा न?”
“इस देश को छोड़कर तुम कहीं नहीं जाओगी, कभी नहीं।”

“वह कैसे संभव होगा?”
“कुछ प्रश्नों के उत्तर भविष्य के गर्भ में रहने दो, सरिता।” स्वामीजी ने सस्मित कहा। उस स्मित का स्वीकार करते हुए दोनों फिरोजपुर लौट आए।

[54]

“सारी तैयारियां हो चुकी है। आप दोनों कल भोर होते ही अपने अभियान पर निकल सकते हो।” विजेंदर ने सूचना दी।
शैल ने कह, “सब कुछ सज्ज हैं न? कोई त्रुटि तो नहीं रह गई? एक बार पुन: सब देख लेना।”
“निश्चिंत रहिए महोदय। मैं दो बार सब देख चुका हूँ।”
“ठीक है। सारा जी, कल प्रात: यहाँ से वह आश्रम तक वाहन से जाएंगे। पश्चात नदी के मार्ग पर अपनी यात्रा और अन्वेषण प्रारंभ करेंगे।”
“ठीक है, शैल।”
“आपके उत्तर में ऊष्मा और ऊर्जा दोनों का अभाव प्रकट हो रहा है। क्या बात है?”
“क्या हमारा अभियान सात दिनों में सम्पन्न हो जाएगा?”
“मैं नहीं जानता।”
“सात दिनों के पश्चात तो मुझे जाना होगा।” सारा ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा।
“हाँ, अब छ: दिन शेष रहे हैं। यह भी सत्य है कि पश्चात आपको जाना होगा। किन्तु कल हम जिस स्वामीजी को मिलकर आए थे उनके वचन का स्मरण तो होगा ही?”
“क्या कहा था?”

“इस देश को छोड़कर तुम कहीं नहीं जाओगी, कभी नहीं। यही कहा था न?”
“कहा तो यही था। किन्तु कैसे होगा?”
“विजेंदर, कुछ उपाय ढूंढो जिससे सारा जी भारत में रुक सके। जब तक मीरा का रहस्य हाथ न लगे तब तक हमें उन्हें रोकना होगा।” शैल ने कहा।
‘भगवान करे यह रहस्य, रहस्य ही रहे।’ सारा ने मनोमन कहा।
“एक उपाय है। सारा जी भारत की नागरिकता के लिए आवेदन कर लें तो यह संभव है। उसे यहाँ की नागरिकता मिल जाए तो …।”
“विजेंदर, उपाय तो ठीक है किन्तु क्या यह संभव है? और वह भी सात दिनों में?”
“सारा जी, भारत सरकार ने नागरिकता संशोधन अधिनियम 2024 लागू कर दिया है। इसके अंतर्गत पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के नागरिकों को भारत नागरिकता दे सकता है।”
“महोदय, इन अधिनियम के अंतर्गत केवल वहाँ के अल्पसंख्यक अर्थात गैर मुस्लिम को ही यह लाभ उपलब्ध है। सारा जी वहाँ के अल्प संख्यक नहीं हैं। उस पर यह अधिनियम लागू नहीं होगा।”
“तो क्या करें? कोई उपाय?”
“यदि वह मुस्लिम धर्म त्याग दे तो?”
“इस पर भी बात नहीं बन सकती क्यों कि सारा जी की नागरिकता, सारे कागज के अनुसार वे मुस्लिम है। अत: धर्म परिवर्तन करने पर उसे कोई लाभ नहीं होगा।” शैल ने कहा।
“किन्तु मूलत: तो मैं हिन्दू हूँ।” सारा ने कहा।
“आप थीं। अब उसका कोई आधार या प्रमाण है क्या? एक बार मुस्लिम बन जाने पर सारा हिन्दुत्व मीट जाता है।” विजेंदर ने कहा।
“चलो छोड़ो, अभी भी सात दिन हैं न? तब तक क्यों चिंता करें? हो सकता है हमें सात दिनों के भीतर रहस्य हाथ लग जाए।”
“सारा जी, शैल महोदय का कहना उचित है। सात दिनों तक आप ऐसी चिंता छोड़ दो। तब तक मैं भी कोई उपाय खोजता हूँ।” विजेंदर ने कहा।
“सात नहीं, छ: दिन, विजेंदर।” विजेंदर ने सहमति प्रकट की।

<><><><>

“तीन दिन तो पूरे हो गए। अभी तक कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। ऐसे कब तक चलते रहेंगे?”

“सारा जी, जब तक मीरा की मृत्यु का रहस्य नहीं मिलता, यूं ही चलते रहना है। आप कहीं थक तो नहीं गई? निराश तो नहीं हो गई?”

“नहीं शैल। ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसे चलते चलते एक दिन हम सतलज नदी के उद्गम स्थान मानसरोवर - तिबेट तक पहुँच जाएंगे।”

“उसके लिए कुल एक हजार चार सौ पचास किलोमीटर चलना होगा।”

“इतना समय नहीं है मेरे पास। चार दिन और बचे हैं। तब तक कुछ हो तो ठीक है नहीं तो मैं चली जाऊँगी।”

“अभी भी चार दिन हैं न?”

“है तो सही।” कहकर सारा कुछ क्षण मौन हो गई। पश्चात बोलीं, “यह नदियां इतनी लंबी लंबी क्यों होती हैं? इतना दूर तक जाने की उसे क्या आवश्यकता थी?”

“सारा जी, नदी को दोष क्यों देना? वह तो इतने सारे क्षेत्र को जीवन देती है।”

“और इसी क्षेत्र के एक छोटे से किसी अज्ञात बिन्दु पर मीरा नाम की युवती को मृत्यु भी देती है। उस पर रहस्य रच देती है।”

“इस पर भी नदी का दोष?”

“और नहीं तो क्या?”

“आपने यह कैसे जाना कि मीरा को मृत्यु इस नदी ने दी है?”

“तो और किसने दी होगी?”

“यही तो हमें खोजना है। नदी किसी को मृत्यु नहीं देती, सारा जी।”

“क्यों नहीं देती? वर्षा में यही नदियां गांवों में मृत्यु लेकर दौड़ आती है।”

“हमारे यहाँ नदी केवल नदी नहीं होती है, माता होती है। हम उसे मैया कहते हैं। माता कभी किसी को मृत्यु नहीं देती। वर्षा में जो पानी गांवों में आता है वह नदी का नहीं, वर्षा का जल है जिसे नदी ने अपने भीतर आश्रय नहीं दिया है।”

“माता?”
“क्या आपके यहाँ नदी को माता नहीं कहते?”
“हमारे यहाँ तो माता को भी माता नहीं कहते।”
“आप तो पूर्व में कभी सरिता थीं। क्या तब भी आपका परिवार नदी को माता नहीं कहता था?”
“तब तो मैं छोटी थी, अल्प मति थी। मैं क्या जानुं?”
“कोई बात नहीं। अब तो आप यहाँ हो, नदी को माता कह सकती हो। नदी का एक नाम सरिता भी है, सारा जी।”
सारा शैल की बात पर विचार करने लगी। तब शैल ने कहा, “हम से एक बड़ी चूक हुई है, बल्कि भूल हुई है।”
“वह क्या?”
“हमने नदी का, माता का, आशीर्वाद तो लिया ही नहीं तो वह हमें सहाय कैसे करेंगी?”
“क्या तात्पर्य है, शैल?”
“आओ, मेरे साथ आओ।” शैल नदी के प्रवाह की तरफ चलने लगा, सारा उसके पीछे। शैल नदी में प्रवेश कर गया। घुटनों तक पानी में जाकर रुक गया। झुका, नदी के पानी को अपनी दोनों हथेलियों में लिया और अर्घ्य देने लगा। मन ही मन नदी को प्रार्थना करने लगा। कुछेक अर्घ्य देने पर झुककर नदी को वंदन किया, हथेली से मस्तक पर नदी का जल अभिषेक किया। सात बार डुबकी लगाकर स्नान किया और तट पर लौट आया।
“यह क्या था शैल?”
“मैया की पूजा और प्रार्थना। मैया प्रसन्न होकर आशीर्वाद देगी तो हमारा कार्य सफल होगा।”
“नदी कैसे आशीर्वाद दे सकती है? वह तो एक स्थूल तत्व मात्र है।”
“श्रद्धा है मेरी। आप भी एक बार मैया का आशीर्वाद लेकर तो देखो।”
“मैं नहीं मानती।”
“कोई बात नहीं। मैंने जो अभी किया वही कर लो। बस इतनी सी पूजा होती है मैया की।”
“नहीं। मैं ऐसी बातों पर विश्वास नहीं रखती। अब चलो। समय कहीं आगे न निकल जाए।” सारा चल दी, शैल भी।

कुछ अंतर चलने पर सारा सहसा एक स्थान पर रुक गई। शैल आगे चल रहा था, उसे इस बात का ध्यान न रहा। कुछ दूर चलने के पश्चात शैल ने सहसा पीछे मुड़कर देखा तो बोल पडा, "सारा जी कहाँ गई? मेरे पीछे पीछे तो आ रही थी।" शैल ने पीछे छूटे मार्ग पर दृष्टि डाली, दूर तक देखा।

"सारा जी कहीं भी नहीं दिख रही। कहाँ रह गई?"

शैल पार कर चुके मार्ग पर लौटने लगा। कुछ दूर जाने पर देखा तो एक शीला पर सारा जी बैठी थी। सारे वस्त्र भीगे थे। शैल चौंक गया।

"यह क्या हो गया? क्या आप नदी में गिर गयो थीं?"

"नहीं।"

"तो यह वस्त्र कैसे भीगे?"

"मैया के आंचल में गई थी, भीगना तो था ही।"

"क्या?"

"तुमने नदी मैया की पूजा प्रार्थना की तो मैंने भी पूजा की, प्रार्थना की।"

"किन्तु आप तो ...?"

"नहीं मानती थी किन्तु तुम्हारी पूजा और श्रद्धा देखने के पश्चात मन पर वह चित्र, वह विचार, वह भाव

इतने छाए रहे कि मैं अन्य कुछ विचार ही नहीं सकती थी। अंतत: मैं भी मैया की शरण में चली गई। मुझे भी मैया का आशीर्वाद प्राप्त होगा न?"

"श्रद्धा में असीम क्षमता होती है। मैया बड़ी कृपालु होती है।"

"अब धीरे धीरे मेरा मन शांत हो रहा है। मन की उद्विग्नता दूर होती जा रही है। जैसे भीतर से मन प्रसन्न हो रहा हो।"

"अब सारी चिंता छोड़ दो। मैया अवश्य उचित मार्ग दिखाएगी।"

"शैल, यह क्या है कि एक बहती नदी जो केवल जल राशि मात्र है उसे जब हम मैया मानकर पुकारते हैं, उसकी शरण में जाते हैं तो शीघ्र ही मन के सारे विकार शांत हो जाते हैं। क्या यह चमत्कार है?"

"नहीं। यह चमत्कार नहीं है।"

“तो क्या है यह?”

“माता और संतान का स्नेह बंधन है यह।”

“कितना अद्‌भुत है!”

“वो तो है। अब हमें अपने मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए।”

दोनों आगे बढ़ गए। चलते चलते संध्या हो गई।

[55]

रात्री निवास हेतु मार्ग में पड़े गाँव में दोनों ने प्रवेश किया। किसी सज्जन के घर दोनों को आश्रय मिला। भोजन पूर्ण होते ही सज्जन ने कहा, “आज गाँव में माता के भजन का कार्यक्रम है। साधुओं की एक टोली आई है। क्या आप चलोगे भजन कीर्तन में?”

शैल ने कहा, “सारा जी चलेंगे क्या?”

“जी अवश्य चलेंगे।”

“किन्तु आप वहाँ नहीं आ सकती। केवल शैल ही चल सकता है।”

“क्यों? क्या स्त्रीयां वहाँ नहीं जाती है?”

“स्त्रीयां भी जाती है किन्तु आप नहीं जा सकती। क्यों कि ...।”
“मैं मुस्लिम स्त्री हूँ इसलिए न?”
“वहाँ विधर्मियों का आना निषेध है।”
“ठीक है, शैल। तुम जाकर आओ। मैं यहाँ विश्राम करती हूँ।”
“नहीं। मैं भी यहाँ रहूँगा। आप गाँव वालों भजन कीर्तन करें। हम यहीं रहेंगे।” शैल ने कहा।
गाँव के चोक में भजन कीर्तन की सारी तैयारियां हो गई थी। सारे गाँव जन धीरे धीरे जुड़ रहे थे। साधुओं की टोली भी आ गई। ढोल, मंजीरे आदि वाध्य सजने लगे। कीर्तन आरंभ होने की क्षण आने पर संत ने घोषणा की, “क्या सारे गाँव जन आ चुके हैं?”
“हां, हां।” एक साथ अनेक ध्वनियाँ उठीं। संत ने सभी गाँवजनों पर विहंगम दृष्टि डाली। सब को ध्यान पूर्वक देखने के पश्चात जब गाँव जन की ध्वनियाँ शांत हो गई तो वे बोले, “वृद्‌ध, अशक्त एवं बालकों के उपरांत अभी भी दो व्यक्ति किसी घर में है। उन्हें यहाँ आने से क्यों रोका गया है?”
सभी गाँवजन विस्मय एवं प्रश्न भरी दृष्टि से एक दूसरे के मुख को देखने लगे। उस विस्मय, उस प्रश्न का उत्तर किसी के पास न था। अब वे सभी उसी दृष्टि से संत को देखने लगे।
“आपके गाँव में दो अतिथि आए हैं। दोनों कीर्तन में आना चाहते हैं। किन्तु किसी ने उन्हें यहाँ आने से रोका है। क्यों रोका गया है?”
संत के शब्दों को सुनकर सभी आँखें उस सज्जन को ताकने लगी।
सज्जन खड़े हुए और बोले, “महाराज, उन दोनों में से एक स्त्री है जो विधर्मी है। मुस्लिम है। तो मैंने उसे यहाँ आने से रोक दिया।” सज्जन स्थिर से, मूढ़ से खड़े रहे, संत को ताकते रहे।
“उन दोनों को यहाँ ले कर आओ।”
“किन्तु महाराज ...।”
“आप निश्चिंत रहिए। आपके सभी प्रश्नों के उत्तर, सभी संशयों के समाधान मिल जाएंगे। बस आप उन्हें यहाँ लेकर आइए।”
संत के शब्दों को कोई टाल न सका। उस सज्जन के साथ गाँव की दो चार स्त्रीयां शैल और सारा को लाने के लिए चल पड़े। ग्राम जनों में कौतुक जाग उठा। ‘अब क्या होनेवाला है?’ सभी उत्कंठा से इसकी चर्चा करने लगे। कुछ ही घड़ी में शैल और सारा को लेकर गाँवजन आ गए।

“उन्हें सम्मान के साथ मेरे प्रत्यक्ष स्थान दें।” संत ने आदेश दिया। सारा ने स्थान ग्रहण किया।
“बेटी सरिता, ईश्वर की इस सभा में तुम्हारा स्वागत है।”
“महाराज, इसका नाम सरिता नहीं, सारा है।”
“कुछ क्षण पूर्व यह सारा थी, अब यह सरिता है। हैं न सरिता?”
सारा इन बातों से आश्चर्य में पड गई। अवाक हो गई।
“बोलो बेटी, तुम सरिता ही हो न?”
सारा ने कुछ कहने के लिए होंठों से प्रयास किया किन्तु अधरों से शब्द निकल नहीं पाए। सारी सभा इस बात को सुनकर उत्तेजित हो गई।
संत ने कहा, “गाँवजनों, शांत हो जाओ। मेरी बात पर आश्चर्य होना सहज है। अब मैं जो कुछ कहूँ उसे ध्यान से सुनो।”
शीघ्र ही सभा शांत हो गई। सभी की आँखें और कान उत्सुकता से संत की तरफ खींच गए।
“जिसे आप सारा समझ रहे हो वह पूर्व में सरिता थी। उनका परिवार सनातनी था। देश विभाजन के पश्चात पाकिस्तान में ही रह गया। समय व्यतीत होने पर कुछ विवशताओं के कारण पूरा परिवार सनातन को त्याग विधर्मी हो गया था। पिछले कुछ दिनों से वह भारत में है। यहाँ के तरंगों ने, यहाँ की ऊर्जा ने उन्हें प्रभावित किया है। इसी कारण उनके सनातन संस्कार पुन: जागृत हो गए हैं। आज ही उसने नदी को मैया मानकर पूजा अर्चना भी की है। अभी यहाँ अग्नि प्रज्वलित होगा, आज, इसी क्षण, इसी स्थान पर अग्नि की साक्षी में सारा अपना विधर्म त्यागकर सनातन धर्म में घर वापसी करेगी। और पुन: सरिता नाम धारण करेगी। बेटी, क्या तुम इस प्रस्ताव का स्वीकार करती हो?”
संत द्वारा सहसा पूछे गए प्रश्न से सारा दिगमूढ़ सी हो गई। उसे कोई उत्तर नहीं सुझा तो मौन हो गई।
“बेटी, यदि तुम नहीं चाहोगे तो तुम्हारा सनातन में पुन: प्रवेश नहीं होगा। अत: अपने मन की इच्छा प्रकट करो। कहो तुम्हें सनातन में घर वापसी स्वीकार्य है या नहीं?”
सारा की आँखों से अनायास ही अश्रु बहने लगे। मन में प्रसन्नता का अनुभव होने लगा। अश्रुओं के साथ सारा विषाद बहकर नष्ट हो गया। होंठों पर स्मित आ गया। वह स्वत: अग्नि के समीप चली गई। संत भी वहाँ आए। आँखें बंद कर संत ने हथेली में जल लिया, कुछ मंत्रों का पाठ

किया, आँखें खोलीं और वह अभिमंत्रित जल सारा को दे दिया। सारा ने उसे अपनी हथेली में लिया, आचमन किया, शेष जल अपने मस्तक पर चढ़ा दिया।
“बेटी सरिता, घर वापसी पर सनातन धर्म तुम्हारा स्वीकार करता है। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे। तुम्हारा मंगल हो।” संत ने आशीष दिए।
सरिता ने संत को प्रणाम किया। सभी गाँवजनों में हर्ष व्याप गया। रात्रिभर ईश्वर का नाम संकीर्तन चलता रहा। कीर्तन सम्पन्न होते ही गाँवजन घर चले गए, संतों की टोली अपने मार्ग पर चल पड़ी।

[56]

“सारा जी। चलें क्या?” शैल ने पूछा। सारा ने कोई उत्तर नहीं दिया। शैल ने सोचा, ‘सारा जी ने सुना नहीं होगा।’ अत: पुन: पूछा, “सारा जी। चलो चलें। सूरज खूब चड चुका है।” सारा ने पुन:

कोई उत्तर नहीं दिया। वह दूर कहीं क्षितिज को ताड़ रही थी। शैल समीप गया और बोला, “सारा जी मैं आपसे कुछ पुछ रहा हूँ। आप अनुत्तर हैं। क्या बात है सारा जी?”
सारा शैल की तरफ मुड़ी और बोली, “जी, कौन सारा?”
“आप ही तो हैं सारा जी?”
“मैं?”
“हाँ, आप।”
“जी नहीं, श्रीमान। यहाँ कोई सारा नहीं है।”
“तो आप कौन हैं?”
“तुमने मुझसे पूछा क्या?”
“जी। आपसे ही पुछ रहा हूँ, सारा जी।”
“क्षमा करें, मेरा नाम सारा नहीं है।”
“प्रतीत होता है कि रात्री भर जागने से आपको विस्मरण हो गया है। यहाँ तक की आप अपना नाम तक भूल गई हैं।”
“नहीं शैल। मैं कुछ नहीं भूली हूँ।”
“तो क्या बात है?”
“जिसको त्याग दिया है उसे भूल गई हूँ और जो अपनाया है वही स्मरण में है।”
“क्या कहना चाहती हैं, स्पष्ट कहो। इस समय मैं किसी पहेली को समझने की स्थित में नहीं हूँ।”
“मैं अब सरिता हूँ। बस इतनी सी बात है। यदि तुम्हें सरिता से कुछ बात करनी हो तो मैं प्रस्तुत हूँ, तत्पर हूँ।”
“ओह, सरिता जी। यह बात है? आपका स्वागत है मूल सनातन धर्म में।”
“धन्यवाद, शैल। चलो अब चलें।”
“चलो, मार्ग लंबा है।”
दोनों चल पड़े। संध्या होने पर दोनों रात्री निवास हेतु समीप के गाँव में पहुंचे। गाँव के मुखिया से मिले।
मुखिया ने कहा, “नहीं। आप लोगों को हम आश्रय नहीं देंगे।”

“क्यों? कुछ समस्या है?” शैल ने पूछा।
“हम तो केवल रात्री के लिए सिर पर छत चाहते हैं। हमें और कुछ नहीं चाहिए।” सरिता ने कहा।
“किन्तु हम आश्रय नहीं दे सकते।”
“आप चाहोगे उतनी राशि हम आपको देंगे। बस हमें आश्रय दे दो।”
“नहीं कहा न? एक बार ना कहा तो समझ में नहीं आ रहा है क्या?”
“ठीक है। सरिता जी, प्रतीत हो रहा है कि मुखिया जी की कोई विवशता होगी।”
“एक रात्री आश्रय देने में क्या विवशता होगी आपकी, मुखिया जी? कोई आपत्ति है क्या?”
“है। हमें आपत्ति है सारा जी। नहीं, नहीं, सरिता जी।” मुखिया के घर से बाहर आते हुए निहारिका ने कहा। पीछे सपन भी आ गया।
उन दोनों को देखकर मुखिया जी की विवशता और उन दोनों का सारा खेल शैल और सरिता को समझ आ गया। उन्होंने मुखीया जी से कुछ नहीं कहा, वहाँ से लौटने लगे। तभी सपन बोला, “यदि आप हमारी बात मन लें तो आपको आश्रय मिल सकता है।”
सरिता रुकी, मुड़ी। शैल ने उसे रोक, “यहाँ से चलो। अब यहाँ रुकना ठीक नहीं है।” दोनों गाँव से बाहर चले गए। नदी के तट पर एक स्थान पर रुक गए।
“सरिता जी, इस स्थान पर हम रात्री व्यतीत कर लेंगे। आप विश्राम कीजिए।”
“और तुम, शैल?”
“आप निश्चिंत रहिए। हमारे साथ साक्षात मैया स्वयं उपस्थित है। वह अपने शरण में आए संतानों की सुरक्षा अवश्य करती है। तथापि मैं सतर्क रहूँगा।”
“मैया ने मीरा की रक्षा क्यों नहीं की? वह भी तो मैया की शरण में ही आई थी।”
“मीरा? मीरा के रहस्य को जानने के लिए तो हम इस मार्ग पर चल पड़े हैं।”
“शैल, मेरा प्रश्न है - मैया ने मीरा की रक्षा क्यों नहीं की?”
“सरिता जी, आप मैया पर संशय कर रही हो?”
“मैं नहीं जानती कि मेरा यह प्रश्न, मेरा यह विचार संशय है या नहीं। यह भी नहीं जानती कि मीरा का विचार इस समय मेरे मन में कैसे आया।”
“कोई बात नहीं। मैया बड़ी दयालु होती है। मैया को प्रणाम कर विश्राम करो।”

सरिता ने मैया के भीतर प्रवेश किया, झुकी, मैया की अंजली भरी, माथे पर अभिषेक किया, प्रणाम किया और लौट आई।
“निश्चिंत होकर विश्राम करें, सरिता जी।”
“विश्राम करने का अवसर नहीं मिलेगा, सारा जी।” निहारिका ने तट पर आते हुए कहा।
शैल और सरिता को इनके यहाँ भी आने की अपेक्षा न थी। शैल के मन को कुछ स्मरण हो आया।
“आप दोनों तो कारावास में थे तो यहाँ कैसे?” शैल ने प्रश्न किया।
उत्तर में दोनों ने अट्टहास किया। नदी की ध्वनि से भी तीव्र अट्टहास! इससे नदी तट का शांत वातावरण तरंगित हो गया। वृक्षों पर शयन कर रहे सेंकड़ों पक्षियों ने तीव्रता से अपने पंख फड़फड़ाए। कुछ इधर उधर उड़ने लगे। कुछेक ने अपने कंठ से चित्र विचित्र ध्वनियाँ निकाली। कुछ समय के पश्चात पंखी शांत होकर अपने घोंसले में स्थिर हो गए। पंखियों की यह क्रिया सभी ने देखि।
“कारावास?” व्यंग करते हुए सपन बोला।
“भारत का कोई भी कारावास हमारे लिए नहीं बना।” निहारिका ने कहा।
“हमें यहाँ देखकर, हमारी बात सुनकर आश्चर्य हो रहा है न?”
“आश्चर्य नहीं, सपन आघात लगा होगा। सीधा - सरल आघात नहीं, कठोर और पीड़ादायक आघात लगा है इन दोनों को।” शैल और सरिता स्तब्ध होकर दोनों की कुटिलता को देख रहे थे।
“हमने एक बार कहा था कि सरकार चाहे किसी की भी हो, तंत्र हमारा ही है। प्रत्येक कार्यालय में हमारे व्यक्तियों की जाल बिछी हुई है। यह कारावास क्या चीज है? बस, हमारे तंत्र ने अपना काम किया और हम कारावास से मुक्त।” सपन ने कहा।
“और एक बात। नदीम भी, कपिल भी कारावास से मुक्त हो गए हैं। तुम्हारी जानकारी के लिए।” निहारिका ने शैल सरिता के मर्म पर घाव करते हुए कहा।
“ठीक है। हम दोनों ने पुलिस की सेवा त्याग दी है यह तो आप जानते ही होंगे, आपका जाल विशाल जो है। अब हमारा मीरा घटना से कोई संबंध नहीं है। और हमारी आपसी कोई शत्रुता भी नहीं है। तो आप हमारे पीछे क्यों पड़े हैं? आप हमसे क्या चाहते हैं?” शैल ने कहा।
“पुलिस सेवा त्याग दी किन्तु मीरा हत्या से संबंध अभी भी है आप दोनों का।”

“वह कैसे?”

“संबंध नहीं होता तो इस समय आप दोनों यहाँ क्या कर रहे हैं? इस निर्जन अंधेरी रात्री में, खुले आकाश के नीचे, जीव जन्तु और पशु पक्षी से भयग्रस्त इस स्थान पर नहीं होते। अपने घरों में सुख की निद्रा करते होते। सरिताजी, मैं ठीक कह रही हूँ न?” निहारिका ने कहा।

“मीरा हत्या का रहस्य जानने के लिए तो इस मार्ग पर आप चल रहे हो तो मीरा हत्या की घटना से आपका संबंध कैसे नहीं हो सकता, शैल? सरिता जी, आप तो वरिष्ठ हैं, शैल को इस बात समझाती क्यों नहीं?” सपन ने कहा।

“हम इस मार्ग पर चल रहे हैं, मीरा हत्या का रहस्य जानने की चेष्टा कर रहे हैं इसमें आपको क्या आपत्ति है?” सरिता ने कहा।

“कहीं ऐसा तो नहीं सपन - निहारिका जी कि आप दोनों ने ही मीरा की हत्या की हो और हमारी इस यात्रा से आपके विरुद्ध कुछ प्रमाण हाथ लग जाए जिससे आप दोनों का भेद खुल जाए? क्या इसी कारण आप हमारी यात्रा में बाधा बनकर आए हो?”

[57]

शैल के शब्दों ने दोनों को चौंकाया। क्षणभर दोनों अवाक होकर परस्पर देखते रहे।
“ऐसा नहीं है, शैल।” निहारिका ने नम्र होकर कहा।
“तो क्या चाहते हो? इस प्रकार हमारे मार्ग में बार बार आकर क्या सिद्ध करना चाहते हो?” सरिता ने उग्रता से कहा।
“हम तो आप दोनों की दीक्षा चाहते हैं।” निहारिका ने मीठे स्वर में कहा।
“दीक्षा? कैसी दीक्षा?”
“सन्यास लेने का मेरा कोई आयोजन नहीं है। न ही कोई प्रयोजन है मेरा।”
“नहीं शैल, आपके धर्म की सन्यास वाली वह दीक्षा नहीं।”
“तो कौन सी दीक्षा?”
“हमारे मिशन की दीक्षा, हमारे अभियान की दीक्षा, सरिता जी।”
“वह क्या है?”
“दीक्षा लेते ही हमारा मिशन आपको समझ आ जाएगा।” सपन ने कहा।
“अभी तो यह जान लो कि दीक्षा लेने से धन, समृद्धि आदि का लाभ होता रहेगा। आपकी सभी कामनायें पूर्ण होती रहेगी।” निहारिका ने समझाया।
“आपको स्मरण तो होगा कि आप के पास कल और परसों के केवल दो दिन ही शेष हैं। पश्चात पाकिस्तान लौटना होगा। दीक्षा से आपको जीवनभर पाकिस्तान नहीं लौटना पड़ेगा। भारत में ही रह सकोगी।” सपन ने लालच दिया।
“वह कैसे संभव होगा?”
“सरिता जी, हम आपको नया नाम, नया परिचय देंगे। इस नए नाम अनुसार भारत के पहचान पत्र जैसे -पान कार्ड, चुनाव कार्ड, आधार कार्ड आदि आपको मिल जाएंगे। पश्चात आप को भारत से कोई नहीं निकाल सकता।” निहारिका ने कहा।
“आपके नए परिचय पत्र इस नए नाम - सरिता के नाम से बनवा दें? या कोई अन्य नाम चाहती हैं?”
“मैं तो विदेशी हूँ। शत्रु देश से हूँ। मेरे परिचय पत्र कैसे बन सकते हैं?”

“सरिता जी, वह सब चिंता छोड़ दो।”
“भारत में प्रतिदिन सैंकड़ों की संख्या में बांग्लादेश, म्यांमार और शत्रु देश पाकिस्तान से भी मुस्लिम लोग घुसपैठ करते हैं। उन सब के परिचय जैसे बन जाते हैं वैसे ही आपके भी बन जाएंगे।”
“कैसे बन जाते हैं?”
“हम हैं न। हम बता तो चुके कि हमारे सदस्यों का जाल सभी कार्यालयों में है। सारा तंत्र हमारा ही है।” पुन: अट्टहास किया दोनों ने। इस बार पंखियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। शैल सरिता ने भी प्रतिक्रिया नहीं दी। इससे सपन निहारिका विचलित हो गए।
“तो आप दीक्षा के लिए सज्ज हो?”
“मैं कल प्रात: काल बताऊँगी।”
“नहीं सरिता जी, अभी बताना होगा। दीक्षा के लिए अभी उचित समय है।”
“निहारिका जी, दीक्षा का उत्तम समय तो प्रात:काल स्नान आदि के पश्चात ही होता है। तो प्रात: काल तक प्रतीक्षा करने में क्या समस्या है?” सरिता ने कहा।
“सरिता जी, हमारे यहाँ दीक्षा रात्री को ही होती है।”
“वह कैसे?”
“अभी रात्री है। आप अभी हमारे साथ चलेंगी। आपकी आँखों पर पट्टी बंद जाएगी। वहाँ हमारे क्षेत्रीय नेता के सम्मुख आपको प्रस्तुत किया जाएगा।”
“ठीक है। पश्चात?” शैल ने पूछा।
“हमारे नेता सरिता जी को अपने कक्ष में ले जाएंगे। वहाँ उन्हें रात्री भर दीक्षा दी जाएगी। प्रात:काल होते ही सरिता जी, आप हमारी सदस्य बन जाओगी।”
“और शैल का क्या होगा?”
“उसे मैं अपने कक्ष में रात्री भर दीक्षा दूँगी। प्रात:काल वह भी सदस्य बन जाएगा।”
“क्या ऐसा नहीं हो सकता कि निहारिका जी मुझे दीक्षा दें और आपके नेता शैल को?”
“हमारे यहाँ नियम है कि पुरुष को दीक्षा स्त्री देती है और स्त्री को पुरुष। वह भी बंद कक्ष में। इसका अर्थ न समझ सको इतनी भोली तो आप नहीं हो।”
“ओह, मैं अब समझी। यह तो बड़ी रोचक दीक्षा है। हैं न सपन जी?”

“यही तो। दीक्षा में आपको अत्यंत आनंद आएगा।” सपन ने कहा।
“तो चलें?”
“नहीं।” नहीं।” शैल और सरिता ने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया।
उत्तर सुनकर सपन - निहारिका स्तब्ध हो गए। ऐसे नकार की उन्हें अपेक्षा न थी।
कुछ क्षण आघात में बीतने पर निहारिका बोली, “सरिता जी। शैल की बात भिन्न है। उसे छोड़ो। आप अपने भविष्य का विचार करो। अन्यथा पाकिस्तान लौटना पड़ेगा। वहाँ आपकी क्या स्थिति है उससे हम अपरिचित नहीं हैं। तो सोच लो।”
सरिता ने उत्तर नहीं दिया।
“चलो हम दूसरा विकल्प देते हैं।” शैल और सरिता ने प्रश्न भरी दृष्टि से सपन को देखा।
“दो दिन में सरिता जी को हम यहाँ की नागरिकता दिलवा देते हैं। क्या यह स्वीकार्य है?”
“उसका क्या मूल्य चुकाना होगा मुझे?”
“बस, एक रात्री नदीम के साथ और …।”
“और क्या?”
“एक रात्री मेरे साथ।” सपन के मुख पर कुटिल स्मित उभर आया।
सपन के प्रस्ताव पर सरिता क्रुद्ध हो गई। वह कुछ कहना चाहती थी किन्तु शैल ने रोका। दोनों मौन ही रहे।
“इस मौन को हम सम्मति मान लेते हैं, सरिता जी।”
“प्रत्येक मौन का अर्थ सम्मति मानने की भूल मत करना, निहारिका।” शैल ने कहा।
“आप मेरे शरीर के पीछे क्यों पड़े हो? क्यों मेरा नश्वर देह भ्रष्ट करना चाहते हो?”
“तुम्हारा यह शरीर तो पाकिस्तान में ही भ्रष्ट हो चुका है तब ऐसी बातों का कोई अर्थ नहीं रहा गया है, सारा जी।” सपन ने कहा।
“सरिता हूँ मैं अब।”
“नाम बदलने से, धर्म बदलने से, माथे पर बिंदिया लगा लेने से शरीर नहीं बदल जाता। सारा कहूँ या सरिता?”
“आपका यह शरीर पूर्व से ही भ्रष्ट हो चुका है। एक बार भ्रष्ट हो या बार बार, शरीर भ्रष्ट ही रहता है। वह पवित्र नहीं हो जाता।”

सपन और निहारिका की बातों से सरिता विचलित हो गई, व्यथित भी। तथापि उसने स्वयं के भावों को नियंत्रित किया, विचार किया, गहन श्वास लेकर बोली, “मुझे आज रात्री तक विचार करने का समय दें। मेरी इतनी बात तो मान सकते हो न? अंतत: मैं आपसे जुड़ गई तो आपकी ही साथी बन जाऊँगी। साथी पर इतनी कृपा तो कर सकते हो। हैं न कॉमरेड?”
सरिता की बात सुनकर उन दोनों ने परस्पर देखा। उनकी आँखों में चमक आ गई। संकेतों से परस्पर वार्तालाप कर लिया।
“हमारी भावी साथी सरिता जी, हम आपके इस प्रस्ताव का स्वागत करते हैं। कल प्रात: आठ बजे हम लौट आएंगे। तब आपको हमारे साथ चलना होगा।” निहारिका ने कहा।
“ठीक है।”
“किन्तु, सरिता जी, यह ...।”शैल के शब्द नदी तरंगों की ध्वनि में विलीन हो गए।
“अब आप निश्चिंत होकर रात्री व्यतीत करें। हाँ, आप चाहो तो आपको गाँव में आश्रय मिल सकता है।”
“और शैल को?”
“यदि वह दीक्षित होना चाहे तो उसका भी गाँव के आश्रय स्थान में स्वागत है।”
“नहीं। मैं यहीं ठीक हूँ। सरिता जी आप जा सकती हैं।” शैल नदी के प्रवाह की तरफ चलने लगा।
“आज रात्री तो मैं यहीं रहूँगी। चलो, कल मिलते हैं।” सरिता ने दोनों को विदा करने के लिए कहा।
“स्मरण रहे, प्रात: आठ बजे।” सपन - निहारिका गाँव की तरफ चल पड़े।

[58]

शैल ने सरिता के शब्दों को नहीं सुना था। वह नदी की तरफ बढ़ता गया। पानी के समीप वह रुक गया। धीरे धीरे नदी में उतर गया, भीतर भीतर चलने लगा। नदी में आगे बढ़ता गया। सहसा किसी ने पीछे से उसे पकड़ लिया। शैल की गति रुक गई। वह पानी में गिर पडा। वह कुछ समजे, स्वयं को संभाले उससे पूर्व दो हाथों ने पकड़कर शैल को उठा लिया। शैल ने मुड़कर देखा। प्रत्यक्ष सरिता थी।
सरिता की आँखों में तीव्र रोष था। जैसे कह रही हो, 'मरने का विचार है क्या? इस प्रकार कोई पुलिसवाला आत्महत्या करता है क्या?' सरिता ने कुछ नहीं कहा। किन्तु उसके मुख पर लिखे शब्दों को शैल ने पढ़ लिया । सरिता शैल को खींचकर तट पर ले आई। शैल वहीं बैठ गया। सरिता भी। शैल के माथे पर अपना हाथ फेरती रही। धीरे धीरे शैल की उद्विग्नता शांत होने लगी।
"आप उनके साथ ...?"
"तुम्हें छोड़कर मैं कहीं भी जा सकती हूँ क्या? इतने दिनों में तुम्हें बस इतना सा ही मेरा परिचय हुआ है क्या?"
"आप तो नागरिकता के लिए कुछ भी करने को तैयार ...।"
"ऐसा विचार तुम्हारे मन में कैसे आ गया?"
"आपने कल प्रात: आठ बजे का समय ...?"
"विचार करने का समय मांगा है मैंने, कोई स्वीकृति नहीं दी है।"
"कल जब वे आएंगे तो क्या होगा?"
"कल प्रात: के आठ बजे किसने देखा है?" सरिता मुक्त मन से हंस पड़ी।
"अर्थात?"

"जब वे यहाँ आएंगे तब हम कहीं और होंगें। उनके हाथों से, उनकी दृष्टि से कहीं दूर, दूर।"
सरिता नदी के पानी को दूर दूर तक देखने लगी।
"रात्री विश्राम को त्याग कर हमें अभी यहाँ से चलना चाहिए। चलो।"
"अभी नहीं शैल। कुछ प्रहर रात्री के बित जाने दो।"
"तब विलंब हो जाएगा।"
"नहीं होगा।"
"आपकी योजना क्या है?"
"अभी तो वे दोनों हम पर दृष्टि रखे होंगें। यदि हम इसी समय यहाँ से चलने लगे तो वे हमारे पीछे आएंगे और कुछ ही दूर जाने पर हमें पकड़ लेंगे। क्यों कि इससे उन्हें हमारी योजना ज्ञात हो जाएगी। अत: उन्हें भुलावे में डालने हेतु अभी मैं सो जाती हूँ। तुम भी चाहो तो सो जाओ।"
"ठीक है। किन्तु मैं सो गया तो आपकी सुरक्षा कौन करेगा?"
"रात्री के दो तीन प्रहर तो मेरी सुरक्षा सपन और निहारिका ही करेंगे।" सरिता के मुख पर स्मित आ गया। शैल ने उस स्मित का संकेत समज लिया। दोनों विश्राम करने लगे। सरिता निश्चिंत हो गई। शैल चिंता में जागता रहा। रात्री के अंतिम प्रहर में निद्रा ने उसे अपनी शरण में ले लिया।
सूर्य की प्रथम किरण के पूर्व के प्रकाश में सहसा शैल जाग गया। पक्षियों के पंखों की ध्वनि और मधुर गान के स्वर उसके कानों में पड़े। सुनकर वह प्रसन्न हो गया। ठंडी हवा की एक तरंग ने शैल को स्पर्श किया तो उसका शरीर झंकृत हो गया। तभी उसे सरिता का ध्यान आया। उसे देखने के लिए उसने दृष्टि उठाई तो देखा कि सरिता वहाँ नहीं थी। उसने आस पास, दायें - बायें, देखा किन्तु वह नहीं दिखाई दी।
वह उठा। जहां तक दृष्टि जा सकती थी, दूर दूर, वहाँ तक देखा।
'सरिता जी कहीं नहीं दिख रही। कहाँ होगी? सपन - निहारिका उसे लेकर तो नहीं गए? मैं सोता रहा और वे दोनों सरिता जी को उठाकर ले गए।'
'नहीं। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। उन दोनों को तो आठ बजे आना था। अभी तो?' शैल ने समय देखा।
'अभी तो छ: भी नहीं बजे हैं। यहीं कहीं होंगी। चलो जाकर देखता हूँ।'

शैल किसी एक दिशा में चलने लगा।
‘नहीं। इस दिशा में नहीं। या तो गाँव में ढूँढना है या नदी के तट पर। मैं गाँव की तरफ ही जाता हूँ।’
शैल गाँव की तरफ चलने लगा। तभी किसी ने उसका नाम पुकार, “शैल, शैल।”
शैल रुका। ध्वनि की दिशा में देखा।
अर्ध प्रकाश में एक युवा दृष्टिगत गुआ। उसने अंगवस्त्र से अपना शरीर ढंका था। अंगवस्त्र और शरीर भीगे थे। वह थोड़ा कांप रहा था।
“कौन हो तुम? क्या बात है?”
वह कुछ नहीं बोल सका। वह नदी की तरफ चल पडा। असमंजस के साथ शैल भी उसके पीछे पीछे चलने लगा। शैल बार बार पूछने लगा कि क्या बात है? तुम कौन हो? उस पर वह मौन ही रहा, चलता रहा।
दो सौ चरण चलने पर वह रुक गया। उसने एक दिशा में संकेत कर वहाँ देखने को कहा। शैल अचंभित रह गया। नदी के तट पर अचेत सी अवस्था में सरिता लेटी हुई थी। देखते ही शैल सारी बात समझ गया। वह दौड़ा। सरिता के समीप जाकर उसके नाक पर ऊँगलीयां रख दी। उसे संतुष्टि हो गई कि सरिता अभी जीवित है, साँसे ठीक चल रही हैं।
शैल ने युवक की तरफ देखा, आँखों से प्रश्न किया किन्तु वह मौन रहा। शैल उत्तेजना से युवक की तरफ बढ़ा, वह दो चरण पीछे हट गया। शैल ने उसे पकड़ा और पुन: पूछा, “क्या हुआ है इसके साथ? जो भी हो पूरी पूरी बात बताओ।”
युवक ने उत्तर नहीं दिया। वह बोलना चाहता था किन्तु बोल न सका।

[59]

“ओह प्रभु। यह कैसे हो गया?”
वह सरिता की तरफ मुड़ा। उसे सचेत करने का प्रयास करने लगा। कुछ प्रयासों के पश्चात वह रुक गया। युवक अभी भी वहीं खड़ा था। अभी भी सूर्योदय नहीं हुआ था किन्तु प्रकाश में थोड़ी वृद्धि हो गई थी।
शैल ने युवक को ऊपर से नीचे तक देखा। पूरा निरीक्षण किया, “तुम कौन हो? यहाँ क्या कर रहे थे?”
युवक ने मंद स्वर में धीरे धीरे बोलना प्रारंभ किया, “मैं यहाँ के मंदिर के पुजारी का पुत्र हूँ। प्रात: काल मैं ब्रहम स्नान के लिए नदी में उतरा तब मैंने इन्हें देखा। वह डूब रही थी। उसे बचाकर मैं यहाँ ले आया। तब वह सचेत थी। आपका नाम लेकर, आपकी दिशा में संकेत कर रही थी। पश्चात शीघ्र ही वह अचेत हो गई। आपको ढूँढता हुआ मैं आपके पास आ गया।”
‘ओह, यह बात है? इतनी भोर में सरिता जी नदी में क्यों गई? कहीं उनका पैर तो फिसला नहीं था?’
शैल स्वयं से बात कर रहा था तभी सरिता ने कहा, “शैल, तुम आ गए?”
शैल सरिता की तरफ मुड़ा। सरिता आँखें खोल कर तट पर बैठ गई थीं।
“हे मैया, तुमने सरिता जी को बचा लिया।” शैल ने सतलज नदी का अभिवादन किया, धन्यवाद किया।
“मैया की कृपा से आप सुरक्षित हैं। क्या हुआ था आपके साथ? यह हुआ कैसे?”

“बताती हूँ, शैल। बैठो यहाँ।” शैल बैठ गया। “आप भी बैठिए।” युवक भी बैठ गया।
“कल रात सपन निहारिका की बातें सुनकर मैं विचलित हो गई थी। मैं अपना धैर्य खो बैठी थी। रात्री भर उन्ही विचारों से ग्रस्त रही। लाख प्रयास करने पर भी मुझे निद्रा नहीं आई। तब मन में विचार आया कि सारी समस्याओं का मूल मेरा यह शरीर ही है। शरीर है तो कष्ट है, पीड़ा है, अपमान है, सपन-निहारिका -नदीम की कुदृष्टि है। शरीर है तो उसे ही पाकिस्तान जैसे नरकागार में लौटना है। यदि यह शरीर ही न रहे तो सारी समस्याएं भी नहीं रहेगी। ऐसा विचार कर मैं नदी में डूब जाने का निश्चय कर बैठी। रात्री के अंतिम प्रहर में जब मैंने देखा कि तुम गहन निद्रा में हो, नदी में डूबकर आत्महत्या करने चल पड़ी। नदी की गहराई में जाने लगी। प्रवाह के कारण मैं पानी में ही गिर पड़ी। बहने लगी। तभी सांसें रुँधने लगी। उसे मैं सह न सकी। मैं बचने के लिए प्रयास करने लगी। तभी इस युवक ने आकर बचा लिया। वह मुझे तट तक ले आया। यहाँ आकर मैं लेट गई। मैंने उसे तुम्हारा नाम देकर संकेत किया कि वह तुम्हें लेकर आए। तुम्हारे आने से पूर्व ही मैं अचेत हो गई। आप दोनों की बातें मेरे अचेत कानों पर पड रही थी और धीरे धीरे मैं सचेत होने लगी।”
“अब आप पूर्ण सचेत हैं न?”
“हां, हां।”
“थोड़ा विश्राम कर लो, पश्चात चलते हैं।”
“आप दोनों अविलंब यहाँ से दूर कहीं चले जाओ। मैं जानता हूँ कि सपन और निहारिका बड़े ही धूर्त हैं। उनके साथ आपका जाना ठीक नहीं। सारा गाँव रात्री से ही जान गया है कि आप उनके साथ जाने वाली हो।”
“सरिता जी, यह युवक ठीक कह रहा है। हमें यहाँ से शीघ्र ही चलना होगा, उठो।”
दोनों उठे।
“सरिता जी, कितना भी कष्ट क्यों न हो, कभी आत्महत्या नहीं करनी है। भगवान ने जो यह शरीर दिया है उसके द्वारा उसकी कोई न कोई योजना होती है। भगवान की योजना का विरोध नहीं करते हैं। यह शरीर बड़ा मूल्यवान है। इसकी सुरक्षा करें, इसका सम्मान करें।”

“क्या है इस शरीर में विशेष? गिद्ध जैसे मनुष्य इस शरीर को छिन्न भिन्न करने के लिए लालायित हैं। मैं तो इस शरीर का मूल्य नहीं जानती, तुम तो विद्वान हो। तुम बताओ इस शरीर का क्या मूल्य है?”
“इस विषय में चर्चा करने का यह समय नहीं है। आपको यहाँ से त्वरित निकलना चाहिए। वैसे यह विषय बड़ा गहन है। मेरे पिताजी बड़े शास्त्रज्ञ हैं।”
“तो ले चलो उसके पास।”
“पिताजी काशी गए हैं। बीस दिन पश्चात लौटेंगे।”
“अभी कैसे जानूँगी इस शरीर का मूल्य?”
“किसी शास्त्र के जानकार से यह प्रश्न करना। उचित उत्तर मिल जाएगा। तब तक अपने शरीर को संभाल कर रखना।”
“अब इस समय शास्त्रज्ञ को कहाँ ढूंढें?”
“यह समय यहाँ से दूर कहीं भाग जाने का है। अभी आठ बजने में समय है। आप दोनों पूर्व दिशा में थोड़ा चलकर जाइए। पश्चात गहन जंगल आएगा। उसमें नदी के प्रवाह से बनी कंदराएं हैं। उनमें से किसी में छिप जाना। गाँव की दृष्टि से, सपन निहारिका की दृष्टि से बचने का यही उपाय है।”
दोनों ने हाथ जोड़कर ब्राह्मण युवक का धन्यवाद किया। युवक चला गया।
“चलो सामान ले लो। भाग जाते हैं।”
“नहीं सरिता जी। सामान यहीं रहने दो। रुपये और मोबाइल साथ ले लो। बाकी सब यहीं छोड़ दो।”
“सामान क्यों छोड़ना है? बिना सामान हम क्या करेंगे?”
“अभी समान की चिंता छोड़ो। जीवित रहेंगे तो नया समान खरीद लेंगे।”
“इसे कहीं छिपा देते हैं।”
“इसे यहीं रहने दो। सामान देखकर वे दोनों को भ्रम रहेगा कि हम दोनों यहीं कहीं हैं। वे हमारी प्रतीक्षा करते रहेंगे और हम कहीं दूर निकाल जाएंगे।”
“तुम्हारी यह योजना अच्छी है।”
“किन्तु...।”

[60]

“चलो।” दोनों दौड़ने लगे।

“शैल, हमें पूर्व की दिशा में जाना था। हम कहीं ओर भाग रहे हैं।”

“भागने में यह तो ध्यान ही नहीं रहा।”

दोनों मुड़े, पूर्व दिशा में दौड़ते गए। एक घंटे के पश्चात वे गहन जंगल के मुख पर आ गए।

“यह जंगल तो अत्यंत घना है।”

“जंगली पशु भी होंगे इसमें।”

“पशु हिंसक होंगे?”

“सरिता जी, हिंसक पशु पहले स्त्रियों का शिकार करते हैं। पश्चात पुरुषों का।”

“तुम मुझे भयभीत कर रहे हो।”

“क्यों? अब आपको अपने शरीर से मोह होने लगा है क्या? अभी तो उसे नष्ट करने के लिए उतावली होकर नदी में कूद पड़ी थीं आप।”
“शैल, यह समय तुम्हारे वागबाणों का नहीं है। जब कभी खाली समय मिले तब ऐसे व्यंग करना।”
“मैं तो थोड़ा हास परिहास कर रहा था।”
“ठीक है, अब चलो। किसी उचित कन्दरा को खोजो, हमें उसमें छिपना है।”
दोनों ने जंगल में प्रवेश किया। नदी के प्रवाह की ध्वनि, स्वयं के पदचाप। अन्य कोई ध्वनि नहीं थी वहाँ। किसी पशु पक्षी का स्वर भी नहीं सुनाई दे रहा था। सहसा एक स्थान पर सरिता रुकी।
“शैल, वहाँ देखो। कन्दरा जैसा कुछ है।”
“चलो देखते हैं।”
वहाँ एक गहरी, मोटी कन्दरा दिखाई दी।
“यह तो बड़ी विशाल है, गहरी भी खूब है। क्या यह हमारे लिए सुरक्षित रहेगी?”
शैल ने कन्दरा को ध्यान से निरखा, परखा, “इसमें हम छिप भी जाएंगे और हवा और प्रकाश भी मिलता रहेगा। तो यही ठीक है।”
“कब तक यहाँ छिपे रहेंगे?”
“मैं नहीं जानता, सरिता जी।”
“तो?”
“इस कन्दरा की यात्रा की कोई रूपरेखा बनाकर मैं थोड़े ही आया हूँ कि बता सकूँ कि यहाँ कितने दिन रुकेंगे? क्या खाएंगे? क्या क्या देखेंगे? कहाँ कहाँ घूमेंगे?”
“अरे ! अरे ! शैल? तुम तो ...।”
“मैं तो परिहास कर रहा था। इस भाग दौड़ वाले समय में थोड़ा हंसने हँसाने का प्रयास कर रहा था।”
“अब भीतर चलो। देखते हैं कि यहाँ क्या क्या हो सकता है।”
दोनों भीतर घुसे, चलने लगे। नदी का पानी यहाँ भी आ रहा था। किसी पत्थर से पानी टपक रहा था, जैसे कन्दरा में कोई झरना हो। कन्दरा के भीतर पानी में चलने से दोनों के पैरों की

ध्वनि उठ रही थी उसे सुनते हुए शैल ने कहा, “पानी में हमारे पदचाप से उत्पन्न ध्वनि से क्या अनुभव हो रहा है?”
“मुझे तो यह ध्वनि कर्कश लग रहा है। तुम्हें?”
“मुझे तो लग रहा है जैसे कोई जल तरंग बजा रहा हो। कितना मधुर, लयबद्ध, तालबद्ध ध्वनि है यह? हैं न?”
“गंभीर स्थितियों में भी तुम ऐसी कल्पना कैसे कर लेते हो, शैल?”
“मैं जानता हूँ कि यह समय कठिन है। ऐसे समय के साथ रहने का कोई अन्य उपाय है क्या?”
“मैं नहीं जानती।”
“मैं जानता हूँ कि यही एक मात्र उपाय है कि मन को स्थिर रखकर आ पड़े समय से जो कुछ भी सकारात्मक प्राप्त हो उस क्षण को पकड़कर प्रसन्न रहो, आनंद में रहो।”
“बड़े तत्व ज्ञानी बन रहे हो आज?”
“इसे प्रेरक वक्ता [motivational speaker] कहते हैं, तत्वज्ञानी नहीं।” अपनी ही बात पर हंस पडा शैल। उस हास्य का प्रतिघोष करते हुए पूरी कन्दरा भी हंस पड़ी। दो चार पक्षी कन्दरा से उड़कर बाहर चले गए।
“सरिता जी, इन पक्षियों को अभी अभी यहाँ से उड़कर बाहर जाते देखा आपने?”
“देखा। तुम ऐसे हँसोगे तो पक्षी क्या, भीतर जो कोई भी होगा वह भी बाहर निकल आएगा।”
“यह भी संभव है।”
“संभव नहीं, सत्य है शैल।”
“सत्य कुछ भिन्न भी हो सकता है।”
“क्या है वह?”
“उन पंखियों ने हमारे लिए कन्दरा खाली कर दी हो।”
इस बात पर सरिता हंस पड़ी।
“इसी प्रकार हँसते रहना है। कठिनाइयों को परास्त करते रहना है।”
“मैं प्रयास करूंगी।”
“यह हुई न बात?”

{}{}{}{}{{}}}}}}

“अधिक समय बित गया है, शैल। मैं जाकर बाहर देखती हूँ। यदि सब सुरक्षित लगे तो यहाँ से निकल चलते हैं।”
“आप यहाँ रुकिए, मैं देखकर आता हूँ।”
“दोनों साथ ही चलते हैं।”
दोनों धीरे धीरे सतर्क होकर कन्दरा के मुख की ओर चलने लगे।
“शैल, हमें हमारे पदचाप की ध्वनि को नियंत्रित करना होगा। यह ध्वनि कन्दरा से बाहर नहीं जानी चाहिए।”
“आप ठीक कह रही हैं।” दोनों ने गति मंद की और पदचाप ध्वनि को यथा संभव सूक्ष्म रखते हुए चलने लगे। कन्दरा के मुख से चालीस पचास फिट की दूरी पर जाकर रुक गए।
“सरिता जी, यहाँ इतना पानी क्यों है? जब हम भीतर आए थे तब तो इतना पानी नहीं था।”
“हाँ, तब अल्प पानी ही था। यह पानी नदी का ही है। नदी कन्दरा के भीतर प्रवेश कर गई है। हो सकता है यह ज्वार का समय हो।”
“ज्वार भाटा सागर को लागू होता है, किसी स्वतंत्र नदी को नहीं।”
“तुम ठीक कह रहे हो।”
“देखो, जल स्तर अधिक है, बढ़ता भी जा रहा है। उसे पार कर जाना संभव नहीं है।”
“बढ़ते जल से हमें स्वयं को बचाना होगा।”
“सरिता जी, पीछे हटो। कंदरा के भीतर लौट जाओ। नदी का पानी भीतर ही आ रहा है।”
“हमें पीछे ही हटना होगा।” जल कन्दरा के भीतर, अधिक भीतर प्रवेश करने लगा। दोनों बलात पीछे हटने लगे। वे जैसे जैसे पीछे हटते, वैसे वैसे नदी कन्दरा के भीतर आती रही। दोनों अधिक भीतर चले गए।
“अब यह पानी इससे आगे आ जाएगा तो हमें यहाँ रुकने में भी समस्या होगी। कुछ उपाय खोजों, शैल।”
शैल ने कन्दरा में विहंग दृष्टि डाली। एक कोने में एक बड़ी शीला दिखाई दी।
“आओ, इस शीला पर चड जाते हैं। यहाँ तक पानी नहीं आना चाहिए।”

दोनों त्वरित ही शीला पर चड गए। बढ़ते हुए जल स्तर को शून्यमनस्क भाव से देखते रहे।
“अब तो भूख भी लगी है और खाने के लिए भी कुछ नहीं है।” सरिता की बात सुनकर शैल ने कन्दरा में कुछ ढूँढना चाहा।
“यहाँ फल होने की संभावना नहीं दिखती है।”
“तो क्या करेंगे?”
“वहाँ देखो। कुछ मछलियाँ हैं। आप उन्हें पकड़कर खा लो।”
“और तुम?”
“मैं मछलियाँ नहीं खाता। शुद्ध शाकाहारी हूँ। आप मेरी चिंता न करें। आप खा लीजिए।”
सरिता कुछ समय मछलियों को देखती रही। “शैल, जीवन टिकाने के लिए कभी कभी यह भी खाना पड़ता है।”
“मैं अपने जीवन की रक्षा के लिए अन्य जीवों के जीवन को नहीं छिन सकता। यह सनातन संस्कृति है। अत: मेरी चिंता छोड़कर आप अपना भोजन कर लें।”

[61]

सरिता शीला से उतरने ही वाली थी कि सहसा रुक गई। शैल के तर्क ने उसके चित्त को विचार करने के पर विवश कर दिया। सोचने लगी, ‘सनातन विचारधारा कितनी विशाल और गहन है! अब तो मैं भी मुस्लिम सारा से सनातनी सरिता बन चुकी हूँ किन्तु अभी मेरा वह मुस्लिम संस्कार नष्ट न होने से मैं मछलियाँ खाने को तत्पर हो गई। मुझे उन संस्कारों का त्याग करना

होगा। जब तक वे संस्कार रहेंगे, मैं सनातनी कैसे बन सकती हूँ। सारा से सरिता कैसे बन सकती हूँ?'

"मैं भी मांसाहार नहीं करूंगी। कभी नहीं। इसी समय से मैं उसका त्याग करती हूँ।"

"ऐसा क्या हो गया, सरिताजी?"

"मुझे स्मरण हो आया कि अब मैं सनातनी हूँ, मुस्लिम नहीं। इस स्मरण मात्र से मेरे मुस्लिम संस्कार नष्ट हो गए और सनातनी संस्कार जाग गए हैं।"

"वाह, सरिताजी। ईश्वर आपका कल्याण करे।"

"पानी का स्तर घटने के पश्चात हम कुछ प्रयास करेंगे, कदाचित कुछ प्राप्त हो जाय। अन्यथा ...।" सरिता रुक गई।

"अन्यथा क्या?"

"उपवास कर लेंगे।"

दोनों हंस पड़े। तभी कुछ पक्षी कन्दरा के भीतर उड़कर आ गए। पानी पर बैठ गए और जल क्रीडा करने लगे। दोनों उन्हें ध्यान से देखने लगे। कुछ समय क्रीडा करके पक्षी उड गए तब उनका ध्यान भंग हुआ।

"देखो, पानी उतर चुका है।"

"नदी का पानी पुन: नदी में लौट गया है क्या?"

"चलो आगे जाकर देखते हैं।"

दोनों कन्दरा के मुख के प्रति चलने लगे। उन्होंने देखा कि नदी का पानी अब अल्प मात्रा में ही शेष था। दोनों कन्दरा से बाहर आ गए।

"कहाँ चला गया इतना सारा पानी? कहाँ से आया था? वर्षा भी नहीं हुई है!"

"नदी ने स्वयं को समेट लिया है। हाँ, वर्षा तो नहीं हुई है।"

"चलो आसपास देखते हैं। फल के वृक्षों पर दृष्टि बनाए रखना। खाने लायक कुछ अवश्य मिल जाएगा।"

वृक्षों को देखते देखते दोनों चल रहे थे तभी सहसा शैल गिर पडा।

"क्या हुआ शैल?"

"ठोकर लगी है।"

सरिता शैल के समीप गई, “चोट लगी है क्या?”
“है थोड़ी सी।”
“थोड़ा विश्राम कर लो। पश्चात आगे बढ़ते हैं।” सरिता भी वहीं बैठ गई। शैल का ध्यान अपनी चोट पर था, सरिता आसपास निरीक्षण कर रही थी। एक स्थान पर जाकर उसकी दृष्टि स्थिर हो गई।
“शैल, वहाँ देखो। किसी गाड़ी के पहिये के निशान लग रहे हैं, हैं न?”
“कोई बड़ी गाड़ी इस मार्ग से निकली है।”
“और वह भी अभी अभी। यह निशान ताजा हैं।”
“जब हम कन्दरा में घुसे थे तब यह निशान नहीं थे। अर्थात कोई हमें ढूंढते हुए यहाँ से गया है।”
“क्या?”
“हाँ सरिता जी।”
“तो उठो, भागों। चलो पुन: कन्दरा में घुस जाओ।”
“चलो।“” दोनों भीतर जाने लगे।
“वहाँ उस वृक्ष पर कुछ फल है, तोड़ते चलते हैं। खाने योग्य होंगे तो कन्दरा में जाकर खाएंगे नहीं तो नदी का पानी ही पी लेंगे।”
“एक बात समज में आई शैल?”
“कौन सी बात?”
“यह फल खाने योग्य नहीं है।”
“वह तो ठीक है। और कुछ?”
“जब हम कन्दरा से बाहर निकलने का प्रयास कर रहे थे, जब नदी ने हमारा मार्ग अपने जल स्तर से रोके रखा था, ठीक उसी समय वह गाड़ी यहाँ से निकली होगी।”
शैल ने विचार किया, गणना की और अनुमान लगाया, “गाड़ी के यहाँ से जाने का समय ठीक वही होना चाहिए।”
“अर्थात…कुछ समझे?”
“नहीं।”

“समजाती हूँ। जब गाड़ी यहाँ से निकल रही थी, हम भी उसी समय कन्दरा से बाहर जाने का प्रयास कर रहे थे। यदि नदी ने हमारा मार्ग न रोका होता तो?”
“तो हम पकड़े जाते। हैं न?”
“यही तो। न कोई वर्षा, न कहीं से अतिरिक्त पानी आया। तथापि नदी ने अपने जल स्तर को बढ़ाया और उस जल स्तर से हमें रोके रखा। जब तक गाड़ी यहाँ से दूर न चली गई, नदी हमारे मार्ग की बाधा बनकर कन्दरा में रही।”
“जब संकट टल गया तो ...।”
“मार्ग खोल दिया नदी ने।”
“नदी ने ऐसा कैसे किया? क्यों किया?”
“नदी नहीं, मैया कहो, मैया। मैया ने हमें बचाने के लिए ही कन्दरा को पानी से भर दिया। न हम बाहर जा सकें, न कोई भीतर आ सके। कन्दरा को पानी से भरा देखकर किसी ने उसमें प्रवेश करने की न चेष्टा की होगी न साहस।”
“और हम बच गए।”
“मैया ने हमें बचाया है। धन्य हैं आप माता शुतुद्री।”
“शुतुद्री नहीं, सतलज नाम है मैया का।”
“मैया का मूल नाम शुतुद्री है।“”
दोनों ने मैया को हाथ जोड़े।
“जय मा शुतुद्री।”

[62]

नदी का जल पीकर दोनों ने भूख को शांत करने का प्रयास किया।
“शैल, अब हमें आगे क्या करना चाहिए?”
“मैं भी यही विचार में हूँ। कुछ तो करना पड़ेगा।”
“मैं भी कुछ सोचती हूँ।”
कुछ मौन क्षणों के पश्चात, “शैल, कुछ उपाय मिला क्या?”
“एक ही उपाय है। समय की भी यही इच्छा है कि कुछ समय तक हमें यहाँ से कहीं दूर, किसी अज्ञात स्थान पर चला जाना चाहिए। हमें ऐसे के अज्ञातवास में जाना चाहिए जहां सभी के लिए हम अपरिचित हों, अज्ञात हों।”
“हाँ यह ठीक है। कुछ समय हम अपनी गतिविधियों से दूर रहेंगे तो सपन - निहारिका की दृष्टि से दूर हो जाएंगे। जब तक वे हमारे पीछे हैं, हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते। तो कहाँ चलना है हमें?”
“इस ‘कहाँ’ का उत्तर ही तो खोजना है।”
दोनों पुन: मौन हो गए। दोनों के मन में बीते दिनों की घटनाएं रम रही थीं।
“सरिता जी, उस ब्राह्मण युवक ने क्या कहा था, जिसने तुम्हें बचाया था?”
“क्या कहा था?”
“शरीर को नष्ट नहीं करो, शरीर मूल्यवान है।”
“हाँ। अभी इसका क्या है?”
“उसने यह भी कहा था कि शरीर के मूल्य के विषय में उसके पिता जानते हैं।”
“किन्तु उसके पिता तो गाँव से बाहर हैं।”
“उसी गाँव में सपन और निहारिका रात्रीभर रहे हैं।”
“उसने यह भी कहा था कि किसी शास्त्र के जानकार व्यक्ति से इस विषय में पूछना, वह बता सकता है।”
“किन्तु ऐसा शास्त्रों का जानकार कौन है, जिसके पास जाकर हम यह जान सकें?”
“मानो कि हमने ऐसे शास्त्रज्ञ से भेंट भी कर ली और हमने अपना परिचय उन्हें दिया और उसने सपन निहारिका को वहीं बुला लिया तो? तब क्या होगा इसका विचार किया है?”

“हमें ऐसे व्यक्ति के पास जाना होगा जो शास्त्रज्ञ हो और हमारे मिलन की बात किसी को भी न कहे।”
“ऐसा कौन है, शैल?”
“है, एक व्यक्ति है जो शास्त्रज्ञ भी है और हमारा भेद भी प्रकट नहीं करेगा।”
“कौन है वह, शैल?”
“वत्सर!”
“क्या? वत्सर?”
“हाँ, सरिता जी। वह अवश्य शास्त्रज्ञ है।”
“तुम्हें कैसे ज्ञात हुआ कि वह शास्त्रों का ज्ञाता है?”
“न्यायालय की प्रक्रिया का स्मरण करो। जब राधा के अस्तित्व पर तर्क वितर्क चल रहे थे तब उसने सारे के सारे तर्कों को कैसे काट डाला था? उसने अपनी सारी बातें शास्त्रों के प्रमाण के आधार पर रखी थी। कपिल, स्वामीजी, कथाकार सब के सब उसके तर्क के सामने मौन हो गए थे।”
“यहाँ तक कि न्यायाधीश की पत्नी और बेटी भी वत्सर के तर्कों का उत्तर न दे सके थे।”
“और अंत में स्वयं न्यायाधीश भी वत्सर के तर्क को स्वीकार करने पर बाध्य हो गए थे।”
“यह सब तो मुझे स्मरण है शैल, किन्तु क्या वत्सर हमारी सहायता करेगा? कुछ समय तक हमें आश्रय देकर हमारे अज्ञातवास का स्वीकार करेगा?”
“क्यों नहीं करेगा?”
“हम पुलिसवाले हैं। हमने ही उसे मीरा की घटना में घसीटा था। न्यायालय में पुलिस ने ही उस पर मीरा हत्या का अभियोग चलाया था। इतना सब होने के पश्चात भी क्या वत्सर हमें आश्रय देगा?”
“मीरा घटना में हमने ही उसे घसीटा था किन्तु वह तो येला ने ही हमें उस शिल्प की बात कहकर प्रेरित किया था। दूसरी बात, वत्सर पर न्यायालय में अभियोग हमने नहीं नदीम - राहुल -सोनिया ने मिलकर किया था।”
“उन तीनों का नाम ही न लेना, शैल।”
“ठीक है, नहीं लूँगा।”

“तो चलें वत्सर के पास?”
“शैल, क्या उचित रहेगा? वत्सर के पास जाना या येला के पास?”
“येला के पास क्यों, सरिता जी? वह थोड़ी शास्त्रज्ञ है?”
“वत्सर येला की बात नहीं टालता। येला के पास जाकर उसे सब बात बता देते हैं। येला के ऊपर तो कभी किसी ने कोई अभियोग नहीं किया था। वह अवश्य हमारी सहायता करेगी ऐसा मेरा विश्वास है।”
“सरिता जी, येला के पास जाने में एक भयस्थान है।”
“क्या?”
“सपन येला की शिल्पशाला में आता जाता रहता है। शिल्पकार जो है वह। वहाँ वह हमें देख सकता है। हमारा अज्ञातवास भंग हो सकता है।”
“तब तो वत्सर के पास जाना ही उचित रहेगा।”
“चलो, यहाँ से भागो। जहां से जो साधन मिले, सीधे वत्सर के पास जाते हैं।”

()()*()*()

यात्रा के विविध साधनों की सहायता से चार दिनों की यात्रा के पश्चात शैल और सरिता वत्सर के गाँव आ पहुंचे।
“शैल, अभी तो दोपहर हो रही है। मंदिर बंद कर के वत्सर चला गया होगा। हमें उसके घर का ठिकाना ज्ञात नहीं है।”
“सरिता जी, वत्सर का घर भी वही है, मंदिर भी वही है।”
“यदि वह सो रहा होगा या गाँव से बाहर होगा तो हम क्या करेंगे?”
“आपको इसकी चिंता नहीं करनी है। लीजिए, प्रसाद ग्रहण कीजिए। हाथ पाँव धो लीजिए। पश्चात मंदिर के भीतर आ जाना। भोजन आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।” दोनों का स्वागत करते हुए वत्सर ने कहा।
“वत्सर!” दोनों आश्चर्य से बोल पड़े। वत्सर मौन ही मंदिर में प्रवेश कर गया। दोनों ने हाथ पाँव धोए, मंदिर में प्रवेश किया।

“बैठिए। मंदिर का यह प्रसाद है आपके लिए। इसे ग्रहण कीजिए।”
दोनों बैठ गए, मौन होकर भोजन करने लगे। क्षुधा तृप्त हो गई। मंदिर से बाहर आ गए। वत्सर वहीं था। दोनों ने वत्सर को देखा, उसके मुख के भाव पूर्णत: स्थिर थे। अधरों पर मंद हास था। आँखों में तेज था। शैल और सरिता के मुख पर प्रश्न थे।
‘हमें यहाँ देखकर वत्सर के मन में, मुख के भावों में आश्चर्य होना चाहिये था, प्रश्न होने चाहिए थे। जिज्ञासा, कुतूहल, चिंता भी होनी चाहिए थी। वह तो कितना शांत है! हमारे आगमन से उसे कोई विस्मय नहीं हुआ है। उल्टा हमारे मुख पर वत्सर को देखकर प्रश्नों के भाव प्रकट हो रहे हैं।’
उसने सरिता की तरफ देखा। उसके मुख पर भी कदाचित वही भाव थे। कुछ मौन के बितने पर सरिता ने कहा, “वत्सर, हमें यहाँ देखकर तुम्हारे भीतर कोई विपरीत भाव नहीं जागा। क्यों?”
वत्सर ने स्मित दिया। “बैठिए सारा जी। शैल आप भी।”
“नहीं, अब मैं सारा नहीं हूँ।”
“अब इनका नाम है सरिता जी।”
“वह कैसे?” वत्सर ने पूछा।
“पूरी बात बताता हूँ। प्रथम सरिता जी के प्रश्न का उत्तर दो। हमें देखकर तुम्हें कोई विपरीत भाव नहीं हुआ क्या? मन में घृणा नहीं जागी? क्रोध नहीं आया? तिरस्कार करने के स्थान पर तुमने हमारा स्वागत कैसे कर लिया? कैसे जान लिया कि हम भूखे हैं? कैसे, वत्सर कैसे?”
“इतने सारे प्रश्नों का एक ही उत्तर है।” वत्सर ने कृष्ण की तरफ संकेत किया। दोनों ने कृष्ण को देखा।
“बस, यह सभी कृष्ण की माया है, जिसे हम मनुष्य लीला कहते हैं।”
दोनों ने वत्सर को देखा। ‘कितना निर्लेप है यह व्यक्ति!” दोनों ने मन ही मन परस्पर बात की।
“आप लंबी यात्रा करके आए हैं, थके होंगे। विश्राम करना चाहोगे?”
“विश्राम नहीं करना है, तुमसे बात करनी है।” सरिता ने कहा।
“हमारी बात सुनने को तत्पर हो? या कोई अन्य व्यस्तता है, वत्सर?”
“कोई व्यस्तता नहीं है, मैं तत्पर हूँ। कहिए।”
“हम तुमसे सहायता चाहते हैं। क्या तुम हमारी सहायता करोगे?”

“सरिता जी, मैं क्या सहायता कर सकता हूँ आप जैसे पुलिस अधिकारियों की?”
“अब हम पुलिस अधीकारी नहीं हैं। इसीलिए तुम्हारे पास आए हैं।”
“शैल, पूरी बात कहो, विस्तार से कहो। अभी तो मुझे कुछ समज नहीं आ रहा।”
“मैं बताती हूँ। तुम्हारे जाने के पश्चात हमने पुन: पुलिस अधीकारी का पद ग्रहण कर लिया। पश्चात ...।” सरिता ने सारी बातें वत्सर को बता दी।
“और हम अपना जीव बचाकर, सारा सामान वहीं छोड़कर यहाँ चले आए।”
“हमें और कोई सुरक्षित स्थान ध्यान में नहीं आया। हमें लगा कि यही एक स्थान है जहां आश्रय भी मिलेगा, सुरक्षा भी मिलेगी और सहायता भी। कहीं हमारा आकलन मिथ्या तो नहीं, वत्सर?”
“अब हम तुम्हारे आश्रित हैं। हमारे साथ तुम जो व्यवहार करना चाहो, कर सकते हो।”
“सरिता जी, शैल जी। यह स्थान तो स्वयं भगवान श्रीकृष्ण का स्थान है। अब जो भी होगा, स्वयं कृष्ण ही हमें मार्ग दिखलाएंगे। सारी चिंता, सारे प्रश्न, सारी शंकाएं उन्हें सौंप देते हैं। वही उसका समाधान करेंगे। यहाँ कृष्ण की शरण में रहिए और प्रतीक्षा करें। यहाँ आप सुरक्षित हैं।”
“कब तक?”
“जब तक कृष्ण हमें कुछ करने का संकेत न दे तब तक, सरिता जी।”
“जैसी कृष्ण की इच्छा।”

[63]

संध्या आरती सम्पन्न हो गई। वत्सर ने ढलते सूर्य की साक्षी में कृष्ण के लिए बाँसुरी बजाई। सरिता - शैल उसे एक चित्त से सुनते रहे। जब वत्सर ने वंशी वादन सम्पन्न किया तो शैल का चित्त भंग हुआ। वास्तव की धरातल पर वह आ गया। किन्तु सरिता अभी भी आँखें बंद कर स्थिर बैठी थी। जैसे अभी भी उसे बाँसुरी के सुर सुनाई दे रहे हो, वह उसमें एकाग्र होकर खोई हुई हो। शैल ने उसकी अवस्था भंग करने की इच्छा से सरिता को जगाना चाहा किन्तु वत्सर ने उसे रोक लिया। शैल रुक गया, सरिता की समाधि के सम्पन्न होने की प्रतीक्षा करने लगा। वत्सर ने मंदिर की शेष क्रियाओं को सम्पन्न किया। भगवान कृष्ण के शयन हेतु गर्भ द्वार बंद कर दिए। द्वार बंद होते ही सरिता अपने भाव विश्व को छोड़कर लौट आई। उसके मुख पर प्रसन्नता थी।

“सरिता जी, कहाँ खो गई थी? बाँसुरी तो कब की बंद हो चुकी है।”

“शैल, मुझे तो अभी भी दूर दूर बाँसुरी के सुर सुनाई दे रहे हैं। ध्वनि मंद है किन्तु उसे सुन सकूँ इतनी स्पष्ट है। तुम्हें सुनाई दे रही है? ध्यान से सुनो।”

“क्या?” शैल ने भी एकाग्र होकर बाँसुरी के सुरों को सुनने का यत्न किया। “मुझे तो कोई स्वर नहीं सुनाई दे रहे हैं।”

“शैल, कोई स्वर नहीं सुनाई देगा क्यों कि बाँसुरी के सभी सुर शांत हो गए हैं।”

“तो सरिता जी को क्या कोई भ्रम?”

“नहीं, उन्हें कोई भ्रम नहीं हो रहा है।”

“वत्सर, यह मेरा भ्रम है या सत्य? क्या है यह?”

“न तो भ्रम है यह न सत्य। यह एक सापेक्ष घटना है।”

“यह क्या होता है?”
“सारा से सरिता बनने के पश्चात आपका यह प्रथम कृष्ण मिलन है। अत: स्वयं कृष्ण आपके भीतर बसकर अभी भी आपको बाँसुरी के सुरों का अनुभव करा रहे हैं। वास्तव में तो वह कब के सम्पन्न हो चुके हैं।”
“क्या यह संभव है?”
“जो बात हमारी समज के वृत्त से बाहर की होती है वह हमें असंभव लगती है। किन्तु वह संभव होती है। हमारी बुद्धि का विस्तार अति अल्प है। उससे बाहर का व्याप अनंत होता है। अनंत का वह विस्तार अनंत संभावनाओं से भरा होता है, जो हमें असंभव स प्रतीत होता है।”
“तुमने कुछ गहन बात कह दी, वत्सर। तुम कितने ज्ञानी हो!”
“शैल, मैंने कहा था न कि वत्सर शास्त्रों का ज्ञाता है। हमारे मन की उस शंका का समाधान वत्सर त्वरित कर देगा।”
“कौन सी शंका? मैं कोई शास्त्रज्ञ नहीं हूँ।”
“हम तो मानते हैं कि तुम शास्त्रों के ज्ञाता हो। तुम्हारा ज्ञान उच्च है। अत: हमारे प्रश्नों के उत्तर भी तुम से ही अपेक्षित है। क्या उस प्रश्न को पुछ लें?”
“शैल, पुछ ही लो। अब विलंब का कोई कारण नहीं है।”
“कौन सा प्रश्न? कैसा प्रश्न? मेरा ज्ञान अत्यंत सीमित है। हो सकता है मैं उत्तर देने में असमर्थ रहूं।”
“हमारा तुम पर पूरा विश्वास है। प्रश्न यह है कि हमारे शरीर का बडा महत्व है ऐसा शास्त्र बताते हैं। तो बताओ कि हमारे शरीर का क्या महत्व है? कितना महत्व है? क्यों महत्व है?”
“ऐसा प्रश्न क्यों?”
“वत्सर, हमने बताया था कि सरिता जी मैया शुतुद्री में स्वयं को समर्पित करके आत्महत्या करने जा रही थी और पुजारी के बेटे ने उन्हें बचा लिया था। तब वह युवक ने कहा था कि मनुष्य के शरीर का बडा महत्व है। उसे ऐसे नष्ट नहीं करना चाहिए। अब बताओ कि हमारे उस नाशवंत शरीर का महत्व क्या है?”
“उसी युवक ने हमें यहाँ तुम्हारे पास आने का मार्ग भी दिखाया था”
“क्या? वह युवक मुझे जानता है? क्या उसने मेरा नाम लेकर आपको यहाँ आने को कहा था?”

“ऐसा सीधे सीधे तो नहीं कहा था।”

“तो कैसे कहा था, शैल?”

“उसने कहा था कि कोई ज्ञानी व्यक्ति ही हमारे शरीर का महत्व बताएगा। बस, हमें तुम्हारा स्मरण हो आया।”

‘सरिता जी, आप मुझे ज्ञानी समजकर यहाँ आए हो?”

“हम नहीं जानते। यहाँ आने के उपरांत हमें कोई और स्थान सुझा ही नहीं।”

“कदाचित विधि का यही विधान हो, यही नियति हो।”

“तो हमें उचित उत्तर दो, वत्सर।”

“चलो, यही कृष्ण की इच्छा होगी। मैं मेरी अल्प मति अनुसार उत्तर देने का प्रयास करूंगा। किन्तु भोजन के पश्चात। आओ, भोजन करते हैं।” सभी ने भोजन किया।

(_)(_)(_)

प्रवृत्ति से निवृत्त होकर तीनों मंदिर के प्रांगण में आकर बैठ गए। सरिता और शैल के प्रश्न का उत्तर देते हुए वत्सर ने कहा, “आपका प्रश्न था कि हमारे शरीर का महत्व क्या है? मूल्य क्या है? हैं न? मैं मति अनुसार उत्तर देने का प्रयास करता हूँ।”

“हमें प्रतीक्षा है, वत्सर।”

“आप यह तो जानते ही हैं कि आप और आपका शरीर दोनों भिन्न है।”

“इस विषय में सुना अधिक है, समझा कुछ भी नहीं। वास्तव में यह है क्या?”

“सरिता जी, हमारे शरीर के भीतर जो रहता है वह हम हैं। हम शरीर की भांति स्थूल रूप में नहीं हैं, हमारा रूप सूक्ष्म है। इसी रूप से हम शरीर को धारण करते हैं। हम सब इतना तो जानते हैं कि हमारा शरीर पाँच महाभूतों का बना हुआ है, पृथ्वी -जल- वायु - अग्नि और आकाश। किन्तु क्या इन पाँच तत्वों को मिला दिया जाए तो शरीर बन जाएगा क्या?”

“ऐसा होता तो प्रयोगशाला में वैज्ञानिकों ने अनेकों शरीर बना डाले होते।” शैल ने कहा।

“तो शरीर कैसे बनता है?”

“सरिता जी, शैल ने कहा वह सत्य है। अभी तक वैज्ञानिक ऐसा नहीं कर पाए। क्यों कि हमारे शरीर में कुल पचीस तत्व विद्यमान होते हैं। इन पचिस तत्वों से ही यह शरीर को हम धारण करते हैं। इनमें से दो तत्व ऐसे हैं जिनके न होने पर यह शरीर अचेत ही रहता है। यह दो तत्व हैं, प्रकृति और पुरुष। प्रकृति का अर्थ है परमतत्व। पुरुष का अर्थ स्त्री और पुरुष वाला पुरुष नहीं है। पुरुष का अर्थ है आत्मा। इन दो तत्व, आत्मा और परमात्मा के बिना शरीर निश्चेत रहता है। यह जो पुरुष है, यह जो आत्मा है वह हम हैं। हमारे साथ परम तत्व प्रकृति भी साथ मिलकर इस शरीर को धारण करता है। यह दो तत्व शरीर को छोड़ देते हैं तब शरीर की मृत्यु हो जाती है।”

“हम और शरीर भिन्न हैं यह सिद्ध हो गया।”

“यही सत्य है, शैल।”

“अन्य तेईस तत्व कौन से हैं?”

“सरिता जी, गिनते रहना। पाँच महाभूत, पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच तन्मात्राएं और मन - बुद्धि -अहंकार। यही हैं तेईस तत्व।”

“मन, बुद्धि, अहंकार और पंच महाभूत के विषय में तो ज्ञान है। कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और तन्मात्राएं? ये क्या है?”

“इसे सरलता से समझते हैं, शैल। प्रारंभ करते हैं कर्मेन्द्रियों से। हाथ, पग, वाक, गुदा और उपस्थ। ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं। जिस इंद्रिय से हम कोई कर्म करते हैं उसे कर्मेन्द्रिय कहते हैं। हाथ से आदान - प्रदान, पग से चलना, वाक से बोलना, गुदा से मल त्याग करना और उपस्थ से जनन करना। इनके यह कर्म हैं।”

“समज में आया।”

“सरिता जी, आपको भी समज आया होगा।” सरिता ने हकार का संकेत किया।

“अब ज्ञानेन्द्रिय की बात करें तो आँख, नाक, कान, जिह्वा और त्वचा। ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय हैं। आँख से देखना, नाक से सूंघना, कान से सुनना, जिह्वा से रस ग्रहण करना और त्वचा से स्पर्श का अनुभव करना। ये सब ज्ञानेन्द्रियों के कार्य हैं।”

“इनको ज्ञानेन्द्रिय कहते हैं यह तो अब जाना।”

“अब बची पाँच तन्मात्राएं। कौन कौन सी हैं? उनके क्या क्या कार्य हैं?”

“सरिताजी, रस, रुप गंध, शब्द और स्पर्श। यह पाँच तन्मात्राएं हैं। इनके कार्य तो सबको विदित है। इस प्रकार हमारे शरीर की रचना होती है। शरीर धारण करने के लिए हमें माता के गर्भ की आवश्यकता होती है। हम अर्थात पुरुष अर्थात आत्मा, प्रकृति के साथ माता के गर्भ में प्रवेश करते हैं। समय आने पर माता के गर्भ से पृथक होकर स्वतंत्र रूप से जन्म लेते हैं।”
“किन्तु हम जन्म क्यों लेते हैं?”

[64]

“सरिता जी, संसार की तीन अवस्थाएं हैं, उत्पत्ति - स्थिति - प्रलय। इन तीनों अवस्थाओं से संसार चक्र चलता रहता है। संसार के चलने के लिए हम जन्म लेते हैं, शरीर धारण करके शरीर के माध्यम से कर्म करते हैं, सुख दु:ख का अनुभव करते हैं, समय आने पर उसी शरीर को त्याग कर चले जाते हैं। प्रत्येक पुरुष को अर्थात आत्मा को किसी न किसी विशेष कार्य के लिए जन्म लेना पड़ता है। मेरे इस शरीर का भी कोई विशेष कार्य हेतु प्रयोजन होगा। आपके शरीर का भी ऐसा ही कोई विशेष प्रयोजन होगा। सभी का कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है।”
“मेरे इस शरीर का प्रयोजन, विशेष प्रयोजन क्या होगा?”
“मुझे तो कोई विशेष प्रयोजन नहीं दिख रहा। मैं तो वही कर रहा हूँ जो सभी मनुष्य कर रहे हैं। जन्म लेना, खाना, संबंध रखना, नौकरी करना, परिवार बनाना, सुख दु:ख भोगना और मर जाना। इसमें विशेष क्या है?”
“शैल, प्रथम दृष्टि से तुम्हारी बात उचित है। मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी बिना प्रयोजन के कुछ भी नहीं करता। सृष्टि के और हम सब के रचयिता ईश्वर क्या किसी प्रयोजन के बिना ही इस सारे संसार को रचकर बैठ गया होगा? कोई तो प्रयोजन अवश्य होगा ही।”
“मान लिया। किन्तु वह प्रयोजन है क्या? हमें कैसे ज्ञात होगा कि हम किस प्रयोजन से इस धरती पर इस शरीर को लेकर भेजे गए हैं?”

“सरिता जी, इसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं है। इतना कह सकता हूँ कि जिसे हम नियति कहते हैं वह समय आने पर हमें एक ऐसे बिन्दु पर ले जाती है जहां से हम उस प्रयोजन की दिशा में कार्य करने लगते हैं। हम कितना भी उस कार्य से दूर जाना चाहें, वह कार्य हमसे दूर नहीं जाता।”

“उस बिन्दु का ज्ञान कैसे होता है?”

“उस बिन्दु का ज्ञान कब होता है?”

“जब हम उस कार्य को सम्पन्न कर लेते हैं तब हमारे मन को यह समज आता है कि नियति हमसे यह कार्य करवाना चाहती थी। यही हमारा विशेष प्रयोजन था। इससे पूर्व कोई विरल पुरुष ही इसको जान सकता है।”

“ओह, हमारे शरीर का यह महत्व है!”

“शैल, हमारे शरीर के उस विशेष प्रयोजन की हमें प्रतीक्षा करनी है। तब तक इसे धारण कर के रखना होगा। इसका त्याग नहीं करना है। हैं न वत्सर?”

“आपने ठीक समझा, सरिता जी। शैल, एक और बात। हम केवल पुरुष या आत्मा ही नहीं हैं। हम उस परमतत्व के अंश भी हैं। वह भी हमारे साथ इस शरीर में रहता है। इसका क्या अर्थ समझते हो?”

“हमारा शरीर अति मूल्यवान संपत्ति है क्यों कि इसमें हमारे साथ परमतत्व भी रहता है।”

“पूर्ण सत्य कहा आपने सरिता जी।”

“अब मैं कभी इसे नष्ट करने का प्रयास नहीं करूंगी।”

“मैं भी नहीं करूंगा।”

“आप दोनों पर श्री कृष्ण की कृपा बनी रहे। और कोई प्रश्न तो नहीं?”

‘है, प्रश्न तो अनगिनत है वत्सर। किन्तु अभी रात्री अधिक हो चुकी है तो कल पुछ सकते हैं?”

“अवश्य शैल। मैं मेरी मति अनुसार उसका समाधान करने का यत्न करूंगा। जय श्रीकृष्ण।”

[/][/][/][/]

रात्री का अंतिम प्रहर बीतने को था। तभी सहसा कुछ ध्वनि से सरिता की निद्रा भंग हो गई। उसने ध्वनि की तरफ देखा। अंधकार के कारण कुछ भी स्पष्ट नहीं दिख सका। ध्यान से देखा तो उसे एक आकृति दूर से समीप आती हुई दिखी। वह आकृति जब समीप आकर मंदिर की दिशा में चली तो सरिता का कुतूहल आशंका में बदल गया। उसने शैल को जगाया।
“कहीं कोई दुष्ट व्यक्ति तो नहीं जो मंदिर के भीतर किसी दुष्ट आशय से गया हो। हमें देखना चाहिए।”
“चलो। किन्तु सावधानी से।”
दोनों आकृति के पीछे पीछे गए। आकृति मंदिर के पास रुकी। उसने मंदिर के द्वार खोले, भीतर चली गई। गर्भ द्वार खोला। भीतर जल रहे दीपक का प्रकाश उस आकृति पर पड़ा। उस आकृति को देखकर दोनों आश्चर्य से परस्पर देखने लगे। दोनों के होंठों पर स्मित था।
“अरे, यह तो वत्सर है!”
दोनों लौट गए, मन शांत हो गया। प्रभात के पूर्व समय की मधुर वायु बह रही थी जिसने दोनों को निद्राधिन कर दिया।

[;][;][;][;][;]

सूर्य की प्रथम किरण ने मंदिर के द्वार से प्रवेश कर भगवान श्रीकृष्ण के ललाट पर तिलक किया तब वत्सर ने मधुर स्वरों में बोलते हुए भगवान की आरती प्रारंभ की। एक हाथ से आरती तो दूसरे हाथ से घंटारव होने लगा। घंटारव की ध्वनि ने सरिता शैल को निद्रा जगत से वास्तविक जगत में ला दिया। दोनों त्वरा से उठे। मंदिर की दिशा में हाथ जोड़कर दूर से ही आरती में सम्मिलित हो गए। आरती सम्पन्न हुई। प्रभु को नमन कर दोनों लौट रहे थे कि वत्सर ने दोनों को रोका, “आरती लेकर जाइएगा।”
दोनों लौटे, भाव पूर्वक आरती ली और खड़े रहे। वत्सर ने मंत्रोच्चार किया, दोनों को आशीष देते हुए कहा, “ईश्वर आपका कल्याण करें।”

वत्सर मंदिर के भीतर चला गया। दोनों स्नान आदि से शुद्ध होकर वत्सर के पास मंदिर में आ गए। वत्सर अपने नित्य पूजा, संध्या आदि में रत था। दोनों ने दर्शन किए और शांत चित्त से भगवान के सम्मुख बैठकर प्रतिमा को निहारने लगे।
समय पर वत्सर ने अपना नित्य कर्म सम्पन्न किया। प्रभु को वंदन कर दोनों के पास आया, “मैं खेत में जा रहा हूँ। आप भी चाहो तो आ सकते हो। काम भी करेंगे, बातें भी होती रहेगी।”
दोनों ने एक दूसरे को देखा।
“यदि आप चाहो तो मंदिर में बैठकर प्रभु की भक्ति भी कर सकते हो। मुझे लौटते लौटते दोपहर हो जाएगी। तब मैं भगवान के लिए भोग लेकर आऊँगा।” वत्सर जाने लगा।
क्षणभर विचार और विलंब करने के पश्चात दोनों खड़े हुए, वत्सर के साथ चलने लगे।
“वैसे तो तुम्हारा मंदिर और खेत एक ही है तो ऐसा क्यों कह रहे हो कि खेत में जा रहा हूँ?”
सस्मित वत्सर बोला, “सत्य कह रहे हो तुम शैल, वैसे तो दोनों एक ही है केवल क्रियाओं का भेद इसे मंदिर और खेत में बाँट देता है।”
“वह कैसे?”
“सरिता जी, मंदिर में धान नहीं उगाया जाता, खेत में संध्या पूजा आरती नहीं की जा सकती।” बोलकर वत्सर हंस पड़ा। सरिता और शैल भी।
वत्सर खेती का काम करता रहा, शैल उसे यथा संभव सहाय करने का प्रयत्न करता रहा।
सरिता साथ साथ चलते हुए बातें करने लगी।
“वत्सर, प्रातःकाल तुम जब भीगे वस्त्रों के साथ मंदिर में प्रवेश कर रहे थे तब हमने अंधकार के कारण तुम्हें चोर समझ लिया था। तुम्हारे पिछे पीछे मैं और शैल वहाँ तक आए थे।”
“जब तुम्हें वहाँ देखा तो हम निश्चिंत होकर लौट गए और निद्राधिन हो गए।”
“शैल, इसका अर्थ यह है कि आप दोनों अभी भी अपने मूल स्वभाव के वश में हो।”
“क्या? कैसा स्वभाव?” दोनों एक साथ बोल पड़े।
“पुलिस वाला स्वभाव।”
“सत्य कहा, वत्सर।”
“मैंने तो मेरा पूरा जीवन पुलिस का ही काम किया है। तो अब तो यह स्वभाव इस देह के साथ ही जाएगा।”

“अरे वाह ! सरिता जी। आप तो तत्व चिंतक की भाषा बोल रहे हैं।”
“यह सब तो तुम्हारे संग का और इस मंदिर के पवित्र तरंगों का प्रभाव है।”
“तत्वज्ञान से मुझे एक प्रश्न हो रहा है, वत्सर। क्या मैं पूछूँ?”
“शैल, अभी रुको। प्रथम मेरी जिज्ञासा का उत्तर दो।” वत्सर ने कहा।
“तुम्हारी जिज्ञासा? और हम उत्तर दें?”
“हाँ, आप दोनों। आप दोनों ने अभी अभी कहा कि आपका पुलिसवाला मूल स्वभाव अभी भी जीवित है तो तब आप क्या कर रहे थे जब आपको सपन और निहारिका प्रताड़ित कर रहे थे? तब भी आप उसका प्रतिकार करने के स्थान पर उनसे भागते रहे? यह तो पुलिसवाला स्वभाव नहीं है?”
“तुम सही कह रहे हो, वत्सर। उस समय हम डरे हुए थे क्यूँ कि मैं नहीं चाहता था कि सरिता जी को पुन: पाकिस्तान लौटना पड़े। इसीलिए हमने प्रतिकार करना उचित नहीं समझा।”
“हमारी इसी मानसिकता का वे लाभ उठाते हैं और हम पिछड़ जाते हैं।”
“वत्सर, तुमसे मिलकर अब हम निर्भय हो गए हैं। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि अब कभी उन दोनों का सामना हुआ तो मैं उसे नहीं छोड़ूँगी।”
“मैं भी।”
“अब हुई न पुलिसवाली बात।” वत्सर ने कहा।
“अब मैं मेरा प्रश्न रखूं?”
“रखो शैल। अब तो सरिता जी भी प्रश्नों के उत्तर दे सकती हैं। हैं न सरिता जी?”
“वत्सर, तुम मेरा उपहास क्यों कर रहे हो?”
“मुझे तो उत्तर चाहिए। सरिता जी आप दें या वत्सर तुम दो। प्रथम मुझे प्रश्न तो कर लेने दो।”
“करो न। किसने रोका है तुम्हें?”
“सरिता जी, सुनिए। प्रात: काल वत्सर तुम भीगे वस्त्रों में क्यों थे?”
“तारा स्नान करके मैं लौटा था इस लिए।”
“तारा स्नान क्या होता है?”

“रात्री के अंतिम प्रहर में जब आकाश में तारें होते हैं, सूर्योदय में कुछ समय शेष होता है तब किसी बहते हुए पानी में - जैसे नदी, झरना, सरोवर आदि में स्नान करने की क्रिया को तारा स्नान कहते हैं।”

“घर के भीतर भी तो स्नान किया जा सकता है तो नदी झरनों में क्यों?”

“जहां नदी झरने उपलब्ध हो वहाँ यथा संभव तारा स्नान करने का शास्त्रों में महत्व कहा गया है। क्यों कि वहाँ पानी बहता रहता है। बहता पानी पवित्र भी होता है, शुद्ध भी।”

“शुद्ध तो मान लिया, पवित्र कैसे?”

“नदी और झरने का पानी बहते बहते अनेक प्रदेशों से होता हुआ आता है। अपने साथ अनेक प्रदेशों की धुली लेकर आता है। इन धुली में न जाने कीन कीन ऋषि, साधु, संत, पवित्र आत्माओं के चरण पड़े होंगे। उनके शुद्ध और पवित्र विचारों का प्रभाव यह जल पर भी पड़ता है। बहता पानी अपने साथ उन पवित्र विचारों को भी लेकर आता है। इसी लिए बहता पानी सदैव शुद्ध और पवित्र होता है।”

[65]

“वत्सर, तुम बड़े ज्ञान की बातें करते हो। शास्त्रों की बातें करते हो। प्रतीत होता है कि तुम शास्त्रों के बड़े ज्ञाता हो। हमारा तुम्हारे पास आना सफल हो गया। तुमने यह शिल्प कला के साथ साथ शास्त्र अध्ययन कैसे किया?”

“जहां तक मैं जानता हूँ, तुम तो जन्म से दलित हो तो यह शास्त्र?”

शैल का प्रश्न सुनते ही वत्सर ने सारा काम रोक दिया, “आओ, वहाँ वृक्ष के नीचे बैठते हैं।”
“हमारे प्रश्न का समाधान?”
“वहीं बैठकर उत्तर देता हूँ।”
तीनों वृक्ष की छाया में बैठ गए।
“हमारे शास्त्र अनंत हैं। उनमें से कुछेक का अध्ययन मैंने हमारे गाँव के विद्वान शास्त्री जी की निश्रा में किया है। किन्तु अनंत शास्त्रों के अनंत ज्ञान का यह केवल अंश मात्र ही है। अत: मुझे शास्त्रों का ज्ञाता कहना मिथ्या होगा।”
“हमें तो कुछ भी ज्ञान नहीं है। हम तो अज्ञानी ही रहे।”
“ज्ञान की मात्रा सापेक्ष होती है। इस संसार में अनेकों व्यक्ति हैं जिनका शास्त्रों का ज्ञान मेरे ज्ञान से कहीं अधिक है। उनकी तुलना में मैं भी अज्ञानी ही हूँ। अत: न तो मुझे ज्ञानी कहिए और न ही स्वयं को अज्ञानी।”
“तुम्हारी बात मान लेता हूँ किन्तु मेरे प्रश्न का उत्तर तो दो, वत्सर।”
“शैल, तुम्हारा प्रश्न है कि मैंने दलित होकर शास्त्रों का अध्ययन क्यों किया? कैसे किया? मंदिर की पूजा अर्चना क्यों कर रहा हूँ? हैं न?”
“बस इतना सा ही प्रश्न है मेरा।”
“बड़े धैर्य और ध्यान से मेरे उत्तर को सुनना। जन्म से सनातनी होने के उपरांत सरिता जी को इस्लाम पंथ को स्वीकार करना पडा। क्या यह सत्य नहीं है? पश्चात पुन: सनातन धर्म में प्रवेश किया।”
“यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है, वत्सर।”
“शैल, मैंने कहा था न कि धैर्य रखना होगा।”
“मेरी अधिरता के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।”
“जन्म से हम वास्तव में शून्य होते हैं, केवल शून्य। पश्चात हमारा परिवेश और परिवार हमें जो शिक्षा - दीक्षा देता है उससे हम कुछ बनते हैं। स्थितियाँ और समय के अनुरूप कुछ ग्रहण करते हैं तो कुछ त्याग देते हैं। जैसे सरिता से सारा और सारा से सरिता बनना।”
“सारा बन जाना मेरी विवशता थी, वत्सर।”
“कारण कुछ भी हो, हम शून्य से प्रारंभ कर कुछ बन जाते हैं।”

“तो तुम दलित से ब्राहमण कैसे बने?”
“शैल, तुम तो ब्राहमण कुल में जन्मे हो तो क्या तुम ब्राहमण हो?”
“हूँ। अवश्य ही मैं ब्राहमण हूँ। कोई संदेह है क्या?”
“ब्राहमण के लक्षण क्या क्या होते हैं?”
“अरे! जो ब्राहमण परिवार में जन्म लेता है वह ब्राहमण है। और क्या लक्षण होंगे?”
“यही तो। हमारे शास्त्र एवं संस्कृति अनुसार किसी व्यक्ति का ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र आदि का निश्चय जन्म से नहीं अपितु कर्म से होता है। यदि तुम कर्म ब्राहमण के नहीं कर रहे हो तो तुम ब्राहमण नहीं हो।”
“यह कैसी बात कर रहे हो तुम?”
“शैल, शांत होकर वत्सर की बात सुनो। समझने का प्रयास करो।” सरिता ने शैल की तरफ देखकर संकेत भी किया। शैल शांत हो गया। “वत्सर, तुम कहो।”
“सभी व्यक्ति जन्म से शून्य होने के कारण शूद्र ही होते हैं। जब वह शस्त्र अस्त्र विद्या सिख लेता है और समाज के रक्षण का दायित्व स्वीकार कर लेता है तब वह क्षत्रिय बन जाता है। उसने किस परिवार में जन्म लिया है वह बात गौण होती है। जैसे हमारे सैनिक। इन सैनिकों का जन्म का परिवार और उनके संस्कार क्षत्रिय के हो भी सकते हैं, नहीं भी हो सकते हैं। इसी प्रकार मैंने गुरु जी से शास्त्र पढे, शास्त्र अनुसार ब्राहमणों का कार्य कर रहा हूँ अत: मैं ब्राहमण हूँ। मेरे पिता शूद्र थे क्यों कि वे शूद्र का कार्य करते थे।”
“ओह, यह बात है। शूद्र के कार्य क्या हैं?”
“शैल, शूद्र के ही क्यूँ? मैं सभी वर्ण के कार्य एवं दायित्व बताता हूँ।
ब्राहमण का कार्य है, - शास्त्र अध्ययन, शास्त्र अध्यापन, यज्ञ करना, दान देना, दान लेना, समाज के सभी वर्णों को सत्य ज्ञान देना। इस ज्ञान में जीवन के सभी ज्ञान निहित है। अस्त्र शस्त्र विद्या का ज्ञान, व्यापार - उत्पादन - यंत्र - खेती का ज्ञान, सेवा का ज्ञान। इन सभी ज्ञान ब्राहमण समाज को देता है।
क्षत्रिय का कर्तव्य है देश की और निर्बलों की रक्षा करना।
वैश्य को समग्र संसार के पालन हेतु खेती- व्यापार आदि करना है।
शूद्र का कार्य सेवा करना, कला के द्वारा मनोरंजन करना आदि है।”

“अर्थात कर्म अनुसार व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनता है।”
“कोई उदाहरण देकर इस बात को स्पष्ट कर सकते हो?”
“शैल, उदाहरण तो असंख्य हैं। कुछ इस प्रकार है। ऋषि वाल्मीकि शूद्र थे, ऋषि बन गए, रामायण की रचना कर दी। द्रोणाचार्य ब्राह्मण थे, हस्तिनापुर की रक्षा हेतु युद्ध करने पर वे क्षत्रिय भी बने। संत रविदास आदि शूद्र से संत बने। ये सभी अपने कर्मों से जाने जाते हैं, जन्म के कुल से नहीं।”
“इसका अर्थ है कि हमें स्वयं मार्ग चुनना है कि हम क्या बनना चाहते हैं। हैं न?”
“सत्य कहा, शैल। सरिता जी, आपने शरीर का महत्व पूछा था न? हमारा शरीर इन चारों वर्णों को प्रकट करता है। क्या इस बात को जानते हो?”
“नहीं। तुम तो जानते हो, हमें बताओ न?”
“शैल, ध्यान से सुनना। सरिता जी, हमारे शरीर का मुख- मस्तिष्क ब्राहमण का अंश है। क्यों कि यहाँ से हम ज्ञान प्राप्त करते हैं, ज्ञान प्रदान करते हैं। हाथों से हम स्वयं की और अन्यों की रक्षा करते हैं इसलिए यह क्षत्रिय का अंश है। पेट से हम सृष्टि का पालन करते हैं अत: वह वैश्य का अंश है। पैरों से हम चलते हैं, पैर ही समग्र शरीर की सेवा करता है अत: वह शूद्र का अंश है। इससे बढ़कर शरीर का महत्व और क्या हो सकता है?”
“ओह, सारी व्यवस्था एक ही शरीर में?”
“ईश्वर ने हमें यह शरीर देकर, शरीर के उक्त अंग देकर सारे वर्णों का ज्ञान तो दे ही दिया, साथ साथ हमें उसमें से किसे चुनना है, हमें क्या बनना है उसका भी पूरा अधिकार दे दिया है। निर्णय करने की स्वतंत्रता भी दी है। अब मनुष्य को स्वयं निर्णय करना है कि उसे जन्म के साथ प्राप्त शूद्रता को ही बनाये रखना है या स्वयं को ब्राह्मण तेज, क्षात्र तेज या वैश्य तेज को ग्रहण करना है।
एक और बात, चारों वर्ण एक ही शरीर में रखकर ईश्वर ने हमें यह भी संदेश दे दिया कि इनमें कोई भिन्नता नहीं है, सब एक समान है। यही इस शरीर का सौन्दर्य है।”
“मुझे लगता है कि अब हमरे सारे प्रश्नों का समाधान हो गया है। ठीक है न, शैल?”
“जी सरिता जी। अब कोई संदेह नहीं रहा।”
“तथापि यदि कोई और प्रश्न हो तो पुछ सकते हो।”

“नहीं, नहीं। अब कोई प्रश्न नहीं।”
“किन्तु मुझे प्रश्न है, आप दोनों से।”
“हम से?”
“तुम तो स्वयं ज्ञानी हो, हम अज्ञानी हैं। हमसे तुम्हें क्या पूछना है भला?”
“सरिताजी, वत्सर हमारा उपहास कर रहा है।”
“नहीं, नहीं। मैं वास्तव में आप दोनों से कुछ पूछना चाहता हूँ। आप से ही उसके सत्य उत्तर चाहता हूँ। यह कोई उपहास की बात नहीं है।”
“ठीक है। हम हमारी मति के अनुसार उत्तर देने का प्रयास करेंगे।”
“मुझे यह बताओ कि क्या आप दोनों यहाँ केवल दो चार प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए ही आए हो या वास्तव में कोई अन्य उद्देश्य से आए हो?”
“अन्य कोई आशय क्या हो सकता है?”

[66]

“हो सकता है कि अभी भी आप दोनों मुझे अपराधी समझ रहे हो। मुझे किसी प्रकार से मीरा हत्या का दोषी सिद्ध करने के आशय से यहाँ आए हो?”

“क्या? यह कैसी बात कर रहे हो, वत्सर?”
“हमने कहा तो था कि हमने पुलिस की नौकरी छोड़ दी है?”
“तो अब हम तुम पर संदेह क्यों करें?”
“इस लिए शैल, कि एक बार जो पुलिस बन गया वह सदा के लिए पुलिस ही रहता है। जब तक वह रहस्य को जान नहीं लेता, उसे भूलता भी नहीं, छोड़ता भी नहीं। यही कारण है कि नौकरी छोड़ने का आशय भी उस रहस्य को पाने का ही हो।”
“आशय तो वही है, वत्सर। किन्तु तुम जो समझ रहे हो वह मार्ग नहीं है हमारा। हम तो मूल घटना स्थल की खोज में निकले हैं। यदि वह मिल जाए तो सत्य उजागर हो सके।”
“सरिता जी, मूल घटना स्थल यहाँ ढूंढ रहे हो? यहाँ आने का प्रयोजन क्या है? यहाँ आकर आप दोनों मुझ पर संदेह की दृष्टि रखना चाहते हो?”
“वत्सर, तुम कुछ मिथ्या विचार कर रहे हो। शांत होकर मेरी बात सुनोगे तो सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। अब मैं पूछता हूँ कि क्या तुम में इतना धैर्य है?”
वत्सर शांत हो गया। मौन हो गया। दूर क्षितिज में देखते हुए विचार करने लगा, ‘इन लोगों को समझने में मैंने कहीं शीघ्रता तो नहीं कर दी? मेरा अनुमान मिथ्या भी हो सकता है। संभव है कि वे कुछ भिन्न आशय से यहाँ आए हो। मुझे धैर्य रखना चाहिए था। प्रतीक्षा करनी चाहिए थी। मैं आज इतना उतावला कैसे हो गया?’
“तुम इतने उतावले तो कभी नहीं थे, वत्सर।”
“मेरी धृष्टता के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ, सरिता जी। धैर्य के साथ मैं आपकी बात सुनने को तत्पर हूँ।” वत्सर मौन हो गया। सरिता ने उसकी आँखों में शांत और उत्सुकता के भावों को एक साथ देखा। उसे विश्वास हो गया।
“हमारे यहाँ आने के कई कारण हैं। प्रथम, हम सपन - निहारिका से बचकर रहना चाहते हैं। वे दोनों हमारा साया बनकर चल रहे थे उस बात का हमें अनुमान न था। तुम जानते हो कि वे और उनका दल कितना नीच है।
दूसरा, जब वह ब्राह्मण युवक ने कहा कि शास्त्रों के ज्ञाता ही शरीर के महत्व को बता सकते हैं, तत्क्षण हमें तुम्हारा ही विचार आया।”

“सरिताजी, आपने मुझे शास्त्रज्ञ कैसे मान लिया था? मैं तो मुख्य अभियुक्त था। संभावित हत्यारा भी।”
“न्यायालय में जब राधा के पक्ष विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किए जा रहे थे तब तुमने अपना पक्ष ऐसे रखा था कि वकील, कथाकार, स्वामीजी सब परास्त हो गए थे। यहाँ तक कि न्यायाधीश की पत्नी, पुत्री और स्वयं न्यायाधीश भी। तभी हमने समझ लिया था कि तुम शास्त्रों को जानते हो। क्या यह सत्य नहीं है?”
“और कोई कारण?”
“तीसरा कारण भी है जो यहाँ आते हुए मार्ग में हमारे ध्यान में आया था। हम चाहते हैं कि तुम भी हमारे साथ चलो। साथ मिलकर घटना स्थल तक जाते हैं। हमारे साथ चलोगे, वत्सर?”
“मैं? मेरा वहाँ क्या काम है? मैं ...।”
“एक बात बतानी है तुम्हें, वत्सर।”
“अभी भी कुछ शेष है क्या, शैल?”
“जब हम प्रथम बार घटना स्थल की खोज में निकले थे तब मार्ग में एक आश्रम में एक ऋषि के दर्शन हुए थे। हम वहाँ रात्री को रुके थे। दूसरे दिन जब हम वहाँ से निकल रहे थे तभी नदीम ने आकर हमें न्यायालय में प्रस्तुत होने को बुला लिया जिसमें तुम्हारे विरुद्ध अभियोग चला था। उस समय हम हमारा अभियान छोड़कर लौटना नहीं चाहते थे किन्तु ऋषि ने हमें न्यायालय में जाने को कहा। उसने हमें आश्वासन भी दिया था कि उस अभियोग से चिंतित नहीं होना है, समय पर हमारा अभियान पुन: प्रारंभ होगा। एक दिन मीरा हत्या का रहस्य हाथ लगेगा। उस अभियान में दो और व्यक्ति जुड़ेंगे तभी अभियान सफल होगा। उन अज्ञात दो व्यक्तियों में से एक तुम ही हो ऐसा मैं मानता हूँ।”
“मैं? वह कैसे? और भी तो कोई हो सकता है।”
“हो सकता है। किन्तु इस समय हमें तो वह तीसरा व्यक्ति तुम ही दिख रहे हो।”
“मैं ही क्यों?”
“क्यों कि इस घटना से सबसे अधिक आहत तुम ही हुए हो। तुम्हारा ही सब से अधिक मानभंग हुआ है। तुम पर ही सबका संदेह रहा है। क्या तुम उस संदेह से मुक्त होना नहीं चाहोगे? भंग हुए मान को पुन: प्रतिष्ठित करना नहीं चाहोगे?”

“ऐसी बातें अब मुझे स्पर्श नहीं करती। ऐसी अवस्था से मैं निर्लेप हूँ।”
“प्रत्येक ज्ञानी व्यक्ति तुम्हारी ही भांति प्रतिक्रिया देगा, यह नि:संदेह बात है। तथापि हम चाहेंगे कि तुम ही हमारे तीसरे साथी बनो।”
“यदि मैं स्वीकार नहीं करता हूँ तो?”
“हम आग्रह करेंगे।”
“और कर भी क्या सकते हैं?”
“क्यों? पुलिसवाले हो। आप कुछ भी कर सकते हो।”
“वह बात अब बीते दिनों की हो चुकी है, वत्सर।”
“वत्सर, क्या तुम्हें यह जानने की जिज्ञासा नहीं है कि मीरा की मृत्यु कैसे हुई? कैसे वह बहकर उसी स्थान पर जाकर रुक गई जिस स्थान का शिल्प तुम पूर्व में ही रच चुके थे? क्या तुम्हें स्वप्न में बार बार वही शिल्प क्यों आता था? इस रहस्य को जानना नहीं चाहोगे? स्मरण रहे कि मीरा की मृत्यु के साथ, मीरा की मृत्यु से भी पूर्व तुम जुड़ चुके हो। अब तुम उस घटना से न तो भाग सकते हो न ही मुक्त हो सकते हो। मीरा के उस रहस्य को प्रकट करने के लिए नियति ने तुम्हें चुना है। तुम्हें हमारे साथ चलना होगा।”
“वह शिल्प तो केवल संयोग था।”
“संयोग में ही संकेत छिपे होते हैं, वत्सर। तुम ज्ञानी होकर इस संकेत को पढ़ने से क्यों भागते हो? हमें भागना नहीं है क्यों कि यही नियति है हम सब की, मीरा की भी।”
“यह कैसी नियति है?”
“वह तो तुम अपने श्रीकृष्ण से ही पुछ लो। वही तो सबसे बडा खिलाड़ी है। जाकर पूछ लो उसे।”
“कृष्ण से? क्यों? वह थोड़े ही उत्तर देगा?”
“वत्सर, मुझे इतना तो ज्ञान है कि तुम्हारे इस कृष्ण की मूर्ति भले ही पत्थर की हो, वह तुमसे बात करती है। संकेत देती है, आज्ञा भी देती है।”
“इस बात को आप कैसे जानते हैं श्रीमान शैल स्वामी जी?”
“जब मैं प्रथम बार यहाँ आया था तब मैंने सब कुछ अपनी आँखों से देखा है। क्या तुम उस बात को नकार सकते हो?”
“वह सब तुम्हें अभी भी स्मरण है?”

“अपने कृष्ण से अनुमति मांग लो और चलो हमारे साथ।”
“साथ साथ सफलता हेतु प्रार्थना भी कर लेना, आशीर्वाद भी मांग लेना। क्यों कि हमारा मार्ग कठिन है, अज्ञात है और कदाचित अनंत भी।”
“सरिताजी, मान लो कि कृष्ण ने अनुमति दे दी किन्तु मैं आप लोगों का विश्वास क्यों करूँ? कहीं आप दोनों मुझे इसी बहाने पुन: फँसाना तो नहीं चाहते?”
“तुम हमारा विश्वास कर सकते हो, वत्सर।”
“सरिता जी, कर सकते हो नहीं, हमारा विश्वास करना ही चाहिए।”
“क्यों?”
“क्यों कि हमने कभी भी तुम्हें अपराधी नहीं माना। यही कारण था कि न्यायालय में भी हम में से किसी ने तुम्हारे विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा था।”
“यदि हम तुम्हें फंसाना चाहते तो कुछ न कुछ बोलते, तुम्हें फँसाने का प्रयास भी करते।”
“इससे स्पष्ट है कि हमारा आशय रहस्य तक पहुंचना ही है, अन्य कुछ भी नहीं। इसमें हमें तुम्हारे साथ की आवश्यकता है।”
“तो चलोगे न हमारे साथ?”
“मैं कृष्ण से पुछकर निर्णय करूंगा।”
“वत्सर, कृष्ण तुम्हें अनुमति तभी देंगे जब हमारा आशय शुद्ध होगा।”
“यह बात भी उचित है।”
“ठीक है। हमें प्रतीक्षा रहेगी।”

[67]

“क्या कहा भगवान श्री कृष्ण ने? अनुमति दी या नहीं?” मंदिर से आते हुए वत्सर से शैल ने पूछा।
“शैल, अधिर न बनो। वत्सर को स्वयं कहने दो।”
वत्सर ने स्मित किया, दोनों के सम्मुख आकर बोला, “श्रीकृष्ण ने अनुमति दे दी है किन्तु…।”
“तो चलो हमारे साथ। हो जाओ तैयार। शीघ्र से शीघ्र प्रस्थान करते हैं।”
“शैल, वत्सर ने अपनी बात किन्तु शब्द पर रोकी है। किन्तु के पश्चात क्या है उसे भी तो सुन लो।”
“किन्तु के पश्चात क्या है, वत्सर?”
“किन्तु मुझे कुछ प्रश्न हैं। उनके उत्तर मिल जाए तो मैं निश्चिंत होकर आपके अभियान में जुड़ जाऊंगा।”
“कहो, अपने प्रश्नों को रखो, वत्सर।”
“एक, इस यात्रा की रूपरेखा क्या है?
दो, यात्रा कितने दिनों तक चलेगी?
तीन, मार्ग में रुकने - खाने आदि की क्या व्यवस्था है?
चार, क्या हम सपन - निहारिका की दृष्टि से बच सकेंगे?
पाँच, यदि पूरी यात्रा के पश्चात भी हमें कोई रहस्य या प्रमाण हाथ न लगे तो क्या होगा?
छः, आपको गुरु जी ने बताया था कि कोई चौथा व्यक्ति भी जुड़ेगा। वह चौथा व्यक्ति कौन है? कहाँ है? कब जुड़ेगा?
सात, सरिता जी को पाकिस्तान जाना पड गया तो क्या होगा?” वत्सर ने प्रश्नों की तीव्र वर्षा कर दी। उससे भी तीव्र दृष्टि से दोनों के मुखभावों को देखने लगा। शैल ने सरिता की तरफ प्रश्न से भरी दृष्टि डाली। सरिता ने शैल की दृष्टि का प्रतिबिंब अपनी आँखों में प्रकट किया। दोनों ने कुछ विचार किया किन्तु कुछ भी कहने की स्थिति में न थे। कुछ समय पश्चात सरिता ने कहा, “हम तुम्हारे सातों प्रश्नों का उत्तर थोड़ा विचार कर के दें तो चलेगा?”
“चलेगा, मुझे कोई शीघ्रता नहीं है, सरिता जी।” वत्सर ने एक व्यंग दृष्टि शैल पर डाली। शैल ने उसे अपने भीतर दबा दिया।

****

संध्या हो गई। वत्सर ने आरती सम्पन्न की। बाँसुरी के सुर भी पूरे कर लिए। भोजन से पूर्व की क्षणों में उग रहे चंद्रमा के सानिध्य में शैल, वत्सर और सरिता बैठे थे। मंद मंद वायु बह रहा था। दूर, अधीर सी दौड़ रही कन्या जैसी नदी की ध्वनि सुनाई दे रही थी। जैसे चंचल कन्या के नूपुर की ध्वनि हो। अन्यथा सर्वत्र मौन व्याप्त था।

उस मौन को तोड़ते हुए सरिता ने कहा, “वत्सर, यह नदी का घोष सुनाई दे रहा है न? ऐसा ही घोष प्रति रात्री हमें सतलुज नदी का सुनाई देता है। अभी जिस प्रकार सर्वत्र शांति है, वहाँ भी शांति का साम्राज्य होता है। ऐसी ही मंद मंद पवन बहती है। वहाँ …।”

“आप कहाँ की बात कर रही हैं?”

“सतलुज नदी के तट पर हम जहां जहां रात्री को विश्राम करते थे उस स्थान की बात सरिता जी कर रही है।”

“इसका यहाँ क्या औचित्य है, शैल?”

“औचित्य है, वत्सर। हम जिस मार्ग पर चलेंगे वहाँ ऐसा ही वातावरण, ऐसी ही अवस्था होगी। मैं यही आश्वासन तुम्हें देना चाहती हूँ।”

“उसकी आवश्यकता नहीं है। जब एक बार चलने का निश्चय कर लिया तब अन्य बातें गौण हो जाती है।”

“एक काम करना वत्सर। तुम अपनी बाँसुरी साथ ले चलना। मार्ग में जब हम थक जाएंगे तब तुम्हारी मधुर बाँसुरी हमें नूतन ऊर्जा देगी। मन कभी हताश हो जाए तो इसकी धुन आशा का संचार करेगी।”

“वह तो साथ ही रहेगी, किन्तु जब मेरे प्रश्नों का समाधान करोगे तब न?”

शैल ने सरिता की तरफ संकेत किया। सरिता ने कहा, “वत्सर, हमारे पास तुम्हारे छः प्रश्नों का समाधान है। शेष एक प्रश्न का उत्तर हम तुम पर छोड़ते हैं।”

“कौन सा प्रश्न?”

“सरिता जी जिस प्रश्न का उत्तर न दे वही प्रश्न।”

“ठीक है सरिता जी, आप उत्तर देते जाइए।”

“यात्रा की रूपरेखा - हम जहां से अटके थे वहाँ से यात्रा प्रारंभ करेंगे। नदी के प्रवाह के साथ नदी के मूल की तरफ प्रस्थान करते रहेंगे।”
“कब तक? कहाँ तक चलते रहेंगे? आप जहां से अटके थे वहाँ अभी भी सपन निहारिका का भय नहीं रहेगा?”
“जब तक घटना स्थल नहीं मिलता, चलते रहेंगे।”
“इस प्रकार तो हम नदी के उद्गम तक पहुँच जाएंगे। आप जानते हैं कि सतलज नदी का उद्गम स्थान कहाँ है?”
“सतलज नदी मानसरोवर से निकलती है। हम वहाँ तक यात्रा करेंगे। सपन निहारिका के भय से मुक्त होने के लिए हम नदी के सामने वाले तट पर यात्रा करेंगे।”
“विरुद्ध तट पर? वहाँ जाओगे कैसे? नदी पार करोगे कैसे? क्या कोई नाव है इस हेतु?”
“नाव तो नहीं है। जहां पानी का बहाव अल्प होगा, धारा क्षीण होगी वहाँ से उसे पैदल पार कर सामने वाले तट पर चले जाएंगे।”
“ऐसा कभी नहीं करना चाहिए। सदेह नदी को पार करना शास्त्रों में निषेध है। पश्चिम में नर्मदा नदी है। भक्त जन उसे नदी नहीं, मैया कहते हैं। जो लोग उसकी परिक्रमा करते हैं वे नदी को सदेह पार नहीं करते। ऐसा करना अनुचित माना जाता है।”
“हम भी सतलज नदी को मैया ही कहते हैं। हम मैया की परिक्रमा कहाँ कर रहे हैं?”
“नदी के तट पर इस प्रकार चलते रहना परिक्रमा ही है। परिक्रमा के जो भी नियम है, हमें मानने होंगे।”
“तो हम निहारिका सपन से बिना डरे ही इसी तट पर चलेंगे। तुम जो अब हमारे साथ हो।”
“ठीक है। यदि मानसरोवर तक भी हमें घटना स्थल नहीं मिला तो?”
“तब हम सामने वाले तट पर चलते चलते नदी के साथ साथ नीचे उतरते जाएंगे।”
“तब भी नहीं मिला तो?”
“जैसी नियति की इच्छा होगी वही होगा। अभी तो हम आशावान हैं।”
“और इसमें कितना समय, कितने दिन लग जाएंगे इसका अनुमान करना इस समय हमारे बस में नहीं है।”
“अर्थात अनंत समय तक?”

“हम नहीं जानते।”

“वह तो तुम्हारे श्रीकृष्ण ही जानते हैं। इसे उस पर ही छोड़ देते हैं, वत्सर।”

“मार्ग में जहां आश्रय मिले सो जाएंगे, सारी धरती हमारा विश्राम स्थान हो सकता है। जो कुछ अन्न या फल मिले उसे ग्रहण कर लेंगे।”

“एक अंतहीन अभियान पर चलने वाले व्यक्ति इन बातों की चिंता नहीं किया करते, वत्सर।”

वत्सर ने स्मित दिया।

“यदि मुझे पाकिस्तान जाने की स्थिति आई तो मैं भारत सरकार से राज्याश्रय मांग लूँगी। न्यायालय की सहायता भी लूँगी।”

“वाह, सरिता जी। आपने मेरे सभी प्रश्नों का समाधान कर दिया।”

“नहीं। एक प्रश्न अभी भी बाकी है। हमारा चौथा साथी कौन? इसका उत्तर तुम्हें ढूँढना होगा, श्री कृष्ण को ढूँढना होगा।”

[68]

“यदि हम गुरुजी के वचनों पर श्रद्धा रखते हैं तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि उचित समय पर चौथा साथी भी स्वयं इस अभियान में जुड़ जाएगा। गुरुओं के वचन कभी मिथ्या नहीं होते हैं।”
“वत्सर, गुरुजी के वचनों पर हमें पूर्ण विश्वास है। मुझे लगता है कि हमें कल ही चलना चाहिए।”
“वत्सर, शैल का कहना उचित है। कल ही चलते हैं।”
वत्सर विचारने लगा, ‘क्या कल ही जाना उचित होगा? या कुछ दिन प्रतीक्षा करने के पश्चात, पूरा आयोजन करके, उचित योजना बनाकर चलना उचित होगा?’
वत्सर के मन में एक मौन द्वन्द्व सम्पन्न होने के पश्चात वह बोला, “मेरे विचार से हमें कुछ दिनों तक रुक जाना चाहिए।”
“क्यों?”
“जैसा आपने बताया, सपन और निहारिका किसी भी स्थिति में आपको पाकिस्तान भेजना चाहते हैं किन्तु वास्तव में वे आपको अपनी टोली में जोड़ना चाहते हैं। उन लोगों का आशय मुझे ठीक नहीं लग रहा। अभी कुछ दिनों तक वे आप दोनों को खोजते रहेंगे। उन्हें ज्ञात है कि आप घटना स्थल की खोज में किस योजना पर काम कर रहे हो, किस मार्ग पर चल रहे हो। आप दोनों उन्हें भुलावे में डालकर उनकी दृष्टि से दूर निकल गए हो। अब वे अधिक कुपित होंगे, अधिक आक्रामक होंगे। पूरी ऊर्जा के साथ वह आपको खोज रहें होंगे। ऐसे समय में यदि हम वहीं से यात्रा प्रारंभ करेंगे तो बड़ी सरलता से वे हमें पकड़ लेंगे। हमें कुछ दिनों तक रुक जाना चाहिए। उन लोगों का उत्साह मंद पड जाए तब कहीं जाकर हमें अपना अभियान प्रारंभ करना चाहिए।”
“वत्सर, तुम्हारे तर्क पूर्णत: सत्य हैं किन्तु इतने समय में यदि उन लोगों ने घटना स्थल ढूंढ लिया और जो भी प्रमाण और साक्ष्य वहाँ पड़े होंगे उसे वे मिटा दें, नष्ट कर दें तो हमारा सारा उद्यम व्यर्थ हो जाएगा।”
“शैल, तुम्हारा प्रश्न है कि यदि उन्हें घटना स्थल मिल गया, साक्ष्य मिल गए तो क्या? इसका उत्तर है कि वे सभी वामपंथी हैं, पुलिस नहीं हैं। उन्हें न तो घटना स्थल को पहचानना आता

होगा, न ही साक्ष्य - प्रमाण को। अत: उन्हें वह मिलनेवाला नहीं है। दूसरी बात, उनकी रुचि प्रमाणों में नहीं है, न ही मीरा की मृत्यु का रहस्य जानने में। वे तो अपना स्वार्थ सिद्ध करने पर ही ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।"

"तुम्हारी बात भी ठीक है, वत्सर। हमें कितने दिनों तक प्रतीक्षा करनी होगी?"

"पंद्रह से बीस दिनों तक रुकना होगा।"

"तब तक हम क्या करेंगे? कहाँ जाकर छिपे रहेंगे?"

"यदि आप दोनों पुलिसवाले नहीं अपितु मित्र बनकर रहना चाहो तो मेरा यह स्थान आपके लिए है।"

"यहाँ वत्सर? क्या?"

"शैल, यदि मित्र हो तो संकोच कैसा? इसे अपना ही स्थान मानो। यदि मित्र नहीं हो तो ...।"

"मेरा तात्पर्य है कि इतने समय तक तुम्हारे यहाँ रहना क्या ठीक होगा?"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है, न ही कोई समस्या। मैं आप दोनों पर निर्णय छोड़ता हूँ। आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होने दूंगा।"

"शैल, हमें यहीं रुक जाना चाहिए। सपन - निहारिका कभी सोच भी नहीं सकते कि हम वत्सर के पास जा सकते हैं। वे हमें वहीं ढूंढते रहेंगे।"

"ठीक है, सरिताजी। जैसा आप कहो।"

दोनों वहीं रुक गए।

~@~@~@~@#~#

वत्सर के स्थान पर शैल और सरिता के दिन कटने लगे। वे भी वत्सर के साथ प्रात:काल से पूर्व तारा स्नान करने लगे। मंदीर जाने लगे। मंगला आरती करने लगे। भगवान की पूजा अर्चना करने लगे। भगवान के लिए भोग बनाने लगे। प्रसाद ग्रहण करने लगे। खेती करने लगे। खेत में उगे ताजे फल - धान्य ग्रहण करते रहे। प्रकृति का सानिध्य प्राप्त कर प्रसन्न होने लगे। साथ साथ कुछ शास्त्रों का पठन करने लगे। वत्सर से भी ज्ञान प्राप्त करने लगे। कुछ ही दोनों में दोनों भूल गए कि वे पुलिसवाले थे। दोनों के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा। मन शांत होने

लगा। सूर्योदय - सूर्यास्त का अनुभव कर आनंदित होते रहे। खेतों में रहते हुए पक्षियों के साथ मित्रता होने लगी। पक्षियों के कलरव, वत्सर की बाँसुरी, मंदिर के घंट की मंगल ध्वनि, वत्सर के मुख से उच्चारित मंत्रों के स्वर आदि ने सरिता और शैल के जीवन को आनंद से भर दिया। समय बीतता गया।
एक संध्या, भोजन उपरांत तीनों दूरदर्शन पर समाचार देख रहे थे। समाचार था कि,
'कुछ वर्ष पूर्व हुए अकस्मात में नष्ट हुए विमान का ब्लेक बॉक्स खोजने में सफलता हाथ लगी है। समुद्र के तल से उसे निकालकर जांच हेतु लाया गया है। इससे विमान के अकस्मात के कारण को जान सकेंगे। इतने वर्षों से जो रहस्य बना रहा था वह प्रकट हो सकेगा। इस विमान दुर्घटना में दो सौ से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी। इन व्यक्तियों में से अभी भी कुछेक के शव नहीं मिले हैं। क्या वे अभी भी कहीं जीवित हैं? यदि जीवित हैं तो कहाँ हैं? क्या वे कभी अपने घर लौट सकेंगे? अपनों से मिल सकेंगे? इन रहस्यों को ब्लेक बॉक्स की सहायता से जाना जाएगा।'
तीनों इस समाचार को ध्यान से देख रहे थे, सुन रहे थे। तीनों के मन में अनेक विचार आते जाते रहे। तीनों के मन में कोई बात थी, कोई दुविधा थी। तीनों कुछ कहना चाहते थे। तीनों यह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या कहें। रात्री आगे बढ़ गई। तीनों अपने अपने विचारों के साथ निद्राधिन हो गए।

[69]

तारा स्नान से लेकर पूजा अर्चना आदि कार्यों से निवृत्त होकर तीनों गर्भ गृह में भगवान श्री कृष्ण के सम्मुख बैठे थे तभी शैल ने बात करने की चेष्टा की।

“जीतने भी विमान हैं इस धरती पर उसे तो हम मनुष्यों ने ही बनाए हैं न?”

“यह तो नि: संदेह है, शैल।”

“सरिता जी, शैल संदेह नहीं कर रहा है। शैल के मन में कोई बात है जिसका सीधा संबंध कल देखे समाचार से है। वही बात उसे चिंतित कर रही है। कदाचित वह वही बात कहना चाहता है। शैल, क्या बात है?”

“जब मनुष्य विमान बनाता है तो ब्लेक बॉक्स भी बनाता है। मैंने ढूंढा और जाना कि ब्लेक बॉक्स का महत्व क्या है।”

“क्या है, शैल?”

“विमान और धरती पर स्थित नियंत्रण केंद्र के मध्य यह एक सेतु है। विमान और इस नियंत्रण कक्ष के मध्य जो भी बात होती है, जो कुछ सुचनाओं का आदान प्रदान होता है, विमान की जो भी गतिविधीयां होती हैं वह सारा उसमें मुद्रित हो जाता है। विमान टूटने की क्षण तक का प्रत्येक संदेश उसमें होता है। विमान दुर्घटना का कारण उन संकेतों, संदेशों, बातों और गतिविधियों से मिल जाता है।”

“हाँ, यह तो सब जानते हैं। तुम्हारा संकेत किस तरफ है, शैल?”

“मनुष्य के बनाए हुए विमान में भी यदि ब्लेक बॉक्स होता है जो उनके नष्ट होने पर भी सारी कथा कह देता है किन्तु सर्व गुण सम्पन्न ईश्वर ने इस शरीर को तो बना दिया किन्तु उसका

ब्लेक बॉक्स बनाना भूल गया। मनुष्य की मृत्यु हो गई, देह नष्ट हो गया और सारी कथा समाप्त! सारे रहस्य बंद! कोई कभी नहीं जान सकता कि उस मनुष्य के रहस्य क्या थे? सब कुछ समाप्त। मनुष्य ईश्वर से अधिक बुद्धिमान, अधिक चतुर निकला।" शैल ने एक लंबी सांस छोड़ी। श्रीकृष्ण की प्रतिमा को आक्रोश और व्यंग भरी दृष्टि से देखा। सरिता और वत्सर ने शैल के मुख पर उभरे उन भावों को देखा। क्षणभर दोनों मौन रहे। पश्चात सरिता ने मौन तोड़ा।

"शैल, तुम्हारा तात्पर्य मीरा हत्या से है न?"

"वैसे तो मीरा हत्या से ही मेरा तात्पर्य है किन्तु केवल मीरा से ही क्यों? इस जगत में कितने सारे व्यक्तियों के रहस्य हैं जिसे आज तक मनुष्य उद्घाटित नहीं कर पाया। क्यों? क्यों कि उनके ब्लेक बॉक्स नहीं थे न?"

"कौन कौन से रहस्य अप्रकट हैं?"

"अनेकों रहस्य हैं, विश्वभर में। यदि भारत की बात करें तो केवल दो उदाहरण भी पर्याप्त हैं। एक, सुभाषचंद्र बोझ की मृत्यु का रहस्य। दूसरा, लाल बहादुर शास्त्री जी की मृत्यु का रहस्य। क्या हमें इन दोनों की मृत्यु की वास्तविकता जानने का अधिकार नहीं है? जिज्ञासा नहीं है? काल की गर्ता में दोनों रहस्य कहीं दब गए हैं, कदाचित नष्ट ही हो गए हैं। क्यों कि ईश्वर ने ब्लेक बॉक्स बनाया ही नहीं। हम कभी इन रहस्यों को जान नहीं पाएंगे, कभी नहीं।"

"यदि ईश्वर ने मानव शरीर के भीतर ब्लेक बॉक्स जैसा कुछ डाल दिया होता तो ....।"

"सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना, हमारा यह शरीर त्रुटियों से युक्त है। यह वही शरीर है जिसकी वत्सर प्रशंसा करता है, शास्त्रों में बड़ा महत्व कहा गया है। मुझे तो न शास्त्रों पर विश्वास है न ही ईश्वर पर।"

शैल ने अपना आक्रोश, अपनी अप्रसन्नता भगवान की मूर्ति के समक्ष ही प्रकट कर दी। भगवान श्री कृष्ण भी सरिता और वत्सर के साथ साथ शैल की बातें सुन रहे थे। कदाचित मन ही मन हँसते भी थे। किन्तु उस पर किसी का ध्यान नहीं गया। शैल के शब्दों से वत्सर और सरिता भी विचलित हो गए। विचारने लगे कि - शैल की बात सत्य है। शैल का आक्रोश उचित भी है। दोनों के मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा भी थी कि ईश्वर अपनी रचना में कोई अपूर्णता नहीं रखता, तो मनुष्य शरीर में भी कैसे अपूर्णता रखेगा? मनुष्य शरीर अपने आप में पूर्ण ही होगी किन्तु हमारी अल्पमति उस पूर्णता को देख नहीं सकती।

मन में दुविधा लेकर तीनों मंदिर से निकले, भोजन किया और विश्राम करने चले गए। आज तीनों में से किसी को भी विश्राम कहाँ?

(^(^(^)^)^)

जब प्रात:काल की मंगला आरती सम्पन्न हुई तो समाचार मिला कि गाँव की एक वृदधा की मृत्यु हो गई है। गुरुजी वहाँ अंतिम क्रिया हेतु जा रहे हैं। वत्सर को भी वहाँ बुलाया गया है। "गाँव में जब भी किसी की मृत्यु हो जाती है तब गुरुजी उसकी अंतिम क्रिया करवाते हैं। मैं भी उसमें सम्मिलित होता हूँ। इसलिए मेरा जाना आवश्यक है। आप दोनों पूजा अर्चना के शेष क्रम को सम्पन्न कर लेना। मैं अंतिम संस्कार के उपरांत ही लौटूँगा।" वत्सर चला गया।
सरिता और शैल ने शेष कर्मों को सम्पन्न किया। वत्सर जब लौटा तब भोजन का समय हो गया था। तीनों ने भोजन कर लिया।
वत्सर के जाने के समय दोनों के मन में कुछ प्रश्न थे उसे पूछने का यही समय उचित है ऐसा मानते हुए शैल ने पूछा, "वत्सर, किसकी मृत्यु हुई? कितनी आयु थी उनकी?"
"एक वृदधा थी, गीता मई नाम था उनका। आयु होगी प्राय: नब्बे से अधिक।"
"मृत्यु कैसे हुई? कोई रोग था?"
"रोग तो कोई नहीं था किन्तु वृदधावस्था के कारण शरीर क्षीण होता गया और अंतत: क्षीण शरीर को छोड़कर जीव चला गया।"
"क्या वह सनातनी थी? चरित्र कैसा था?"
"वह सनातनी थी। ईश्वर में अपार श्रद्धा रखती थी। कभी असत्य का आश्रय नहीं लिया। उत्तम एवं पवित्र आत्मा थी वह।"
"मृत्यु के पश्चात आत्मा की गति कैसी होती है?"
"कर्मों के अनुसार आत्मा की गति होती है। कर्मों का फल इस जन्म में भी भोगना पड़ता है, नए जन्म में भी।"
"यह मृत्यु अंतत: है क्या? कुछ समझ नहीं आ रहा है मुझे।"
"यदि सरल भाषा में कहें तो मृत्यु शरीर की होती है, आत्मा की नहीं।"

“कैसे?”

“श्रीमद भगवद गीता में भगवान ने स्वयं इस विषय में दो श्लोक कहे हैं। दूसरे अध्याय के श्लोक क्रमांक 22 एवं 23.

बाइसवाँ श्लोक है -

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति नरोपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।। 22/2”

जैसे ही वत्सर ने श्लोक बोलना प्रारंभ किया तो सरिता और शैल ने भी साथ साथ उस श्लोक का उच्चार किया।

“और तेइसवाँ श्लोक है -

नैनं छिंदन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक: ।

न चैनं क्लेदयंत्यापो न शोषयति मारुत: । । 23/2 “

इस श्लोक का भी दोनों ने वत्सर के साथ उच्चार किया।

“तो आप दोनों को यह दोनों श्लोकों का ज्ञान है ही। यही आपके प्रश्न का उत्तर है।”

“अरे यह क्या बात हुई, वत्सर? यह हमारा उत्तर कैसे हो सकता है?”

“आप इन दोनों श्लोकों को जानते हैं तो आपको इनके अर्थ भी ज्ञात ही होंगे।”

“हमने कई बार इन दोनों श्लोकों को सुना है इस लिए हमें इसका स्मरण हो गया है किन्तु अर्थ नहीं जानते हैं।”

“क्या अर्थ है, वत्सर?”

[70]

“आज हर कोई गीताजी के श्लोकों को बोलना जानता है किन्तु विडंबना है कि इतने महान ज्ञान ग्रंथ को हमने केवल पठन के लिए ही रखा है, हम पठन करके, कंठस्थ करके संतुष्ट हो जाते हैं और मानने लगते हैं कि हम ज्ञानी हैं, पुण्यात्मा हैं। जब तक हम किसी श्लोक या मंत्र के अर्थों को नहीं जानते, नहीं समझते तब तक सब व्यर्थ है। चलो, मैं आपको इन दो श्लोकों का अर्थ बताता हूँ।

बाइसवें श्लोक का अर्थ है -
जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता है।”
“अर्थात?”
इस श्लोक को विस्तार से समझने के लिए तेइसवें श्लोक को समझना आवश्यक है अन्यथा पूरा अर्थ ग्रहण नहीं कर पाओगे। दूसरे श्लोक का अर्थ है -
इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, इसको आग जला नहीं सकती। इसको जल गला नहीं सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकता।”
“इन दोनों को मिलाकर जो तात्पर्य है उसे सरल में समझा दो, वत्सर।”
“भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि आत्मा अजर अमर है। उस पर किसी भी बात का प्रभाव नहीं पड़ता। और प्रथम श्लोक का तात्पर्य है कि आत्मा संसरण - गति करता है और एक शरीर में प्रवेश करता है, उस शरीर का उपयोग कर भोग भोगता है और समय आने पर उस शरीर को

त्यागकर नए शरीर में प्रवेश करता है। यह क्रम चलता रहता है। पुराने शरीर के माध्यम से किए गए कर्मों के अनुसार नए शरीर में फल भोगता है।”
“कभी कभी हम कहते हैं कि यह तो पिछले जन्मों के कर्मों का फल है। हैं न?”
“बस यही बात है।”
“अब सब कुछ समझ में आया।”
“और शैल तुम्हें?”
शैल विचारों से, मनोमंथन से जागा।
“मुझे तुम्हारी बात समझ में तो आ गई किन्तु मेरा मन संशय में है।”
“यदि तुम संशय कर रहे हो तो कह दूँ कि यह बात जो मैंने कही वह मेरी नहीं, स्वयं भगवान श्री कृष्ण की है। किन्तु तुम्हारा संशय क्या है?”
“हम पिछले जन्मों का फल भोगते हैं किन्तु जब हम नया जन्म, नया शरीर धारण कर लेते हैं तो पुराने शरीर के कर्म - स्मृतियाँ आदि नए शरीर को कैसे स्मरण रहता है। नया शरीर तो पूर्णत: शुद्ध होता है, उसमें कोई विकार नहीं होता है तो वह फल क्यों भोगता है? उसने अभी तो कोई कर्म किए ही नहीं।”
“नए शरीर ने अभी कोई कर्म किया ही नहीं है अत: तुम्हारा संशय उचित है। किन्तु तुमने उत्तर प्रथम बोला है, पश्चात प्रश्न किया है।”
“वह कैसे?”
“तुमने कहा न कि नया शरीर पुराने शरीर के कर्मों को भोगता है। वास्तव में शरीर नया या पुराना हो सकता है, हम - हमारी आत्मा तो वही रहती है। नया शरीर होने पर भी उसमें हम ही होते हैं। इस लिए हम ही कर्मों का फल भोगते हैं। हम अर्थात हमारी आत्मा, यह जीवात्मा। शरीर नहीं।”
“अर्थात हम नए शरीर में पुराने शरीर की सारी बातें लेकर प्रवेश करते हैं। ऐसा मेरा मत बन रहा है।”
“सत्य कहा आपने, सरिता जी।”
“यदि यह बात सत्य है तो हम जिस प्रश्न का उत्तर कल से प्राप्त करना चाहते हैं वह हमें मिल गया है।”

“क्या? कैसे, सरिता जी?”

“शैल, हमारे इस शरीर के भीतर भगवान ने ब्लेक बॉक्स रखा ही है। भगवान की रचना, यह शरीर अपूर्ण नहीं किन्तु पूर्ण ही है। इसमें कोई दोष या त्रुटि नहीं है।”

“कैसा है यह ब्लेक बॉक्स? कहाँ है?”

“इस शरीर का ब्लेक बॉक्स हम ही हैं, हमारी आत्मा, हमारा जीव।”

“वह कैसे?” शैल ने पुछा। वत्सर ने कोई प्रश्न नहीं किया। सरिता की बात का मर्म उसे प्राप्त हो गया था। वह मन ही मन मंद मंद स्मित करता हुआ सरिता और शैल के वार्तालाप को सुनता रहा।

सरिता ने कहा, “शैल, हम जो भी कर्म करते हैं उसकी क्षण क्षण का मुद्रण हमारे ब्लेक बॉक्स अर्थात शरीर के भीतर रहे जीव में - आत्मा में होती रहती है। हमारे पाप - पुण्य, अच्छे - बुरे कर्म आदि का क्षण प्रतिक्षण का इतिहास इसमें अंकित हो जाता है। जब नए शरीर में हम प्रवेश करते हैं तो हमारी आत्मा के साथ उन सभी कर्मों का विवरण भी प्रवेश कर जाता है। इस प्रकार हम, हमारा जीव या हमारी आत्मा ही इस शरीर का ब्लेक बॉक्स है। वत्सर, क्या मानना है तुम्हारा?”

सरिता और शैल ने वत्सर की तरफ देखा। वह शांत चित्त से दोनों की बात सुन रहा था। मुख पर मंद हास था, दृष्टि श्री कृष्ण पर स्थिर थी। दोनों ने अब श्री कृष्ण की तरफ देखा। उन्हें प्रतीत होने लगा कि कृष्ण के अधरों पर भी मंद हास था और आँखों में प्रसन्नता। वत्सर, शैल, सरिता को उस जटिल प्रश्न का उत्तर मिल चुका था।

<><><><><>

संध्या आरती के पश्चात, वत्सर की बाँसुरी वादन के पश्चात वत्सर ने बात प्रारंभ की।

“अब हमें सतलज नदी के तट पर चलते रहकर घटना स्थल खोजने का कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है।”

“क्यों? क्या कोई प्रमाण हाथ लग गए हैं जिससे जान सकें कि मीरा की मृत्यु कैसे हुई?”

“या तुम हमारे प्रास्ताविक अभियान से स्वयं को मुक्त करने का आशय रखते हो?”

“दोनों में से एक भी बात सत्य नहीं है, दोनों मिथ्या प्रश्न है। शैल, कोई प्रमाण हाथ नहीं लगा है। सरिता जी, मैं अभी भी अभियान से जुड़ा हूँ और जब तक रहस्य हाथ नहीं लगता, जुड़ा रहूँगा। वास्तव में बात यह है कि हमें मीरा के शरीर में जो आत्मा बसी थी उसे खोजना होगा। वह स्वयं सभी रहस्यों को प्रकट कर देगी।”
“मीरा की आत्मा कहीं किसी अन्य शरीर में प्रवेश कर चुकी होगी। इस धरती पर प्रत्येक क्षण 250 से अधिक व्यक्ति जन्म लेते हैं। अर्थात प्रति दिन 350000 साढ़े तीन लाख। हम नहीं जानते कि मीरा की मृत्यु कब हुई? वत्सर, यदि हम मान लें कि मीरा की मृत्यु उस दिन हुई जिस दिन तुमने वह शिल्प रचा। तो इस बात को आठ वर्ष हो गए। प्रति दिन साढ़े तीन लाख की गणना से आठ वर्ष में प्राय: एक अबज से अधिक आत्माओं ने नए शरीर में प्रवेश किया होगा। इतने सारे शरीरों में से मीरा की आत्मा ने किस शरीर में प्रवेश किया होगा यह कैसे जान सकेंगे?”
“यदि हम उसे ढूंढ भी निकालें तो भी उस शरीर के चित्त को मीरा की आत्मा के कर्मों का स्मरण कैसे कराओगे? वह कैसे कहेगी कि मेरे पुराने शरीर की मृत्यु कैसे हूई? क्यों उसने मीरा के शरीर को त्याग दिया था?”
“शैल, यह तो मैंने सोचा ही नहीं था। इतना विचार तो आप पुलिसवाले ही कर सकते हैं।”
“तो अब कोई बहाना नहीं। तुम्हें शीघ्रता से चलना होगा हमारे साथ।”
वत्सर ने मौन धारण कर लिया।

[71]

“वत्सर, आज रात्री तक सारी तैयारियां कर लो, कल प्रात: हमें चलना होगा।” शैल की बात पर वत्सर ने मौन ही रखा।

अधिरता से सरिता ने कहा, “वत्सर, तुम उत्तर क्यों नहीं देते? कल भी शैल ने कहा था कि तुम्हें हमारे साथ शीघ्रता से चलना होगा तब भी तुम मौन हो गए थे। अभी भी मौन ही हो। क्या चल रहा है तुम्हारे मन में?”

“जब तक तुम बताओगे नहीं, कैसे समझ में आएगा?”

“मैं क्या बताऊँ? मुझे तो कोई मार्ग नहीं दिख रहा।”

“सीधी सी बात है। हमें घटना स्थल को ढूँढना है।”

“अब तो कई दिन व्यतीत हो गए हैं तो सपन - निहारिका का भय भी लुप्त हो गया है।”

“तो अब कोई समस्या नहीं होनी चाहिए, वत्सर।”

“समस्या तो है ही, शैल। जिस प्रकार कल तुमने मीरा की आत्मा के नए शरीर को खोजने में तथा यदि मिल भी जाए तो रहस्य पाने में समस्या बताई थी उसी प्रकार इतने बड़े सतलज नदी

के मार्ग पर मीरा की मृत्यु का घटना स्थल खोजना प्राय: असंभव कार्य है। हम तो यह भी नहीं जानते कि घटना तट पर ही हुई होगी या अन्यत्र?”
“अन्यत्र?”
“समग्र भारत के किसी भी स्थान पर मीरा की मृत्यु की संभावना है। कहाँ कहाँ ढूँढोगे? कैसे कैसे ढूँढोगे?”
“वत्सर, तुम इस प्रकार बात करके हमारे उत्साह को बढ़ाने के स्थान पर हमें उत्साहहीन कर रहे हो।”
“नहीं शैल। मैं तो केवल वास्तविकता का आकलन प्रस्तुत कर रहा हूँ।”
“तो क्या हमें इस अभियान को त्याग देना चाहिए? हार मानकर बैठ जाना चाहिए?”
“सरिता जी को पाकिस्तान लौट जाना चाहिए?”
“मैंने ऐसा कुछ भी नहीं कहा है।”
“परोक्ष रूप से यही कहना चाहते हो।”
“प्रथम तो आप दोनों शांत हो जाइए। मेरे आकलन पर ध्यान देकर विचार कीजिए कि जो अभियान हम करने जा रहे हैं उसकी सफलता की संभावना कितनी है? मेरे विचार में यह संभावना करोड़ों में एक के समान है। प्राय: असंभव। तथापि आप उसी को उचित मार्ग जानते हो, मानते हो, समझते हो और उस पर ही चलना चाहते हो तो मैं चलने को सज्ज हूँ।”
“इसके उपरांत कोई अन्य विकल्प भी है क्या?”
“उस पर ही तो मैं विचार कर रहा हूँ। इसीलिए मैं कल से मौन हूँ।”
“तुम्हारा मौन शीघ्र ही भंग हो ऐसी कामना करता हूँ।”
“तथास्तु।” सरिता ने कहा।

<~><~><~>

“वत्सर, यह तो हमें ज्ञात हो गया कि आत्मा एक शरीर त्यागकर दूसरे शरीर में और दूसरे शरीर को त्यागकर तीसरे शरीर में प्रवेश करती है। निरंतर शरीरों का त्याग और ग्रहण करती रहती है।

आत्मा पुराना शरीर त्यागकर नए शरीर में तत्काल प्रवेश करती है या कुछ समय के पश्चात? आत्मा की गति क्या है? कैसी है?"
"मेरी अल्प मति और अल्प ज्ञान अनुसार एक शरीर त्याग और दूसरे शरीर को ग्रहण करने के बीच कोई निश्चित समय नहीं है। कभी आत्मा तत्काल दूसरा शरीर ग्रहण कर लेती है तो कभी लंबे समय तक आत्मा निष्क्रिय रहती है"
"इस लंबे समय तक निष्क्रिय आत्मा कहाँ जाती है? वहाँ उसका क्या होता है? कैसे उसे इतना लंबा समय मिल जाता है?"
"कहाँ जाती है या उसका क्या होता है इसका उत्तर देने से पूर्व हमें यह जानना चाहिए कि उसे लंबा या अल्प समय क्यों मिलता है?"
"यही तो हम जानना चाहते हैं।"
"समय का आधार आत्मा के द्वारा किए गए पिछले शरीर के कर्मों पर है।"
"वह कैसे जाना जाता है? कौन इसका सारा व्यवहार संभालता है?"
"हमने चर्चा की है कि हमारे क्षण क्षण के कर्मों का इतिहास आत्मा में अंकित होता रहता है। तो आत्मा जब वहाँ जाती है तब उसके भीतर अंकित सारा इतिहास पढ़ा जाता है। उसका विश्लेषण किया जाता है। उस आधार पर उसकी आगे की गति का निर्णय होता है।"
"वहाँ अर्थात कहाँ जाती है? कौन इसे पढ़ता है? कौन उसका निर्णय करता है?"
"शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मांड में कोई स्थान है जहां आत्मा जाती है। वहीं आत्मा का इतिहास पढ़ा जाता है। वहीं उसकी गति का निर्णय किया जाता है।"
"रुको, वत्सर। एक क्षण रुको।" वत्सर रुक गया। उसने जिज्ञासा और उत्सुकता से सरिता को देखा।
"वत्सर, मेरे, तुम्हारे, शैल के शरीर में भी अभी आत्मा स्थित है। क्यों कि हम अभी जीवित हैं। हैं न?"
"अवश्य।"
"तो यह बता सकते हो कि हमारे इस शरीर में आत्मा कहाँ रहती है? उस पर सारी बातें कैसे अंकित होती है? क्या हम उसे पढ़ सकते हैं?"

“सरिता जी, हमने अभी अभी जो जो बातें की, इतने दिनों से यहाँ जो जो कर्म किए वे सभी भी उस पर अंकित हो गया होगा न? मुझे उसे पढ़ना है।”
“शैल, अधीर मत बनो। सरिता जी, हमारे शरीर में आत्मा कहाँ रहती है यह तो मैं नहीं जानता। हम आत्मा को देख नहीं सकते और न ही उस पर अंकित इतिहास को पढ़ सकते हैं।”
“वत्सर, हम जिन जिन बातों को नहीं जानते उन सभी बातों को तुम्हारे गुरुजी से पुछ कर जान लेते हैं।”
“उत्तम विचार है यह, सरिताजी।”
“तुम गुरुजी से समय मांग लो। हम उनके पास जाने को उत्सुक हैं।”
“अवश्य। मैं तो भूल ही गया था कि गुरुजी के पास उत्तर होते हैं। स्मरण कराने के लिए सरिताजी, धन्यवाद।”

[72]

“आओ वत्सर, कैसे हो?” गुरुजी ने स्वागत किया।
“मैं कुशल हूँ, गुरुजी। आपके आशीर्वाद हैं।”
“अपने अपने आसन ग्रहण करो। पश्चात कहो कि कौन सी जिज्ञासा लेकर आए हो, वत्स?” सभी बैठ गए।
“आप कोई प्रश्न पूछो उससे पूर्व बता दूँ कि जिज्ञासा है तो उत्तर मिलेगा, संशय हो तो समाधान होगा। इसके लिए शास्त्रों पर श्रद्धा होनी आवश्यक है।”
“गुरुजी, हमें आपके वचनों पर पूरा विश्वास है।”

“मेरे वचनों पर नहीं, शास्त्रों पर विश्वास रखना होगा। मैं तो मनुष्य हूँ। मेरी अल्प मति यदि शास्त्रों के अर्थघटन में मिथ्या सिद्ध होती है तो इसमें शास्त्रों को या शास्त्रों के वचनों को मिथ्या नहीं समझना चाहिए।”
“जी, गुरुजी।”
“अपना प्रश्न रखो, वत्स।”
“गुरुजी आत्मा का रंग, रूप, कद, आकार, गंध आदि कैसे होते हैं? वह मनुष्य के शरीर में कहाँ रहती है? उसमें हमारे सारे जन्मों का इतिहास कैसे संग्रह होता है?” शैल ने प्रश्नों को रखा।
“आत्मा का कोई रंग, कोई रूप, कोई कद या कोई आकार नहीं होता है। न ही उसकी कोई गंध होती है। तथापि वह हमारे शरीर में रहता है। शरीर में वह किसी निश्चित स्थान पर नहीं रहता अपितु वह समग्र शरीर में व्याप्त रहता है। हमारे कर्मों का इतिहास इसमें संग्रहीत होता है, क्षण - क्षण का इतिहास संग्रह करने की इसकी क्षमता अनंत है। अनंत जन्मों के कर्मों को यह संग्रहीत कर लेता है।”
“इसे विस्तार से समझाने की कृपा करें, गुरुजी।”
“बेटी सरिता, प्रथम हम आत्मा के स्वरूप को समझते हैं। आत्मा का कोई स्थूल स्वरूप नहीं होता है। अत: उसका रंग, रूप, आकार, कद, गंध कुछ नहीं होता। न ही हम उसे देख सकते हैं, न ही स्पर्श कर सकते हैं। न ही उसकी कोई सुगंध हमें मिल सकती है।”
“यह कैसे हो सकता है? कोई वस्तु है भी और उसे न देख सकते हैं, न स्पर्श कर सकते हैं?”
“शैल, यह हो सकता है, हमारे पास ऐसी अनेक वस्तुएं हैं।”
“जैसे?’
“जैसे हवा, जैसे शब्द, जैसे विचार। क्या हमने कभी हवा को देखा है? हम हवा का रंग, रूप, कद, आकार नहीं जानते। हवा को स्पर्श नहीं कर सकते। न ही सूंघ सकते हैं। यही शब्दों के साथ, हमारे विचारों के साथ भी सत्य है।”
“किन्तु हवा में तो सुगंध होती है। हवा हमें स्पर्श भी करती है।”
“शैल, हवा में जो सुगंध होती है वह हवा की नहीं होती है। हवा अपने साथ पुष्पों की सुगंध लेकर चलती है। कूडे की दुर्गंध लेकर चलती है। हवा अपनी सुगंध हमें नहीं देती है क्यों कि हवा की अपनी कोई सुगंध नहीं होती है।”

“और स्पर्श?”

“हवा हमें स्पर्श करती है, हम हवा को नहीं। जैसे, यह पुस्तक यहाँ है। मैं इसे स्पर्श करता हूँ।” गुरुजी ने पुस्तक को स्पर्श किया।

“आप भी इसे स्पर्श कर सकते हो। कोई भी इसे स्पर्श कर सकता है। क्यों कि इसका दृश्यमान स्थूल रूप है। किन्तु पुस्तक स्वयं हमें स्पर्श नहीं कर सकती। क्योंकि उसमें आत्मा नहीं है। आप एक दूसरे को स्पर्श कर सकते हो क्योंकि आपके भीतर आत्मा है। वैसे ही एक मृत शरीर को आप स्पर्श कर सकते हो किन्तु मृत शरीर जो आत्मा विहीन है वह स्वयं आपको स्पर्श नहीं कर सकता। इस प्रकार हवा हमें स्पर्श करती है, हम हवा को नहीं।”

“और शब्द और विचार?”

“हवा की ही भांति शब्द और विचार का भी स्थूल रूप नहीं होता। पुस्तक में लिखे हुए शब्द को हम शब्द समझते हैं किन्तु वे न तो शब्द होते हैं न विचार। वह तो लिपि है जो हमरे विचारों को, हमारे उच्चरित शब्दों को लिपि के माध्यम से प्रस्तुत करती है। हमारे विचार या शब्द एक तरंग के रूप में आकाश में व्याप्त हो जाते हैं। हम उसे देख नहीं सकते, सूंघ नहीं सकते, पकड़ नहीं सकते, स्पर्श नहीं कर सकते।”

“अर्थात, आत्मा भी एक तरंग ही है क्या?”

“शैल, तरंग क्या है? तरंग एक चेतना ही है। आत्मा भी चेतना ही है।”

“तरंग और आत्मा में कोई भेद है क्या?”

“है न। प्रत्येक तरंग की निश्चित तरंग लंबाई होती है। इसके कारण प्रत्येक तरंग नष्ट हो जाता है। आत्मा की तरंगलंबाई असीम होती है, अनंत होती है। अत: आत्मा कभी नष्ट नहीं होती।”

“वाह गुरजी। यह तो विज्ञान है।”

“शैल, हमारे शास्त्र विज्ञान से ही रचे गए हैं। सभी शास्त्र स्वयं में विज्ञान है।”

“गुरुजी, विज्ञान के अनुसार माहिती संग्रह के विविध साधन हैं जिनमें नियत मात्रा में ही संग्रह संभव होता है। सुणा है कि आत्मा में चोरासी लाख जन्मों का इतिहास संग्रह होता है। क्षण क्षण का इतिहास। आत्मा की संग्रह क्षमता कितनी होती है? आत्मा में यह संग्रह कैसे होता है? कौन करता है?”

“मनुष्य की प्रत्येक रचना की कोई न कोई सीमा होती है। अत: माहिती संग्रह के साधनों की भी मर्यादा है। वह कभी अनंत नहीं हो सकती। आत्मा की रचना स्वयं ईश्वर ने की है अत: इसकी संग्रह शक्ति असीमित है। अनंत है।”
“आत्मा स्थूल नहीं है तथापि उसमें इतनी संग्रह शक्ति है। यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। यह आत्मा शरीर में रहता कहाँ है?”
“शरीर में प्रत्येक अंग का स्थान निश्चित है। क्योंकि वे स्थूल रूप में हैं। आत्मा चेतना के रूप में है अत: वह शरीर में किसी एक स्थान पर न रहकर सारे शरीर में सदैव व्याप्त रहती है। शरीर के जिस अंग में चेतना व्याप्त नहीं रहती या आत्मा जिस अंग का त्याग कर देती है वह अंग निश्चेत हो जाता है। वेदना - संवेदना हीन हो जाता है। जब आत्मा सम्पूर्ण शरीर को त्याग देती है तब सारा शरीर मृत हो जाता है।”
“और आत्मा अपने साथ उस शरीर के सारे कर्मों का इतिहास भी ले जाता है। हैं न गुरु जी?”
“हाँ, सरिता।”
“आत्मा पर यह सारा इतिहास कौन लिखता है? कैसे लिखता है? कौन पढ़ता है? कैसे पढ़ता है?”
“शैल, यह प्रश्न अति उत्तम है।” गुरुजी की बात सुनकर शैल प्रसन्न हो गया। अनायास उसके होंठों पर स्मित आ गया।
“आत्मा चेतना स्वरूप है। वह परम चैतन्य ईश्वर का ही अंश है। इसका अर्थ जानते हो?”
“नहीं।”
“इसका अर्थ है कि स्वयं ईश्वर ही हमारे भीतर आत्मा बनकर रहता है।”
“तो ईश्वर ही आत्मा पर लिखता है, ईश्वर ही आत्मा को पढ़ लेता है?”
“और ईश्वर ही कर्मों के अनुसार आत्मा की गति निश्चित करता है?”
“यदि यह बात है तो हम हम नहीं किन्तु ईश्वर का अंश हैं। हमारे रूप में ईश्वर ही सारे कर्म करता - करवाता है।”
“यह तो अद्भुत है!”
“हाँ, शैल, सरिता और वत्सर। यह जीवन चक्र अद्भुत ही है।”

“गुरुजी, प्राचीन शरीर के त्याग और नूतन शरीर के ग्रहण के मध्य जो समय होता है उस समय में आत्मा कहाँ जाता है?”
“शैल, मध्य के इस समय में आत्मा लोक में आत्मा जाती है। वहाँ विश्राम करती है।”
“यह आत्मा लोक कैसा होता है?”
“आत्मा लोक एक प्रयोगशाला जैसा होता है। वहाँ आत्मा के कर्मों का विश्लेषण, अवलोकन, आकलन अविरत चलता रहता है। उसके आधार पर अंत में उसके नए शरीर का निर्णय होता है।”
“यह आत्मा लोक बड़ा रोचक है। यह है कहाँ?”
“क्यों? वहाँ जाने की इच्छा है?”
“जी गुरुजी, मैं वहाँ जाना चाहता हूँ।”
“वह तो तुम मृत्यु के पश्चात जानेवाले ही हो।”
“नहीं गुरुजी। मुझे इसी देह के साथ जाना है।”
“क्यों?”
“मुझे एक आत्मा को पढ़ना है।”
“मीरा की आत्मा को?”
“हाँ, गुरुजी। किन्तु, आपने कैसे जाना कि मैं मीरा की आत्मा को ...?”
“वह छोड़ो। आज तक कोई सदेह आत्मा लोक में नहीं गया तो तुम कैसे जा सकोगे?”
“आप आत्मालोक का स्थान बताया दीजिए, गुरु जी। मैं वहाँ जाने का प्रयास करूंगा। यदि इसमें मेरी मृत्यु हो गई तो आत्मा के रूप में तो पहुँच ही जाऊंगा।”
“शैल, चलो मैं आत्मा लोक का स्थान भी बता देता हूँ। हमारी इस पृथ्वी का एक बिन्दु है जहां से सारे संसार का संचालन होता है वहीँ पर इस पृथ्वी का आत्मालोक है।”
“कहाँ है वह स्थान?”
“कैलास पर्वत पर है यह स्थान ऐसा शास्त्रों में ऋषियों ने बताया है।”
“गुरुजी, कैलाश पर्वत पर कोई नहीं जा सका है।”
“वत्सर, यही तो मैं कह रहा हूँ।”
“गुरुजी, क्यों कोई वहाँ नहीं जा पाया? क्या कारण है?”

“कारण वही है कि वह पृथ्वी लोक नहीं, आत्मा लोक है। वहाँ का वातावरण, हमारी पृथ्वी के हमारे शरीर के परिचित वातावरण से भिन्न है। हमारे शरीर की रचना इस पृथ्वी के वातावरण के अनुकूल रची गई है। कैलाश पर्वत के वातावरण अनुसार नहीं।”
“तो आत्मा पृथ्वी से वहाँ तक कैसे चली जाती है?”
“आत्मा चेतन है, शरीर नहीं। आत्मा इस शरीर को यहीं छोड़कर जाती है। यदि वह इस शरीर को भी साथ ले जाने की हठ करती तो कभी वहाँ नहीं जा सकती।”
“ओह .. हो।” शैल ने लंबा प्रश्वास किया। उसके मुख पर निराशा की रेखाएं स्वत: प्रकट हो गई। वह मौन हो गया। चिंतन करने लगा।
सरिता ने मन में विचार किया, ‘मीरा का रहस्य कभी उद्‌घाटित नहीं होगा। हमें उसे त्याग देना पड़ेगा।’
गुरुजी ने वत्सर की तरफ देखा। वत्सर ने दोनों की तरफ देखा। उसे विदित हो गया कि शैल और सरिता की अपेक्षा निरस्त हो चुकी है। उसने दोनों से पूछा, “और कोई जिज्ञासा है?”
सरिता विचारों से प्रथम जागी, “नहीं, मुझे कोई प्रश्न नहीं है।”
“और शैल तुम्हें?”
विचारों से जागकर शैल बोल, “मैं नहीं जानता, मेरे भीतर अनेकों नए प्रश्नों ने आक्रमण कर दिया है।”
“तो पुछ लो गुरुजी से।”
“नहीं पुछ सकता।”
“क्यों?”
“क्यों कि प्रश्न अनंत हैं, सारे अव्यवस्थित हैं। अस्पष्ट भी हैं। मैं इस अवस्था में कुछ भी प्रश्न करने की स्थिति में नहीं हूँ।”
“तो गुरुजी से आज्ञा लेकर चलें?”
तीनों ने गुरुजी को वंदन किया, आज्ञा ली और वहाँ से चल दिए।

शैल किसी अश्रद्धालु की भांति गुरुजी से मिलकर दुविधा में था । उसे यह समझ में नहीं आ रहा था की-
जो भीतर है भी और दिखता नहीं है।
जो है भी किन्तु कहाँ है वह नहीं जान सकते।
और है तो अंत में चला क्यों जाता है?
जब जाता है तब भी क्यों दिखता नहीं?
कहाँ चला जाता है?
यदि किसी जीव को सुंदर और चिर यौवन युक्त शरीर होता है तो वह उस शरीर में रुक क्यों नहीं जाता?
उसे भी क्यों छोड़ देता है?
जो स्थूल रूपमें नहीं तथापि अनंत जन्मों का इतिहास अपने भीतर कैसे संग्रह कर लेता है?
या तो यह सब बातें मिथ्या है या केवल कल्पना! मुझे इन सबका समाधान चाहिए। किन्तु कौन दे सकता है? कोई तो होगा जो इस विषय में ज्ञान रखता होगा। जो मेरे प्रश्नों का उत्तर दे सकता हो और उन उत्तरों से नए प्रश्नों का जन्म न हो, नई शंकाएं उत्पन्न न हो। सारी जिज्ञासा शांत हो और अंतत: मीरा की मृत्यु के रहस्य को प्रस्फुट कर सके। कौन होगा इस संसार में? या कोई नहीं? क्या मुझे भी इन सारे प्रश्नों और अभी तक अस्फुट रहे अनेकों रहस्यों के साथ ही यहाँ से जाना पड़ेगा? इस शरीर को त्यागकर ही जाना पड़ेगा? नए शरीर में इन्हीं प्रश्नों, इन्हीं रहस्यों और इन्हीं शंकाओं के साथ प्रवेश करना पड़ेगा?
जो भी हो, प्रकृति ने अपने भीतर रहस्यों को सँजोये रखा है। किन्तु कब तक? क्या प्रलय तक? प्रलय के समय सभी रहस्यों को खोलकर रख देगी यह प्रकृति या वह भी रहस्यों के साथ स्वयं को प्रलय में विलीन कर देगी? यदि प्रलय के समय रहस्यों को प्रस्फुट कर दे तो भी क्या? तब किसे रुचि होगी उन रहस्यों में?
क्या विज्ञान के पास इनके उत्तर हैं? या विज्ञान और अध्यात्म दोनों के संगम से उत्तर मिलेंगे?
अपने प्रश्नों के साथ शैल गुरुजी के यहाँ से लौट आया।

'सरिता और वत्सर के मन में कोई प्रश्न या शंका शेष प्रतीत नहीं हो रही है। केवल मुझे ही इतने सारे प्रश्न हो रहे हैं। क्यों? मुझे ही क्यों? इसका अर्थ है कि मुझे स्वयं ही, अकेले ही इन प्रश्नों के उत्तर खोजने होंगें?'
शैल ने दूर कहीं क्षितिज में देखा। वहाँ कुछ भी न था।
'मैं भी मूर्ख हूँ। प्रश्न मुझे अकेले को ही है तो उत्तर भी मुझे ही ढूँढना पड़ेगा ना? अकेले ही।' अपने विचार पर शैल हंस पड़ा।
"शैल, क्या बात है जो तुम हंस रहे हो?"
"क्या तुम्हें कोई मार्ग सूझ गया है उस रहस्य को पाने का?"
"आप दोनों वहाँ देखो। दूर दूर क्षितिज में।" शैल ने क्षितिज की तरफ अपने हाथ फैला कर कहा। सरिता और वत्सर उस क्षितिज को देखने लगे।
"वहाँ तो कुछ भी नहीं है, शैल?"
"तुम किस बात की तरफ संकेत कर रहे हो?"
शैल पुन: हंसा।
"कितना वैचित्र्य है कि वहाँ क्षितिज है और क्षितिज में कुछ भी नहीं? शून्य है? इस शरीर में स्थित आत्मा की भांति! है भी किन्तु नहीं दिखता। अदृश्य। सूक्ष्मतम। शरीर में सर्वव्यापक!"
शैल पुन: हंसने लगा। हँसता रहा। सरिता और वत्सर उसे देखते रहे, क्षितिज को देखना छोड़कर। जब शैल शांत हुआ तब सभी लौट चुके थे कृष्ण मंदिर में।

<?><?><?><?>

संध्या समय के भोजन उपरांत शैल ने कहा, "मुझे गुरुजी की बातों पर अविश्वास तो नहीं है किन्तु कुछ समज भी नहीं आ रहा। मन कुछ बातों को स्वीकार भी नहीं कर रहा।"
"तो क्या विचार है तुम्हारा?"
"मैंने कभी कहीं सुना था कि हिमालय में अनेक ऐसे साधु निवास करते हैं जो साधु जीवन अंगीकार करने से पूर्व अपने क्षेत्र में बड़े निपुल एवं निष्णात होते थे। तीव्र बुद्धिशाली व्यक्ति

सहसा सब कुछ त्याग कर सन्यासी बन जाता है। कोई तो तत्व उन्हें अपनी तरफ आकृष्ट करता होगा? नहीं तो ऐसे ही सब कुछ कोई कैसे छोड़ देता है?"

"तुम ही सन्यास लेना ...?"

"नहीं। मेरा ऐसा कोई आशय नहीं है।"

"तो क्या आशय है?"

"कई वर्षों पूर्व सुना था कि भारत के प्रख्यात एवं सर्वोच्च शरीर शास्त्री थे डॉ. देव। शरीर विज्ञान पर उनका ज्ञान अद्भुत था। शरीर के भीतर छोटी सी छोटी नाड़ी कहाँ है, क्या कार्य है उसका, उस नाड़ी का महत्व क्या है आदि विषय में ऐसा ज्ञान रखते थे कि जैसे उन्होंने ही सारा शरीर बनाया हो! विद्वान लोग कहा करते थे कि साक्षात धन्वंतरि देव ही डॉ. देव का शरीर धारण कर पृथ्वी पर अवतरित हुए हो!"

"वत्सर, उन्हें तो ज्ञात ही होगा कि शरीर में आत्मा कहाँ रहता है। आत्मा का स्थूल रूप कैसा होता है यह भी जानते ही होंगे?"

"सरिता जी, उन्हें इस बात का ज्ञान अवश्य होगा।"

"शैल, चलो उन्हें पुछ कर तुम्हारी जिज्ञासा शांत कर लेते हैं।"

"यह संभव नहीं है।"

"क्यों, वत्सर?"

"क्यों कि वे भी अन्य बुद्धिशालियों की भांति सहसा संसार छोड़कर सन्यासी बन गए हैं। हिमालय की किसी अज्ञात चोटी पर चले गए हैं।"

"तो हिमालय चलते हैं। उनसे मिलकर ..।"

"हिमालय ने अपने भीतर इतने साधु, संत, ऋषि, मुनि आदि को आश्रय दे रखा है कि हम किसी विशेष ऋषि को खोज ही नहीं पाएंगे।"

"तथापि मैं उन्हें ढूँढने को जा रहा हूँ।"

"यह तो पागलपन है, शैल।"

"है तो है।"

"शैल। गहन अंधकार में भी कुछ वस्तुएं प्राप्त हो सकती है किन्तु तुम जो चाहते हो वह प्रखर प्रकाश में भी प्राप्त होना संभव नहीं है। अत: हठ मत करो। वास्तविकता को स्वीकार कर लो।"

“कैसे स्वीकार कर लूँ? किसे स्वीकार कर लूँ?”
“यही कि मीरा का रहस्य, रहस्य ही रहेगा।”
“यही तो नहीं कर सकता, सरिता जी।”
“वत्सर तुम क्यों मौन हो? तुम भी तो वत्सर को कुछ कहो, कुछ समझाओ।”
वत्सर ने अब मौन भंग करना उचित समझा, “अपने अपने स्थान पर आप दोनों की बात उचित है। शैल अपने लक्ष्य के लिए कुछ भी करने को तत्पर है। और वह जो करने का विचार कर रहा है वह पागलपन भी है। इस अवस्था में ..।”
“तुम्हें ही कोई मार्ग निकालना होगा, वत्सर।”
वत्सर ने कुछ विचार कर कहा, “शैल, क्या तुम दो दिन रुक सकते हो?”
“तब क्या होगा?”
“मैं कुछ अन्य उपाय सोचने के लिए समय चाहता हूँ।”
“शैल, वत्सर की बात ठीक है। दो दिन रुक जाओ।”
“दो दिन के पश्चात मुझे कोई नहीं रोकेगा।”
“स्वीकार है। हैं न वत्सर?” वत्सर ने स्मित से सम्मति दी।

[74]

दो दिन किसी ने कोई चर्चा नहीं की। शैल ने हिमालय जाने की सभी सज्जता कर ली। सरिता ने कुछ नहीं सोचा, कुछ नहीं किया। वत्सर अधिकांश मौन ही रहा। अपने अध्ययन कक्ष में कुछ करता रहा। समय - समय पर कहीं आता जाता रहा।

उन दो दिनों में ऐसा प्रतीत होता रहा कि जैसे तीनों एक दूसरे के लिए अज्ञात हो। जैसे उनके मध्य कोई संबंध कभी था ही नहीं। दो दिन व्यतीत हो गए ऐसी अज्ञात अवस्था में।

शैल जब हिमालय के लिए निकलने वाला ही था कि अज्ञात होने के आवरण को वत्सर ने चीर डाला।

“शैल, तुम्हें डॉ देव को ढूँढने के लिए अब हिमालय जाने की आवश्यकता नहीं है।”

“क्यूँ? क्या वे स्वयं हमें मिलने तुम्हारे इस मंदिर में आ रहे हैं या आ चुके हैं?”

शैल के शब्दों में व्यंग था। वत्सर उसे भली भांति जानता था। अत: वत्सर ने केवल स्मित दिया।

“वत्सर, क्या बात है?”

“सरिताजी, आप यहाँ बैठो। शैल तुम भी। मैं सब कुछ बताता हूँ।”

सरिता बैठ गई, शैल बैठ तो गया किन्तु उसकी आँखों में अभी भी व्यंग था।

‘कितने भी बहाने बना लो, मुझे बहलाने का प्रयास कर लो। मैं तुम्हारे चक्कर में फँसने वाला नहीं हूँ।’

“सुनों, पाँच दिनों के पश्चात ...।”

“पहले दो दिन और अब पाँच दिन। कब तक मुझे बांधकर रखोगे, वत्सर?”

“शैल, वत्सर की पूरी बात तो सुन लेते।”

“ठीक है। कहो वत्सर, पाँच दिनों के पश्चात क्या?”

“शैल, धैर्य रखो। मैं तुम्हें बांधना नहीं चाहता। पाँच दिन के पश्चात महाकुंभ होनेवाला है, प्रयाग में। वहाँ समग्र भारत से, ज्ञात - अज्ञात स्थानों से ऋषियों का आगमन होता है। वहाँ पवन ऋषि

भी आ रहे हैं। पवन ऋषि प्रत्येक कुम्भ में अवश्य आते हैं। सबसे मिलते है, सब की शंकाओं का समाधान करते है।"
"पवन ऋषि के पास मेरे प्रश्नों का भी समाधान होगा क्या?"
"शैल, यदि उनके पास नहीं होगा तो जान लो, मान भी लो कि किसी के पास नहीं होगा।"
"ऐसा कैसे कह सकते हो, वत्सर?"
"पवन ऋषि ही हमारे डॉ देव हैं।"
"क्या?" शैल अपने स्थान पर से उठकर कूद पडा।
"वत्सर, तुमने कैसे जाना?"
"सरिता जी, आज के सभी समाचार माध्यमों पर पूरे दिन से यही समाचार चल रहा है कि कुम्भ में कौन कौन ऋषि, साधु, महात्मा आदि पधार रहे हैं। तथापि यदि कोई संदेह हो तो कल के समाचार पत्रों में पढ़ लेना।"
"वत्सर, चलो प्रयाग जाने की सज्जता कर लो। सरिता जी हमें शीघ्रता से वहाँ जाना है।"

<^><^><^><^>

एक सौ चवालीस वर्षों में एक बार होने वाला प्रयाग का महाकुंभ प्रारंभ हो गया। अनेकों साधु संत ऋषियों ने प्रथम अमृत स्नान किया, नागा साधुओं ने भी।
नागा साधु कुम्भ का प्रमुख आकर्षण थे। प्रत्येक संवाददाता नागा साधुओं के रहस्यमय जीवन के विषय में जानना चाहते थे। अपनी चेनल पर प्रसारित करना चाहते थे जिससे उनके चेनल को देखनेवालों की संख्या बढ़े।
वास्तव में नागा साधु समग्र समय संसार से अलिप्त और अदृश्य रहते हैं। कोई नहीं जानता कि वे कहाँ रहते हैं? क्या करते हैं? कैसी कैसी साधना करते हैं? कुम्भ पर कहाँ से आते हैं? कहाँ अलोप हो जाते हैं? सामान्य रूप से वे कुम्भ में भी अलिप्त ही रहते हैं। किसी से विशेष संपर्क नहीं रखते।

ऐसा ही अन्य साधु, संतों, ऋषियों के विषय में भी है। उनका जीवन भी रहस्यों से भरा होता है। हम केवल इतना ही जानते हैं कि वे सभी हिमालय की अज्ञात गुफाओं में आराधना करते हैं, तप करते हैं। इनका आयुष्य हमारे आयुष्य से कहीं अधिक होता है, स्वस्थ भी।
ऐसे कुम्भ में सरिता, शैल और वत्सर भी पवन ऋषि से मिलने आ गए। उन्हें ढूँढने के लिए कुम्भ में घूम रहे थे, किन्तु जहां प्रति दिन एक करोड़ से भी अधिक श्रद्धालु आते हो वहाँ किसी एक को खोजना कितना कठिन होता है उस बात का उन तीनों को संज्ञान था। बिना थके, बिना हारे पाँच दिन व्यतीत हो गए किन्तु उन्हें पवन ऋषि का ठिकाना न मिल सका।
“वत्सर, पांच दिन हो गए। पवन ऋषि का कोई संकेत भी नहीं मिल रहा है।”
“और जहां साधु संत ठहरते हैं वहाँ जाना भी हमारे लिए वर्जित है। ऐसे में क्या करें, वत्सर?”
“मैं नहीं जानता। बस प्रतीक्षा कर सकते हैं। तीनों माताओं को प्रार्थना कर सकते हैं। उन्हों ने कृपा की तो पवन ऋषि से संपर्क होगा।”
तीनों थककर संगम स्थल के तट पर बैठ गए। मन ही मन गंगा, जमना, सरस्वती को प्रार्थना करने लगे। संध्या का समय हो गया। दूर कहीं सूर्य अस्त होने को था।
“चलो, लौट चलते हैं।”
“कहाँ, वत्सर?”
“अपने निवास पर, शैल।”
“आज का दिन भी समाप्त हो गया। एक और दिन बित गया।”
“तो क्या, सरिताजी? अभी भी चालीस दिन शेष है इस कुम्भ के।”
“क्या तब तक प्रतिक्षा करने का आशय है, शैल?”
“मैं प्रतीक्षा करूंगा।”
“और वत्सर तुम?”
“मैं भी शैल के साथ रहूँगा। मुझे भी तो पवन ऋषि से मिलना है।”
“तो मुझे क्या आपत्ति है? मुझे कहाँ पाकिस्तान लौटना है? मैं भी प्रतीक्षा में रहूँगी आप दोनों के साथ।”
दस दिन और व्यतीत हो गए। तीनों ने पूरी श्रद्धा से, पूरी निष्ठा से पवन ऋषि की खोज की। पूरे विश्वास से तीनों नदी माताओं को प्रार्थना भी की। किन्तु प्रार्थना का फल न मिला।

[75]

अमावस्या का दिन आ गया। तीसरे अमृत स्नान का दिन था वह। तीनों सूर्योदय की प्रतीक्षा करते तट पर बैठे थे। तीव्र ठंड में भी मन के विश्वास की ऊर्जा अपने चरम पर थी। इन दिनों में भी उन्होंने अपनी आशाओं की ऊष्मा को बनाए रखा था।
सूर्योदय हो गया। साधु संतों का अमृत स्नान सम्पन्न हो गया। वे वहाँ से जाने लगे। तीनों उनके पीछे चलने लगे। प्रत्येक साधु संत में वे पवन ऋषि को खोजने लगे। परिणाम शून्य। एक सीमा के पश्चात साधु संत अदृश्य होने लगे। तीनों को वहाँ रोक दिया गया। वे साधुओं को जाते हुए देखते खड़े थे तभी किसी ने तीनों को पुकारा। तीनों ने मुड़कर उस व्यक्ति को देखा।
“वत्सर, सरिता, शैल। आपका स्वागत है।”
शब्दों को सुनकर तीनों के मुख आश्चर्य से भर गए, नि:शब्द होकर उसे देखते रहे। अनिमेष दृष्टि से बस देखते ही रहे, जैसे कोई स्वप्न हो।
“वत्सर तुम शैल सरिता के साथ मेरे साथ चलो।” उस आकृति ने कहा। वह चलने लगी।
मंत्रमुग्ध होकर तीनों उनके पीछे पीछे चलने लगे। एक वृक्ष की छाया के नीचे वह आकृति रुक गई। तीनों रुक गए।
“आप लोग मुझे ही खोज रहे हो न? मैं ही हूँ पवन ऋषि।” आकृति ने कहा।
तीनों आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे।
“मैं जानता हूँ कि आप पंद्रह दिनों से मुझे ढूंढ रहे हो। अब मैंने स्वयं आपको ढूंढ लिया। कहो क्या जिज्ञासा है?”
“प्रणाम ऋषि जी।” वत्सर ने सर्व प्रथम प्रणाम किया। शैल सरिता ने भी।

“गुरु जी, आपने कैसे जान लिया कि हम आपको ढूंढ रहे हैं? इतने करोड़ों लोगों में आपने हमें कैसे पहचान लिया?”
“बस यूं समझ लो कि तीनों नदी माताओं ने आपकी प्रार्थना सुन ली। इतना पर्याप्त है। छोड़ो उन बातों को। आपकी जिज्ञासा पर आते हैं।”
तीनों हाथ जोड़कर ध्यान से पवन ऋषि को सुनने के लिए तत्पर हो गए।
“शरीर में आत्मा कहाँ रहती है? इस प्रश्न का उत्तर आपको वत्सर के गुरुजी ने दे ही दिया है किन्तु शैल को ऋषियों के ज्ञान पर नहीं, विज्ञान पर अधिक श्रद्धा है। इसलिए तो आप तीनों यहाँ आए हो। है न शैल?” तीनों अवाक से खड़े रहे। आश्चर्य से मौन हो गए।
“आत्मा का कोई स्थूल रूप नहीं है। वह चेतना रूप है। हमारे शरीर के प्रत्येक अंग में, प्रत्येक नाड़ी में, प्रत्येक कोश में व्याप्त रहती है।”
“गुरु जी। कोई वस्तु किसी वस्तु के भीतर रहती है जो उस वस्तु से भिन्न है। दोनों में भेद है तो उस भेद को हम क्यों नहीं देख सकते?”
“शैल, शरीर वस्तु है, आत्मा नहीं। तुम शरीर नहीं हो। तुम इस शरीर को धारण किए हुए हो किन्तु तुम इससे भिन्न हो।”
“तो मैं कौन हूँ?”
“एक सत्य घटना सुनाता हूँ। सुनो।
स्वामी दयानंद सरस्वती जी जब नरेंद्र थे, नरेंद्र स्वामीजी का सांसारिक नाम था, तब ज्ञान की खोज में गंगा तट पर भटक रहे थे। तभी किसी ने उनसे कहा कि एक झोंपड़ी में बड़े विद्वान ऋषि रहते हैं जो किसी को भी अपना शिष्य नहीं बनाते हैं। यदि नरेंद्र प्रयास करे और गुरुजी उसे शिष्य बना लें तो नरेंद्र को सत्य ज्ञान मिल सकता है। नरेंद्र ने जाकर झोंपड़ी का द्वार खटखटाया।
भीतर से ध्वनि आई, “कौन हो?”
नरेंद्र ने शीघ्र ही उत्तर दिया, “यही जानने के लिए तो मैं आया हूँ।” इतना सुनते ही ऋषि ने द्वार खोल दिए। नरेंद्र को शिष्य बनाकर स्वामी दयानंद सरस्वती बना दिया।”
“कथा का तात्पर्य समझ नहीं आया, गुरुजी।”
“सरिता, तात्पर्य यही है कि नरेंद्र का शरीर नरेंद्र नहीं था।”

“मैं समझ गया, गुरुजी।”

“तुम्हारा शरीर तुमसे भिन्न है, शैल।”

“मैं इस शरीर में कहाँ रहता हूँ?”

“शरीर के प्रत्येक अंग में, प्रत्येक श्वास में तुम बसे हो। तुम ही आत्मा हो। तुम ही चेतन हो। तुम ही परमात्मा का अंश हो। तत त्वम असि।”

“अर्थात आत्मा चेतना है, **उढ़ा** है। मैं निराकार हूँ, मैं शरीर में सर्व व्यापक हूँ।”

“विज्ञान भी आज यही कह रहा है। हमारे ऋषीयों ने जिसे युगों पूर्व कहा था। अब कोई संदेह शेष है क्या?”

“दूसरा संदेह व्यक्त कर सकता हूँ?”

“शैल, तुम जानना चाहते हो कि आत्मा कहाँ जाती है, कहाँ निवास करती है?”

“जी गुरु जी।”

“इस जगत की सभी आत्मा शरीर में आती भी वहाँ से है और शरीर त्याग कर जाती भी वहाँ ही है। उसे आत्मा लोक कहते हैं जो कैलास में स्थित है। कैलास पर्वत पर संसार के सारे आत्माओं का निवास स्थान है। आत्मा पर संगृहीत क्षण क्षण का इतिहास वहीं पढ़ा जाता है। वहाँ उसका विश्लेषण किया जाता है और उस अनुसार नए शरीर का निर्णय होता है।”

“मुझे कैलास पर जाना है।”

और मीरा की मृत्यु का कारण जानना है।”

“हाँ, गुरुजी।”

“बड़ा कठिन कार्य चुना है, प्राय: असंभव सा।”

“तथापि मैं जाना चाहता हूँ।”

“यदि धैर्य और विश्वास रखोगे तो संभव है किन्तु ...।” गुरजी रुक गए।

“किन्तु क्या गुरु जी? कोई समस्या है क्या?”

“आज तक कोई व्यक्ति सदेह कैलास पर नहीं जा सका है। इस बात का ध्यान रखना होगा। वास्तव में कोई जा ही नहीं सकता।”

“क्या आप भी?”

“हाँ, मैं भी। किन्तु तुम जा सकोगे। तुम चारों जा सकोगे।”

“चारों? गुरुजी हम तो केवल तीन ही हैं।”

“तुम्हें चौथे सहयात्री की आवश्यकता पड़ेगी। वह तुम्हारे साथ जुड़ेगी भी।”

“कौन है वह?”

“वह पहाड़ों को जानती है। वही आप लोगों को मार्ग दिखलाएगी।”

“उसका नाम क्या होगा?”

“समय आने पर ज्ञात हो जाएगा। वत्सर, तुम्हें इन तीनों को अपने ज्ञान से उचित मार्ग दिखाना होगा।”

“जी गुरुजी, मैं प्रयास करूंगा।”

वत्सर के शब्दों के साथ ही पवन ऋषि हवा में विलीन हो गए, तीनों की आँखों के सामने ही। तीनों पुन: स्तब्ध होकर उस स्थान को देखते रहे जहां घड़ी भर पूर्व पवन ऋषि साक्षात खड़े थे।

[76]

पवन ऋषि के अदृश्य होकर गए कुछ समय बित गया था किन्तु तीनों अभी भी आश्चर्य से उसी बिन्दु पर देख रहे थे। कोई कुछ भी बोलने की स्थित में नहीं था। समय के एक अंश के पश्चात जब साधुओं की टोली उस मार्ग से निकली तब उनके पदध्वनी से तीनों जागृत हो गए।
“यह कैसा विस्मय है कि वत्सर के गुरुजी के साथ हमारी जो चर्चा हुई थी उसके विषय में पवन ऋषि को पूरी जानकारी थी। वे दोनों तो कभी मिले ही नहीं, न हम में से किसी ने उन्हें कुछ बताया था। तो पवन ऋषि को यह सब कैसे ज्ञात हो गया?”
शैल ने मौन के सेतु को तोड़ा तो समय की नदी प्रवाहित हो गई।
“मैं भी इसी रहस्य को जानना चाहती हूँ, वत्सर। क्या तुम इस विषय में कुछ जानते हो?”
वत्सर दुविधा में था। उसे इस संशय का समाधान ज्ञात नहीं था। और वह इस विश्वास को भी तोड़ना नहीं चाहता था कि सरिता - शैल की दृष्टि में वह विद्वान था। यदि कुछ भी कहने की चेष्टा की तो उनका यह विश्वास भंग हो जाएगा। उसने मौन ही रहना उचित समझा। तभी एक स्वर ने तीनों के कानों में प्रवेश किया।
“तुम्हारे मन में उठे प्रश्नों को समझाती हूँ। आओ, यहाँ बैठो।”
एक स्त्री स्वर को सुनकर तीनों ने अपनी दृष्टि उस तरफ घुमाई। एक सौंदर्यमुर्ती युवती साध्वी के भेष में उनके सम्मुख खड़ी थी। उसके मुख पर दिव्य तेज था। आँखों में वात्सल्य था। अधरों

पर स्मित था। साध्वी ने संकेत से एक स्थान पर बैठने को कहा। तीनों बैठ गए। साध्वी भी उनके साथ बैठ गई।
“सिद्ध आत्माओं के संवाद के साधन संसार के संवाद के साधनों पर निर्भर नहीं होते। वे मन की संकल्प शक्ति से, विचारों के तरंगों के माध्यम से अपने संदेश प्रवाहित कर देते हैं और और लक्ष्य आत्मा उसे वायुमंडल से स्वत: ग्रहण कर लेता है। समग्र संदेश शब्दों में नहीं, तरंगों में होता है। तरंगों की भी अपनी भाषा है, लिपि है। वत्सर के गुरुजी ने पवन ऋषि तक संदेश प्रेषित कर दिया, उसी दिन जिस दिन आप सभी ने पवन ऋषि को मिलने के लिए महाकुंभ में प्रयाग जाने का निश्चय कर लिया था।”
साध्वी ने संशय निवारण करते हुए कहा।
“ओह, यह तो अद्भुत है! क्या यह विज्ञान है?”
“हाँ वत्सर। यह भी एक विज्ञान है। भौतिक शास्त्र तरंगों के अस्तित्व को स्वीकारता है। किन्तु विज्ञान तरंगों की तरंग लंबाई से अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सका है। वे तरंगों की भाषा नहीं जानते। जब वैज्ञानिक तरंगों की भाषा को जान लेंगे, समझ लेंगे तब हमें सन्देश व्यवहार हेतु किसी स्थूल माध्यमों की आवश्यकता नहीं रहेगी।”
“किन्तु हम टेलीफोन, वायरलेस, इंटरनेट आदि से संदेश प्रेषित करते हैं वे भी तरंगों का ही रूप है, तरंगों की ही भाषा है।”
“अवश्य, शैल। किन्तु इस हेतु हमें किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता रहती है जो तरंगों को प्रवाहित कर लक्ष्य तक पहुंचाते हैं। सिद्ध आत्माओं को ऐसे किसी स्थूल माध्यमों की, ऐसी सेवा उपलब्ध कराने वालों की, विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता ही नहीं होती है।”
“ऐसा क्यों?”
“क्यों कि यह सभी साधन के स्थान पर स्वयं परमात्मा ही संचार का माध्यम बन जाते हैं। एक आत्मा से दूसरे आत्मा को वह स्वयं जोड़ता है। वह यह सारी सेवा नि:शुल्क देता है।”
“अर्थात दो आत्माओं के मध्य परमात्मा स्वयं माध्यम बन जाते हैं।”
“क्यों कि सभी आत्मा परमात्मा के ही तो अंश हैं। अपने अंश के लिए परमात्मा इतना तो करेंगे ही न?” हँसते हुए साध्वी ने कहा। “सभी पिता अपने पुत्रों के लिए ऐसा करते ही हैं।”
सुनकर तीनों हंस पड़े।

“यह सब कितना अद्‌भुत ह!”
“सरिताजी, इससे भी अद्‌भुत बात यह है कि पवन ऋषि कुम्भ के प्रथम दिन से ही आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जब से आप उन्हें ढूंढते रहते थे तब से वह आपके पीछे पीछे चल रहे थे। प्रत्येक दिन संगम तट पर उनकी प्रतीक्षा करते हुए आप तीनों को वे देखते रहते थे। आपके मन के बदलते भावों को भी वे पढ़ते रहते थे।”
“जब उन्हें ज्ञात था कि हम यहाँ प्रथम दिन से आज तक उनकी प्रतीक्षा में बैठे थे तो इतने दिनों तक वे हमें मिले क्यों नहीं? और आज पंद्रह दिनों के पश्चात सहसा कैसे मिल गए?”
“शैल, तुम्हारा आक्रोश उचित है। प्रत्येक बात का एक उचित समय होता है। उससे पूर्व ...।”
“”यह उचित समय क्या होता है? कौन निश्चय करता है उचित समय का?”
“शैल, धैर्य रखो। सब बताती हूँ। प्रत्येक बात की परीक्षा होती है। इसमें व्यक्ति की क्षमता, तपस्या, धैर्य, परिपक्वता आदि का मूल्यांकन होता है। परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर ही उचित समय स्वयं आ जाता है। इस उचित समय का निर्धारण भी स्वयं समय ही करता है।”
“इन बातों का तात्पर्य स्पष्ट करने की कृपा करेंगी?”
“सरिता, इन पंद्रह दिनों में पवन ऋषि ने आपकी परीक्षा ली थी। आपका धैर्य, आपकी तपस्या, आपका विश्वास, आपकी योग्यता आदि का निरीक्षण करते रहते थे वे। आज उस उचित समय ने आपके सम्मुख स्वयं पवन ऋषि को उपस्थित करा दिया।” इतना कहते ही साध्वी भी अदृश्य हो गई।

[77]

तीनों पुन: नए आश्चर्य में डूब गए। जब प्रशासन के व्यक्तियों ने उन्हें वहाँ से जाने को कहा, तब तीनों जागृत हुए।

“अब हमें यहाँ से चलना चाहिए।”

“हाँ, यहाँ इतने अचरज देख चुके हैं कि अब …।”

“यह स्थान अनेकों अचरजों से भरा है। हमने तो अभी कुछ देखा ही नहीं।”

“वत्सर, सरिताजी, हमें अपने प्रश्नों का समाधान मिल चुका है। हमें अब अपनी यात्रा का विचार करना होगा, आयोजन करना होगा, सज्जता करनी होगी।”

“तुम कैलास पर्वत पर जाने की बात कर रहे हो?”

“हाँ वत्सर।”

“शैल, कैलास पर आज तक कोई नहीं पहुंचा। हमारे लिए वह संभव नहीं है। इस विचार को त्याग दो।”

“अब यह नहीं हो सकता, वत्सर।”

“क्यों?”

“जब स्वयं पवन ऋषि ने हमें मार्ग दिखलाया है, आशीष दी है, आश्वासन भी दिया है कि कितनी भी कठिनाइयाँ आएगी, हम कैलास पर जाकर आत्माओं की प्रयोगशाला में अवश्य प्रवेश कर पाएंगे। क्या तुम्हें पवन ऋषि के वचनों पर श्रद्धा नहीं है?”

“बात श्रद्धा या विश्वास की नहीं है, वास्तविकता की है।”

“वत्सर, जब ऋषि ने कह दिया कि सफलता मिलेगी तो वास्तविकता के भय से विचलित न हो और जाने की सज्जता करो।”

“सरिताजी, आप भी शैल का समर्थन कर रही हो?” वत्सर ने पूछा।

“क्यों नहीं? और तुम बार बार लक्ष्य को त्यागने की बात क्यों कर देते हो?”

“मैं तो केवल ...।”

“जानता हूँ, वत्सर। तुम केवल यथार्थ की बात कर रहे हो। किन्तु तुमने स्वयं अपनी आँखों से देखा है, अपनी अंतरात्मा से अनुभव किया है कि यथार्थ से आगे भी कोई विश्व है। यथार्थ केवल दिखता है। यथार्थ को पार करने पर जो विश्व हमारे समक्ष होगा वह हमें लक्ष्य तक ले जाएगा।”

“वत्सर, सुना है कि कैलास पर्वत अनंत अचरजों से युक्त है। हमने यहाँ अभी अभी जो देखा वह तो अंश मात्र भी नहीं है। क्या तुम इन अनंत अचरजों का अनुभव करना नहीं चाहोगे?”

“वत्सर, यदि तुम नहीं आना चाहो तो तुम्हारी इच्छा। मैं तो चला। सरिताजी, आप तो मेरे साथ चल रही हो न?”

“मैं तो अवश्य चलूँगी।”

“मैं भी चलूँगा, शैल।”

“अरे वाह! वत्सर अब चलना चाहिए।”

“ठीक है किन्तु एक बात ध्यान रहे, शैल। हम कभी यथार्थ से भागेंगे नहीं। ठीक है?”

“नहीं भागेंगे। यथार्थ का स्वीकार करेंगे, सामना भी करेंगे।”

“यह हुई ना बात? अब अति आती शीघ्र यहाँ से चलना होगा हमें।”

सरिता के साथ दोनों ने सहमति प्रकट की।

प्रभात के समय, सूर्य के बाल किरणों के संग त्रिवेणी संगम के तट पर तीनों बैठे बैठे नदियों के जल की क्रीडा निहार रहे थे। स्नान के लिए अल्प भीड़ थी। मन में विश्वास और श्रद्धा के कारण कैलास पर्वत तक जाने का उत्साह था। पूरी यात्रा के आयोजन का रातभर सबने स्वतंत्र रूप से विचार किया था। यह निश्चय भी किया था कि संगम तट पर तीनों अपनी अपनी योजना रखेंगे, तीनों नदियों के आशीष लेकर गंतव्य पर निकल पड़ेंगे।

वत्सर ने प्रारंभ किया, “सरिताजी, सर्व प्रथम आप अपनी योजना रखेंगे।”

“मैं क्यों? तुम या शैल क्यों नहीं?”

“आपकी परिपक्व समज से हमारे विचार सुदृढ़ होंगे ऐसा मेरा विश्वास है इसलिए आप ही प्रारंभ करें।”

“वत्सर की बात उचित है, सरिताजी।”

“ठीक है। मेरे विचार में कैलास पर्वत तक जाने के विभिन्न विकल्प हैं। उनमें से किसी एक मार्ग का चयन करना होगा।”

“विस्तार से उन विकल्पों को रखें।”

“कैलास के लिए हम उत्तराखंड, नेपाल तथा सिक्किम मार्ग से जा सकते हैं।

उत्तराखंड में लिपुलेख पास के मार्ग पर चलेंगे तो मानसरोवर पहुंचेंगे जहां से कैलास परिक्रमा हो सकेगी। यहाँ काठगोदाम से धार चुला होकर लिपुलेख होते हुए जौहर घाटी तक जाना पड़ेगा।

दूसरा नेपाल के मार्ग से काठमांडू - रसुवगंधी - टटोपानी कोदारी - सिमिकोट मार्ग पर जा सकते हैं। इस हेतु हमें नेपाल जाना पड़ेगा।

तीसरा मार्ग है सिक्किम मार्ग। गंगटोक से नथुला पास, एंगु सरोवर और तिबेटियन प्लेटु होकर जा सकते हैं।”

“इनमें से किस मार्ग पर जाना उचित होगा?”

“शैल, मुझे सिक्किम मार्ग उचित लगता है।”

“क्यों, वत्सर?”

“यदि हम उस मार्ग से जाएंगे तो हमें येला के अनुभव का लाभ मिलेगा। पिछले दस वर्षों से येला सिक्किम में ही है। वहाँ के पर्वतों से वह परिचित है।”

“विचार उत्तम है, वत्सर। किन्तु इसमें समस्या है।”

“कैसी समस्या?”
“इस मार्ग पर हमें तिब्बत होकर जाना पड़ेगा। तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व है। सारा प्रदेश चीन के नियंत्रण में है। वहाँ प्रवेश करने के लिए हमें चीन से वीजा लेना होगा।”
“शैल, हम किसी भी मार्ग से कैलास जाएँ, हमें वीजा तो लेना ही पड़ेगा।”
“तो क्या? हम वीजा के लिए आवेदन कर देंगे।”
“दो बातें समझ लो, वत्सर। एक, बिना पासपोर्ट के वीजा नहीं मिलता। मेरे पास तो पासपोर्ट है, तुम्हारे पास है क्या?”
“नहीं। मेरे पास तो पासपोर्ट नहीं है। सरिता जी के पास तो होगा ही।”
“वह तो सारा उलफ़त का है। पाकिस्तान का है। यदि हमने सरिताजी का वीजा आवेदन लगा दिया तो शीघ्र ही पकड़े जाएंगे। उन्हें पाकिस्तान लौटना पड़ेगा। ऐसे तो हमारा सारा आयोजन ध्वस्त हो जाएगा।”
“सपन और निहारिका यही तो कहते हैं। मैं पुन: उनकी दृष्टि में पड़ना नहीं चाहती। कितनी कठिनाइयों के पश्चात उनसे पीछा छुटा है!”
“हमसे पीछा छुड़ाना कठिन ही नहीं, असंभव ही है, सारा उलफ़त जी।” निहारिका ने अपने शब्दों के साथ प्रकट होकर तीनों को चौंका दिया।
“यह तो सरिता जी हैं, निहारिका। सारा उलफ़त तो कहीं खो गई है।” सपन भी प्रकट हो गया।
दोनों को देखकर तीनों अवाक हो गए। इस नई समस्या को सामने पाकर तीनों स्तब्ध हो गए। सोचने लगे, ‘दोनों कुम्भ में कैसे आ गए? इतनी सारी लाखों की जनमेदनी में उन्होंने हमें कैसे ढूंढ निकाला?’
“हमें यहाँ देखकर आपको प्रसन्नता तो नहीं हुई होगी यह मैं जानती हूँ किन्तु हमें तो बड़ी प्रसन्नता हुई आप तीनों को मिलकर।”
“निहारिका, इन तीनों को आश्चर्य हो रहा होगा कि इतने करोड़ों व्यक्तियों के मध्य में से हमने इन तीनों को कैसे ढूंढ निकाला? हैं न?”
“सपन, कुछ भी हो, इस महाकुंभ की व्यवस्था की प्रशंसा तो करनी ही पड़ेगी।”
“अवश्य। आजतक जिस कुम्भ में लोग बिछड़ जाते थे, आज उसी कुम्भ की व्यवस्था तो देखो! आप जैसे खोए हुए, बिछड़े हुए भी यहाँ पुन: मिल गए।”

“तुम लोग तो पुलिसवाले होते हुए भी कायर निकले। हम जैसे नागरिकों से बचकर भाग निकले। हैं न शैल, सारा?”
“किन्तु हमसे बचना असंभव है। हैं न निहारिका?”
“उस गाँव से जब आप दोनों प्रात:काल में ही अदृश्य हो गए तो हमने आपको खूब खोजा किन्तु आप हाथ न आए। तब हमने मान लिया कि आप येला के पास गए होंगे।”
“इस लिए हमने येला की शिल्पशाला पर ध्यान केंद्रित किया। कुछ दिनों के व्यतीत होने पर भी हमने आपको वहाँ नहीं पाया तो हम वत्सर के पास गए।”
“हमारा अनुमान सत्य निकला। आप दोनों इतने दिनों तक वहीं थे।”
“किन्तु हम वहाँ पहुंचते उसे पूर्व आप यहाँ आकर पवन ऋषि की प्रतीक्षा करने लगे।”
“यह बात हमें वत्सर के गुरु ने बताई। वत्सर, तुम्हारे गुरु बड़े सत्यवादी हैं। उसने हमें सीधा यहाँ का मार्ग बताया दिया और हम आपके समक्ष उपस्थित हैं।” तीनों ध्यान से सपन और निहारिका की बातें सुन रहे थे। सरिता और शैल को कुछ भी न सुझा कि इन दोनों को क्या उत्तर दें। वत्सर भी सबकुछ मौन होकर सुन रहा था। जैसे ही सपन ने उसके गुरुजी का नाम लिया तो वह उत्तेजित हो गया और आगे बढ़कर सपन और निहारिका पर मुष्टि प्रहार कर दिया। दोनों में से किसी को भी मुष्टि प्रहार की अपेक्षा न थी अत: वत्सर के प्रहार से दोनों धरती पर गिर गए, हतप्रभ होकर वत्सर को देखते रहे। शैल और सरिता भी वत्सर के आक्रमण से चकित हो गए।
दोनों संभलते और धरती से उठते उससे पूर्व वत्सर ने सपन और निहारिका पर पुन: प्रहार कर दिया। दोनों की आँखों में भय और आँसू आ गए। वत्सर अविरत रूप से प्रहार करने लगा। दोनों चीत्कार करने लगे। उसे सुनकर क्षणार्ध में भीड़ जमा हो गई।
“क्या हुआ? क्यों मार रहे हो?” आदि ध्वनियाँ भीड़ से उठने लगी।
वत्सर क्षणभर रुका और भीड़ से कहने लगा, “इन नास्तिकों ने हमारे कुम्भ का, पवित्र संगम का और सनातन धर्म का अपमान किया है। ये दोनों हमारी परंपरा को गालियां दे रहे हैं।”
इतना कहकर वत्सर वहाँ से हट गया। बाकी काम भीड़ ने सम्पन्न किया। वत्सर ने संकेत किया, सपन निहारिका को भीड़ की द्या पर छोड़कर शैल, सरिता और वत्सर निकल गए। दूर जाकर तीनों ने देखा कि भीड़ ने सपन निहारिका को अपने पैरों पर खड़ा रहने के लिए भी नहीं छोड़ा।

एक स्मित के साथ वत्सर वहाँ से चलने लगा। शैल सरिता भी मौन ही वत्सर के पीछे चलने लगे। जब तक वे अपने निवास पर पहुंचे तब तक मार्ग में कोई कुछ नहीं बोला ।

[78]

सौम्य प्रतीत हो रहे वत्सर का रौद्र स्वरूप देखकर शैल और सरिता इतने स्तब्ध थे कि वह कुछ बोलने का भी विचार नहीं कर सके। सदैव शांत रहनेवाला, कृष्ण भक्त वत्सर प्रहार भी कर सकता है यह बात ही दोनों के लिए अकल्पनीय थी। न्यायालय में भी उनके विरुद्ध किए गए तर्कों का उत्तर भी उसने बड़ी शालीनता से और स्वस्थ चित्त से दिए थे। तब भी वह उग्र नहीं हुआ था। आज सहसा वह कैसे उन दोनों पर टूट पड़ा? यही विचार मनमें लिए शैल - सरिता मौन थे। तभी वत्सर ने प्राय: आदेश देते हुए कहा, “चलो, तैयारी कर लो। हमें शीघ्र ही अपनी यात्रा प्रारंभ करनी है। समय अल्प है और साधन भी।”
वत्सर के शब्दों ने दोनों के समक्ष एक और आश्चर्य रख दिया।

“वत्सर, तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारा वह रौद्र रूप और अब यात्रा के लीये सज्जता हेतु उतावलापन? क्या बात है वत्सर?”
“अभी तक तो तुम यथार्थ की बातें करते थे। और अब यात्रा के लिए इतनी त्वरा?”

“कुछ नहीं हुआ है मुझे, सरिताजी। बस समय की आवश्यकता को समझ लिया है मैंने।”
“?”
“?”
दोनों के मुख पर प्रश्न चिह्न थे।
“सपन और निहारिका पर प्रहार करना आपको आश्चर्य में डाल रहा है यह मैं जानता हूँ। किन्तु मेरा प्रहार उचित समय पर, उचित स्थान पर, उचित व्यक्ति पर था। यदि कोई समस्या हमें सताये तो एक बार उसे अवसर देकर त्याग कर सकते हो किन्तु यदि वह दूसरी या तीसरी बार भी हमारा मार्ग अवरुद्ध करने की चेष्टा करे तो उस पर दया नहीं करनी चाहिए। न उसे अवसर देना चाहिए। उससे मुख मोड़कर भागना भी उचित नहीं है। उसका सामना करो, वह हम पर प्रहार करे उससे पूर्व उसे परास्त करो। उसे निर्मूल करो। यही एक मात्र मार्ग है।”
“हम तो मानते थे कि तुम कृष्ण भक्त हो, पुजारी हो। तुम ऐसा करोगे?”
“यही तो अर्थ है कृष्ण की भक्ति का। कृष्ण ने सदैव सभी शत्रुओं पर प्रहार ही किया है और उन्हें नष्ट भी। समय आने पर स्वयं कृष्ण ने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी थी। कुरुक्षेत्र के युद्ध में शस्त्र प्रयोग भी किया था। कृष्ण के चरित्र को समझो, यही उसकी भक्ति है। केवल पूजा अर्चना मंत्रोच्चार से कार्य सिद्ध नहीं होता। अब आप दोनों को भी यह भूलना होगा कि आप पुलिसवाले थे।”
“वह कैसे भूल सकते हैं?”
“सरिताजी, मैं जानता हूँ कि आपको यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि यथासंभव संयम से, धैर्य से काम लेना चाहिए। यही सिखाया जाता है न प्रत्येक पुलिसकर्मी को?”
“तुम ठीक कह रहे हो।”
“शैल, अब उस प्रशिक्षण को भूल जाओ क्यों कि अब आपदोनों पुलिस नहीं साधारण नागरिक हो।”
“तुम्हारी बात, तुम्हारा रौद्र स्वरूप सब अब समझ में आ रहा है, वत्सर।”
“सारी यात्रा में हमें यह बात स्मरण रखनी होगी, सरिताजी।”

“ठीक है, वत्सर। अब हम शीघ्र ही प्रयाण कैसे करेंगे?”
वत्सर ने दीर्घ श्वास लिया, उतना ही दीर्घ प्रश्वास भी छोड़ा। सहसा एक स्मित उसके अधरों पर आ गया।
“यहाँ से हम सीधा येला के पास जाएंगे। उसे साथ लेकर कैलास जाएंगे।”
“येला चलेगी हमारे साथ?”
“अवश्य चलेगी। पहाड़ों को वह अच्छी तरह से जानती है। पहाड़ भी उसे खूब समझते हैं। पहाड़ों पर हमारा मार्गदर्शन येला से बढ़कर अन्य कोई नहीं कर सकता। मैं उससे बात करता हूँ। इस अभियान के लिए मैं उसे मना लूँगा“”
“यह तो उत्तम बात है। येला के जुडने से हमारा कार्य सरल हो जाएगा। वत्सर, तुम अभी येला से बात करो।”
वत्सर ने येला को फोन लगाया।
“कहो वत्सर, कैसे हो? कैसे येला का स्मरण किया?”
“हम सब सकुशल हैं। तुम कैसी हो?”
“हम सब का क्या अर्थ है? तुम्हारे साथ कोई और भी है क्या?”
“मेरे साथ शैल है, सरिताजी भी है।”
“शैल? वही इंस्पेक्टर शैल?”
“हाँ, वही।”
“अब क्या लेने आया है वह?”
“कुछ नहीं। चिंता मत करो।”
“ठीक है। और यह सरिताजी कौन है?”
“पाकिस्तानी इंस्पेक्टर।”
“वह तो सारा उलफ़त थी न? क्या पाकिस्तान ने सारा के स्थान पर किसी सरिता को?”
“नहीं। सारा ही अब सरिता है।”
“ओह, घर वापसी की है सारा ने?”
“हाँ, उन्होंने पुन: सनातन में वापसी की है।”
“अच्छी बात है। कहो, क्यों स्मरण किया मेरा आज?”

“हम तीनों यहाँ से निकलकर तुम्हारे पास कल आ रहे हैं।”
“त्रिवेंद्रम से कौन सी फ्लाइट से आ रहे हो? मैं एयरपोर्ट पर आ जाऊँगी।”
“सुनो, हम त्रिवेंद्रम से नहीं, प्रयागराज से आ रहे हैं। रेल और बस मार्ग से। हम तुम्हारी शिल्प शाला आ जाएंगे।”
“स्वागत है आप सभी का।”
“केवल स्वागत से काम नहीं चलेगा। हमें तुम्हारा साथ चाहिए।”
“किस लिए?”
“तुम पहाड़ों की अच्छी जानकार हो। तो तुम्हें हमारे साथ चलना है।”
“कहाँ जाना है?”
“कैलास पर्वत पर जाना है।”
“कैलास परिक्रमा करनी है क्या?”
“परिक्रमा से भी आगे जाना है। कैलास पर्वत पर चढ़ना है।”
“क्या? तुम लोग पागल हो गए हो क्या?”
“क्यों ऐसा कहती हो?”
“कैलास की परिक्रमा ही होती है। ऊपर चढ़ने का साहस कोई नहीं करता।”
“हम करेंगे।”
“मारे जाओगे। आज तक कोई उस पर आरोहण नहीं कर सका है। तुम भी नहीं कर सकोगे। ऐसा उपहास न करो, वत्सर।”
“शांत हो जाओ, येला। वहाँ आकार हम सारी बातें बताएंगे। तबतक हमें तुम्हारे साथ का आश्वासन चाहिए।”
“देखो, किसी पागलपन में मेरे साथ की अपेक्षा न रखना। यहाँ आना चाहो तो आ जाओ, मैं किसी अभियान में तुम्हारे साथ नहीं हूँ।”
“ठीक है। हमारा स्वागत तो करोगी न?”
“यह शिल्पशाला तुम्हारे लिए सदा स्वागतमय ही है। आ जाओ।”
“धन्यवाद।” दोनों तरफ से फोन सम्पन्न हो गया।
“वत्सर, येला ने हमारे साथ चलने की स्पष्ट ना कह दी। अब क्या?” सरिता ने चिंता प्रकट की।

“अब कौन साथ देगा हमारा?”

“शैल, सरिताजी। धैर्य रखें। हम जानते हैं कि हम उस मार्ग पर चलने जा रहे हैं जहां सफलता की कोई संभावना ही नहीं है। विफलता अवश्यंभावी है। समस्याएं और संकट अमर्याद हैं। ऐसे में कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति हमारा साथ देने को तत्पर नहीं हो सकता। किन्तु यदि हमने धैर्य खो दिया तो कुछ भी हाथ न लगेगा।”

“अब क्या उपाय है?”

“सरिताजी, हमें सिद्ध पुरुषों के वचनों पर विश्वास रखना होगा।”

“कैसा विश्वास?”

“सरिताजी के गुरु के वचन, पवन ऋषि के वचन को स्मरण करो शैल। दोनों ने इस अभियान की सफलता का ही आशीष दिया है। क्या इन वचनों का कोई अर्थ नहीं? क्या उन पर विश्वास नहीं?”

सरिता-शैल को वत्सर की बातों पर, गुरुजी पर एवं पवन ऋषि के वचनों पर श्रद्धा थी अत: तर्कहीन हो गए, मौन हो गए।

“जिस बिन्दु पर लगे कि सारी बात समाप्त हो गई है, कोई विकल्प नहीं दिख रहा। तब हम यदि विचार करते हैं कि ‘इस असंभव को कैसे संभव कर सकेंगे?’ विचार के उस बिन्दु पर ही सफलता का सारा आधार होता है। हम सोचते हैं कि कैसे होगा यह? तभी मन कहता है कि क्यों न होगा? मन और विचार के इस संघर्ष से ही मार्ग निकलता है जो सफलता तक ले जाता है। अत: निराश न होइए। शिल्पशाला तक जाने की सज्जता करें।”

[79]

शैल, सरिता और वत्सर येला की शिल्पशाला पहुंचे। द्वार पर ही येला खड़ी थी। तीनों में से कोई कुछ भी कहे या द्वार से भीतर प्रवेश करे उससे पूर्व ही येला कहने लगी, “देखो, पागलों का स्वागत तो कर सकती हूँ, यहाँ आश्रय भी दे सकती हूँ किन्तु मुझे पागल बनने के लिए कोई भी आमंत्रित नहीं करेगा। इस बात का ध्यान रखना।”

येला के शब्दों को सुनकर शैल और सरिता अचंभित हो गए, डर गए। दोनों ने वत्सर को देखा। वत्सर के अधरों पर स्मित था। वत्सर ने उन दोनों को देखा। दोनों के मुख पर प्रश्न लटक रहा था, 'यह कैसा स्वागत है?'
वत्सर के स्मित से दोनों शांत हो गए, मौन ही रहे।
"येला, हम तीनों अंदर आ जाएँ?"
"यहाँ तक आ गए हो तो भीतर भी आ ही जाओ।" येला द्वार से हट गई। तीनों भीतर प्रवेश कर गए।
"अभी यात्रा से आए हैं। थोड़ा विश्राम करके तुम्हारे कक्ष में हम तीनों आ जाएंगे। हमारी प्रतीक्षा करना, येला।" वत्सर ने कहा और तीनों विश्राम हेतु चले गए।
संध्या ढल रही थी। आकाश रंगों से अपनी झोली भर रहा था। सूर्य अभी अभी अस्त हुआ था। मद्धम प्रकाश और संध्या के रंगों से क्षितिज अपने सौन्दर्य की तरफ आकृष्ट कर रहा था। खुले गगन के तले तीनों के सामने येला मौन बैठी थी। अभी भी वह तीनों से अप्रसन्न थी। तीनों कुछ कहना चाहते थे किन्तु येला के मौन के अंत की प्रतीक्षा में थे।
आकाश ने रंग बदलना प्रारंभ कर दिया। सुनहरे रंगों में कालिमा मिश्रित होने लगी। तब विवश होकर कुछ कहने के लिए वत्सर ने मुंह खोला ही था कि येला ने कहा, "कलाकार तो पागल होते हैं किन्तु आप दोनों भी इनके साथ पागल बने हो? आज एक बात तो माननी पड़ेगी कि एक कलाकार ने दो पुलिसवालों को भी पागल बना दिया।" येला ने सरिता - शैल पर तीव्र दृष्टि डाली। दोनों ने किसी अगम्य अपराध भाव से पलकें झुका ली। अब येला ने वत्सर के सामने देखा। वह शांत था। वत्सर की शांति से येला विचलित हो गई।
"क्यों? कुछ बोलते क्यों नहीं?"
"इस बार तुम्हारा अनुमान मिथ्या हो गया, येला।" वत्सर ने कहा।
"कैसे?"
"कलाकार ने दो पुलिसवालों को पागल नहीं बनाया है। यहाँ तो उल्टा हुआ है।"
"क्या उल्टा हुआ है?"
"दो पुलिसवालों ने एक कलाकार को पागल बना दिया है।"
"शैल, सरिताजी। यह वत्सर क्या कह रहा है?"

“ठीक ही तो कह रहा है।” शैल ने कहा।
“और ये दोनों पुलिसवाले अब दूसरे कलाकार को भी पागल बना देंगे यह बात भी निश्चित है।”
“वत्सर, मैं मूर्ख नहीं हूँ। पागल बनने वाली नहीं हूँ।”
“बात सुनोगी तो तुम भी ...।”
“मुझे कुछ नहीं सुनना। मैं तुम्हारी बातों में आनेवाली नहीं हूँ। बातों से मुझे बहकाने का प्रयास न करना। मैं तुम्हार साथ किसी भी बिन्दु तक नहीं हूँ। यह मेरा निश्चय आप सब जान लो।”
“येला, हमें कुछ कहने तो दो।”
“सारिताजी, मुझे कुछ नहीं सुनना। आप सब यहाँ जितना चाहो रुक सकते हो। आपकी सेवा से मुझे प्रसन्नता होगी।”
“कोई बात नहीं, येला। जैसा तुम चाहो।”
“सरिताजी, हम कोई दूसरी बात कर सकते हैं।”
“ठीक है। येला, यह बताओ कि कुछ दिन पूर्व आपके यहाँ सपन और निहारिका आए थे क्या?”
“हाँ शैल। आप दोनों को खोज रहे थे। क्यों खोज रहे थे? कोई विशेष बात है क्या?”
“क्या वे अपने व्यवहार से तुम्हें प्रताड़ित कर रहे थे?”
“हाँ सरिता जी। मुझे भी आपका मित्र जानकार कष्ट देने का प्रयास कर रहे थे।”
“अब कभी भी वे आपको या किसी अन्य को कष्ट नहीं देंगे।”
“वह कैसे?”
“वत्सर ने उन दोनों का उपाय कर दिया है, सदा के लिए।”
“कैसे? कब? कहाँ?”
“महाकुंभ के मेले में वे हम दोनों को कष्ट दे रहे थे तब वत्सर ने अपने मुष्टि प्रहार से उन्हें आहत कर दिया और पश्चात उन दोनों को वहाँ उपस्थित नागा साधुओं को सौंप दिया। वत्सर ने साधुओं को कहा कि ‘ये दोनों सनातन का अपमान कर रहे थे।’ बाकी काम साधुओं और श्रद्धालुओं ने पूर्ण कर दिया।”
“जो काम हम पुलिसवाले नहीं कर सके, वत्सर ने कर दिया। असुरों को ऐसे ही मुक्ति मिलती है, येला।”
“क्या? आप लोग महाकुंभ जाकर आए?”

“हाँ। पंद्रह दिनों तक पवित्र संगम में स्नान भी किया।”
“वत्सर, आप लोग पंद्रह दिनों तक महाकुंभ में रहे, पवित्र और अमृत स्नान किया किन्तु किसी को मेरा स्मरण तक न हुआ?”
“येला, क्या तुम भी महाकुम्भ ...?”
“तुम भी का क्या अर्थ है, वत्सर? तुम जानते हो कि मैं अब भारतीय हूँ, सनातन का अनुसरण करती हूँ, सनातन में मेरी आस्था है। मैं भी इस पवित्र और अद्भुत संयोग की साक्षी बनना चाहती हूँ। किन्तु हे भाग्य! किसी को मेरा स्मरण नहीं हुआ। वत्सर, तुम से यह अपेक्षा नहीं थी।” येला ने शब्दों के साथ अपने भावों से भी अप्रसन्नता प्रकट कर दी। वह रूष गई।
“इतनी सी बात, येला?”
“शैल, यह बात इतनी सी नहीं है।”
“येला, अब क्या ...?”
“सीधी सी बात है, सरिता जी। येला को महाकुंभ जाना है और हमें उसे लेकर जाना है। चलोगी क्या हमारे साथ महाकुंभ?”
“वत्सर? क्या तुम मुझे ले चलोगे? चलो शीघ्र ही चलते हैं।”
“येला, अभी कुम्भ अगले अट्ठाईस दिन तक चलनेवाला है। महा शिवरात्रि को अंतिम अमृत स्नान होगा। तब हम सब चलेंगे।”
“सरिताजी, निश्चय ही चलोगे क्या?”
“अवश्य।” वत्सर ने देखा की कालिमा सारे आकाश में व्याप्त हो रही है किन्तु पश्चिम आकाश में दूज के चंद्रमा की क्षीण सी छवि दृष्टि गोचर हो रही है। उसे उसमें आशा की चंद्रिका दिखने लगी। इसी आशा में वह बोला, “येला, अट्ठाईस दिनों का समय है हमारे पास। इन दिनों तुम हमारे साथ चलो। तब तक हम लौट आएंगे। हैं न शैल? हैं न सरिता जी?”
“हाँ, हाँ।” दोनों ने प्रतिभाव दिया।
“बड़े चतुर हो, वत्सर। किसी भी रूप से मुझे साथ ले जाना चाहते हो।”
“सत्य कहा येला। बातें करना तो वत्सर ही जाने। सब को बांध लेता है अपनी बातों से।”
“शैल, न्यायाधीश को भी कैसे बांध लिया था इसने, स्मरण है न?”

“शैल, सरिताजी, येला। वह सब बातों को बीते हुए समय हो गया। अब आनेवाले समय की बातें करते हैं। तो यह बताओ येला, कब चलेंगे? कैसे चलेंगे? कैलास पर्वत के आरोहण के लिए क्या क्या सावधानी रखनी होगी?”
“यह सब तो मैं बता दूँगी। हमें अंतिम परिणाम पर प्रथम विचार करना होगा।”
“तो कर लेते हैं विचार।”
“अंतिम परिणाम की तीन संभावनाएं हैं।
एक, हो सकता है कि कैलास परिक्रमा करने के पश्चात हम पर्वत आरोहण न करें या न कर सकें और वैसे ही लौट आयें। तो क्या यह सब को स्वीकार होगा?”
“यदि यही नियति होगी तो अवश्य स्वीकार कर लेंगे।”
“दूसरा, कैलास पर्वत पर चढ़ते चढ़ते हमारी मृत्यु हो जाए।”
“तो इससे उत्तम मृत्यु क्या हो सकती है?”
“वत्सर, यदि ऐसा हुआ तो मुझे कुम्भ कौन ले जाएगा? कैसे ले जाएगा?”
“स्वयं भगवान शिव की शरण में देह त्याग हो तो कुम्भ की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी। सभी पाप स्वयं शिवजी नष्ट करके हमें अपनी शरण में ले लेंगे। तब तो सारी इच्छाएं भी समाप्त हो जाएगी। हमें दुर्लभ मोक्ष प्राप्त हो जाएगा। क्या यह पर्याप्त नहीं है, येला?”
येला ने वत्सर के तर्कों का उत्तर नहीं दिया।
“येला, अंतिम परिणाम की तीसरी संभावना क्या होगी?”
अनायास ही येला बोल पड़ी, “हम आत्मा की प्रयोगशाला में पहुँच जाएंगे। हमारा अभियान सफल हो जाएगा।”
“यह तो हमारा लक्ष्य है।”
“शैल, लक्ष्य सिद्ध होने पर क्या होगा?”
“मीरा की आत्मा पर मुद्रित क्षणों का इतिहास पढ़ेंगे और रहस्य को जान लेंगे। और क्या?”
“मुझे इस तीसरे परिणाम की कोई संभावना ही नहीं दिख रही। सारा उद्यम व्यर्थ ही है।”
“येला, मैं कुछ कहूँ?”
“कहो वत्सर। मैं कैसे रोक सकती हूँ तुम्हें कुछ कहने से?”

“येला, मुझे इस अभियान की सफलता पर कोई संदेह नहीं है। हम आत्मा की प्रयोगशाला पहुँचने में, रहस्य को जान लेने में अवश्य सफल होंगे।”
“इतना विश्वास कैसे है, वत्सर? जब तुम जानते हो कि आजतक कोई कैलास पर्वत पर आरोहण करने में समर्थ नहीं रहा। बड़े बड़े पर्वतारोही भी विफल हो गए तब हम जैसे साधारण व्यक्ति की क्या क्षमता?”
“येला, स्वयं को साधारण न समझो। ईश्वर ने सब को कुछ विशेष काम के लिए धरती पर शरीर देकर अवतरित किया है।”
“हम चारों विशेष नहीं हैं, साधारण ही हैं।”
“सत्य है कि हम चारों साधारण हैं। हम कहते हैं कि कोई कैलास पर आरोहण करने में सफल नहीं हुआ है। किन्तु कैलास पर आरोहण करने में यदि कोई सफल हुआ है तो हमें इसकी जानकारी भी कहाँ है?”
“यदि कोई गया होता तो स्वयं ही बताता न?”
“वह व्यक्ति बता ही नहीं सकता, येला।”
“क्यों, शैल?”
“क्यों कि जो व्यक्ति आत्मा की प्रयोगशाला में पहुँच गया वह तो वहीं रुक जाएगा न? लौटकर धरती पर कष्ट सहने क्यों आएगा?”
“सरिताजी, आप तो मेरा उपहास कर रही हो। सत्य यही है कि आजतक कोई वहाँ पहुँचा ही नहीं।”
सरिता के पास कोई उत्तर न था। उसने वत्सर की तरफ देखा। वत्सर ने सरिता की दुविधा जान ली।
“येला, यह मान लेते हैं कि आज तक कोई वहाँ पहुंचा ही नहीं। यह भी मान लेते हैं कि सरिताजी के तर्क अनुसार वहाँ पहुंचनेवाला वापस धरती पर लौटा भी नहीं।”
“ये दोनों बातें एक साथ सत्य कैसे हो सकती है?”
“इन दोनों बातों में से कोई एक बात तो सत्य होगी ही।”
“कौन सी बात सत्य होगी, वत्सर?”
“येला, यह निश्चय करने के लिए भी तो हमें पर्वतारोहण ही करना पड़ेगा।”
“अर्थात, किसी भी स्थिति में हमें वहाँ जाना है। वत्सर यही तर्क है न तुम्हारा?”

“अन्य कोई विकल्प है क्या?”
“हमारा लक्ष्य असंभव है यह इस बात को मान क्यों नहीं लेते हो, वत्सर?”
“नहीं मान सकता, येला। क्यों कि हमारे तर्कों से उनके वचनों का मूल्य अधिक है।”
“किसके वचनों की बात कर रहे हो, वत्सर?”
वत्सर ने वह सारी कथा सुनाई जिसमें सरिता के गुरुजी के वचन, अपने गुरुजी का आशीर्वाद, पवन ऋषि के वचन और एक अज्ञात साध्वी के वचन। वे सभी वचन कैलास पर्वत अभियान की सफलता के थे। येला ने ध्यान से सारी बातें सुनी।
“मैं मानती हूँ कि सिद्ध पुरुषों के वचन कभी मिथ्या नहीं होते हैं।”
“सत्य समझा तूने, येला।”
“और एक बात येला। सरिताजी के गुरुजी ने कहा था कि जब चार व्यक्ति जुड़ेंगे तभी अभियान सफल होगा।”
“कौन कौन चार व्यक्ति?”
“सरिताजी, शैल, मैं और तुम।”
“अर्थात यही है वह चौथा व्यक्ति?”
“हाँ, शैल।”
“चलो, मैं सब कुछ स्वीकार करती हूँ। मैं आपके इस अभियान से जुड़ रही हूँ।”
“आपका नहीं, हमारा अभियान कहो, येला।”
“ठीक है, हमारा अभियान। किन्तु कुम्भ में ले जाने की बात भूलना नहीं, वत्सर।”
वत्सर के स्मित ने येला को आश्वासन दे दिया।

[80]

“सब अपनी अपनी सज्जता कर लो। और मुझे अपने अपने पासपोर्ट दो। वहाँ जाने के लिए उचित तिबेटियन वीजा का मैं प्रबंध करती हूँ।” येला ने प्रात:काल में ही सबको कहा।
सुनकर शैल, सरिता और वत्सर एक दूसरे को देखने लगे। तीनों के मुख भावों को देखकर येला समझ गई कि कुछ समस्या है। “क्या बात है? चलो त्वरा से अपने अपने पासपोर्ट दो। वीजा के लिए प्रस्तुत करना पड़ेगा।”
“येला, शैल का पासपोर्ट उपलब्ध है। मेरे पास तो पासपोर्ट ही नहीं है।”
“वत्सर, तुम्हारे पास पासपोर्ट ही नहीं है? तो क्या समझकर इस अभियान का नेतृत्व कर रहे हो?”
“येला, अब वत्सर के पास पासपोर्ट नहीं है तो नहीं है। अब क्या कर सकते हैं वह बताओ।”
“शैल, इस स्थिति में वत्सर हमारे इस अभियान में नहीं चल सकता।”
वत्सर मौन हो गया, निराश हो गया।
“सरिताजी, आपका पासपोर्ट दीजिए। मैं हम तीनों के वीजा की प्रक्रिया करवाती हूँ।”
“मेरे पास पासपोर्ट तो है किन्तु समस्या है कि …।”
“कि आप साथ में नहीं लाई हैं, हैं न?”
“नहीं। यह रहा मेरा पासपोर्ट।” सरिता ने अपना पासपोर्ट निकालकर येला को दिया। येला ने उसे पढ़ा।
“सारा उलफ़त, पाकिस्तानी नागरिक। मुझे तो कोई समस्या नहीं लगती। सब ठीक ही तो है।”
“येला, सरिता जी को सात दिनों में भारत छोड़ने के आदेश दिए गए गईं।”
“सात दिनों में तो हम लौट आएंगे।”
“उस आदेश को महिनाभर हो गया।”
“क्या? आप इस देश में अवैध रूप से रुके हुए हो?”
“और कभी लौटने का भी विचार नहीं है।”

“वत्सर, यह कैसे हो सकता है? सरिता जी, आप मुझे भी समस्या में डाल रही हो। अवैध विदेशी प्रवासी को आश्रय देने के अपराध में मेरी भारतीय नागरिकता भी जा सकती है।” येला ने अपनी अप्रसन्नता प्रकट की। वत्सर पर क्रोध करते हुए बोली, “वत्सर, तुम तो जानते थे कि सरिताजी भारत में अवैध रूप से रुकी है। इसके परिणाम जानते हो न? तुम्हें भी दंड मिलेगा। तुमने भी सरिताजी को अपने घर में आश्रय दिया था। वत्सर, तुम्हें कोई अनुमान ही नहीं कि तुमने कितना बड़ा अपराध किया है! क्या करूँ मैं अब तुम्हारा और सरिताजी का?”

येला ने अपनी तीव्र दृष्टि से वत्सर और सरिता को बिंध डाला। दोनों अपराध भाव से ग्रस्त हो गए।

“मैं तो निरपराध हूँ, येला।”

“शैल, तुम तो सबसे बड़े अपराधी हो।”

“मैं? मैं कैसे?”

“सरिता जी को देश छोड़ने का आदेश हुआ है उस बात को तुम प्रथम दिन से ही जानते हो। तुम पुलिसवाले हो। न्याय एवं दंड संहिता का ज्ञान रखते हो तथापि तुमने सरिताजी को देश छोड़ने के आदेश को जानते हुए भी उस पर कार्य नहीं किया। और उन्हें साथ लेकर सारे भारत में घूम रहे हो? क्या यह अपराध नहीं है?”

“है। अवश्य है। किन्तु ...।”

“शैल। सपन और निहारिका ने आप दोनों को अनेक बार साथ साथ देखा है। वे दोनों उस आदेश को भी जानते हैं। इतना कुछ होने पर भी तुम सपन - निहारिका को नहीं जानते हो। वे दोनों ने प्रत्येक बार तुम दोनों को खोज निकाला है।” येला रुक गई। अब शैल भी अपराध भाव से ग्रसित हो गया। येला की अप्रसन्नता अपने चरम पर आ गई।

“आप तीनों इस देश के अपराधी हो। मैं आपके किसी भी अभियान में साथ नहीं हूँ। और एक बात, जितना शीघ्र हो सके, तीनों यहाँ से प्रस्थान कर लो।”

इतना कहकर येला वहाँ से चली गई। प्रात: की कोमल सूर्य किरणें अब तीव्र हो गई थी।

:%:%:%:%:%

संध्या हो गई। येला के आदेश का पालन करने के लिए तीनों में से कोई उत्सुक न था किन्तु आदेश को कैसे टाला जाए और अभियान कैसे प्रारंभ किया जाए उसका मार्ग भी किसी को अबतक सुझा नहीं था। अत: तीनों व्यग्र थे, व्याकुल थे, चिंतित थे।
रात्रि भोज के पश्चात तीनों दूरदर्शन पर समाचार देख रहे थे। भारत पाकिस्तान के मध्य सतलज नदी के पानी पर कोई विवाद के समाचार चल रहे थे। तीनों उसे बिना किसी ध्यान केंद्रित किये सुन रहे थे, देख रहे थे। तीनों के मन अन्य बातों पर विचार करने में व्यस्त थे।
“कल प्रात: तक आपको यहाँ से प्रस्थान करना होगा।” येला ने प्रवेश करते हुए कहा। सहसा तीनों अपनी अपनी विचार समाधि से जागे। तभी समाचार वाचक के शब्दों पर वत्सर ने ध्यान दिया। उसने कहा, “येला, समाचार देखो।”
“क्या है इसमें?”
“सतलज नदी के विषय में समाचार है।”
“तो क्या?”
“तुम बैठो यहाँ पर। मुझे बात करनी है।”
“कोई भी अवैध बात मैं नहीं सुनूँगी।”
“बैठो तो सही, येला।”
वत्सर ने दुरदर्शन को बंद कर दिया। सरिता और शैल ने भी वत्सर पर ध्यान केंद्रित किया।
“सुनो। मेरे पास एक युक्ति है। हम उस पर काम कर सकते हैं।”
“कैसी युक्ति, वत्सर?”
“मैं और सरिताजी कल प्रात: चले जाएंगे। शैल और तुम्हारे पास पासपोर्ट है। आपदोनों को वीजा लेकर मानसरोवर पहुंचना होगा। मैं और सरिताजी आप दोनों को वहाँ मिलेंगे।”
“आप दोनों वहाँ कैसे पहुँचोगे? बिना पासपोर्ट के? बिना वीजा के?”
“यह तुम मुझ पर छोड़ दो।”
“देखो वत्सर। तुम पुन: कोई अवैध कार्य नहीं करोगे।”
“वत्सर, तुम्हारे मन में क्या चल रहा है? मैं भी तो जानूँ।”
“बताता हूं, सरिता जी। योजना अनेक संकटों से पूर्ण है। अवैध भी है। किन्तु उचित भी है। और अन्य कोई विकल्प भी नहीं है। तो हम इसके सिवा कुछ कर भी नहीं सकते।”

“तुम्हारे पास अभियान त्यागने का विकल्प है। इतना तो कर ही सकते हो। यह विकल्प अवैध नहीं है, वत्सर।”
“अभियान त्यागने का विकल्प अब शेष नहीं बचा। वह अवसर कहीं पीछे छूट गया है, येला। तुम केवल मेरी योजना सुनो।”
तीनों ने वत्सर के शब्दों पर ध्यान लगाया।
“सतलज नदी का उदगम मानसरोवर है। हम नदी के मार्ग से मानसरोवर तक आ जाएंगे। उस मार्ग पर अनेक भय स्थान है। किन्तु बिना वीजा के, बिना पासपोर्ट के वहाँ तक पहुंचा जा सकता है। हम दोनों वहीं पर आप दोनों को मिलेंगे और आगे अभियान पर चलेंगे। एक बार मानसरोवर प्रवेश कर गए तो कोई समस्या नहीं रहेगी।” वत्सर ने पूरी योजना विस्तार से कही।
“वत्सर, तुम पागल ही नहीं, मूर्ख भी हो। न जाने कैसे कैसे विचार, कैसी कैसी योजना तुम्हारे मस्तिष्क में कहाँ से आ जाती है?”
“पागल कहो, मूर्ख कहो। जो भी कहो किन्तु अब यही मार्ग है। यही विकल्प है। सरिताजी, आप मेरी योजना से सम्मत हो?”
“वत्सर, मुझे कोई भय नहीं है। किन्तु इतने अपराधों के ऊपर एक और अपराध करना…?”
“अपराध एक हो या अनेक, दंड तो वही है। ठीक कह रहा हूँ न शैल?”
शैल ने मुक सम्मति दी।
“सरिताजी, जब दंड भुगतना ही है तो कुछ अपराध और कर लेते हैं।”
“वत्सर, तुम सारी सीमाओं को लांघ रहे हो। इसे मैं तुम्हारा पागलपन कहूँ, मूर्खता कहूँ, उत्साह कहूँ या विद्रोह कहूँ?”
“सारी सीमाओं का उल्लंघन तो तब भी हुआ था जब मुझ पर न्यायालय में अभियोग चला था।”
“किन्तु वह तो बीती बात है। उसके आधार पर आज तुम विद्रोह क्यों कर रहे हो?”
“विद्रोह? कैसा विद्रोह? किससे विद्रोह?”
“और नहीं तो क्या? जो किसी देश के विधि विधान अनुसार अनुचित है वह कार्य तुम करने जा रहे हो। यह विद्रोह नहीं तो और क्या है?”

“देश? येला, देश की सीमाएं हमने खींची है। सर्जनहार ने तो केवल एक ही पृथ्वी; अखंड पृथ्वी बनाई है। देशों के नाम पर इनके टुकड़े हमने किये हैं। अत: यह विधि विधान मानव सर्जित है, प्रकृति के नहीं, ईश्वरीय नहीं।”
“इस तर्क से क्या सिद्ध करना कहते हो तुम?”
“यही कि मैं और सरिताजी जिस मार्ग के द्वारा मानसरोवर पहुंचना चाहते हैं वह मार्ग भी उचित है, वैध है, प्राकृतिक है, ईश्वरीय है। इसमें कोई अपराध नहीं है।”
“तो यही विकल्प का निर्णय होता है।” सरिता ने कहा।
“जैसा आप चाहो। यदि आप दोनों पकड़े गए तो आपके अपराधों से मेरा कोई संबंध नहीं होगा।”
“हमें स्वीकार्य है, येला।” सरिता और वत्सर ने एक साथ कहा।
इसके पश्चात किसी ने कोई वाद विवाद नहीं किया। कार्यक्रम की रूपरेखा बनने लगी। उस अनुसार सज्जताएं होने लगीं। तीन दिन व्यतीत हो गए तब सारी सज्जताएं पूर्ण हो गई। येला और शैल को आधिकारिक वीजा प्राप्त हो गया।
सर्व प्रथम प्रस्थान सरिता और वत्सर ने किया।
“योजना अनुसार आज से छ: दिन पश्चात हम आप दोनों को मानसरोवर पर निश्चित बिन्दु पर मिलेंगे। उस दिन तक आप वहाँ पहुँच जाइएगा।” वत्सर ने कहा।
“और यदि हमें मार्ग में कोई बाधा से प्रत्यक्ष होना पड़े तो हमें एक दो दिन अधिक लग सकते हैं। तो आप दो और दिन हमारी प्रतीक्षा कर लेना।”
“ठीक है, सरिता जी। निश्चित अवधि के पश्चात मिलते हैं, मानसरोवर पर।”
“यदि निश्चित समय के पश्चात भी आप नहीं पहुंचे तो हम अभियान प्रारंभ कर देंगे। कैलास आरोहण का प्रयास करेंगे। ठीक है न येला?”
“ठीक है। नमो नारायण।”
तीनों ने वत्सर के घोष का प्रतिघोष करते हुए कहा, “नमो नारायण।”

[81]

निश्चित दिन और समय पर शैल और येला मानसरोवर के निश्चित किये बिन्दु पर पहुँच गए।
“येला, यह तो अद्‌भुत स्थान है।”
“वह तो है ही। यहाँ की प्रत्येक सांस में एक अद्‌भुत कंपन है जो हमें भीतर से सुख दे रहा है। प्रसन्नता दे रहा है।”
“जीवन में प्रत्येक को एक बार मानसरोवर अवश्य आना चाहिए। कदाचित यही जीवन की सफलता है।”
“सत्य है, शैल। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति का यहाँ आ पाना बड़ा कठिन है। जिसका भी भाग्य हो वे यहाँ अवश्य पहुँच जाते हैं।”
“जैसे हम।”
“हाँ, इस विषय में हम भाग्यवान अवश्य हैं।”
“यह तो वत्सर की हठ के कारण संभव हुआ है।”
“पूरा श्रेय वत्सर को जाता है। किन्तु वत्सर है कहाँ? वे लोग हैं कहाँ? अभी तक नहीं पहुंचे?”
शैल और येला ने दूर दूर तक, दशों दिशाओं में दृष्टि डाली किन्तु कहीं भी वत्सर या सरिता के होने का कोई संकेत नहीं मिला।
“प्रतीत होता है कि उन्हें समय लग सकता है।”
“तब तक प्रतीक्षा करते हैं, शैल। साथ साथ अनिमेष नयनों से प्रकृति के इस अनुपम रूप का दर्शन करते हैं।”
“येला, सर्वप्रथम मानसरोवर में स्नान कर लेते हैं, पवित्र डुबकी लगा लेते हैं।”
शैल मानसरोवर में प्रवेश करने आगे बढ़ा तो येला ने उसे रोकते हुए कहा, “नहीं शैल, रुको।”
शैल रुक गया, मुड़ा और येला से प्रश्नार्थ दृष्टि से देखने लगा। “क्यों रोका?”
येला ने कहा, “मानसरोवर के भीतर प्रवेश कर स्नान करना या डुबकी लगाना निषेध है।”

“ऐसा क्यों? पवित्र जल में स्नान नहीं करेंगे तो श्रद्धालु कहाँ स्नान करेंगे?”
“पवित्र जल से स्नान कर सकते हो, पवित्र जल में नहीं।”
“क्या?”
“सरोवर में प्रवेश नहीं करना है। यह पर्यावरण एवं शुद्धता का प्रश्न है। किन्तु सरोवर से जल भरकर ले जाओ और अपने अपने स्थान पर उस जल से स्नान करो। इसमें मैं तो क्या कोई भी नहीं रोकेगा।”
“ओह, यह तो अच्छी बात है।” शैल ने कहीं से कोई पात्र ढूंढ निकाला, उससे सरोवर का जल भरकर अपने शीश पर डाल दिया।
“हो गया पवित्र स्नान!” शैल प्रसन्न था। येला उसे देखती रही।
“तुम भी स्नान कर लो। लो यह पात्र।”
येला ने पात्र लिया, जल भरा और स्नान किया। जल से भीगे वस्त्रों में येला का शारीरिक सौन्दर्य स्वत: स्फुट हो गया। शैल ने एक घड़ी के लिए उस पर दृष्टि डाली। तभी मस्तिष्क से प्राप्त अज्ञात संकेत ने आदेश दिया। क्षणार्ध में ही शैल ने अपनी दृष्टि येला से हटाकर आकाश की तरफ मोड दी। येला ने शैल के इस कार्य को देखा, मन ही मन शैल की प्रशंसा भी करने लगी, धन्यवाद भी।
“येला, अब कैलास पर्वत के दर्शन भी कर लो।” दोनों ने हाथ जोड़कर कैलास के दर्शन किए।
“कितना अद्भुत दृश्य है यहाँ?”
“येला, श्वेत हिम आच्छादित कैलास पर पड रहे सूर्य किरण से यह सुवर्ण पर्वत प्रतीत हो रहा है।”
“शैल, यह स्थान ऐसा है जहां हम पाँच महाभूतों का साक्षात्कार एक साथ कर सकते हैं।”
“पाँच महाभूत? कैसे?”
“यह कैलास पर्वत स्वयं पृथ्वी तत्व है। यह इतना ऊंचा है कि आकाश तत्व को स्पर्श कर रहा है। इसको तेज तत्व रूप सूर्य अपनी किरणों से तेजोमय बनाता है। मानसरोवर स्वयं जल तत्व के रूप में उपस्थित है। यहाँ बह रही पवित्र और शीतल हवा वायु तत्व के रूप में विराजमान है।”
“वाह, येला। तुम्हारा निरीक्षण अति सूक्ष्म है। इन पाँच तत्वों का क्या संकेत होगा?”
“इन पाँच तत्वों से बना शरीर भी पवित्र एवं अद्भुत है। इसे योग्य दिशा देने के लिए चेतन तत्व, आत्मा स्वयं परमात्मा के अंश रूप हमारे भीतर प्रवेश कर हमें सत्कार्य हेतु प्रेरित करता है।”

“इसी चेतन तत्व आत्मा के लोक की खोज में हम निकल पड़े हैं।”
“शैल, तुमने ठीक स्मरण कराया।”
“इस स्थान की अनुभूति ही ऐसी है कि मनुष्य सब कुछ भूल जाता है।”
“हमारे दो साथी यहाँ आना भूल तो नहीं गए?”
“भुलनेवाले, भटकने वाले नहीं है हमारे साथी।”
“तथापि अभी तक नहीं आ पहुंचे।”
“वे जिस मार्ग से आ रहे हैं वह मार्ग सीधा और सरल कहाँ है?”
“बड़ा दुर्गम और कठिन मार्ग चुना है। वत्सर भी न ..?”
“येला, वत्सर का चरित्र ही ऐसा है कि वह कठिन मार्ग ही चुनता है।”
“हाँ। प्रत्येक बात में कुछ अनूठा, कुछ दुर्गम, कुछ विचित्र, कुछ विशिष्ट ही करता है।”
“जैसे वह शिल्प! जैसे न्यायालय में किए गए वे तर्क, जैसे उसका मंदिर, जैसे मंदिर का नित्य क्रम!”
“और जैसे उसका बाँसुरी वादन, वैसा ही यह अभियान!”
“बड़ा विचित्र सा है न वत्सर?”
“विचित्र नहीं, विशिष्ट है वत्सर!”
“सो तो है, येला। हमारे यह विचित्र व्यक्ति, विशिष्ट व्यक्ति कब आएंगे?”
“कभी भी आ सकते हैं।”
“और कभी नहीं भी।”
“दोनों संभावनाएं सत्य है, शैल। मुझे विश्वास है कि वे अवश्य आ पहुंचेंगे।”
“तुम्हारा विश्वास सफल हो, येला। चलो प्रतीक्षा कर लेते हैं। और क्या?”
“नहीं। हमारे पास दो दिन का समय है। इस समय में हम कैलास की परिक्रमा कर लेते हैं। क्या विचार है शैल?”
“विचार उत्तम है किन्तु इतने समय में वे दोनों आ गए तो? हमें यहाँ न पाकर ..?”
“वे भी दो दिनों तक हमारी प्रतीक्षा कर लेंगे।”
“ऐसा निश्चय हमारे मध्य हुआ था क्या?”
“नहीं। किन्तु यह तो स्वत: समझने की बात है।”

“ठीक है। चलो चलते हैं परिक्रमा पर।” दोनों ने परिक्रमा प्रारंभ की।

[82]

प्रथम दिन दोनों ने सत्रह किलोमीटर की परिक्रमा सम्पन्न की। एक स्थान पर रात्री निवास के लिए रुके। प्रात: ब्रह्म मुहूर्त के समय येला की आँख किसी स्वरों को सुनकर खुल गई। उसने देखा कि एक महात्मा उससे कुछ ही अंतर पर खड़े थे।
शरीर पर भस्म लगी थी। विशाल जटायें बंधी हुई थी। शरीर पर केवल एक अंग वस्त्र था। आँखें विशाल, करूणा से भरी किन्तु कुछ चेतावनी देती हुई सी प्रतीत हो रही थी। दृष्टि येला पर स्थिर थी। मुख से मंत्रोच्चार किए जा रहे थे। ललाट और काया विशाल थी। ललाट पर दिव्य तेज था। येला ने उसे ध्यान से देखा। मन को मंत्रोच्चार पर लगाया। अब वह उसे स्पष्ट सुन सकती थी किन्तु उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।
वह उठी, महात्मा को वंदन किया और प्रतीक्षा करने लगी। महात्मा की आँखों का तेज येला को कुछ कह रहा था जिसके संकेतों को येला समझ न पायी। कुछ क्षण में शैल भी वहाँ आ गया। उसे दखते ही महात्मा ने उसे संकेतों से अपने निकट बुलाया। शैल समीप गया, वंदन किया।
“लौट जाओ, अभी लौट जाओ। तुम्हारा कल्याण हो।”
“जैसी आपकी आज्ञा, प्रभु।” शैल ने नतमस्तक हो कहा।
“मानसरोवर के जिस बिन्दु से चले थे वहीं लौट जाओ।”
“जी।”
“आज रात्री वहाँ निवास करो। प्रतीक्षा करो। कल प्रात: वत्सर और सरिता वहीं मिलेंगे।”

“पश्चात क्या करना होगा, प्रभु?”
“अभी इतना ही करो। समय के प्रत्येक बिन्दु पर तुम्हें कोई न कोई आदेश प्राप्त होते रहेंगे। उसका पालन करना। तुम्हारा कल्याण होगा।”
“जी प्रभु।” दोनों ने हाथ जोड़, आँखें बंद कर नमन किया।
“नारायण, नारायण। नमो नारायण।” शब्दों के साथ महात्मा अन्तर्धान हो गए। दोनों ने आंखें खोली तो उनके समक्ष था शून्य! और ब्रह्म मुहूर्त का अंधकार! दोनों ने एक दूसरे को देखा। कुछ कहे बिना ही दोनों चल पड़े मानसरोवर के उस बिन्दु पर जहां से कल यात्रा प्रारंभ की थी। रात्री से पूर्व दोनों वहाँ पहुँच गए। महात्मा जी के वचनों पर श्रद्धा रखकर प्रात: काल की प्रतीक्षा करने लगे।

%^%^%^%^

येला सूर्योदय से पूर्व जाग गई। कुछ दूर दृष्टि पड़ते ही वह चौंक गई। शैल अभी भी निद्राग्रस्त था।
एक आकृति दूर से चलकर उसकी तरफ आ रही थी।
‘कौन हो सकता है? पुरुष या स्त्री या कोई साधु?’ येला मन में विकल्प सोचती रही थी कि उस आकृति के पीछे दूसरी आकृति दिखाई दी। पश्चात तीसरी भी दिखाई दी। अंधकार में तीनों आकृतियाँ अस्पष्ट सी थी। तीनों निकट आने लगीं। येला उस पर ही ध्यान लगाए थी।
प्रथम आकृति येला के समीप से चलकर आगे निकल गई। येला क्षणभर विचलित हो गई। दूसरी और तीसरी आकृति ठीक येला के समक्ष आकर रुक गई।
“येला, हम हैं।” सरिता ने कहा।
“मैं सरिता और यह वत्सर।” सुनकर येला की सांसें शांत होने लगीं।
“वह कौन था?” येला ने पूछा।
“कौन?”
“अभी अभी एक आकृति यहाँ से गई है। आपके आगे आगे चल रही थी।”
“येला, हमारे आगे तो कोई नहीं था।”

“तो वत्सर ...?”
“कोई भ्रम होगा, येला।”
“नहीं, भ्रम नहीं था। स्पष्टत: आकृति ही थी। मनुष्य आकृति।” येला ने कहते हुए आकृति जिस दिशा में गई थी उस तरफ देखा।
“वो इस तरफ गई, वहाँ। कहाँ गई?”
“वहाँ दूर दूर तक कोई नहीं है, येला।”
“कोई तो था जो अब नहीं है।” येला कांप रही थी।
“येला, घबराओ नहीं।” सरिता ने येला को आश्वस्त करने का प्रयास किया।
“किन्तु ऐसा कैसे हो सकता है, वत्सर?”
“क्या शैल?”
“वत्सर, वह आकृति मैंने भी देखी थी। ठीक तुम्हारे आगे आगे चल रही थी। इसी दिशा में गई है। किन्तु अब दिख नहीं रही है। कहाँ विलीन हो गई?”
शैल की बात सुनकर वत्सर ने स्थिति को संभालते हुए सभी को बैठने को कहा। सभी बैठ गए।
“आप दोनों जिस आकृति की बात कर रहे हो वह सत्य हो सकती है। आप केवल एक आकृति की बात कर रहे हो किन्तु इस समय हमारे आसपास अनेकों आकृतियाँ हो सकती है। हम उन्हें देख नहीं सकते हैं। किन्तु उनकी उपस्थिति अवश्य ही हो सकती है।”
“उपस्थित हो और दिखाई न पड़े? यह कैसी बात कर रहे हो, वत्सर?”
“येला, वत्सर कोई परिकथा सुना रहा है हमें।”
“शैल, मुझे लगता है कि हमें वत्सर की बात पर विचार करना चाहिए। हमें जो परिकथाएं लगती है, वास्तव में हो भी सकती हैं। यह मानसरोवर है। यहाँ कुछ भी हो सकता है।”
“सरिता जी, आप चमत्कारों की बात कर रही हो?”
“नहीं शैल। जो बात हमारी बुद्धि की सीमा से परे हो उसे हम चमत्कार मान लेते हैं। किन्तु चमत्कार जैसा कुछ नहीं होता है।” सरिता ने कहा।
“वत्सर, तुम ही बताओ कि क्या होता है?”
“येला सुनो। शैल तुम भी। संसार में किसी भी घटना प्रकृति के नियमों के विरुद्ध या उससे बढ़कर नहीं होती है। हमारी बुद्धि, हमारी समज शक्ति प्रकृति के अंश मात्र नियमों को जानती है,

स्वीकारती है।। किन्तु अगाध, अनंत प्रकृति के नियम भी अगाध और अनंत होते हैं। इनको हम नहीं जानते इसलिए चमत्कार कहकर उसे स्वीकार लेते हैं।”

“कुछ वैज्ञानिक तर्क वाली बात कहो, वत्सर।”

“ठीक है शैल। विज्ञान कहता है कि हमारी दृष्टि 370 से 730 नेनो मीटर की तरंगलम्बाई वाले पदार्थों को देख सकती है। हमारा कान 20 हर्ट्ज से लेकर 20000 हर्ट्ज की मात्रा वाली ध्वनि सुन सकता है। इस बात को तो मानते हो न?”

“हाँ वत्सर। इतना विज्ञान तो पढ़ा है।”

“इन सीमासे निम्न या ऊपरवाली वस्तुओं का या ध्वनियों का अस्तित्व भी होता है। होता है न, शैल?”

“हाँ, होता है।”

“तो इन सूक्ष्म या विशाल वस्तु को हम देख नहीं सकते। ध्वनि की उक्त सीमा के बाहर का ध्वनि भी सुनाई नहीं देता। तो क्या इन वस्तुओं का या ध्वनियों का अस्तित्व नहीं होता ऐसा मान लेंगें?”

“नहीं वत्सर।”

“इस प्रकार कुछ सिद्ध आत्माएं अपने शरीर को, अपनी आकृति को सूक्ष्मतम बनाकर हमारे आसपास विचरण करते रहते हैं। समय अनुसार वे अपनी मूल आकृति में प्रकट होते हैं तो हमें दिखाई देते हैं। और जब सूक्ष्म स्वरूप धरण कर लेते हैं तो वे अन्तर्धान हो जाते हैं। इस प्रकार ध्वनि का भी विज्ञान है।”

“ओहो। जो होता हो किन्तु दिखाई न देता हो यह भी विज्ञान ही है।”

“और कभी कभी जो प्रत्यक्ष हो किन्तु हम उसे उस रूप में देखना नहीं चाहें तो उसे नहीं देख पाते हैं। क्यों वत्सर, सत्य कहा न?”

“येला, तुम भी?”

“शैल, वत्सर और सरिता को देखो। वे दोनों इस समय साधु के रूप में हमारे समक्ष हैं। इतना समय हो गया उन्हें यहाँ आए हुए किन्तु हमने उनके साधु वेश को देखा क्या? उस पर ध्यान दिया क्या?”

येला की बात सुनकर शैल ने सरिता और वत्सर को ध्यान से देखा।

“अरे, हाँ। यह तो हमने देखा ही नहीं था। ऐसा कैसे हो गया येला?”
“आप दोनों हमारा यह रूप देखना ही नहीं चाहते थे।”
“सरिता जी, वह तो ठीक है किन्तु यह साधु रूप क्यों?”
“यदि अवैध रूप से, नदी के मार्ग से किसी देश में प्रवेश करना हो तो यह साधु रूप ही काम आ सकता है।”
“साधुओं को कोई नहीं पूछता, पासपोर्ट और वीजा के विषय में। तो हमारे पास यही विकल्प था।”
“वाह वत्सर। यह तो अच्छा हुआ। अब दो साधु और दो नगरजन साथ साथ चलेंगे तो कोई संकट भी नहीं रहेगा।”
“येला, नदी मार्ग से यहाँ तक आने में वत्सर और सरिता जी को संकट से प्रत्यक्ष होना पड़ा होगा।”
“संकट आए, समस्याएं भी आई किन्तु भोलेनाथ ने संकट से बचाया, समस्याओं का समाधान दिखाया और यहाँ तक हमें पहुंचाया भी। बोलो ‘हर हर महादेव!’”
“हर हर महादेव!”
मद्धम प्रकाश का अवनी पर आगमन हो गया। दूर सूर्योदय के संकेतों को लेकर कुछ पक्षी आकाश में उड़ने लगे।
“सरिता जी। आप दोनों कष्ट सहकर आए हो, थके होंगे। थोड़ा विश्राम कर लो पश्चात आगे की यात्रा प्रारंभ करते हैं।”
“नहीं येला। अब समय के साथ, कदाचित समय से भी तीव्र गति से चलना होगा। हमें शीघ्र ही पर्वतारोहण प्रारंभ करना होगा।”
“सीधा पर्वतारोहण? सरिता जी प्रथम परिक्रमा कर लेते तो?”
“शैल, लौटकर आएंगे तब परिक्रमा कर लेंगे। अभी तो पर्वतारोहण ही उचित रहेगा।”
“लौ ट क र … ।” शैल और येला के शब्द अनिश्चितता में ही विलीन हो गए। सभी पर्वतारोहण के लिए सज्ज होने लगे।

[83]

कुछ ऊंचाई तक चारों कैलास पर्वत पर चड़ते रहे तब उन्हें सामान्य पर्वतारोहण जैसा अनुभव होता रहा। एक बिन्दु पर आकर सरिता ने मुड़कर नीचे की तरफ देखा, “वाह! कितना अद्भुत सौन्दर्य है इस धरती का!”

तीनों रुक गए। तीनों ने नीचे देखा। प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को देखते ही रहे, चारों।

ठंडी हवा के स्पर्श से सुखद अनुभूति होने लगी। श्रम की थकान दूर हो गई। थोड़ा रुक कर पुन: आरोहण करने लगे।

वत्सर ने जप प्रारंभ किया, “ओम नमो नारायणाय:।”

घाटियों से प्रतिघोष होने लगा, “ओम नमो नारायणाय:।”

सरिता, येला और शैल भी जप में जुड़ गए। “ओम नमो नारायणाय:।” के घोष प्रतिघोष के साथ चारों के चरण चलते रहे।

[-][-][-][-][-]

“ओम नमो नारायणाय:” के घोष करते, प्रतिघोष सुनते सुनते चारों कुछ ऊंचाई तक चड़ने के पश्चात थक गए।
“थोड़ा विश्राम कर लेना चाहिए।”
“अवश्य।” सरिता से तीनों एक साथ सम्मत हो गए।
एक शीला पर येला बैठ गई, दूसरी पर शैल। तीसरी पर सरिता भी बैठ गई। वत्सर कुछ क्षण खड़ा ही रहा।
सभी के मुख से “ओम नमो नारायणाय:” का घोष सम्पन्न हो चुका था किन्तु “ओम नमो नारायणाय:” का प्रतिघोष अभी भी घाटियों से आ रहा था। वत्सर उस प्रतिघोष को ध्यान से सुनता रहा। समय व्यतीत होने पर भी “ओम नमो नारायणाय:” का प्रतिघोष सम्पन्न नहीं हुआ तो वत्सर को आश्चर्य हुआ।
‘घाटियों में घोष का प्रतिघोष होता है और घोष के पूर्ण होने के पश्चात भी कुछ समय तक प्रतिघोष होता रहता है किन्तु यहाँ तो हमने घोष बंद किए अधिक समय हो गया। अब तक प्रतिघोष भी शांत हो जाना चाहिए। यह प्रतिघोष अभी भी आ रहा है। क्या यह कैलास पर्वत की विशिष्टता होगी कि लंबे समय तक प्रतिघोष होता रहे? या कुछ और बात हो सकती है?’
वत्सर ने चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई, कान भी। ध्यान से प्रतिघोष सुनने लगा।
‘नहीं। यह प्रतिघोष नहीं है। कुछ अन्य बात ही है।’
वत्सर ने अपना संदेह सबके समक्ष प्रस्तुत किया।
“क्या आप लोगों को “ओम नमो नारायणाय:” का ध्वनि अभी भी सुनाई दे रहा है?”
“हाँ। तो क्या है?” शैल ने कहा।
“येला, क्या पहाड़ों में एकबार घोष करने पर उसका प्रतिघोष लंबे समय तक सुनाई देता है? या अल्प समय में शांत हो जाता है?”

“वत्सर, पहाड़ कोई भी हो, प्रतिघोष कुछ ही समय में शांत हो जाते हैं।”
“तो यह अभी भी क्यों सुनाई दे रहा है?”
“सरिता जी। यह कैलास पर्वत है। इनके रहस्यों को कौन जान सका है? हो सकता है यह भी ऐसा ही कोई रहस्य हो।”
“येला, क्या यह प्रतिघोष ही है या किसी के द्वारा हो रहा जप?”
“सरिता जी, इस स्थान पर इस समय कौन जप करेगा? यहाँ तो ..?”
“शैल, यहाँ अनेकों सिद्ध ऋषि वास करते हैं। हो सकता है कोई ऋषि तप कर रहे हो, जप कर रहे हो।”
“हो सकता है वत्सर। हमें कुछ समय मौन होकर उसे ध्यान से सुनना होगा।”

“हो सकता है वत्सर। हमें कुछ समय मौन होकर उसे ध्यान से सुनना होगा।”
येला की बात पर सभी मौन हो गए। “ओम नमो नारायणाय:” की ध्वनि पर कान और ध्यान लगाकर चारों उसे सुनने लगे। कुछ ही समय में उन्होंने उस ध्वनि के उद्गम की दिशा जान ली। वत्सर ने संकेत किया और चारों ध्वनि की दिशा में सजग - सचेत होकर चलने लगे। थोड़ा चलने पर एक शीला के सम्मुख आ पहुंचे। शीला के पीछे अर्ध खुला द्वार था। जिसके पीछे एक गुहा सा प्रतीत हो रहा था। ध्वनि उस गुहा के भीतर से आ रही थी। सभी द्वार पर ही रुक गए। शैल ने भीतर देखा। भीतर अल्प प्रकाश था, अधिक अंधकार!
“ओम नमो नारायणाय:” का ध्वनि अब स्पष्ट रूप से गुहा के भीतर से आकर चारों के कानों को स्पर्श करता हुआ घाटियों में व्याप्त हो जाता था। ध्वनि के स्पर्श से चारों प्रसन्नता का अनुभव करने लगे।
वत्सर गुहा के भीतर प्रवेश करने लगा।
“वत्सर, आगे मत जाना। अंधेरा है, अज्ञात स्थान है। भय हो सकता है।” सरिता ने रोका।
“जहां से स्वयं नारायण के नाम का घोष हो रहा हो वहाँ भय कैसा? भीतर अवश्य ही कोई ऋषि के दर्शन होंगे। हमें उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।” वत्सर ने कहा।
“वत्सर ठीक कह रहा है। चलो हम सब भीतर चलते हैं।” येला ने वत्सर का समर्थन किया।

शैल ने हाथ बत्ती जला ली। गुहा में प्रकाश हो गया। प्रकाश के सहारे चारों भीतर जाने लगे। थोड़ा चलने पर एक विशाल शीला पर एक आकृति दिखाई दी।
“रुको।” वत्सर ने सबको रोका। शैल ने आकृति पर प्रकाश स्थिर किया। एक पुरुष आकृति स्पष्ट दिखाई दी। आँखें बंद, मुख से ‘नमो नारायणाय: ’ का मंत्रोच्चार। पद्मासन स्थित मुनि की मुख मुद्रा शांत और तेजोमय थी। माथे पर विशाल जटा बंधी हुई थी। मध्य मे जटा लंबी थी। तन पर केवल एक वस्त्र नीचे के भाग में था, वक्ष: स्थल खुला था। समीप उनके एक वीणा पड़ी थी। वीणा शांत थी। वत्सर ने दूर से ही आँखें बंद कर, नत मस्तक होकर मुनि को प्रणाम किया। सरिता, शैल और येला ने वत्सर का अनुकरण किया। कुछ समय तक चारों यूं ही प्रणाम की मुद्रा में खड़े रहे। ‘ओम नमो नारायणाय ’ का ध्वनि सुनते रहे, साथ साथ जप करते रहे,’ओम नमो नारायणाय ’।
सहसा शांत पड़ी वीणा के तार सजीव हो गए और वीणा बज उठी। सुंदर और दिव्य संगीत के सुर ‘ओम नमो नारायणाय ’ मंत्रोच्चार के साथ ताल मिलाने लगे। आश्चर्य से चारों ने आँख खोली तो दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए।
मुनि अपने स्थान पर स्थिर थे। मुख से मंत्रोच्चार चल रहा था। समीप पड़ी वीणा स्वत: बज रही थी, बिना किसी के बजाए हुए। वीणा के तार स्वत: झंकृत हो रहे थे, स्वत: संगीत प्रकट हो रहा था। स्वत: संगीत गुहा में व्याप्त हो रहा था।
चारों की आँखों में अचरज था। चारों अवाक थे। चारों उसे अनिमेष नयनों से देख रहे थे। जब समय का एक राग पूर्ण हो गया तब तक चारों निश्चल से, हाथ जोड़े खड़े रहे। जब समय का वह आलाप शांत हो गया, नया आलाप प्रवेश कर गया तब उस मुनि ने आँखें खोली। वीणा पर दृष्टि डाली। सहसा वीणा शांत हो गई। तार स्थिर हो गए। एक और कौतुक ने चारों को नए अचरज में डाल दिया।
“आओ वत्सर। तुम्हारे साथियों के साथ तुम्हारा स्वागत है।” मुनि ने कहा। वत्सर यंत्रवत मुनि की तरफ बढ़ा, समीप गया, पैर छु लिए, मुनि के चरणों में बैठ गया।
“शैल, सरिता, येला। आपका भी स्वागत है।” मुनि ने पुन: कहा। तीनों ने वत्सर का अनुसरण किया, पश्चात अनुकरण कर मुनि के चरणों में बैठ गए।

“भगवान नारायण आप सभी का कल्याण करे।” मुनि ने आशीष दिया। चारों ने पुन: हाथ जोड़े। अभी भी आश्चर्य में डूबे होने के कारण चारों में से कोई कुछ भी बोल न सका।
“लो, भोजन कर लो।” मुनि ने क्षणार्ध में चारों के समक्ष गरम भोजन प्रस्तुत कर दिया। चारों ने भोजन किया, तृप्त हो गए।
‘अब आप अपने लक्ष्य की तरफ जाओ। भगवान नारायण कल्याण करे।” मुनि के आशीष सुनकर चारों ने मुनि को प्रणाम किया। उनके देखते ही देखते मुनि एक तेज में परिवर्तित हो गए। वीणा के साथ वहीं से अन्तर्धान हो गए।
चारों ने आँखों का तेज बढ़ाकर देखा। अब वहाँ कोई नहीं था। केवल वह विशाल शीला थी जिस पर एक ताजा पुष्प पड़ा था। कुछ क्षण चारों उस पुष्प को और उस खाली शीला को देखते रहे। आँखों का अचरज अपने यौवन पर था। क्षणभर उस अचरज के साथ, पुष्प की सुगंध के साथ रहने के पश्चात चारों गुहा से निकले। सहसा वत्सर रुका, मुड़ा और शीला पर पड़े पुष्प को अपने साथ ले लिया। सुगंध स्वत: साथ हो गई।
वत्सर को देखकर तीनों ने प्रश्न दृष्टि से पूछा, “क्यों?”
वत्सर ने स्मित के साथ उत्तर दिया। पश्चात किसी ने कोई प्रश्न नहीं किया। चारों आरोहण के मार्ग पर आगे बढ़ गए।

[84]

“मुझे एक प्रश्न हो रहा है, संशय भी। क्या मैं पूछूँ?”
तीनों ने येला की तरफ देखा।

“यदि आप चाहोगे तो ही पूछूँगी।” येला ने संकोच प्रकट किया। मौन होकर, मस्तक झुकाकर पथ पर आगे चलने लगी।
“येला, तुमने कोई अपराध नहीं किया है। इस प्रकार व्यवहार न करो।”
वत्सर की बात सुनकर येला रुक गई।
वत्सर ने समीप जाकर कहा, “येला, कहो क्या संशय है?” येला अभी भी कुछ न बोली।
“जब भी संशय हो, जिसे भी संशय हो, बिना संकोच के पुछ लेना चाहिए। यदि मुझे भी कोई संशय होगा, मैं भी पुछ लूँगा। ध्यान रहे, कोई भी बात अर्थहीन नहीं होती। अत: येला, तुम्हारा संशय हमारे समक्ष रखो।” वत्सर ने कहा।
येला ने एक गहन श्वास लिया और कहा, “हम कैलास पर्वत आरोहण कर रहे हैं। कैलास तो महादेव शिव शंभू का स्थान है। हमें इस मार्ग पर ‘हर हर महादेव’ का नाद करना चाहिए। जब कि हम ‘ओम नमो नारायणाय ’ का घोष करते हुए क्यों चल रहे हैं?”
“सत्य कहा येला तुमने। यह बात अब तक हमारे किसी के भी ध्यान पर क्यों नहीं आई?”
“शैल, और तो और, जिस पुष्प को साथ लिए हम चल रहे हैं उस पुष्प रूप ऋषि भी गुहा में ‘ओम नमो नारायणाय ’ का ही घोष कर रहे थे। उन्होंने हमें भी यही मंत्र दिया। क्या हम कैलास के स्थान पर कहीं अन्यत्र तो नहीं जा रहे हैं?”
“तो सरिताजी, क्या हम भटक गए हैं?”
“शैल, वत्सर से पूछते हैं। वत्सर, क्या लगता है? हम भटक गए हैं या कैलास पर ही जा रहे हैं?”
“येला, मैंने सुना है कि कैलास पर्वत पर जिसने चढ़ने का प्रयास किया, सब भटक जाते थे। यही तो कारण है कि आजतक कोई कैलास पर चढ़ नहीं सका।”
“सरिताजी, जो सुन रखा है वह हमारे साथ वास्तव में अब हो रहा है।” येला ने कहा।
सब की बातें सुनकर वत्सर हंस पडा।
“हम यहाँ भटक रहे हैं और तुम हंस रहे हो, वत्सर?” शैल ने कहा।
“हाँ वत्सर। कहीं तुम पागल तो नहीं हो गए?” येला ने कहा।
“इस क्षेत्र का प्रभाव सबसे प्रथम वत्सर पर हो रहा है क्या?” सरिता की बात सुनकर वत्सर पुन: हंसने लगा। तीनों उसे देखते रहे। कुछ क्षण पश्चात वत्सर का हँसना बंद हुआ।

“न तो मैं पागल हुआ हूँ न मुझ पर इस क्षेत्र का कोई विपरीत प्रभाव पड रहा है। न तो हम भटक गए हैं, न ही पुष्प वाले ऋषि ने कोई मिथ्या बात कही है। सब कुछ सत्य है। बस इस मार्ग पर ही हमें चलना है।”
“तो येला के संशय का क्या उत्तर है तुम्हाररे पास?”
“उत्तर देता हूँ, सरिता जी। ध्यान से सुनो। कैलास भगवान शिव का निवास है यह निर्विवाद सत्य है। किन्तु भगवान शिव क्या है? कौन है? इस बात को यदि जान लेंगे तो सारे संशय दूर हो जाएंगे।”
“कौन है शिव?”
“येला, भगवान नारायण ही परम तत्व है। जो संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का कार्य करते हैं। किन्तु इन कार्यों के लिए नारायण ने स्वयं को तीन भागों में विभाजित किया है। उत्पत्ति का कार्य करने हेतु ब्रह्मा का रूप, स्थिति अर्थात संसार के वहन हेतु विष्णु का रूप और प्रलय या संहार के कार्य हेतु शिव का रूप धारण कर लिया है। वास्तव में ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों ही एक ही परमतत्व नारायण के ही रूप हैं। तो कहो, नारायण का नाम लेना उचित है या नहीं?”
तीनों के पास वत्सर की बात का कोई उत्तर नहीं था। कुछ क्षण तीनों मौन होकर विचार मग्न हो गए। सहसा सरिता ने घोष किया, “ओम नमो नारायणाय ।” येला और शैल ने भी सरिता के घोष का प्रतिभाव देते हुए कहा, “ओम नमो नारायणाय ।”
वत्सर ने भी यही प्रतिभाव दिया, “ओम नमो नारायणाय ।”
चारों ‘ओम नमो नारायणाय ’ के घोष के साथ आगे बढ़ गए। कैलास से भी प्रतिघोष होने लगा, “ओम नमों नारायणाय ।”

{“}{“}{“}{“|}

चलते चलते विश्राम हेतु एक स्थान पर चारों रुके।

“मैं तीव्र तृषातुर हूँ। कहीं कोई जलागार दिख रहा है क्या?” येला थककर बैठ गई। सभी ने चारों तरफ जल की खोज में देखा।
“दूर कुछ जल सा प्रतीत हो रहा है। शैल और वत्सर, क्या तुम हमारे लिए जल ला सकते हो?”
“दूर एक झरना बह रहा है। मैं जाकर जल लाता हूँ। सरिताजी, आप विश्राम करें।”
“नहीं वत्सर। तुम यहाँ रुको। मैं जाता हूँ।” जल लाने के लिए एक पात्र के साथ शैल चल पडा। तीनों प्रतीक्षा करने लगे।
झरने के समीप जाकर शैल ने पात्र को पानी की धारा के नीचे रख दिया। आधी क्षण में ही पात्र जल से परिपूर्ण हो गया। शैल ने पात्र उठाया और लौटने लगा। जैसे ही उसने लौटना चाहा, वह अचंभित रह गया। उसके सम्मुख एक स्त्री विकराल रूप में खड़ी थी। उसे देखकर शैल भयभीत हो गया।
उस स्त्री ने काले वस्त्र पहने थे। बाल खुले थे। आँखें रक्त के समान लाल थी। हाथों में अस्त्र शस्त्र थे। शरीर विशाल था। मुख पर क्रोध के भाव थे। रूप इतना कुरूप था कि निर्भय पुलिस अधिकारी शैल भी भयग्रस्त हो गया। उसने क्षणभर भी विलंब न करते हुए जल के पात्र को वहीं छोड़ दिया और बाकी तीनों जहां थे उस तरफ भागने लगा।
उसे भागते देखकर उस विकराल स्त्री ने बड़ा विकृत अट्टहास किया। भागते भागते शैल ने उसे सुना। वह अधिक तीव्र गति से भागने लगा। बाकी तीनों ने भी उस अट्टहास को सुना। वे कुछ समझ पाते उससे पूर्व ही भागकर आते हुए शैल को देखा। उसके पीछे पीछे आ रही विकराल स्त्री को भी देखा। भय से युक्त होकर सरिता और येला किसी विशाल वृक्ष के पीछे छिप गए। शैल भी दौड़कर उसके साथ छिप गया। वत्सर उस स्त्री को देखता रहा।
निश्चल, अडग और निर्भीक खड़े वत्सर को देखकर उस स्त्री ने अपनी लंबी जीभ मुख से बाहर निकाली, हाथ में पकड़े खड़ग को उठाया और वत्सर पर प्रहार करने के लिए आगे बढ़ गई। वत्सर जरा भी विचलित हुए बिना ही खड़ा रहा। मन में वह ‘ओम नमो नारायणाय ’ का जाप कर रहा था। होंठों पर स्मित के साथ उसने दोनों हाथ जोड़ रखे थे। स्त्री अत्यंत निकट आ गई किन्तु वत्सर अभी भी निश्चल था। स्त्री ने खड़ग से वत्सर पर प्रहार करना चाहा तभी वत्सर ने उससे कहा, “हे देवी! क्यों ऐसा रूप धारण कर रखा है? आप तो दया और करुणा की देवी हो। तो ऐसा कुरूप क्यों? अपने मूल रूप में प्रकट होने की कृपा करें देवी।”

वत्सर की बात सुनकर उसका क्रोध अधीक बढ़ गया। उसने पुन: प्रहार करना चाहा। वत्सर ने पुन: उसे अपने मूल रूप में प्रकट होने की प्रार्थना की। वत्सर की प्रार्थना सुनकर उसने प्रहार करने का विचार त्याग दिया। किन्तु गर्जना करते हुए कहा, "ओ मानव, तू जहां जा रहा है वहाँ तक तू जा न सकेगा। मार्ग में ही तेरी मृत्यु हो जाएगी। मैं तो कदाचित तुम्हें छोड़ दूँ किन्तु तुम्हारी मृत्यु निश्चित है। जीवन चाहता हो तो अपने साथियों के साथ यहीं से लौट जा, लौट जा।"

वत्सर ने कहा, "माता। तुम्हारे हाथ तो सदैव पुत्रों के कल्याण की आशीष देने के लिए ही तत्पर रहते हैं। आज ऐसा रूप धारण करके भी तुम अपने हृदय स्थित प्रेम के प्रवाह को कैसे रोक सकोगी? आप से प्रार्थना है कि आप अपने मूल रूप को, अपने सौम्य रूप को धारण कर हमें आशीर्वाद दें। ओम नमो नारायणाय ।"

वत्सर ने शीश झुका दिया। आँखें बंद कर ली। कुछ क्षण पश्चात वत्सर ने अपने शीश पर किसी मृदु स्पर्श का अनुभव किया। उसने आँखें खोली। दृष्टि उठाकर देखा। एक सौम्य देवी उसके समक्ष थी। उसका विकराल रूप कहीं नहीं था।

किसी ऋषि सा दिव्य रूप था उसका। उसका हाथ वत्सर के शीश पर आशीर्वाद दे रहा था। प्रेममय स्मित था। आँखों में करूणा थी। उसने अत्यंत मृदु और मधुर स्वर में कहा, "तुम्हारा कल्याण हो, वत्सर।"

उस स्त्री का सारा प्रपंच और वत्सर की निर्भीकता देखकर बाकी तीनों स्वत: देवी के समक्ष प्रस्तुत हो गए। हाथ जोडा, नमन किया।

"आप सभी का कल्याण हो।" देवी ने सब को आशीर्वाद दिया। उसने जल से भरा पात्र, जो शैल झरने के पास छोड़ कर भागा था, धरते हुए कहा, "लो वत्स! इसे पीकर अपनी तृषा को शांत करो।" वत्सर ने जल का पात्र लिया, सभी ने जल पिया। सभी की तृषा शांत हो गई। इसी समय में वह देवी अन्तर्धान हो गई।

"कहाँ गई? अभी तो यहीं थी।"

"यह कैसा चमत्कार?"

"कौन थी वह देवी?"

सभी प्रश्न करने लगे तभी आकाश में शब्द गूंजने लगे।

शुद्धोसि बुद्धोसि निरंजनोसि ।
संसार माया परिवर्जितोसि ।।

ये शब्द अनेकों बार प्रतिघोष होकर चारों को सुनाई देने लगे। सरिता, शैल और येला इन शब्दों को सुनकर विस्मित हो गए, चारों ओर देखने लगे। वत्सर प्रसन्न मन से उन शब्दों के भावों को हृदय में उतार रहा था। जब घोष और प्रतिघोष शांत हो गए तब येला ने पूछा, “वत्सर, यह सारा प्रपंच क्या है? तुम सब जानते हो। हमें भी बताओ।”

सरिता और शैल ने भी येला के सुर में सुर मिलाते हुए वत्सर से आग्रह किया।

“आओ, बताता हूँ।”

“तुम्हें उसका विकराल रूप देखकर भय नहीं हुआ?”

“नहीं, शैल।”

“क्यों?”

“सीधी सी बात है। यह भूमि में महादेव निवास करते हैं। अनेकों ऋषियों के तप से यह स्थान अत्यंत पवित्र हो गया है। अत: यहाँ राक्षस, गंधर्व, यक्ष, पिशाच आदि निवास नहीं कर सकते। इसका अर्थ है कि यहाँ जो भी है, वह पवित्र जीव ही है।”

“हमने जो देखा उसका विकराल स्वरूप वह क्या था?”

“वह उसकी माया थी।”

“ऐसा मायावी रूप क्या था? क्यों था?”

“वह हमारी परीक्षा थी।”

“कैसी परीक्षा?”

“इस स्थान की पवित्रता पर हमारी श्रद्धा की परीक्षा थी।”

“तो यह बात थी!”

“मूल रूप में वह देवी कौन थी?”

“वह परम विदुषी मदालसा थी।”

“तुमने कैसे जाना कि वह मदालसा ही थी?”

“देवी के अन्तर्धान हो जाने पर हमें जो शब्द सुनाई दिए थे, स्मरण है? क्या थे वे शब्द?”

“शुद्धोसि...ऐसा कुछ था।”

“शुद्धोसि बुद्धोसि निरंजनोसि ।
संसार माया परिवर्जितोसि ।।
ये शब्द थे।”

“तो?”

“मार्कन्डेय पुराण में विदुषी मदालसा, ऋषि मदालसा का वृतांत है। वे अपने पुत्रों को सदैव यह मंत्र सुनाया करती थी।”

“क्या तात्पर्य है इन शब्दों का?”

“यही कि तुम शुद्ध हो, पवित्र हो, निष्पाप हो। इसे मदालसा उपदेश कहते हैं। वह कुछ लंबा है किन्तु हमें जो सुनाई दिया वह उसकी प्रथम पंक्ति मात्र है।”

“यह पंक्ति सुनाकर क्या संदेश, क्या संकेत दिया है मदालसा ने?”

“प्रथम तो इन शब्दों के माध्यम से उन्हों ने अपना परिचय स्वयं दिया है। दूसरा, उनका कहना था कि हम चारों के आत्मा, मन और ह्रदय शुद्ध, पवित्र और निष्पाप हो गए हैं। अत: हमारा कल्याण अवश्य होगा। हमारा लक्ष्य हमें अवश्य प्राप्त होगा। यही उनका आशीर्वाद भी था।”

वत्सर को सुनकर सब के मुख से अनायास ही निकल पड़ा, “ओम नमो नारायणाय”

[85]

“कुछ समय के लिए रुक जाते हैं।”
“येला, क्या तुम विश्राम करना चाहती हो?”
“सरिताजी, इच्छा तो चलते रहने की है किन्तु …।”
“किन्तु क्या?”
“वत्सर, मेरे श्वास की गति कुछ बदल रही है।”
“ऊंचाई पर ऐसा होना स्वाभाविक है।”
“शैल, यह स्वाभाविक नहीं है। मेरे श्वास अनियमित हो रहे हैं, अनियंत्रित हो रहे हैं।”
“इतनी ऊंचाई पर ऐसा होता है। तुम धैर्य रखो। गहरे गहरे सांस लेते रहो। सब कुछ ठीक हो जाएगा।”
“ऐसा नहीं है वत्सर। मैं वर्षों से पहाड़ों में रहती हूँ। पहाड़ों की समस्याओं को जानती हूँ। यह…कुछ..। और …।” येला के साँसों की गति सहसा तीव्र हो गई। उसका बोलना बंद हो गया। वह हांफने लगी।
“मैं सरोवर से पानी लाती हूँ। तब तक आप दोनों येला को संभालो।” सरिता पानी लाने के लिए सरोवर की तरफ भागी।
पानी भरने के लिए पात्र को सरोवर जल में डुबोया तब सहसा उसे पानी में अपना प्रतिबिंब दिखाई दिया। वह चौंक गई। उसके मुख पर गहरी दाढ़ी और मुछ दिखाई दी।
“नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। यह कोई भ्रम हो रहा है मुझे।” स्वयं से बातें कर आश्वस्त होने का प्रयास किया और अपने मुख पर हाथ लगाया।
“यहाँ वास्तव में दाढ़ी और मुछ है।”
सरिता ने पुन: पानी में अपने प्रतिबिंब को देखा। इस बार माथे पर विशाल जटा बंधी हुई दिखाई दी। उसने माथे पर हाथ लगाया।

“यहाँ तो जटा भी है, और ये लटें भी?” उसके हाथों ने अनेक अलकों का स्पर्श अनुभव किया। पानी का पात्र लिए वह येला की तरफ भागी। समीप आकर उसने देखा कि येला प्राय: अचेत हो गई है। शैल और वत्सर येला को चेत करने का प्रयास कर रहे हैं। किन्तु येला निश्चल सी पड़ी है।

सहसा सरिता गिर पड़ी, पानी का पात्र भी गिर गया। एक उच्च ध्वनि शैल और वत्सर को सुनाई दी। दोनों ने ध्वनि की दिशा में देखा। सरिता धरती पर थी। धरती पर पात्र से पानी बह गया था। सरिता ने उठने का प्रयास किया, उठ न सकी। शैल ने उसे हाथ दिया तथापि सरिता उठ न सकी। शैल ने पूर्ण शक्ति से पुन: प्रयास किया किन्तु परिणाम शून्य। एक और प्रयास हेतु शैल ने साँसे रोक ली और सरिता को उठाने के लिए सारी शक्ति लगा दी। शैल की आँखों में अंधकार छा गया। उसने आँखें बंद कर ली। वत्सर येला को छोड़कर वहाँ आ गया। शैल आँखें बंद कर बैठ गया था। प्रतिमा सा स्थिर था। वत्सर ने उसका हाथ पकडा ही था कि त्वरा से उसे छोड़ दिया। शैल का हाथ हिम सा शीतल हो गया था। उस हाथ में कोई चेतन न था। वत्सर ने ह्रदय की गति को जांचा। गतिहीन पाया।

वह सरिता के पास गया। सरिता की दाढ़ी - मुछ - जटा देखकर वत्सर अचंभित हो गया।

“सरिताजी, यह कैसे हो गया?”

वत्सर के प्रश्न के उत्तर में सरिता ने दूर दूर संकेत किया। वत्सर ने वहाँ देखा। उसे कुछ विशेष नहीं दिखा।

“क्या है वहाँ?”

“वहाँ एक तीव्र प्रकाशपुंज है।”

वत्सर ने पुन: देखा। “मुझे कुछ नहीं दिख रहा।”

“है। वह वहीं है। धीरे धीरे उसका तेज बढ़ रहा है। वह हमारी तरफ ही आ रहा है।” सरिता की आँखों में और वाणी में भय था, कंपन था। वत्सर सरिता के समीप गया। सरिता का उठा हुआ हाथ सहसा गिर गया, जैसे निश्चेत वस्तु धरती पर गिर जाती है। वत्सर कुछ समझे उससे पूर्व एक तेज पुंज सरिता के शरीर को स्पर्श करता हुआ निकल गया, विलीन हो गया। सरिता सम्पूर्ण निश्चेत हो गई।

वत्सर ने शैल, येला और सरिता को बार बार देखा। तीनों निश्चेत से पड़े थे। किसी में भी तनिक भी चेतन नहीं था। उसने अपनी आँखें बंद की और खोल दी। उसे वही दृश्य दिखाई दिया, तीनों निश्चेत पड़े थे।

वत्सर समझ गया कि उसके समक्ष जो देह पड़े हैं, सभी अचेतन हैं। यही वास्तविकता है। तथापि उसने पुन: एकबार तीनों के ह्रदय की गति और रक्तचाप को परखा। वत्सर ने उन्हें स्थिर ही पाया। अब उसे विश्वास हो गया कि तीनों निष्प्राण हो गए हैं। उसने मन के भीतर प्रकट हुए दु:ख को नियंत्रित करने का प्रयास किया। अपने धैर्य को बनाये रखने का यत्न किया। इस स्थिति का उपाय विचारने लगा। मन ही मन नारायण श्री का स्मरण करते हुए पूर्ण स्वर से जप करने लगा, “ओम नमो नारायणाय।”

सहसा आकाश में कुछ ध्वनि सुनाई दी। ध्वनि तीव्र होने लगी। वायु बहने लगी। वायु की गति तीव्र होने लगी। अत्यंत तीव्र होकर चक्रवात में परिवर्तित हो गई। चक्रवात ने चारों को घेर लिया। चारों को अपने में समेटकर वायु आकाश में उड गई। इससे वत्सर भी अपना चैतन्य खो बैठा। वह भी निष्प्राण हो गया। सभी को लेकर वायु कहीं दूर दूर चली गई।

[86]

निष्प्राण चारों में पुन: प्राण का संचार होने लगा। कुछ ही क्षणों में चारों में चेतना आ गई। कुछ बल भी आ गया। चारों ने अपनी आँखें खोली और स्थिति को समझने का प्रयास किया। स्वयं को सुरक्षित जानकार चारों ने अपने शरीर को उठाया।

“हम जीवित हैं। हम जीवित हैं।”

“किन्तु हम हैं कहाँ?”

“मैं नहीं जानता।”

“हम जिस स्थान पर निश्चेत हो गए थे उस स्थान पर तो नहीं हैं हम। यह कोई अन्य स्थान प्रतीत होता है।”

“हम तो अचेत थे, निष्प्राण थे तो यहाँ तक कैसे आ गए?”

“अरे, हम पुन: प्राणमय कैसे हो गए?”

“आप सब सुरक्षित हो। निश्चिंत रहें। आपके सभी संशयों के उत्तर मिलेंगे।” सभी ने यह स्वर सुने। स्वर की दिशा में सबने देखा। समक्ष कोई नहीं था। केवल एक ज्योति उस दिशा में दिखाई दी।

“कौन है वहाँ? कोई है भी क्या? जो भी हो कृपया प्रकट हो।” वत्सर ने कहा।

“आप सब मेरे साथ चलिए।” पुन: स्वर सुनाई दिया, व्यक्ति नहीं। ज्योति चलने लगी। चारों ने एक दूसरे को देखा। सभी के मन में आशंका थी, कौतुक और जिज्ञासा भी। इन भावों को लेकर सभी ज्योत के पीछे पीछे चलने लगे। एक स्थान पर, एक द्वार के समीप आकार ज्योति रुक गई।
“यहाँ से आगे आप नहीं जा सकते।” इतना कहकर ज्योति द्वार के पीछे विलीन हो गई। तत्क्षण एक नूतन ज्योति प्रकट हुई, “आप आपके लक्ष्य, आत्मा लोक के द्वार पर हैं।”
सुनते ही सभी भाव विभोर हो गए। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वे सभी आत्मा लोक तक पहुँच गए हैं। वत्सर ने आँखें बंद कर घोष किया, “ओम नमो नारायणाय।” सभी ने भी वही घोष किया।
“ओम नमो नारायणाय।”
“प्रभु, हमें आत्मालोक में प्रवेश करने की अनुमति प्रदान करें। हम पर अनुग्रह करें प्रभु।” वत्सर ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की।
“आप लोग आत्मा लोक में प्रवेश कर सकते हो किन्तु ...।” ज्योत अपनी बात पूर्ण करे उससे पूर्व ही चारों द्वार की तरफ बढ़ने लगे।
“रुको, प्रथम पूरी बात सुनो। अधीरता का इस लोक में कोई काम नहीं है।” ज्योत ने चारों को रोका। “क्षमा करें प्रभु।” सभी ने एक साथ कहा।
“प्रवेश से पूर्व कुछ बातों को ध्यान से सुन लो, समझ लो।”
“जैसी आज्ञा, प्रभु।”
ज्योत ने आत्मा लोक में प्रवेश के नियम बताते हुए कहा,
“तुम्हारे लिए दो विकल्प हैं। एक, यहाँ से ही लौट जाओ। इससे जीवन बच जाएगा। किन्तु यहाँ तक का मार्ग, यह लक्ष्य आदि का स्मरण नहीं रहेगा।
दूसरा - आत्मालोक के भीतर आ सकते हो। जिस बात को जानना चाहते हो वह सारी व्यवस्था के विषय में जान सकते हो। किन्तु उसके पश्चात यहाँ से वापिस पृथ्वी पर नहीं जा सकते हो। भीतर आने पर यदि नारायण की कृपा रही तो सारी व्यवस्था देखकर भी मृत्युलोक को लौट सकते हो किन्तु वहाँ लौटने पर -
या तो तुम्हें मार्ग का स्मरण रहेगा।

या लक्ष्य का स्मरण रहेगा।
या यहाँ जो भी देखोगे वह समरण रहेगा।
इनमें से किसी एक का ही स्मरण रहेगा। और यदि कोई चाहे तो मार्ग, लक्ष्य तथा सारी व्यवस्था का स्मरण साथ ले जा सकता है किन्तु सब कुछ जानते हुए भी वह किसी को कुछ भी नहीं बता सकेगा।
जिसे केवल यह बात स्मरण रहेगी वह अपनी बात संसार को बताने का प्रयास करेगा किन्तु कोई उस पर विश्वास नहीं करेगा। हो सकता है कि युगों के पश्चात कोई महान आत्मा जन्म ले और आपकी बात को समझते हुए यहाँ तक आ जाए, सारे रहस्यों को जान ले। किन्तु इस कलियुग में तो यह संभव नहीं होगा। प्रलय के पश्चात किसी में यह सामर्थ्य आ जाए तो यह संभव है। तुम क्या करना चाहोगे? लौटना अथवा भीतर चलना?”
सभीने ज्योत की सारी बातें ध्यान से सुनी। एक दूसरे को प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। सभी ने एक समान उत्तर दिया। सभी ने ज्योत के नियमों का स्वीकार किया। ज्योत ने उन्हें आत्मालोक के भीतर प्रवेश की अनुमति दी। सभी ने प्रवेश किया।
“आपके यहाँ तक आने का प्रयोजन विदित है। आपके संशय, आपकी जिज्ञासा का उत्तर है कि वेदों में तथा अन्य शास्त्रों में वर्णित पुरुष ही आत्मा है, जीवात्मा है। वही आपके शरीर का सॉफ्टवेर है, ब्लेक बॉक्स है। इसमें आत्मा के चोरासी लाख जन्मों का इतिहास संग्रहीत होता है। और जब मोक्ष मिलता है तभी वह इतिहास नष्ट होता है। यदि पुन: लखचोरासी जन्म के फेरे में आत्मा पड गया तो वह भी उसमें संग्रहित होता जाएगा। इसकी क्षमता अनंत है। यह अणु से भी अणु है। न कोई इसे देख सकता है, न कोई स्पर्श कर सकता है। यह कभी नष्ट नहीं होती। यह केवल नए आलंबन को ढूंढ लेती है। ऐसे अनंत आत्माओं का इतिहास इस आत्मालोक में संग्रहीत रहता है। यह संग्रह स्थान स्थूल नहीं होता, वह भी आत्मा की भांति चेतना ही है।”
ज्योत ने आत्मा के विषय में चारों की जो जिज्ञासा थी उसे संतुष्ट कर दिया।
“जी। आत्मा के विषय में आपने हमारे सारे संशय निर्मूल कर दिए। किन्तु हम यहाँ एक विशेष उद्‌देश्य को लेकर आए हैं।”
“सर्व विदित है। यहाँ किसी के मन की कोई भी बात गुप्त नहीं रहती। आप सभी को दिव्य दृष्टि मिलेगी। आप चारों व्यक्तिगत रूप से किसी एक एक आत्मा के इतिहास को देखना चाहो

तो देख सकते हो। उस इतिहास को देखने के पश्चात तत्क्षण ही उसके इतिहास का तुम्हारी स्मृति से लोप हो जाएगा। कौन किसका इतिहास देखना चाहेगा?”

शैल, सरिता और येला ने वत्सर की तरफ देखा। “वत्सर, प्रथम तुम कहो, तुम किसका इतिहास देखना चाहोगे?”

“मैं? हम तो मीरा का इतिहास, मीरा का रहस्य जानने आए हैं न?” वत्सर ने कहा।

“वत्सर, मीरा का इतिहास मैं देखना चाहूँगा। तुम किसी अन्य …।”

“शैल, मीरा का रहस्य सभी को जानना है।” सरिता ने कहा।

“शैल मीरा का रहस्य देखेगा। आप सभी उसके साथ उसका इतिहास देख सकोगे। वास्तव में जब एक व्यक्ति किसी एक आत्मा का इतिहास देखेगा तो बाकी भी उसे देख सकेंगे। किन्तु अन्य तीन व्यक्ति उसे केवल देख सकेंगे। उस समय उन तीनों व्यक्ति न तो बोल सकेंगे न ही कोई प्रतिक्रिया दे सकेंगे। इस प्रकार आप चारों एक साथ उसे देखोगे। तो कहो, अब कौन किसे देखना चाहता है?”

“शैल मीरा को देखेगा। मैं हिटलर का इतिहास देखना चाहूँगी। सरिताजी आप? और वत्सर तुमने क्या निश्चय किया?”

शैल ने येला का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। सरिता विचार कर बोली, “मैं महात्मा गांधी जी का इतिहास देखना चाहूँगी।”

“आप तीनों की इच्छा पूर्ण होगी। वत्सर, तुमने अपना निर्णय नहीं बताया।”

“मैं यदुवंश शिरोमणि श्री कृष्ण का …।”

“वत्सर, यह संभव नहीं है।”

“अभी तो आपने कहा था कि …।”

“यह कहा गया था कि किसी एक व्यक्ति का इतिहास देख सकोगे। कृष्ण का नहीं।”

“कृष्ण भी तो एक व्यक्ति ही थे।”

“यदि कृष्ण एक व्यक्ति होता तो तुम उसे क्यों पूजते? वत्सर, कृष्ण कोई व्यक्ति नहीं है। वह आत्मा नहीं, परमात्मा है। परमात्मा का इतिहास कहीं संग्रहीत नहीं होता। कृष्ण, आत्मा के लाख चोरसी जन्मों के चक्रों से मुक्त है। कोई उसे बांध नहीं सकता, स्वयं ब्रह्मा भी नहीं। तुम किसी अन्य व्यक्ति को पसंद कर सकते हो।”

“कृष्ण के अतिरिक्त मुझे अन्य किसी के भी इतिहास को जानने की रुचि नहीं है।”
“जैसी तुम्हारी इच्छा। येला, सरिता और शैल। कहो किसके साथ प्रारंभ करें?”
“मैं सबसे प्रथम उत्सुक हूँ।” येला ने कहा।
“तथास्तु।” ज्योत अदृश्य हो गई। उसके स्थान पर एक विशाल श्वेत जवनिका प्रकट हो गई। उस पर धीरे धीरे दृश्य प्रकट होने लगे। हिटलर के जीवन की घटनाएं एक एक कर दिखने लगी। कुछ ही क्षणों में समग्र घटनाएं दिखाई दी। हिटलर की मृत्यु हो गई। दृश्य सभी रुक गए। सभी उसे देखकर अवाक हो गए। किन्तु येला बोल पड़ी, “ओह। इतने अद्भुत व्यक्ति को विश्व ने नीच के रूप में प्रस्तुत कर दिया? जो दुनिया ने दिखाया था उससे कहीं उत्तम था हिटलर। मैं इस विश्व को क्षमा नहीं कर सकती!”
“येला, शांत हो जाओ। तुम आत्मा लोक में हो।” ज्योत ने कहा। येला शांत हो गई।
“अब सरिता की बारी। गांधी का इतिहास तुम्हारे लिए प्रस्तुत हो रहा है।”
पुन: ज्योत के स्थान पर जवनिका प्रकट हो गई। उस पर मोहनदास करमचंद के जीवन वृतांत के दृश्य चलने लगे। एक एक दृश्य देखकर सरिता विचलित होने लगी। मन के भीतर आक्रोश उभरने लगा। गांधी के मन को, उसके षड्यंत्रों को देखकर वह पुकार उठी, “बंद करो इसे। मैं इसे और नहीं देख सकती।”
“क्यों? क्या हो गया, सरिता? सत्य को देख नहीं सकी? सत्य को देखने के लिए साहस चाहिए।” ज्योत ने कहा।
“नहीं, मुझ में इतना साहस नहीं है। मैं गांधी के कर्मों का दंड जी चुकी हूँ। अब और नहीं देखना।”
“नहीं। एक बार जब किसी आत्मा का जीवन चलता है तो उसे मध्य में रोक नहीं सकते। तुम चाहो या न चाहो, तुम्हें इसे पूरा देखना ही पड़ेगा।”
ज्योत अदृश्य हो गई। द्रश्य पुन: चलने लगे। सरिता को, शैल को और येला को उन दृश्यों ने प्रताड़ित कर दिया। वत्सर अविचलित था। गांधी की मृत्यु के साथ दृश्य सम्पन्न हो गए।
“हे राम। यह कैसा महात्मा? इसके लिए निम्न से निम्न उपमा भी उस उपमा का अपमान होगा।”

“सरिता, स्मरण रहे कि यह आत्मा लोक है। आपका मृत्यु लोक नहीं। यहाँ किसी की भी आलोचना नहीं हो सकती।” सरिता मौन हो गई।

[87]

“शैल, अब मीरा के जीवन का रहस्य प्रकट होने वाला है। क्या तुम सज्ज हो?”
शैल ने अपनी सज्जता प्रकट की। ज्योत आकाश के एक बिन्दु पर स्थिर हो गई। धीरे धीरे सब कुछ लुप्त होने लगा। उस बिन्दु पर ज्योत के स्थान पर दृश्य जन्म लेने लगे।
एक स्थान पर शिल्प की विशाल प्रदर्शनी लगी हुई है। शिल्प रसिकों का विशाल जनप्रवाह शिल्पों को देख रहा है। देखकर अपनी प्रतिक्रिया दे रहा है। कहीं कोई निंदा कर रहा है तो कोई प्रशंसा। कोई क्षति ढूंढ रहा था तो कोई गुणों को देखकर अभिभूत हो रहा था।

अनेकों रसिकजन एवं अन्य शिल्पकार एक शिल्प को घेरे हुए थे। शैल को वह शिल्प स्पष्ट दिख नहीं रहा था। तत्क्षण दृश्य में से शिल्प को घेरे हुए व्यक्ति हट गए और शैल को वह शिल्प दिखाई दिया। शैल चौंक गया। वह वही शिल्प था जो वत्सर ने बनाया था।

नदी के मध्य एक मृतदेह स्थिर था। नदी का नाम लिखा था - सतलुज । मृतदेह का अग्रभाग पाकिस्तान सीमा में था, पृष्ठ भाग भारत की सीमा में था। शैल के भीतर पुलिस जाग गया। 'क्या वत्सर ही हत्यारा है?' तभी आकाशवाणी हुई, "जब तक पूरा दृश्य सम्पन्न न हो, तब तक कोई भी बात का निर्णय तुम्हें नहीं करना है।" शैल ने आकाशवाणी सुनते ही मन का संशय काटकर दृश्यों पर ध्यान केंद्रित किया।

शिल्प के समीप वत्सर खड़ा था। शिल्प के विषय में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर दे रहा था वत्सर। एक अंतराल के पश्चात सभी के प्रश्न समाप्त हो गए, सभी चले गए। वत्सर और उसका शिल्प वहीं शेष थे। तभी एक युवती ने दृश्य में प्रवेश किया। वह विदेशी प्रतीत हो रही थी। वत्सर ने उसका स्वागत किया। युवती शिल्प को ध्यान से देखती रही। कुछ क्षणों तक वह कुछ न बोली। वत्सर ने उसे देखा, उसकी मन: स्थिति को समझने का प्रयास किया। उसे कुछ समझ नहीं आया तो युवती से पुछ लिया।

"क्या बात है? आप कुछ बोल नहीं रही, न ही कुछ पुछ रही हो। बस शिल्प को देखे जा रही हो?"

शिल्प पर ही अपना ध्यान रखते हुए युवती ने पूछा, "यह शिल्प में जो स्थिति है वह स्थित क्या वास्तविक रूप में संभव है?"

"मैं आपका प्रश्न नहीं समझ सका।"

"क्या यह संभव है कि किसी का मृतदेह बहते पानी में इस प्रकार दो देशों की सीमा पर स्थिर रहकर पड़ा रहे?"

"ऐसा संभव है कि नहीं, मैं नहीं जानता।" वत्सर का उत्तर सुनकर निराश हो गई वह, वहाँ से चली गई। अपने साथ वह कुछ प्रश्न, कुछ संशय को भी लेकर गई। शिल्प प्रदर्शनी छोड़कर पहाड़ों को देखने लगी। सिक्किम के उत्तुंग पहाड़, शांत पहाड़, हिम से ढंके पहाड़। ऐसे में भी युवती का मन था अशांत, व्यग्र, उष्ण!

उस युवती इंटरनेट पर कुछ खोजना प्रारंभ किया। सहसा उसे ज्ञात हुआ कि भारत की योग विद्या बड़ी चमत्कारी है। इससे योगियों और मुनियों क्षण भर में कहीं भी आ जा सकते हैं। देह से निकलकर, अंतरिक्ष में विचरण कर क्षण भर में पुन: देह में प्रवेश कर लेते हैं।
यह सब देखकर उसने मन में निश्चय किया, 'मैं योग विद्या सीखूँगी।'
वह निकल पड़ी हिमालय की चोटियों में योग के सिद्ध गुरु की खोज में। अनेक दिनों तक भटकने के पश्चात एक दिन दोपहर की धूप से त्रस्त होकर वह किसी शीला पर रुकी थी। दूर दूर दिख रहे, व्याप्त हुए हिम आच्छादित पहाड़ों को देख रही थी तभी सहसा तीव्र ठंडे पवन की एक लहर युवती के तन को स्पर्श करती हुई बह गई। उस स्पर्श ने उसकी विचार तंद्रा को भग्न कर दिया। वह शीला पर बैठ गई। स्वयं को संभाल रही थी तभी किसी ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया। युवती ने उसे देखा। समक्ष उसके एक यौवना खड़ी थी।
"जी? आप?" कहती हुई वह खड़ी हो गई।
यौवना ने कहा, "बैठो। शांत हो जाओ। मैं तुम्हार मन की बात, मन की व्यथा, मन के प्रश्न, मन के सारे संशय को पढ़ चुकी हूँ।"
"क्या? कैसे?"
"बस, पढ़ चुकी हूँ।"
"किन्तु मैं ने तो कुछ नहीं कहा?"
"तुम इतनी सारी बातें तो कर चुकी हो।"
"कब? कैसे? किसको? कहाँ?"
"तुम अपने आप बातें कर रही थी। अभी अभी तो तुमने यह किया है।"
"तो?"
"जब हम प्रकट या अप्रकट रूप से बोलते हैं तब शब्दों के तरंग वातावरण में प्रवाहित हो जाते हैं। तुम्हारे मन में बोले गए शब्द भी तरंग बनकर वातावरण में प्रवाहित हुए हैं। मैंने तुम्हारे उन तरंगों को सुना, देखा और पढ़ लिया।"
"यह कैसे हो सकता है? क्या ऐसा हो सकता है?"
"हाँ। तुम जो शिल्प देखकर आई हो वैसा भी हो सकता है। कुछ भी असंभव नहीं है।"
"क्या? शिल्प में जो देखा है वह भी हो सकता है?"

“अवश्य।”
“मैं वैसा करना चाहती हूँ।“”
“धैर्य रखो। तुम वह भी कर सकोगी।”
“कितना धैर्य?”
“लंबे समय तक।”
“कितना लंबा?”
“यह तुम्हारी क्षमता पर निर्भर है।”
“तथापि कितना समय लग सकता है?”
“पाँच वर्ष से अनंत काल तक का समय लग सकता है।”
“किन्तु अब मेरे पास केवल पाँच दिन ही है। मुझे लौटना होगा।”
“लौट जाओ। मन की इच्छा को भूल जाओ।” यौवना चलने लगी। युवती उसे जाते हुए देखती रही। सोचती रही।
यौवना पहाड़ी चड़कर ऊपर जा रही थी। प्राय: तीन सौ फिट ऊपर चड चुकी थी। तभी युवती ने कहा, “रुको।“ वह यौवना की तरफ दौड़ गई।

[88]

यौवना रुक गई। उसने युवती की तरफ हाथ बढाया। क्षण में युवती यौवना के समीप जा पहुंची। उसके मुख पर अचरज था। ‘बिना प्रयास के मैं क्षण में ही यहाँ कैसे पपहुंच गई!’
“यह अचरज की नहीं, योग की बात है।” यौवना ने युवती के अचरज को शांत कर दिया।

“योग से ही मैं तुम्हारे मन की बात पढ़ सकी, योग से ही मैं तुम्हें क्षण में यहाँ तक ले आई। योग से ही तुम्हारे मन की इच्छा भी पूर्ण होगी।”
“मैं इस योग को सीखने को तत्पर हूँ।”
“किन्तु तुम तो पाँच दिनों के पश्चात लौट रही हो?”
“मैं, मैं नहीं लौटूँगी।”
“किन्तु?”
“मैं जानती हूँ कि किसी भी देश में अनुमोदित दिनों के पश्चात रुकना अपराध है। मैं कोई अपराध नहीं करूंगी। मैं मेरे वीजा की अवधि बढ़ा दूँगी।”
“तो आओ मेरे साथ।”
कुछ समय तक पहाड़ों पर चड़ते चड़ते और चलते चलते एक कुटीर के पास दोनों रुके।
“योग से हम यहाँ तक क्षण में पहुँच सकते थे तो हमें इतना चलने की और चड़ने की, इतना कष्ट सहने की क्या आवश्यकता थी?” युवती ने हाँफते हुए पूछा।
यौवना ने स्मित दिया, “योग किसी विशेष अवस्था में ही प्रयोग करने के लिए होता है। सामान्य कार्यों के लिए इसका उपयोग निषेध है।” युवती ने कोई प्रश्न नहीं किया।
“इस कुटीर में मेरी गुरुजी रहती हैं। साध्वी निरंजना। मेरा नाम साध्वी अंजना है। मेरी गुरु तुम्हें सारा योग सिखाएगी। क्या तुम तत्पर हो?”
युवती ने सहमति प्रकट की। दोनों कुटीर के भीतर प्रवेश कर गए।
“स्वागत है तुम्हारा, सेलेना विल्सन ।”
साध्वी निरंजना के स्वागत शब्द ने सेलेना को चौंका दिया।
“यह भी योग ही है, सेलेना। हमें तुम्हारा पूरा परिचय है। तुम हॉलीवुड की प्रसिद्ध अभिनेत्री हो।”
“हाँ, यह सत्य है।”
“तुम यहाँ रुकोगी, योग सीखोगी तो इसमें लंबा समय लग सकता है। तुम्हारी फिल्मों का क्या होगा? तुम्हारे निर्माताओं का क्या होगा?”
कुछ विचार कर सेलेना ने कहा, “मैं सब कुछ छोड़ दूँगी। सारी धन राशि लौटा दूँगी। अब योग ही मेरा लक्ष्य है, मेरा जीवन है।”

“क्या तुम्हारा यह निश्चय अडिग है?”
“हाँ, अडिग है।”
“यहाँ का जीवन तुम्हारे सुख भरे जीवन से पूर्णत: विपरीत है। कठिन है। कठोर है। क्या तुम इसके लिए सज्ज हो?”
“मैं सज्ज हूँ।”
“एक कार्य करो। सेलेना, करोगी क्या?”
“कहो। अवश्य करूंगी।”
“इस कुटिया से वहाँ देखो। वहाँ नीचे एक मंदिर है। शिव का मंदिर। वहाँ जाओ, प्रार्थना करो, पश्चात ऊपर आ जाओ।”
“जैसी आज्ञा।” सेलेना मंदिर के लिए चल पड़ी। प्रार्थना कर लौट आई। उसे थकान हुई। साँसे फूल गई। हाँफती हुई निरंजना के पास आकर बैठ गई।
“बैठना नहीं है। उठो।” सेलेना उठ गई।
“पुन: नीचे जाओ। दर्शन करो। शिवजी को जल चडाकर ऊपर आ जाओ।”
सेलेना को अचरज हुआ। ‘अभी तो जाकर लौटी हूँ। अब पुन:?’
निरंजना ने संकेतों से सेलेना के मन के प्रश्न का उत्तर दिया। सेलेना नीचे चली गई। दर्शन प्रार्थना और जल चडाकर ऊपर लौट आई। निरंजना ने सेलेना को तीसरी बार वही करने को कहा। कुछ भी प्रश्न किए सेलेना ने तीसरी बार भी वैसा ही किया। लौटकर निरंजना के समक्ष खड़ी हो गई। चौथी बार वही करने के लिए निरंजना के आदेश की प्रतीक्षा करने लगी।
निरंजना ने स्मित किया, “चौथी बार वहाँ नहीं जाना है। यहाँ बैठ सकती हो।”
सेलेना बैठ गई। निरंजना के व्यवहार पर विचार करने लगी।
“यह सारा उद्यम तुम्हारी परीक्षा के लिए था। तुम्हें शिष्या बनाए से पूर्व, तुम्हें योग सीखाने से पूर्व यह परीक्षा आवश्यक थी।”
“परीक्षा का फल क्या हुआ?”
“परीक्षा का हेतु था - सारी कठिनाइयों को सहने की तुम्हारी सज्जता को देखना। वैसे तो यह शारीरिक परीक्षा थी किन्तु मानसिक भी थी।”
“मानसिक?”

“हाँ। यदि तुम किसी को गुरु मानते हो तो गुरु के आदेश को मानने की परीक्षा, बिना प्रश्न किए, बिना संशय किए गुरु की आज्ञा का पालन करना ही शिष्य का चरित्र है। योग्यता है, धर्म है। तुम इसमें सफल हुई हो।”
“तो क्या मेरा शिष्या के रूप में स्वीकार है, गुरुजी?”
“अब अंतिम परीक्षा।”
“जी।”
“इस योग विध्या सीखने का उद्देश्य क्या है?”
कुछ विचार कर सेलेना बोली, “इस योग विद्या के माध्यम से मैं आत्मा की उन्नति कर मोक्ष प्राप्त करना चाहती हूँ।”
“क्या यही एक मात्र लक्ष्य है?”
“जी।”
“उत्तम, अति उत्तम।”
“अब मेरा स्वीकार है, गुरु जी?”
“स्वीकार है। कल से तुम्हारी योग साधना प्रारंभ होनेवाली है। जाकर विश्राम कर लो।”

[89]

दूसरे दिन प्रात: ब्रह्म मुहूर्त से ही सेलेना की योग साधना प्रारंभ होनेवाली थी इसी विचार में सेलेना को रात्री भर निंद्रा नहीं आई। कारण यह नहीं था कि पहाड़ पर सभी सुख सुविधा का अभाव था जिसकी वह अभ्यस्त थी किन्तु उस स्थान की अनुभूति ही कुछ विशेष थी और नए अध्याय की उत्तेजना भी।
रात्री भर पहाड़ पर से व्योम को निहारती रही। चंद्र की गति, कुछ छूट पूट छोटे छोटे बादलों की क्रीडा, पहाड़ पर बिछी हुई श्वेत चंद्रिका, कभी भी न अनुभव की गई गहन शांति, शीतल मधुर वायु का मंद मंद स्पर्श, दूर दूर तक एकांत, पहाड़ों के पीछे अंधकार से देखती हुई क्षितिज, चंद्रमा के साथ साथ यात्रा पर निकले तारे।
सेलेना ने यह सब प्रथम बार अनुभव किया, कुटिया की वातायन से बाहर देखते हुए। इससे मन के भीतर जो भाव उमड़ रहे थे उसे समझने का सेलेना ने प्रयास किया किन्तु विफल रही। उसे बस इतना समझ आ गया कि ये भाव उत्तम है, अनुपम है, पवित्र है, मंगल है, आनंद दाता है, ऊर्जावान है, प्रसन्नता से पूर्ण है, अद्‌भुत है। उसे उस सुख की अनुभूति होने लगी जो संसार के अबतक भोगे सारे सुख से कहीं उत्तम था, भिन्न था। संसार के सारे सुख उसे रसहीन लगे। उसने क्षणार्द्‌ध में ही उन सांसारिक सुखों का विचार मन से निरस्त कर दिया। समय के उस अद्‌भुत क्षण के अनुभव में सेलेना पुन: लिन हो गई।
सहसा पंखियों का ध्वनि उठा। सेलेना ने उसे सुना।
पंखियों की मधुर ध्वनि सुनकर सेलेना ने अंजना से पूछा, “मैंने तो सुना था कि हिमालय में दिन का प्रारंभ मंत्रों की ध्वनि से होता है?”
“पंखियों की ध्वनि भी वेद मंत्रों का ही रूप है। बस हमें उनकी भाषा समझनी होती है।”
“कौन समझता है इनकी भाषा?”
“यहाँ के सभी निवासी इन पंखियों की भाषा जानते हैं। समझते भी हैं।”
“यहाँ कौन कौन निवास करता है? हमारे तीनों के उपरांत मुझे तो कोई दिखता नहीं।”
अंजना हंस पड़ी। सेलेना को उसके हास्य में कुतूहल दिखा।
“मैं बताती हूँ। पंखियों के अतिरिक्त यहाँ पर पहाड़ रहता है। पहाड़ की चोटियाँ, बड़ी बड़ी शीला, झरनें, वृक्ष, उपत्यका, पुष्प आदि निवास करते हैं। उपरांत हमारे समान अनेक योगी - योगिनियाँ भी रहते हैं। यहाँ की परम्पपरा हीहै कि सर्व प्रथम पंखी अपना कलशोर सुनाते हैं।

अपने कंठ से मंत्रोच्चार कर लेते हैं पश्चात ही सभी योगी- ऋषि अपने मुख से मंत्रोच्चार करते हैं।"

"ऐसा? यह तो अचरज है।"

"तुम्हारे लिए यह अवश्य ही अचरज है।"

"कभी ऐसा हुआ है कि पंखियों ने मंत्रोच्चार न किया हो या पंखियों के मंत्रोच्चार से पूर्व ही किसी योगी ने मंत्रोच्चार प्रारंभ कर दिया हो?"

"आज तक इस परम्पपरा का निर्वाह हुआ है। आगे भी होता रहेगा।'

सेलेना ने वातायन से बाहर अपने कर्णों को रखा। पंखियों के कलरव को सुनने लगी। समयान्तर पर कलशोर शांत हो गया। पंखियों का मंत्रोच्चार सम्पन्न हो गया। दूर कहीं किसी पहाड़ी से अग्नि ज्योत प्रकट हुई जिसे सेलेना की आँखों ने देखा। उस ज्योत पर ध्यान कैंद्रित किया ही था कि उसके कानों पर ध्वनि पड़ने लगी।

'यह तो मंत्रों की ध्वनि हो सकती है।'

सेलेना ने स्वयं से प्रथम बार बात की। उसने अपनी ही बात प्रथम बार सुनी। उसे मन हुआ स्वयं से बातें करने का, करते रहने का। किन्तु दूर से आ रही मंत्रों की ध्वनि का आकर्षण इतना प्रबल था कि उसने अपने मन को बात करने से रोक दिया। वह मंत्रों को ध्यान से सुनने लगी। आज तक सुने सभी गीतों का रस इन मंत्रों के श्रवण की तुलना में उसे तुच्छ लगे।

"कितना अद्भुत गीत है यह!" वह बोल पड़ी।

"गीत नहीं, मंत्र हैं।" अंजना ने कहा।

"मंत्र ही है। किन्तु ..।"

"चलो।" अंजना ने कहा।

"कहाँ?"

"ब्रह्म मुहूर्त हो गया है। हमारा दिन प्रारंभ हो गया है। इसी समय से हमारी दिनचर्या प्रारंभ हो जाती है।"

"अभी से? अभी तो रात है।"

अंजना ने सेलेना को कोई उत्तर नहीं दिया। अंजना के साथ सेलेना प्रात: कार्यों में व्यस्त हो गई। बहते झरने के नीचे तारा स्नान कर जब दोनों लौटीं तो गुरुजी अपने कर्मों से निवृत्त हो चुके थे।

“सेलेना, आज से तुम्हारी योग साधना, योग शिक्षा आरंभ होती है। क्या तुम सज्ज हो?”
“जी गुरु जी, मैं सज्ज हूँ। एक जिज्ञासा है, गुरुजी।”
“कहो।”
“जो मंत्रों का गान मैंने सुना उस गान को मैं सीखना चाहती हूँ। गान करना चाहती हूँ। मुझे वह भी आप सीखा सकोगी?”
“योग शिक्षा में मंत्रों का अपना स्थान है, अपना महत्व भी है। बिना मंत्रों के तो यह शिक्षा सम्पन्न नहीं हो सकती। अत: निश्चिंत रहो।”
“जी गुरुजी, धन्यवाद। एक और बात पूछूँ?”
“अवश्य पूछो। और स्मरण रहे कि मन में कोई भी संशय हो, प्रश्न हो या उत्कंठा हो, उसका समाधान और उत्तर प्राप्त कर ही लेना। भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरु शिष्य प्रणाली है। इसमें शिष्यों के प्रश्नों का समाधान ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। अत: जिस क्षण मन में प्रश्न हो, तत्क्षण पूछ लेना।”
“जी। मेरा प्रश्न है कि क्या मुझे कोई नया नाम मिल सकता है जो संस्कृत हो, भारतीय हो?”
गुरु निरंजना ने क्षण भर विचार किया। “तुम्हारा नाम स्वयं निश्चित करो।”
“मैं?”
“हाँ, तुम।”
सेलेना विचार में पड गई। ‘मैं क्या नाम रखूं? कोई नाम मुझे तो सूझ ही नहीं रहा है। किन्तु कोई न कोई नाम तो लेना ही पड़ेगा।‘
“मुझे मीरा नाम पसंद है। कैसा रहेगा?”
“वाह। उत्तम है। किन्तु मीरा ही क्यों?”
“मैंने मीरा का चरित्र पढ़ा है। मैंने मीरा का चरित्र एक फिल्म में निभाया था। मुझे उसका अनन्य आकर्षण है। क्या मैं मीरा नाम रख सकती हूँ?”
“अवश्य। मीरा बनकर तुम्हें सेलेना को, सेलेना के सारे चरित्र को त्यागना होगा। नाम बदलने का काम केवल औपचारिक नहीं होता है। नाम के अनुरूप जीवन जीना पड़ता है। तुम ऐसा कर सकोगी?”

“जी। नाट्य शास्त्र को हम अभिनय सीखने से पूर्व सीखते हैं। भरत मुनि लिखते हैं कि रंग मंच पर प्रवेश करते हैं तब वहाँ स्वयं यमराज उपस्थित होते हैं। जो हमारे इस जीवन के प्राण हर लेते हैं और जो चरित्र हम निभाने जाते हैं उसका प्रत्यारोपण हमारे इस शरीर में कर देते हैं। और आपके आशीर्वाद भी मेरे साथ है। मैं मीरा होने का पूरा प्रयास करूंगी।”

“तुम्हारा कल्याण हो, मीरा।”

उसी क्षण से मीरा की योग साधना प्रारंभ हो गई।

[90]

“योग क्या है? जानती हो?” गुरु निरंजना ने पूछा।
“थोड़ा कुछ विविध माध्यमों से सुना है। कहीं कहीं देखा भी है लोगों को योगासन करते हुए।”
“अर्थात आधा अधूरा और मिथ्या ज्ञान है तुम्हें।”
“मिथ्या?”
“हाँ, तुम्हें योग के विषय में जो ज्ञान है, अधिकतर सांसारिक व्यक्तियों को भी यही ज्ञान है जो सर्वथा आधा अधूरा तो है ही, पूर्णत: मिथ्या भी है। अज्ञान ही है वह।”
“सत्य क्या है? पूर्ण क्या है? ज्ञान क्या है?”
“यह जानने से पूर्व स्वयं को रिक्त करना पड़ेगा। जो भी अज्ञान तुम्हारे भीतर है उसे त्यागना होगा। जब पूर्ण रूप से रिक्त हो जाओगे तभी ज्ञान को, सत्य को स्वीकार करने की योग्यता प्राप्त होगी।”
“मैं कैसे रिक्त हो सकती हूँ?”
गुरु जी ने कुछ समय मौन धारण कर लिया। कहीं दूर अंतरिक्ष में देखती रही। पश्चात बोली, “वहाँ एक अग्नि कुंड है। वहाँ जाओ। अपने साथ तुम जो कुछ लेकर आई हो उसे उस अग्निकुंड मे स्थित अग्नि को समर्पित कर दो। अपने वस्त्रों को भी। इसमें अंजना तुम्हारी सहायता नहीं करेगी। यह कार्य तुम्हें स्वयं करना होगा।”
“ठीक है गुरु जी। किन्तु मेरे यह वस्त्र?”
अंजना त्वरित एक वल्कल वस्त्र लेकर आई। मीरा ने उसे ग्रहण किया। अपना सारा सामान लेकर अग्निकुंड के समीप चली गई। एक एक कर सभी को अग्नि को समर्पित कर दिया। वस्त्र भी। अब उसने नूतन वस्त्र धारण कर लिया। जब सब कुछ भस्म हो गया, अग्नि की ज्वालाएं शांत हो गई तो मीरा ने जाना कि पूर्व से सूर्योदय से पूर्व का प्रकाश पहाड़ों के तमस को परास्त कर अवनी पर प्रवेश कर चुका था। वह लौट आई गुरुजी के पास। बैठ गई गुरु के चरणों में।

सूर्य ने अपना प्रथम दर्शन दिया। प्रथम किरण मीरा के मुख पर पड़ी। मीरा का मुख तेजोमय हो गया। मन और ह्रदय प्रसन्नता से भर गया।
“आओ प्रारंभ करते हैं।” गुरु जी ने कहा। मीरा ने गुरु के शब्दों पर ध्यान केंद्रित किया।
“यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि यो अष्ट अवांगानी।
अर्थात योग के ये आठ अंग हैं।” मीरा के मुख पर जिज्ञासा के भाव प्रकट हो गए।
“ये आठ अंग हैं, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।” मीरा के मुख पर अब प्रश्नार्थ भाव आ गए।
“मैं प्रत्येक अंग के विषय में बताऊँगी। तुम्हें एक एक कर सभी अंगों की साधना करनी होगी। जब तुम आठों अंगों को आत्मसात कर लोगी तभी यह साधना पूर्ण होगी।” मीरा ने अपने स्मित से अपनी सज्जता प्रकट की।
“प्रथम यम को समझते हैं। यम के पाँच अंग हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।” गुरु जी ने मीरा की ज्ञान तत्परता को देखा जो उसके मुख पर स्वत: आ चुकी थी। गुरु जी ने उसे सभी अंगों का परिचय करवाया। सेलेना ने उसे समझा और गुरु जी के मार्गदर्शन में वह उसे आत्मसात करने लगे। गहन अभ्यास से उसने ‘यम’ को आत्मसात कर लिया। पश्चात नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा भी आत्मसात कर लिया। अंत में समाधि का अभ्यास प्रारंभ हुआ। कड़ी तपस्या से उसने समाधि को भी आत्मसात कर लिया। अनेकों बार मीरा की आत्मा योग विद्या से अपने देह को त्यागकर अनंत में विचरण करके पुन: देह में लौट आती। जब भी उसकी आत्मा देह से बाहर जाती, निश्चेत देह गुरु जी के संरक्षण में सुरक्षित रहती।
“जब भी तुम देह त्याग कर अंतरिक्ष में कहीं भी विचरण करो तब एक बात का ध्यान रखना होगा कि उतने समय तक तुम्हारा देह पूर्णत: सुरक्षित हो। उसे किसी भी प्रकार की क्षति न हो। यदि देह क्षतिग्रस्त हो गया तो पुन: तुम उस देह में कभी भी प्रवेश नहीं कर सकोगी। ऐसी स्थित में तुम्हें उस देह को भूल जाना पड़ेगा।” गुरुजी ने मीरा को सचेत किया।
“जी। मैं इस बात का पूरा ध्यान रखूंगी।”

“यदि तुम अपने देह में प्रवेश करने में विफल रही तो उस देह से किए कर्मों का फल शेष ही रह जाएगा। जिसे किसी भी रूप में भोगना ही पड़ेगा। तुम्हारी आत्मा भटकती रहेगी और मोक्ष नहीं मिल पाएगा। अत: इसे सावधानी पूर्वक प्रयोग में लाना।”
“जी।”
“एक और बात। जब इस देह में आत्मा नहीं होगी तब अनेक भटकती, विचरती आत्माएं उस देह में प्रवेश करने की चेष्टा करेगी। तुम्हें उसे भी रोकना होगा। यह सारी विद्या मैंने तुम्हें सिखाई है।”
“जी गुरु जी। आपका बड़ा अनुग्रह है मुझ पर।”
“अंतिम बात। योग विध्या किसी प्रदर्शन हेतु या चमत्कार दिखाने हेतु कभी प्रयोग नहीं करनी है। इस अमूल्य विध्या का एक मात्र उद्देश्य - लक्ष्य आत्मा की उन्नति और मोक्ष प्राप्ति है।”
“जी गुरु जी।”
“यदि किसी भी समय तुमने इस विध्या का मिथ्या प्रयोग किया तो तुम्हें इस विध्या का विस्मरण हो जाएगा। तुम्हारी सारी विध्या नष्ट हो जाएगी।”
“मैं आपकी सभी बातों का ध्यान रखूंगी।”
“तुम्हारा कल्याण हो, पुत्री।”
गुरुजी के आशीर्वाद लेकर मीरा चल पड़ी। हिमालय की पहाड़ियों के किसी अज्ञात स्थान पर जाकर मीरा बस गई।

[91]

पूर्ण रूप से योग विध्या सीखते सीखते सात वर्ष का समय व्यतीत हो गया था। इन सात वर्षों में सेलेना विल्सन को हॉलीवुड के साथ साथ सारे पत्रकार और सारा संसार भूल चुका था। कुछ दिनों तक सेलेना का अदृश्य होना समाचारों का और चर्चा का विषय बना रहा। उसके विषय में अनेकों सत्य - असत्य बातें होती रही।
सत्य तो यह था कि शिल्प प्रदर्शनी के पश्चात किसी ने सेलेना विल्सन को देखा नहीं था। न ही किसी के पास उसके विषय में कोई प्रामाणिक और प्रमाणित जानकारी उपलब्ध थी। सब अपनी अपनी कल्पना की कथा प्रस्तुत करते रहते और उसे वास्तविक कथा के रूप में स्वीकार करने का हठाग्रह भी करते रहते।
इन सात वर्षों में भारत में दो और हॉलीवुड में पाँच फिल्में सेलेना के अदृश्य होने पर बनी। ये सारी फिल्में अर्धसत्य या असत्य कथा ही थी। फिल्में खूब लोकप्रिय हुई, सफल हुई, अमर हो गई किन्तु सेलेना को भूला दिया गया। सेलेना के नाम पर अनेकों ने खूब धन कमाया।
सेलेना स्वयं इन बातों से अनभिज्ञ थी, अलिप्त भी थी। वह तो अपनी साधना में लिन थी। योगविध्या सीखते सीखते उसने अपनी आत्मा को अत्यंत उन्नत कर लिया था। मोक्ष की प्रक्रिया में व्यस्त, अपने दैहिक कर्मों को भोगती हुई हिमालय की पवित्रता में वह जीवन व्यतीत कर रही थी। उसने स्वयं को इतना परिवर्तित कर दिया था कि यदि कोई निकट परिचय वाली व्यक्ति भी उसे मिले तो उसको पहचान न सकेगी।

%*%*%*%*

उस दिन सूरज अपने क्रम से हिमालय की कंदराओं को प्रकाशित करने निकला था। सब कुछ सामान्य था, नित्य क्रम में था, नियमित था। मीरा अपनी गुफा में बैठकर ध्यान में व्यस्त थी। तभी एक युवती उस गुफा के मुख पर पहुँच गई। उसने देखा कि एक साध्वी ध्यान में मग्न थी। युवती मीरा को जानती न थी। वह वहाँ रुकी। मीरा की ध्यान अवस्था की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगी। गुफा के पवित्र और अलौकिक वातावरण का प्रभाव उस पर पड़ने लगा। उसे तृषा लगी थी। क्षुधा भी। उसने गुफा में जल को खोजने की चेष्टा की। कहीं कोई जल का पात्र न था। उसकी दृष्टि मीरा के ठीक पीछे बह रही क्षीण जलधारा पर पड़ी। वह वहाँ जाकर तृषा शांत करने लगी। इससे जल की धारा का प्रवाह खंडित हो गया, अनियमित हो गया। बहते जल से उत्पन्न ध्वनि ने अपने नियत सुरों को त्याग दिया। उसका नित्य संगीत बदल गया। लय - ताल भंग हो गया था। उसके साथ ही मीरा का ध्यान भी भंग हो गया, समाधि टूट गई। ध्वनि की लय और ताल से उत्पन्न हो रहे रव से वह जागी।

वह जागी, आँखें खोली और गुफा के वातावरण को, गुफा की ध्वनि को, गुफा की हवा को बाधित करने वाले कारण को ढूँढने लगी। उसने युवती को देखा। उसे आश्चर्य हुआ, “यहाँ तक कोई भी नहीं आ सकता। आजतक कोई आया भी नहीं है। तुम यहाँ कैसे?”

मीरा के शब्दों में सौम्यता थी जिससे युवती प्रभावित हुई, निर्भय हुई। उसने हाथ जोड़ वंदन करते हुए कहा, “देवी, मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। तृषा और क्षुधा से त्रस्त होकर मैं घूम रही थी तभी इस गुफा से ओम का नाद मैंने सुना। जल और भोजन की अपेक्षा से मैंने गुफा में प्रवेश किया। मेरे इस अपराध के लिए..।”

“नहीं, नहीं। तुमने कोई अपराध नहीं किया है, पुत्री। निश्चिंत होकर बैठो मेरे पास। मैं अभी भोजन का प्रबंध करती हूँ।”

युवती एक स्थान पर बैठ गई। मीरा एक विशाल शीला के पीछे चली गई। क्षणार्ध में ही वह शुद्ध गरम भोजन के साथ पुन: प्रकट हुई।

“क्षुधा को भी शांत कर लो।”
“जी। आप भी..।”
“”नहीं। मुझे भोजन की आवश्यकता नहीं।”
“ऐसा क्यों?”
“प्रथम क्षुधा शांत कर लो। भूखे पेट भजन न होय।”
युवती ने भोजन प्रारंभ किया। पूर्ण करते ही बोली, “इतना शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन मैंने आज तक नहीं खाया।आप कौन हैं?”
“मैं मीरा हूँ।”
युवती ने पानी पिया और मीरा के समीप बैठ गई।
“तुम कौन हो? कहाँ से आई हो? क्या प्रयोजन है यहाँ तक आने का?”
“मैं येला हूँ। सिक्किम से आई हूँ। वहाँ मेरी शिल्पशाला है। मेरे विद्यार्थीओं को हिमालय के इस भाग का परिचय कराने हेतु मैं यहाँ आई हूँ।”
“कहाँ है तुम्हारे विद्यार्थी?”
“कुछ अंतर पर है।”
“उन्हें भी तो तृषा और क्षुधा..।”
“ओह, वो तो मैं भूल गई। मुझे उनके लिए कुछ..।” कहती हुई येला उठी और गुफा से बाहर निकल गई। मीरा उसे जाते हुए देख रही, स्मित के साथ।
येला जब अपने विद्यार्थीओं तक पहुंची तब सभी भोजन कर रहे थे। समीप जाकर येला ने देखा तो वही भोजन वहाँ था जो उसने मीरा की गुफा में किया था।
उसने पूछा, “ये भोजन कहाँ से आया? किसने दिया?”
“एक साध्वी आई थी। ये सब देकर वह चली गई।” किसी ने उत्तर दिया।
“साध्वी? कहाँ से आई थी? कहाँ गई?”
“वो तो हमें ध्यान नहीं रहा। हम इतने भूखे थे कि उस साध्वी पर हमारा ध्यान ही नहीं रहा।”
येला समझ गई कि वह साध्वी कौन थी। वह पुन: मीरा की गूफ़ा की तरफ चल पड़ी।
चलते चलते लंबा अंतर पार कर लिया किन्तु येला को मीरा की गुफा नहीं मिली।

“गुफा तो इतनी दूर नहीं थी। इतने में ही कहीं थी। मुझे पूरा स्मरण है, वह यहीं कहीं थी। अब कहाँ अदृश्य हो गई? कहीं मैं ही भटक तो नहीं गई?”
“नहीं। तुम भटक तो नहीं सकती। तुम पहाड़ों पर रहती हो। वर्षों से। पहाड़ों के चरित्र को पूरा पूरा जानती हो।”
“तो कहाँ है गुफा? कहाँ है मीरा?”
“होना तो यहीं चाहिए था किन्तु..।”
“अब नहीं है। यहाँ कुछ भी नहीं है।”
“तो क्या मीरा भ्रम थी? मीरा की गुफा भ्रम था? मीरा द्वारा दिया गया भोजन भ्रम था? और तो और, उन सबको दिया गया भोजन, वह साध्वी, सब कुछ भ्रम था?”
“भ्रम तो कैसे हो सकता है? सब कुछ सत्य था, सत्य ही था।”
“और अब जो है वह क्या है?”
“माया। मीरा की माया है। मीरा बड़ी मायावी है।”
“हाँ, मीरा मायावी है, मायावी।”
हारकर, थककर, विवश होकर येला लौट गई।

[92]

येला के जाने के पश्चात मीरा संस्मरणों में चली गई।

सिक्किम का वह स्थान!

वह शिल्प प्रदर्शनी!

वह शिल्प!

“उस शिल्प के कारण तो आज मैं इस योग विध्या को आत्मसात कर सकी हूँ। कितना अद्भुत शिल्प था वह?”

“वह शिल्प? उसीसे प्रेरित होकर योग विध्या सीखने का लक्ष्य क्या था? स्मरण करो उसे।”

“उसी शिल्प मे व्यक्त युवती की भांति मुझे सतलुज नदी पर अपने देह को स्थिर करना था, उसी स्थान पर जहां दो देशों की सीमा है।”

“अब उस कार्य को कर लो। सारी विध्याएं तो सिख ली है।”

“विध्या तो मुझे मोक्ष की ओर ले जा रही है। सारी इच्छाएं, अभिलाषाएं, वासनाएं शांत हो गई है। अब मैं उस लक्ष्य को त्याग चुकी हूँ।”

“वासनाएं तुम में अभी भी शेष है। अन्यथा तुम्हें उस शिल्प का स्मरण ही न रहता न ही उस समय नियत किया गया लक्ष्य।”

“व्यतीत समय का विस्मरण कोई कैसे कर सकता है?”
“कर सकता है। योग से यह हो सकता है। तुमने योग को आत्मसात किया है। स्मरण करो - ध्यान, धारणा आदि को।”
“उसे तो मैं सिद्धह कर चुकी हूँ।”
“तो संसार की बातों का विस्मरण क्यों नहीं हो रहा है? एक सांसारिक युवती आती है, अल्प समय साथ रहती है और तुम इस साधना से विचलित हो जाती हो। क्या है यह सब?”
“वह तो..।”
“क्यों तुमने उस युवती से उसका परिचय पूछा? क्यों उसके विषय में जानने की लालसा जागी? क्यों उसमें तुम रुचि ले रही थी? यह सभी वासना ही तो है।”
“मैं मानती हूँ कि वह मेरी भूल थी। किन्तु अब मैं ऐसी भूल नहीं करूंगी।”
“उसके लिए तो तुम्हें वासनाओं पर विजय प्राप्त करना होगा।”
“कैसे?”
“पुन: साधना करनी पड़ेगी। पुन: प्रथम से प्रारंभ कर योग के मार्ग पर चलना पड़ेगा। पुन: यम, नियम आदि का अभ्यास करना पड़ेगा। पुन: किसी योग्य गुरु को खोजना पड़ेगा। क्या तुम यह सब कर सकोगी?”
“यह सब मैंने किया है। सात वर्षों तक तपस्या की है, साधना की है। यदि मुझे पुन: यह सब करना पड़े तो...।”
“मोक्ष पाने के लिए और वासनाओं को जीतने के लिए वह सब व्यर्थ हो गया। सारी तपस्या विफल हो गई।”
“तो मैं क्या करूँ?”
“वह निर्णय स्वयं तुम्हें करना होगा।” इतना कहकर मीरा की छाया, मीरा का प्रभामंडल शांत हो गया।
स्वयं से बात करती हुई मीरा विचलित हो गई। उसके मन पर प्रदर्शनी में देखे उस शिल्प ने नियंत्रण कर लिया। लंबे मनोमंथन के पश्चात उसने निर्णय कर लिया। वह उठी, गुफा से बाहर निकली और चल पड़ी सतलुज नदी की तरफ।

[=][=[=][=][=]

कई कई दिनों तक सतलज के उद्गमस्थान मानसरोवर से निकली धारा के साथ साथ मीरा चलती रही। अनेकों स्थानों पर रुकी, उन स्थानों पर ध्यान केंद्रित किया किन्तु संतुष्ट न होकर वह आगे बढ़ती गई।

एक दिन सहसा एक बिन्दु पर वह रुकी। उस बिन्दु पर सतलुज की धारा तीव्र थी और मनमोहक भी। वहाँ पर नदी के प्रवाह से बनी गुफा थी। उसे वह स्थान पसंद आ गया। गुफा के भीतर उसने अपना आसन बना लिया, निवास बना लिया।

वह गुफा में रहकर देह से बाहर निकलती, विचरण करती और पुन: देह में प्रवेश कर जाती। अनेक दिनों तक देह त्याग, विचरण और पुन: देह में प्रवेश सिद्ध हो जाने पर उसने अपनी योजना पर कार्य प्रारंभ किया।

वह देह से निकली, सूक्ष्म रूप से देह के आसपास विचरती रही। पश्चात योग शक्ति से देह को गुफा से नदी तक लेकर आई। धीरे धीरे देह को नदी के प्रवाह में प्रवहित कर दिया। सतलुज की तेज धारा उसे अपनी गति के साथ बहाने लगी। मीरा भी सूक्ष्म रूप रूप से उसी गति के साथ आकाश मार्ग से बहने लगी।

एक स्थान पर नदी का प्रवाह सहसा अधिक तीव्र हो गया। देह एक विशाल शीला से टकरा गया। देह उलटी हो गई। मीरा ने उसे संभाला और पुन: प्रवाहित कर दिया। मार्ग में अनेक वृक्षों और शिलाओं से टकराती हुई देह निर्धारित स्थान पर आ गई। मीरा ने अपने योगबल से उस देह को स्थिर कर दिया।

वह स्थान था भारत - पाकिस्तान की सीमा। देह का ऊपरी भाग, धड़ पाकिस्तान की सीमा में और नीचे का भाग भारत की सीमा में स्थिर कर दिया। वह अपने लक्ष्य में सफल हो गई। अपनी उस उपलब्धि पर वह प्रसन्न हो गई।

रात्रि के अंतिम प्रहर का अंत होने को था। वह सूक्ष्म रूप से वहीं रुककर सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगी।

‘सूर्योदय होने पर दोनों देशों की प्रजा जब इस दृश्य को देखेगी तो भारी अचरज में पड जाएगी। इस कौतुक को देखने के लिए सारे इकट्ठे हो जाएंगे। मेरे इस पराक्रम की चर्चा सभी करते रहेंगे

और मैं पुन: देह में प्रवेश कर जाऊँगी। सभी के देखते देखते मैं नदी के प्रवाह के विरुद्ध गति करके पुन: हिमालय की तरफ चली जाऊँगी। सभी मेरे इस कृत्य को चमत्कार समझकर मुझे देवी के रूप में पूजने लगेंगे। कितना बड़ा कार्य किया है मैंने! मैं, मैं महान हूँ। मैं देवी हूँ।' मीरा के सूक्ष्म रूप ने अहंकार से भरा विचित्र ध्वनि उत्पन्न कर दिया।
सूर्योदय हुआ। दोनों देशों की जनता ने उस अद्भुत दृश्य को देखा। भारत की वायुसेना ने उस देह को नदी से निकाला। देह को सीधा करते ही मीरा की आत्मा विचलित हो गई।
'अनर्थ हो गया। देह अत्यंत क्षतिग्रस्त हो गया है। मुख का भाग पूर्ण रूप से खंडित हो गया है। इस क्षतिग्रस्त देह में अब मेरा पुन: प्रवेश करना असंभव हो गया। अब मुझे बिना देह के ही सूक्ष्म रूप से भटकना होगा। हाय .. हाय।'
वह भटकने लगी।
'मुझे शीघ्र ही किसी देह में प्रवेश कर लेना चाहिए। हाँ, वहाँ एक देह है। अभी अभी इसकी मृत्यु हुई है। मैं इसमें प्रवेश कर जाती हूँ।' कहकर उसने उस देह में प्रवेश करने की चेष्टा की। विफल रही। उसने पुन: प्रयास किया किन्तु पुन: विफल रही।
'मेरी इस विध्या को क्या हो गया है? यह काम क्यों नहीं आ रही? मैं इस देह में प्रवेश क्यों नहीं कर पा रही हूँ? मेरी यह विध्या कहाँ गई?'
तभी गुरु निरंजना ने प्रकट होकर कहा, "मैंने कहा था न कि जब तुम योग विध्या से समाधि और मोक्ष के मार्ग से भटक जाओगी, इस विध्या का अन्य किसी उद्देश्य हेतु प्रयोग करोगी तो तुम्हारी सारी विध्या नष्ट हो जाएगी।"
"मेरी विध्या नष्ट हो गई है क्या?"
"इसमें संदेह कैसा?"
"अब कोई संदेह नहीं शेष रह गया है। किन्तु अब मैं अपना शेष आयुष्य बिना देह के कैसे बिताऊँगी? मुझे मोक्ष कैसे मिलेगा? मेरी इस अवस्था से मुक्ति का मार्ग क्या है? मेरी सहायता करो। मेरी रक्षा करो। मुझ पर कृपा करो गुरु देव।"
"शेष कर्मों का भोग तो तुम्हें भोगना ही है। इसी सूक्ष्म रूप में भटकते रहना पड़ेगा। किन्तु इससे मुक्ति का मार्ग भी है। जब इस धरती से कोई मनुष्य सदेह आत्मालोक में प्रवेश करेगा तभी तुम्हें सारे कष्टों से मुक्ति मिलेगी। तभी तुम्हें मोक्ष मिलेगा।"

“किन्तु गुरु जी, कोई मनुष्य सदेह आत्मा लोक में प्रवेश कैसे कर सकेगा? आजतक यह संभव नहीं हुआ। प्रतीत हो रहा है कि अनंत काल तक यह असंभव ही रहेगा। इसका अर्थ तो यह है कि मुझे प्रलय काल तक इसी तरह भटकते रहना है। मैं.., मैं..।”
“शांत हो जाओ वत्स। गुरु के वचनों पर विश्वास रखो। शीघ्र ही चार मनुष्य सदेह आत्मालोक में प्रवेश करेंगे। उन्हें मार्ग में अनेक संकट आएंगे। तुम्हें उनकी सहायता करनी होगी। तुम्हें ही देवर्षि नारद को प्रसन्न करना होगा। तुम्हें ही विदुषी मदालसा को मनाना होगा। तुम्हें ही पवनपुत्र हनुमानजी की साधना से उन चारों मनुष्यों को सदेह आत्मालोक तक पहुंचाने का वरदान प्राप्त करना होगा। तुम्हारी मुक्ति होगी, अवश्य होगी, शीघ्र होगी। तुम्हारे सूक्ष्म चित्त को ईश्वर में स्थिर करो। तुम्हारा कल्याण हो।” गुरु निरंजना अदृश्य हो गई।

[93]

एक ध्वनि शैल के साथ सबको सुनाई दी।
“मीरा ने अपना सूक्ष्म रूप ईश्वर में स्थिर कर दिया। तुम्हारे मार्ग में सर्व प्रथम देवर्षि नारद ने तुम सबका मार्गदर्शन किया। पश्चात विकराल रूप धारण कर मदालसा ने ही परीक्षा ली और आशीर्वाद दीया। जब तुम चारों अचेत हो गए तभी पवनपुत्र हनुमानजी ने चक्रवात के स्वरूप में आकर आत्मा लोक के द्वार तक सदेह पहुंचाया।”
क्षण में सारे दृश्य, सारी ध्वनियाँ अदृश्य हो गई। सारे दृश्यों को देखकर शैल अचंभित रह गया। स्तब्ध हो गया, स्थिर होकर अभी भी उस बिन्दु को देखता रहा जहां उसने मीरा की सारी कथा देखि - सुनी थी।
“शैल, तुमने जो चाहा था वह सब कुछ तुमने देख लिया। सारा रहस्य तुमने जान लिया है। अब कुछ शेष नहीं बच।” शैल को जगाते हुए ज्योत ने कहा।
शैल चौंक गया। अपनी अवस्था से जागा। बाकी तीनों व्यक्ति भी जागे।
शैल ज्योत को पुछ बैठा।
“क्या मीरा को मुक्ति मिल गई? मोक्ष मिल गया?”

“आप चारों को यहाँ तक लाने का प्रयोजन ही मीरा की मुक्ति था, मीरा का मोक्ष था। गुरु निरंजना के वचनों को सिद्ध करना था अत: आप चारों को निमित्त बनाया गया। सब कुछ सम्पन्न हो गया। मीरा की मुक्ति होनी ही थी। मीरा मुक्त हो गई। उसे मोक्ष प्राप्त हो गई।”
“यह तो उत्तम बात हो गई। क्या हम मीरा की आत्मा से मिल सकते हैं?”
“नहीं। अब मीरा की आत्मा को कोई नहीं मिल सकता।”
“क्यों? वह अभी भी इसी आत्मालोक में ही होगी न?”
“नहीं। जिसको मुक्ति मिल जाती है, जिसे मोक्ष मिल जाता है वह परम चैतन्य परमात्मा में विलीन हो जाता है। उसका अब कोई अस्तित्व शेष नहीं रहता।”
शैल ने गहन प्रश्वास छोड़ा।
अब आप चारों को निर्णय करना है कि आपको इस आत्मा लोक में ही रुक जाना है या पुन: मृत्युलोक पृथ्वी पर लौटना है? पृथ्वी पर जाने से मैंने जो कहा था वही आप सब के साथ होगा यह बात ध्यान रहे।”
“क्या कहा था? हम तो भूल गए।”
“आपको कहा गया था -
तुम्हारे लिए दो विकल्प हैं। एक, यहाँ से ही लौट जाओ। इससे जीवन बच जाएगा। किन्तु यहाँ तक का मार्ग, यह लक्ष्य आदि का स्मरण नहीं रहेगा।
दूसरा - आत्मालोक के भीतर आ सकते हो। जिस बात को जानना चाहते हो वह सारी व्यवस्था के विषय में जान सकते हो। किन्तु उसके पश्चात यहाँ से वापिस पृथ्वी पर नहीं जा सकते हो। भीतर आने पर यदि नारायण की कृपा रही तो सारी व्यवस्था देखकर भी मृत्युलोक को लौट सकते हो किन्तु वहाँ लौटने पर -
या तो तुम्हें मार्ग का स्मरण रहेगा।
या लक्ष्य का स्मरण रहेगा।
या यहाँ जो भी देखोगे वह समरण रहेगा।
इनमें से किसी एक का ही स्मरण रहेगा। और यदि कोई चाहे तो मार्ग, लक्ष्य तथा सारी व्यवस्था का स्मरण साथ ले जा सकता है किन्तु सब कुछ जानते हुए भी वह किसी को कुछ भी नहीं बता सकेगा।

जिसे केवल यह बात स्मरण रहेगी वह अपनी बात संसार को बताने का प्रयास करेगा किन्तु कोई उस पर विश्वास नहीं करेगा। हो सकता है कि युगों के पश्चात कोई महान आत्मा जन्म ले और आपकी बात को समझते हुए यहाँ तक आ जाए, सारे रहस्यों को जान ले। किन्तु इस कलियुग में तो यह संभव नहीं होगा। प्रलय के पश्चात किसी में यह सामर्थ्य आ जाए तो यह संभव है। तुम क्या करना चाहोगे? लौटना अथवा भीतर चलना?
स्मरण है न?”

“हाँ, हाँ।” सभी ने एक साथ कहा।

“अब आपको क्या निर्णय करना है?”

चारों ने एक एक विकल्प पसंद किया। मैं नहीं जानता कि किसने कौन सा विकल्प पसंद किया। मैं यह भी नहीं जानता कि चारों आज इस धरती पर कहाँ है? क्या कर रहे हैं? आपको इनमें से यदि कोई मिल जाए तो मुझे सूचित कर देना।
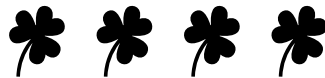
श्री व्रजेश दवे की अन्य रचनाएं

1] हिम स्पर्श - उपन्यास [हिन्दी]

2] द्वारावती - उपन्यास [हिन्दी]

3] एक पतंगिया ने पांखो आवी - यपन्यास [गुजराती]

4] Sound of Solitude - short novel [English]

अंतर्निहित
[व्रजेश दवे]